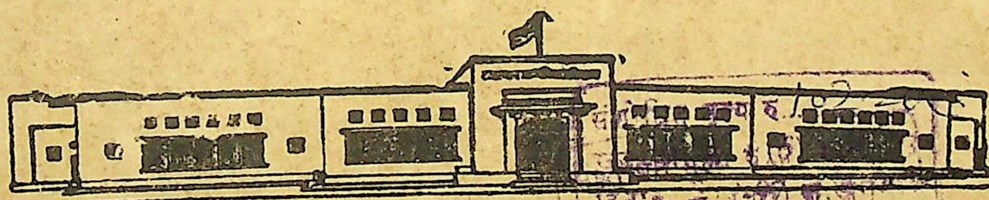
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक : जितेन्द्रकुमार जैन
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १३३

महाराजा मानसिंह री ख्यात

सम्पादक
नारायणसिंह भाटी एम.ए., पी-एच. डी.



प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
1979.

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक : जितेन्द्रकुमार जैन
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १३३

महाराजा मानसिंहजी री ख्यात

सम्पादक

डॉ० नारायणसिंह भाटी, एम. ए. पी. एच. डी.

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)
१९७९ ई.

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR
1979.

प्रथमावृत्ति ५०० मूल्य रू. २३.००

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान–प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा–निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक
जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थांक १३३
महाराजा मानसिंहजी री ख्यात

प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राज.)

मुद्रक : पंकज प्रिन्टर्स आनन्द सिनेमा के पास, गुरुद्वारा, जोधपुर

वि. सं. २०३६ भारत राष्ट्रीय शकाब्द १९०१

प्रधान सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रंथ 'राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला' के अन्तर्गत 133 वें पुष्प-रूप में विद्वानों के हाथों में सौंपते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

भारतीय मध्यकालीन ऐतिह्य सामग्री में जहां फारसी के इतिहास-लेखकों को स्थान प्राप्त है, वहां राजस्थान की ख्यात, वात, वंशावली, पीढ़ियावली, पट्टावली, विगत, हक़ीकत, हाल, याद, वचनिका, एवं दवावैत आदि के लेखकों की भी अनदेखी नहीं की जा सकती। इन दोनों ही प्रकार के इतिहास-लेखकों की सामग्री प्रकाशित रूप में आज हमें उपलब्ध होती है। जहाँ तक घटित घटनाओं की प्रामाणिकता का प्रश्न है वहां दोनों ही लेखकों की कलम ने अपने-अपने आश्रयदाता के गुणगान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी हमें क़ाफी सीमा तक ऐतिहासिक घटना-क्रम को एक दूसरे की सामग्री के तुलनात्मक अध्ययन से तथ्यात्मक विवरण उपलब्ध हो सकता है।

राजपूत राजाओं की रियासतों में 'ख्यात' लेखन की परम्परा 17 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक मिलती है।

प्रस्तुत ख्यात में जहां जोधपुर के महाराजा मानसिंह के कार्यकाल में प्रशासनिक अव्यवस्था, राजनैतिक उथल-पुथल, नाथ-सम्प्रदाय का बलात् विस्तार, नाथों द्वारा राज्य-कार्य में हस्तक्षेप करना, टौंक के नवाब मीर खां पिण्डारी आदि की लूट-पाट से राज्य की आर्थिक स्थिति डावांडोल रहती थी वहीं इस राज्य में मानसिंह द्वारा कवियों, लेखकों, शिल्पियों, चित्रकारों एवं संगीतज्ञों को भी अच्छा प्रोत्साहन मिला।

मानसिंह स्वयं भी एक अच्छे कवि थे जिन्होंने नाथों की भक्ति से ओत-प्रोत होकर अनेक रचनाएं कीं। इनकी कवित्व-शक्ति का एक उदाहरण देखिए —

कविराजा बांकीदास जो महाराजा मानसिंह के राज्याश्रित प्रतिभाशाली एवं विलक्षण कवि थे, के देहावसान पर मातमपुर्सी के लिए स्वयं मानसिंह उनकी हवेली पर पहुंचे थे और वहां स्वर्गीय बांकीदास के लिए मरसिये कहे थे।

सद्‌विद्या बहु साज । बांकी थी बांका वसू ।।
कर सूधी कवराज । आज कठी गो, आसिया ।।
विद्या कुळ विख्यात । राज-काज हर रहसी री ।।
वांका ! तो विण वात । किण आगळ मन री कहां ।।

भावार्थ है—विभिन्न साजों वाली उत्तम विद्या बांकीदास के जीवित रहते ही बांकी (निराली) थी। हे आसिया ! हे कविराज ! उसे सीधा करके (वंकिम विहीन) करके तू कहां चला गया ?

कुल-प्रसिद्ध विद्या सम्बन्धी, राज्य-कार्य सम्बन्धी, लालसा सम्बन्धी तथा आनन्द देने वाली मन की बातें आज तेरे बिना किसके समक्ष कहूं ?

'ख्यात' में मानसिंह के राज्य-सिंहासनारूढ़ से प्रारम्भ होकर उसकी मृत्यु पर्यन्त राज्य-संचालन की गतिविधियों, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों, हत्याएं, लूट-पाट, राज्याश्रित जागीरदारों के पक्ष-विपक्ष में विभिन्न खेमें, नाथों व ओसवाल मुत्सद्दियों का प्रमुत्व, रनिवास में रानियों आदि के विभिन्न दल, अंग्रेजों द्वारा पुनर्गठित राज्यव्यवस्था, युवराज छत्रसिंह की हत्या के बाद मानसिंह की दुरवस्था, तत्कालीन पड़ौसी राज्यों से सम्बन्ध आदि का रोचक एवं विस्तृत वर्णन मिलता है ।

प्रस्तुत ख्यात का अविकल पाठ विभिन्न पाठों के ताल-मेल के साथ प्रथम बार प्रकाशित किया जा रहा है । इसमें राजस्थानी भाषा के साथ-साथ तत्कालीन खड़ो बोली का भी प्रयोग हुआ है ।

जहां यह ग्रंथ ऐतिहासिक सामग्री का विश्लेषण करने वाले शोध विद्वानों के लिए उपादेय होगा वहीं तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक ढाँचा भी अनुसन्धित्सुओं के लिए महत्व का होगा ।

कुछ वर्षों पहले इसी प्रतिष्ठान द्वारा 'मारवाड़ रा परगना री विगत' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का सम्पादन राजस्थानी भाषा के विद्वान् डा० नारायणसिंह भाटी द्वारा करवाकर प्रकाशित किया गया था । उसका इतिहास-जगत् में अच्छा स्वागत हुआ और देश के उच्च कोटि के इतिहासविदों ने उस ग्रन्थ की सम्पादन-पद्धति की भी सराहना की, और, तत्कालीन निदेशक महोदय ने डा० भाटी से आग्रह किया कि वे प्रतिष्ठान के लिए 'महाराजा मानसिंह की ख्यात' का भी सम्पादन कर दें । डा. भाटी ने उक्त अनुरोध पर यह सम्पादन-कार्य उन्हीं दिनों पूरा कर दिया था पर, प्रतिष्ठान की कुछ कठिनाइयों के कारण तब उसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका । अब यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अनुसन्धित्सुओं के उपयोग के लिए उनके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ।

यह ग्रन्थ शोधकर्ताओं के लिए अधिक उपयोगी हो सके इसके लिये सम्पादक महोदय ने अपनी विस्तृत भूमिका के अलावा ग्रन्थ के अन्त में नामानुक्रमणिकाएं तथा उस समय के कुछ महत्वपूर्ण पत्र भी जोड़ दिये हैं जो अब तक अप्रकाशित थे और जिनसे उस समय के मारवाड़ की कई आन्तरिक हलचलों का पता चलता है । प्रतिष्ठान के कनिष्ठ तकनीकी सहायक श्री गिरधरवल्लभ दाधीच जिन्होंने प्रूफ-शोधन आदि में उल्लेखनीय सहयोग दिया है, धन्यवाद के पात्र हैं । वैसा ही सहयोग विभाग को पंकज प्रिण्टर्स, के श्री पुखराज जांगिड़ से मिला, जिसके लिए इन्हें भी धन्यवाद देना चाहूंगा ।

जे. के. जैन

सम्पादकीय

महाराजा मानसिंह का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब केन्द्र में मुग़ल-सत्ता के अवसान के साथ ब्रिटिश कम्पनी का राज्य काफ़ी जम चुका था और वे राजस्थान के रजवाड़ों को अपने वश में करने को प्रयत्नशील थे। शताब्दियों से मुग़लों के साथ संघर्ष और आपसी झगड़ों के कारण राजस्थान के रजवाड़े अब काफ़ी क्षीण हो चुके थे। मरहठों की लूटपाट और पिंडारियों के उत्पात के कारण यह रजवाड़े आर्थिक दृष्टि से भी बहुत टूट चुके थे। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों को यहां पर अपना वर्चस्व कायम करने में बहुत अधिक समय नहीं लगा।

महाराजा मानसिंह की गद्दीनशीनी (वि. सं. १८६०) के समय तो मारवाड़ की हालत और भी बदतर थी क्योंकि यहां के जागीरदार भी दो खेमों में बंटे हुए थे। बहुत से जागीरदार पोकरन ठाकुर सवाईसिंह के प्रभाव के कारण स्वर्गीय महाराजा भीमसिंह की गर्भवती रानी के होने वाले पुत्र को जोधपुर की गद्दी का हक़दार बनाना चाहते थे तो दूसरी ओर इन्द्रराज सिंघवी के प्रभाव से कुछ जागीरदारों ने मिलकर (जो महाराजा मानसिंह को ही गद्दी का हक़दार समझते थे) महाराजा मानसिंह को जालोर से लाकर सवाईसिंह की इच्छा के विपरीत जोधपुर की गद्दी पर ला बैठाया।

इस ख्यात में जालोर के घेरे से लेकर मानसिंह की गद्दीनशीनी तक का ब्यौरा काफी विस्तार से दिया गया है जिससे मारवाड़ के आन्तरिक विघटन आदि का ठीक से अनुमान लगाया जा सकता है।

मानसिंह के गद्दी पर बैठने से लेकर उसकी मृत्यु तक मारवाड़ में कभी पूर्ण शांति नहीं रही न ही मानसिंह ने चैन की सांस ली। इन सब परिस्थितियों का वर्णन जहां इस ख्यात में विस्तार के साथ किया गया है वहां मारवाड़ के तत्कालीन पड़ौसी राज्यों से सम्बन्ध, मरहठों और पिंडारियों का दखल तथा अंग्रेजों के साथ सन्धि एवं उनका राज्य-कार्य में हस्तक्षेप आदि का ब्यौरा भी बहुत विस्तार के साथ दिया गया है। इसके अतिरिक्त उस समय के राजनैतिक दाव-पेंच, सैन्य-संचालन, मुत्सद्दियों की कारगुज़ारी, विभिन्न ओहदेदारों के ज़िम्मे

कार्य एवं उनकी कार्य-पद्धति तथा जागीरदारों की खेमापरस्ती आदि का बड़ा ही सजीव चित्रण इसमें मिलता है। मानसिंह की नाथ-सम्प्रदाय में गहरी आस्था थी क्योंकि जालोर के घेरे के समय देवनाथ के वचन से ही वे जालोर के किले में रुके रहे जिसके फलस्वरूप भीमसिंह की अचानक मृत्यु के बाद जोधपुर की राज्यगद्दी उन्हें प्राप्त हुई इसलिये वे आजीवन नाथों के परम भक्त बने रहे और उनके लिये न केवल महामन्दिर एवं उदयमन्दिर में बड़ी ईमारतें बनवाई बल्कि प्रत्येक परगने में उनके लिये धार्मिक स्थान स्थापित किये। इसके अतिरिक्त राज्य का बहुत सा द्रव्य भी उनके लिये निरन्तर खर्च किया जाता था। नाथों की आज्ञा उनके लिये सदा शिरोधार्य रही जिससे राज्य-कार्य और राजनीति में भी उनका दखल दिनों-दिन बढ़ता रहा। महाराजा मानसिंह स्वयं कवि थे और उन्होंने चारणों को बहुत प्रश्रय दिया था। उनके समय में बांकीदास आसिया, उदयराम, मन्छाराम और उत्तमचंद भंडारी जैसे श्रेष्ठ कवि हुए जिनका राजस्थानी साहित्य व इतिहास में बड़ा महत्व है। यद्यपि उस समय मारवाड़ की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, परन्तु फिर भी मानसिंह ने चारणों को ६१ सांसण[1] प्रदान किये और लाखों रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये। ये लोग समय असमय का ध्यान रखे बिना ही राजा से निरन्तर धन प्राप्ति के लिये प्रयास करते रहते थे और इसी गरज से वे नाथजी के भी भक्त बने रहते थे तथा उनके मारफत द्रव्य एवं जागीरें आदि भी हासिल करते थे इन सब तथ्यों का ख्यात में यथा स्थान बड़ा रोचक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

अब हम इस ख्यात में वर्णित कुछ मुख्य घटनाओं का उल्लेख करेंगे जिन पर ख्यात में विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

जालोर के किले का घेराव—

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह की मृत्यु के पश्चात् संवत् १८४८ में महाराजा भीमसिंह गद्दी पर बैठा। उस समय जालोर विजयसिंह की पासवान गुलाबराय के पट्टे में थी और मानसिंह (जिस पर उस पासवान की विशेष कृपा थी) को उसने भीमसिंह के चंगुल से बचाने के लिये जालोर के किले में भेज दिया। विजयसिंह के जीते-जी शेरसिंह को उन्होंने युवराज पदवी दी थी, परन्तु भीमसिंह ने उसे छल द्वारा मरवा दिया और वह अब मानसिंह को समाप्त करना चाहता था इसलिये उसने जालोर के किले के घेरा डाल दिया तथा सिंघवी इन्द्रराज एवं गंगाराम भंडारी के ज़िम्मे यह कार्य सौंपा गया। लम्बी

---

1. 'इगसठ सांसण अप्पिया मांने ग्रमनाणी'

अवधि तक मानसिंह को जालोर के किले के घेरे में रहना पड़ा और इस दौरान में उन्हें अनेक कष्ट सहन करने पड़े। उनके कई जागीरदार इस समय उनका साथ छोड़ कर चले गये, पर आहोर ठाकुर जैसे कई स्वामिभक्त सरदार उनकी ओर बने रहे और उनका उत्साह बनाये रखा। इस समय का एक दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

सिर तूटे धड़ लड़थड़े, कटे बखतरों कोर।
बोटी बोटी कट पड़ै, जद छूटे जाळोर।।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि मानसिंह को कविता का बहुत शौक था और वे स्वयं भी अच्छी कविता करते थे अतः कहते हैं कि उस समय विकट परिस्थिति में भी १७ चारण कवि उनके वहां मौजूद रहे। इस सम्बन्ध में चारण समाज में एक दोहा प्रचलित है:—

ठौड़ ठौड़ त्रबंक त्रहत्रहिया, भड़ थहिया के छोड भव।
वाली लाज तजै के वहिया, सतरै तद रहिया सुकव।।

रसद की कमी, इन्द्रराजसिंघवी का विशेष दबाव, साथियों की निरंतर होती हुई कमी के कारण जब गढ़ छोड़ने के अलावा कोई चारा मानसिंह के पास नहीं रहा और वे गढ़ छोड़ने का विचार कर रहे थे उस समय आयस देवनाथ जो जलंधरनाथ की सेवा करता था के कहने से ही वे गढ़ में कुछ दिन और रुके रहे और इतने में महाराजा भीमसिंह की अचानक मृत्यु हो गई। बदलती हुई परिस्थितियों में इन्द्रराज सिंघवी तथा गंगाराम ने अविलम्ब परिस्थितियों को समझकर मानसिंह को ही जोधपुर की गद्दी पर बैठाने का विचार कर लिया और उसके लिये मानसिंह तैयार भी हो गये।[1] इस अचानक उलट-फेर के कारण जहां मारवाड़ की राजनीति में बड़ा परिवर्तन हुआ वहां अनेक राजवर्गीय अधिकारियों और जागीरदारों के भाग्य ने भी पलटा खाया तथा राज्य में पुराने अधिकारियों की जगह अनेक नये अधिकारियों की नियुक्ति की गई।

भीमसिंह की देरावर रानी के पुत्र उत्पन्न होने की अफवाह और सवाईसिंह का उसका पक्ष लेना—

मानसिंह जब गद्दी पर बैठे थे तो उन्होंने सवाईसिंह से यह वादा किया था कि यदि भीमसिंह की रानी देरावर जी जो कि गर्भवती हैं उसके पुत्र पैदा

1. ख्यात पृ. 5

हो गया तो वे राजगद्दी उसे सौंप देंगे और वे स्वयं पुनः जालोर चले जायेंगे। सुरक्षा की दृष्टि से चौपासनी ग्राम में गुसाईंजी विठ्ठलदास जी के संरक्षण में रानी को रखा गया था और बाद में उन्हें तलहटी के महलों मे रखा गया। वहीं पर देरावर रानी के पुत्र होने की खबर फैलाई गई और फिर रानी को खेतड़ी पहुँचा दिया गया।[1] इसके उपरांत सवाईसिंह नवजात कुंवर धौंकलसिंह का पक्ष लेकर मानसिंह को अपदस्थ करने के लिए प्रयत्नशील हो गया और उसका यह प्रयत्न तब तक चलता रहा जब तक मानसिंह ने उसका सफाया मीरखां के हाथों नहीं करवा दिया।

उदयपुर की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के साथ विवाह के प्रश्न को लेकर झगड़ा—

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि सवाईसिंह धौंकलसिंह का पक्ष लेकर मानसिंह को अपदस्थ करने का अवसर ढूढ़ने लगा था, इस सम्बन्ध में उसने एक घटना का सहारा लिया। जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की सगाई उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की लड़की कृष्णा कुमारी के साथ हुई थी, किन्तु महाराजा भीमसिंह की अचानक मृत्यु हो जाने से उनकी शादी नहीं हो सकी। तब उदयपुर वालों ने कृष्णा कुमारी का टीका जयपुर के राजा जगतसिंह को भेजने का निश्चय किया। इस पर सवाई-सिंह ने मानसिंह को उकसाया कि राठौड़ों की मांग आपके रहते हुए कछवाहों को कैसे दी जा सकती है। परम्परागत विचारों के वशीभूत मानसिंह ने इस पर राजनैतिक गहराई से विचार नहीं किया और कृष्णाकुमारी से स्वयं विवाह करने को तैयार हो गया। मानसिंह ने अपनी फौज सहित कूच कर दिया और सिरोही और शेखावाटी में जो फौजें गई थी उनको भी अपने साथ होने के लिए सूचना भेजी। जसवंतराव होल्कर को इस आशय का पत्र लिखा की मेवाड़ वाले कृष्णा कुमारी का टीका जयपुर ले जा रहे थे उसे सिंघवी इन्द्रराज ने बलात् लौट जाने को मजबूर किया, इससे युद्ध की परिस्थिति बन गई है सो वह सहायतार्थ ससैन्य आवे। सिंघवी इन्द्रराज ने इस प्रश्न से होने वाली हानि को समझ लिया था अतः उसने जयपुर के दीवान रायचंद से मिलकर उस समय उस परिस्थिति को शांत कर दिया और यह तय हुआ कि दोनों ही राजा कृष्णा कुमारी से शादी नहीं करेंगे और मेल-मिलाप कर उन्होंने परस्पर यह निश्चिय किया कि महाराजा जगतसिंह की बहिन की शादी मानसिंह से की जायेगी और मानसिंह की लड़की की शादी जगतसिंह से की जायेगी तथा इस आशय के टीके भी भेज दिये गये, परन्तु सवाईसिंह कब शांत रहने वाला था उसने जगतसिंह को पुनः उकसाया कि उदयपुर से आपके जो टीका आ रहा था

1. ख्यात पृ. 9, 21

उसे मानसिंह ने जिस प्रकार ज़बरन लौटाने को मजबूर किया इससे दुनिया में आपकी बहुत हल्की लगी है। इस पर जगतसिंह पुनः शादी के लिए तैयार हो गया।। मानसिंह को जब यह समाचार मिला तो उसने भी उदयपुर की ओर प्रस्थान करने की तैयारी की। सवाईसिंह के प्रयासों से बीकानेर का राजा सूरतसिंह भी जगतसिंह की ओर मिल गया। मीरखां और मानसिंह के बीच पहले मित्रता थी, परन्तु सवाईसिंह ने उसे भी अपनी ओर मिला लिया। इस प्रकार एक लाख के करीब फौज जयपुर वालों के साथ थी और मारोठ में डेरे लिये। इसके अलावा सवाईसिंह ने जगतसिंह को आश्वासन दिया था कि जो अन्य कई राठौड़ सरदार मानसिंह के साथ हैं वे भी युद्ध के समय अपनी ओर आ जायेंगे। जगतसिंह आदि तो मरोठ में ठहरे रहे और सवाईसिंह फौज लेकर गींगोली की ओर आया जहां मानसिंह की फौज भी युद्ध में प्रविष्ट होने के लिये तैयार हुई। महाराजा स्वयं भी घोड़े पर सवार हुआ, पर इसी समय हरसोलाव ठाकुर जालमसिंह तथा रास ठाकुर जवानसिंह ने यह कहकर मानसिंह को रोकना चाहा कि जयपुर वालों की संख्या अधिक है और हम उनका मुकाबला नहीं कर सकेंगे। फिर भी मानसिंह माना नहीं और जब तोपें छूटने लगी तो उसने देखा कि ठाकुर जालमसिंह अपने १५०० घुड़सवारों सहित जयपुर की सेना में मिलने को जा रहा है और मेड़तिया महेशदान तथा गौड़ाटी के जागीरदार भी उससे जा मिले हैं तब आउवा, आसोप, नींबाज, कुचामन खेजड़ला आदि खेरख्वाह ठाकुर उनके साथ थे, उनके बहुत समझाने बुझाने पर महाराजा मानसिंह ने युद्ध से पलायन करना ही उचित समझा और जैसे तैसे जोधपुर का दुर्ग पकड़ा।

परन्तु इतने से ही सवाईसिंह पीछा छोड़ने वाला नहीं था उसका उद्देश्य तो धौंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी दिलाना था अतः वह जयपुर तथा बीकानेर के राजाओं को फौज सहित जोधपुर ले आया और जोधपुर शहर के घेरा डाल दिया और जगतसिंह से कहा कि धौंकलसिंह को जोधपुर की गद्दी पर बैठाने के बाद आपकी शादी उदयपुर करवा देंगे, पहले यह काम आवश्यक है। जोधपुर शहर का घेरा डाल देने से जोधपुर शहर की जनता को बडा कष्ट सहना पड़ा और मानसिंह भी बड़ी अनिश्चित परिस्थितियों में घिर गया, पर मानसिंह ने आत्मविश्वास नहीं खोया और उसे यह युक्ति सूझी कि मैंने लोगों के कहने से इंद्रराज तथा गंगाराम जैसे योग्य व्यक्तियों को कैद में डाल रखा है वे इस समय बड़ी कारगुज़ारी कर सकते हैं। अतः मानसिंह ने ससम्मान उनको कैद से बाहर निकाला और इस परिस्थिति से निपटने के लिये आग्रह किया। इंद्रराज ने पहले सवाईसिंह से बात करना उचित समझा कि शायद यह मामला बात-चीत करने से सुलझ जाय लेकिन सवाईसिंह ने उससे कहा कि "रिणमलां रा थापिया रा राजा हुवै महाजनां रा थापिया राजा हुवै नहीं।" स्थिति सुलझती

हुई नहीं देख कर उनके परामर्श पर शहर तो जयपुर वालों को सौंप दिया, परन्तु मानसिंह किले में ससैन्य रहे। इस समय पंचोळी गोपालदास ने अपनी सूझबूझ से शहर को लूटने से बचा लिया और वह शहर में से रुपये इकट्ठे करके जयपुर की फौज को देता रहा। इन्द्रराज कुचामन, आउवा, आसोप आदि ठाकुरों के घोड़े लेकर नींबाज की तरफ गया और मीरखां को लालच देकर उससे सांठगांठ की तथा उसकी सहायता से जयपुर की तरफ कूच किया तथा जयपुर के बक्सी शिवलाल को फागी नामक स्थान पर परास्त किया। तत्पश्चात् मीरखां तथा ठाकुर शिवनाथसिंह घुघरोट को लूटते हुए जयपुर पहुँच गये। ऐसी स्थिति देखकर जगतसिंह बड़ा चिंतित हुआ और संवत् १८६४ में जोधपुर का घेरा उठाकर वह जयपुर की ओर कूच कर गया। बीकानेर का सूरतसिंह भी बीकानेर की ओर कूच कर गया और मानसिंह ने चैन की सांस ली। घेरा उठ जाने के कारण बड़ी खुशीयां मनाई गई। मीरखां तथा इन्द्रराज का महाराज ने बड़ा सम्मान किया। और जिन लोगों ने स्वामिधर्म निभाया उन्हें भी लाभान्वित किया गया।[1] इन्द्रराज को दीवान का पद सौंप दिया गया और मानसिंह ने उसकी प्रशंसा में एक दोहा कहा जो बहुत प्रसिद्ध है—

पड़तां घेरो जोधपुर, आतां दळां असंभ।
आभ डिगंतां ईंदड़ा, थे दीधौ भुजथंभ।।

अपने सेवक के लिये ऐसे महत्वपूर्ण शब्दों में शायद ही किसी शासक ने ऐसे उद्गार व्यक्त किये हों।

उक्त घटना से जहां उस समय की परम्परागत मान्यताओं और राजनीतिक हलचलों का पता लगता है वहां जागीरदारों की अनिश्चित मनोदशा और राजस्थान के राजाओं की अदूरदर्शिता के उदाहरण भी सामने आते हैं तथा मरहठों की शक्ति किस प्रकार यहां की राजनीति में दखल देकर धन बटोरती थी उसके प्रमाण भी सामने आते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय हे कि राज्य के खजाने में इतना जमा धन नहीं होता था कि वह उन्हें दिया जा सकता। ऐसी स्थिति में यह धन जनता से ही वसूल किया जाता था और धनवान आसामियों को तंग किया जाता था। कई गांवों से दंड स्वरूप भी रुपये वसूल किये जाते थे। ऐसे अवसर पर मुत्सद्दी लोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे उनकी सूझबूझ बड़ी कारगुजार होती थी।

---

1. ख्यात पृ. 40-72

मीरखां द्वारा सवाईसिंह का मारा जाना—

अब मानसिंह की स्थिति काफ़ी सुदृढ़ हो गई थी फिर भी वह भलि-भांति जानता था कि सवाईसिंह जैसे शक्तिशाली कूटनीतिज्ञ दुश्मन के रहते वह निश्चित होकर राज्य नहीं कर सकेगा । अतः उसने मीरखां को पूर्ण विश्वास में लेकर उसे कहा कि जैसे भी हो इस व्यक्ति का सफाया करना बहुत जरूरी है । मीरखां ने इसके लिये महाराजा को आश्वासन दिया और उसने महाराजा से बनावटी मनमुटाव का स्वांग जाहिर करने के लिये मारवाड़ के कई गांव लूटे तथा संवत् १८६४ में फौज खर्ची के लिये भारी तकाजा किया । उस समय सवाईसिंह धौंकलसिंह को नागोर का अधिकारी बनाकर वहीं रहता था. उसने जब उपर्युक्त घटना सुनी तो उसने मीरखां को अपनी ओर मिलाने का यह ठीक अवसर समझकर उससे कहलवाया कि खर्ची हम देंगे, तुम मानसिंह को अपदस्थ करने में हमारी मदद करो । मीरखां ने ऐसा करने का वादा किया पर इससे पहले उसने सवाईसिंह से मिलने की इच्छा व्यक्त को और वे नागोर तारकीनजी की दरगाह में मिले और धर्म कर्म ओढ़ कर सहायता करने का वादा किया साथ ही उसने सवाईसिंह को निमन्त्रण दिया कि वह मूंडवे आवे जहां उसकी महमानी की जायेगी तथा इस प्रकार बात और पक्की करली जायेगी ।

इस पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दो हजार व्यक्तियों सहित सवाईसिंह मीरखां के यहां मूंडवा पहुंचा और जब ये लोग एक बड़े शामियाने के नीचे बैठकर मीरखां की फौज के लिये खर्ची देने बाबत उसके लोगों से बात-चीत कर रहे थे उस समय मीरखां वहां से बाहर निकल आया और उसका इशारा पाते ही चारों तरफ खड़े लोगों ने शामियाने की डोरियां काट दी और उधर तोपें छोड़ी गई जिससे लोग उसके नीचे दब कर वहीं समाप्त हो गये, बाकी के इधर उधर भाग गये । इनमें सवाईसिंह कई सरदारों के साथ मारा गया और उसने सवाईसिंह तथा तीन अन्य सरदारों के सिर बोरे में डालकर ऊंट पर जोधपुर भिजवाये । महाराजा इन लोगों से इतने रुष्ट थे कि उन्होंने उनके सिरों से सिरे बाजार गेंद खेलने का हुक्म दिया । पर, आउवा ठाकुर ने इसे अनुचित बताकर ऐसा करने से रोक दिया ।[1] इस घटना से पता चलता है कि उस समय किस प्रकार के षड्यंत्र चला करते थे और मीरखां जैसे सिद्धांत-हीन व्यक्ति का सहयोग लेने के लिये राजा लोग किस हद तक उससे समझौता कर लिया करते थे । सवाईसिंह बडा ज़बर्दस्त आदमी था, परन्तु राजनीति की

1. ख्यात 75-78

गलत चाल में आ जाने से ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्ति का जीवन यों ही समाप्त हो गया। इसकी महत्ता को प्रकट करने वाला एक दोहा इस प्रकार है—

मुरधर होगी मोडली, धर पर पड़तां धींग ।
सरगां लोगो सेहरो, सेर सवाईसींग ॥

अखैचंद और इन्द्रराज के बीच द्वेष के कारण राजनीति में बदलाव—

मुहता अखैचन्द और सिंघवी इन्द्रराज दोनों बराबरी के व्यक्ति थे। अतः सिंघवी इन्द्रराज के पास दीवान का पद और महाराजा की मरजी देखकर अखैचन्द बहुत जलता था और कोई चारा न देखकर वह महाराजा के गुरु देवनाथ जी के शरण में रहने लगा तथा वहीं से राजनैतिक चालें चलने लगा। इन्द्रराज सिंघवी जो कि बहुत अच्छा कार्यकर्त्ता था अपने काम में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं चाहता था अतः उसने महाराजा से अर्ज की कि अखैचन्द वगेरह कार्य बिगाड़ने की नियत से हस्तक्षेप करते हैं, आपका जैसा आदेश हो वैसा किया जाय। इस पर महाराजा ने स्पष्ट कर दिया कि तुम्हारे कार्य में अन्य कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकेगा और सारा कार्य मेरे आदेशों से ही चलेगा। इधर पिंडारी मेमदखा और मीरखां क्रमशः उनालू एवं सांवणू फसल पर गांव लूटते हुए खर्ची प्राप्त करने के लिये हर साल आ जाया करते थे। संवत् १८७२ में जब मीरखां खर्ची के लिए आया और उसे एकाएक रुपये नहीं दिये जा सके तब अखैचन्द ने यह ठीक अवसर देख कर मीरखां के कान भरे कि इन्द्रराज और देवनाथजी ही राज्य का कार्य देखते हैं और वे रुपया देने में आगा पीछा करते हैं, इसमें महाराजा की तरफ से कोई रुकावट नहीं है, अतः आप दोनों का सफाया करें तो हमेशा के लिये यह कांटे दूर हो जावें। मीरखां के यह बात जंच गई और उसने अपने २७ चुने हुए झगड़ालू सिपाहियों को आवश्यक निर्देश देकर किले पर भेजा। उन्होंने इन्द्रराज व देवनाथ (जो ख्वाबगाह के महल में बैठे हुए थे) का काम तमाम कर दिया। मानसिंह इस घटना पर बडे कुपित हुये और उन्होंने आज्ञा दी कि इन पठानों को जीवित नहीं जाने दिया जाय, परन्तु मीरखां जो फौज लिये खड़ा था उसने धमको दी कि अगर पठानों को मारा गया तो वह शहर लूट लेगा।

इन दोनों लोगों के मरते ही अखैचन्द की पूछ हो गई तथा उसने राजाराम और श्रीकिसन के साथ मिलकर मीरखां को खर्ची के रुपये देने का वादा किया। अब राजकाज मुहता अखैचन्द को सौंपा गया, और वह दीवान बना। लेकिन जब महाराजा को यह मालूम हुआ कि इंद्रराज एवं देवनाथ को मरवाने का षड्यंत्र अखैचन्द का ही था

तो वे उससे नाराज़ रहने लगे। ऐसी परिस्थिति देख कर गुलराज सिंघवी ने अर्ज करवाई कि इन्द्रराज वगेरह आपके आदेश से मारे गये हों तो मुझे कुछ नहीं कहना है. और यदि यह कार्य अखैचंद ने करवाया है तो मैं उसे दण्डित करने में सक्षम हूँ। महाराजा का इशारा पाकर वह दो हजार घोड़ों सहित जोधपुर पहुंचा और दूसरे दिन गढ़ में हाजिर हुआ तो महाराजा ने राज्य-कार्य उसे सौंप दिया। गुलराज और फतैराज राज्य का कार्य करने लगे। अखैचन्द भयभीत होकर आत्मारामजी को समाधी में जा छिपा। अब उसने भीमनाथजी से मेल-मिलाप बढ़ाया तथा इधर राजकुमार छत्रसिंह की माता चावड़ी रानी से यह कहलवाया कि देवनाथजी की इस प्रकार मृत्यु हो जाने पर महाराजा का मन राज्य-कार्य से विरक्त हो गया है। अतः यदि आप सहायता करें तो छत्रसिंह को युवराज पदवी दिलवाकर राज्य-कार्य उन्हें सौंपा जा सकता है और श्री हुजूर तो मालिक हैं ही सो वे महलों में आराम करते रहेंगे। इस व्यवस्था के हांमी कई चाकर भी अखैचंद के कहने में आ गये थे। महाराजा की इच्छा न होते हुए भी उनके गुरु भीमनाथजी के कहने पर उन्होंने छत्रसिंह को युवराज पदवी देने की स्वीकृति प्रदान करदी, परन्तु वे मन ही मन बड़े दुखी हुए। यह परिवर्तन होते ही अखैचंद ने जब गुलराज किले में आया तो उसकी हत्या करवा दी।[1]

इन घटनाओं के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि उस समय राज-वर्गीय लोग राजकीय सत्ता की लोलुपता में कितने विकल हो जाते थे और इसमें राजा की अकर्मण्यता के कारण राज्य-व्यवस्था एक खेल बन कर रह जाती थी। और तो और राजघराने के ज़िम्मेदार लोग भी इस नाटक के पात्र बनकर रह जाते थे।

छत्रसिंह की युवराज पदवी एवं राज्य-व्यवस्था में भारी परिवर्तन—

युवराज छत्रसिंह अनुभवहीन एवं अपरिपक्व युवक था और सदा मनचले लोगों से घिरा रहता था महाराज की उदासीनता के कारण उसे मनमानी करने का खुला अवसर मिल गया अतः वह राज्य-कार्य में अधिक रुचि न लेकर मदिरा-पान तथा वैश्याओं में रुचि रखने लगा। अधिकांश समय खेल तमाशों और आमोद प्रमोद में व्यतीत करने लगा जिससे कई लोग दुखी रहने लगे और कई व्यक्ति उससे अनुचित लाभ भी उठा रहे थे। जोशी शम्भुदत्त ने जो स्वामिभक्त और समझदार व्यक्ति था, महाराज कुमार को शिक्षा देने की कोशिश की पर उसका परिणाम उल्टा निकला और वह दण्डित हुआ। इसी बीच ठीक

---

1. ख्यात पृ. 99-110

अवसर देखकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी सरकार ने एक समझौते के अहदनामे पर व्यास विसनराम, अभैराम के मार्फत छत्रसिंह को स्वीकृति प्राप्त करली। इस अहदनामे की १० कलमें थी।

राजनीतिक उलटफेर के अलावा एक बात और हुई, महाराजा जहां नाथों के अनन्य भक्त थे वहाँ छत्रसिंह ने वैष्णव धर्म में अपनी आस्था प्रकट की जिससे नाथों का दबदबा कम हो गया। अपने बदचलन के कारण अशक्त होकर संवत् १८७४ में छत्रसिंह का देहान्त हो गया। मानसिंह को गद्दी के प्रति उदासीनता अभी वैसी ही बनी हुई थी। अतः स्वार्थी लोगों ने किसी तरह छत्रसिंह की मृत्यु को गोपनीय रखकर किसी दूसरे व्यक्ति को गद्दी पर बैठाने का विचार किया, पर ऐसा संभव नहीं हो सका। ईडर से किसी को गोद लाने की युक्ति भी पार नहीं पड़ी। रानियों के प्रयत्न करने पर भी महाराजा ने अपनी उदासीनता नहीं तोड़ी और न ही उनका अविश्वास दूर हुआ।[1]

उपर्युक्त घटनाएं जहां बड़ा कारुणिक प्रसंग प्रस्तुत करती हैं वहीं राज्य-कर्मचारियों की पदलोलुपता का हृदयहीन चित्र भी सामने आता है, यहां तक कि निर्दोष लोग भी इस बहाव में बह जाते हैं। इन परिस्थितियों में सामान्य प्रजा-जन की क्या हालत रही होगी यह भी कल्पनाजन्य अनुभूति का विषय है।

अंग्रेजों के प्रतिनिधि बरकतअली के आश्वासन पर उदासीनता छोड़ कर महाराज का पुनः राज्यकार्य सम्भालना—

पहले पहल जब बरकत अली महाराजा से मिला तो महाराजा ने उससे कोई बात नहीं की क्यों कि उसके साथ कई सरदार भी थे। परन्तु, दूसरे दिन जब वह अकेला महाराजा से मिला तो उस वातावरण के पीछे जो भी राजनैतिक गतिविधियाँ थीं उन पर खुल कर महाराज ने चर्चा की। इस पर बरकतअली ने आश्वासन दिया कि वे राज्य-कार्य संभालें, कम्पनी सरकार उनकी पूरी मदद करेगी और षड्यंत्रकारियों को सजा देने में उनकी सहायक रहेगी। तब महाराजा ने राजकीय वस्त्र धारण कर पुनः राज्य-कार्य संभाला। राज्य-कार्य अब भी अखैचन्द ही करता था और पोकरन ठाकुर सालमसिंह प्रधान था। महाराजा ने प्रारम्भ में सबके साथ अच्छा व्यवहार किया और सामान्य तौर से राज्य-कार्य चलने लगा। एक बार जब अखैचन्द मंडोर से लौट रहा था तब जिनसी लोगों ने खर्ची का तकाजा कर अखैचन्द को घेर लिया और इधर

1. ख्यात पृ. 111-122

किले में अनेक राज-कर्मचारियों को कैद करने का हुक्म हुआ जो षड्यन्त्र में अखैचन्द और छत्रसिंह के साथ थे। अनेक लोगों को जहर के प्याले दिये गये और कई लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया, जिनमें मुहता अखैचन्द भी शामिल था, यद्यपि उसने कहा कि मुझे जीवन-दान देदो तो मैं २५ लाख रुपये दे दूंगा। बिहारीदास खीची जो भाग कर खेजड़ला ठाकुर की शरण में चला गया था का भी पीछा किया गया और उस झगड़े में भाटी शक्तिदान घायल हुआ। उधर नींबाज ठाकुर सुरताणसिंह की हवेली पर फौज भेजी गई तथा सुरतांणसिंह लड़कर काम आया। सुरतांण की मृत्यु का समाचार सुन कर पोकरन व आसोप ठाकुर भी जोधपुर का परित्याग कर चले गये। रोईट का पट्टा भी खालसा कर दिया गया। संवत् १८८५ में मुहता अखैचन्द का घर भी लूटा गया और वहां से रु. १२९००० प्राप्त किये गये। नींबाज आदि कई ठिकानों पर भी फौज भेजी गई। इस प्रकार जिन कर्मचारियों को मरवाया गया उनकी जगह नई नियुक्तियां की गई और उन सब लोगों से बदला लिया गया जो छत्रसिंह को युवराज बनाने के पक्ष में थे या युवराज बनने के बाद जिनका व्यवहार मानसिंह की दृष्टि में अच्छा नहीं था।[1]

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानसिंह के घराने का मुत्सद्दियों के दाव-पेच और नाथों के अनुचित हस्तक्षेप के कारण विघटन हो गया था तथा उसके एकाएक राजकुमार की भी बड़ी दुखद मृत्यु हुई। इस उलटफेर में जहां अनेक राज्य - कर्मचारियों की असलियत सामने आई वहां अखैचंद तीसरे दीवान थे जो कि मारे गये। इस प्रसंग में एक कवि का कहा हुआ दोहा आज भी प्रचलित है—

अखा मत कर ओरतो, जीती गयो न कोय।
ईंदो तो इंद्रपोळों उतरै, (अर) गुलो गड़ों में जाय॥

इसके बाद राजकीय पदों में फिर से परिवर्तन किया गया और मुख्य पदों पर महाराजा ने अपने विश्वासपात्र व्यक्तियों को नियुक्त किया। दीवान का पद अब फतैराज सिंघवी को दिया गया। मानसिंह ने कुपित होकर आउवा, आसोप, नींबाज आदि ठिकाने जब्त कर लिये थे। उन ठाकुरों ने अजमेर जाकर पोलिटिकल एजेन्ट से अपने ठिकाने बहाल कराने का उज्र पेश किया जिसकी पैरवी काफ़ी समय तक चली और यह ठिकाने बहाल कर दिये गये।

इधर राज्य-कार्य में नाथों का दखल फिर से बढ़ने लगा और

---

1. ख्यात पृ- 122-139

लाडूनाथजी की आज्ञा से कई राज्य-कार्य होने लगे। लाडूनाथ जब संवत् १८८५ में गिरनार की यात्रा पर गये तब लौटते समय उनकी मृत्यु हो गई। इसी दौरान जोशी शंभुदत्त पर महाराजा की विशेष कृपा रही, इसने कई महत्वपूर्ण काव्य बनाकर महाराजा का सम्मान भी प्राप्त किया।

महाराजा मानसिंह पर अंग्रेजों की काफ़ी रकम चढ़ गई थी और इधर उसने नागपुर के शासक को भी शरण दी थी इसका जवाब भी मानसिंह से तलब किया गया।[1] इसी समय संवत् १८८८ में अजमेर स्थित पोलीटिकल एजेन्ट ने राजस्थान के सभी राजाओं का दरबार बुलाया जिसमें उदयपुर, भरतपुर, टोंक, कोटा के शासक शामिल हुए पर मानसिंह उसमें नहीं गया।

संवत् १८९१ में मालाणी के ज़मीदारों एवं भोमियों ने गुजरात आदि क्षेत्रों में लूटपात प्रारम्भ करदी थी तब अंग्रेजी सरकार के आदेशानुसार लाडनू ठाकुर और जालोर के हाकिम आदि को इन्हें दबाने के लिये भेजा और अंत में वाड़मेर में इन बाकी लोगों को पकड़ कर क़ैद कर लिया गया।[2]

संवत् १८९२ में महामारी का वड़ा प्रकोप हुआ जिसमें हजारों व्यक्ति मारे गये और इस समय गेहुं १ रु० का ३० सेर विकने लगा।[3] महाराजा ने जब अंग्रेजों की बकाया राशि नहीं दी तो उन्होंने उसके एवज में सांभर और नांवा आदि के ज़रीबे ज़ब्त कर लिये।[4] इसी दौरान साथीण ठाकुर शक्तिदान की अध्यक्षता में पोकरण आउवा, रास, नींबाज आदि अनेक ठाकुर अजमेर पहुंचे और सदरलैण्ड से मिले तथा उससे अनुरोध किया कि हमारी जागीरें पुन दिलावें और नाथों का उपद्रव बढ़ रहा है, अतः महाराजा को समझावें वरना इससे मारवाड़ को हानि होगी। इस पर सदरलैण्ड व केपटीन लडलो जोधपुर पहुँचे।

जब मानसिंह ने उनसे मुलाकात की तो इन सरदारों के ठिकाने बहाल करवा दिये गये, परन्तु जब सदरलैण्ड ने नाथों का हस्तक्षेप राज्य से हटा देने की बात की तो मानसिंह ने ध्यान नहीं दिया इस पर वे अजमेर के लिये प्रस्थान कर गये। महाराजा का वकील राव रिधमल साहब को मनाने गया परन्तु उसने कोई ग़ौर नहीं किया। इसी दौरान अंग्रेजों को सहायता से आसोप का घेराव भी उठा दिया गया और स्थिति की नाजुकता को देखते हुए महाराजा ने चढी हुई रकम के पेटे अनेक स्वर्ण-आभूषण आदि अजमेर भेजे।[5]

1. ख्यात पृ. 152 2. ख्यात पृ. 159 3. ख्यात पृ. 162 . ख्यात पृ. 162
5. ख्यात पृ. 164-168

महाराजा मानसिंह अपने राज्य से नाथों का हस्तक्षेप बन्द नहीं करना चाहते थे और अंग्रेजी सरकार के आदेशों की अवहेलना बराबर करते रहते थे जिसके फलस्वरूप सदरलैण्ड ने जोधपुर पर चढ़ाई हेतु वहां स्थित जागीरदारों से सलाह की। तब सभी जागीरदारों ने सहयोग देने का आश्वासन दिया, परन्तु भाटी शक्तिदान ने साहब से कहा कि हम आपकी चढ़ाई में तो साथ देंगे, किन्तु जो भी असली राजपूत होगा वह महाराजा की निजी सुरक्षा का अवश्य ख्याल रखेगा। इसके बाद ही सवत् १८६६ में भाटी शक्तिदान का वहीं देहान्त हो गया।

इसके उपरान्त राजस्थान के सभी रजवाड़ों को अजमेर से सूचना दी गई कि महाराजा मानसिंह अहदनामे के अनुसार बरताव नहीं करता है, और न चढ़ी हुई रकम का भुगतान ही करता है, ऐसी स्थिति में हम उस पर चढ़ाई करेंगे और जनता को भी आश्वस्त किया गया कि चढ़ाई के समय उनको अना-अवश्यक रूपसे परेशान नहीं किया जायेगा। अंग्रेजों की फौज जब चढ़ कर बनाड़ तक आई तो मानसिंह स्वयं अपने वकील एवं मुत्सद्दियों सहित सामने गया और सूचना भिजवाई कि उनका वकील सदरलैण्ड से मिलना चाहता है। इसके उपरान्त सदरलैण्ड से महाराज की भेंट हुई। उन्होंने कहा कि उनका इरादा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लड़ाई करने का नहीं है और जैसा वे लोग चाहें बंदोबस्त के बारे में सब बातें मान्य होंगी। इस पर वातावरण शांत हो गया और महाराजा ने किला खाली करके अंग्रेजों को सौंप दिया। अंग्रेजों की स्वीकृति से केवल १०० कर्मचारी महाराजा के पास रहे। इसके बाद अंग्रेजों और मानसिंह के बीच पुनः कौलनामे की लिखावट हुई।[1]

अब राज्य की व्यवस्था में अंग्रेजों का वर्चस्व बढ़ गया था अतः जागीरदारों के पट्टों के बारे में जो भी असंतोष था उस पर गौर किया गया और पट्टों में आवश्यक दुरस्ती की गई तथा राज्य की आमदनी व खर्च की सही जानकारी भी राज्य के रेकार्ड से पोलीटिकल ऐजेण्ट ने प्राप्त की। साथ ही जिन सिपाही लोगों की नौकरी की रकम चढ़ी हुई थी उसका हिसाब भी मांगा गया। जब कर्नल सदरलैण्ड वहां की व्यवस्था से संतुष्ट हुआ तब वह अजमेर लौट गया तथा वहां से जब वह कलकत्ता गया तब उसने महाराजा को किला वापस सौंपने का हुक्म भिजवा दिया, जिसके फलस्वरूप किला महाराजा को मिल गया और अंग्रेजी हुकूमत का दफ्तर सूरसागर में लगने लगा।[2]

यद्यपि अंग्रेजों के हस्तक्षेप से जागीरदार संतुष्ट हो गये थे और राज्य-कार्य भी व्यवस्थित ढंग से चलने लगा था लेकिन नाथों का दखल अब

---

1. ख्यात पृ. 169-185   2. ख्यात पृ. 186-213

भी बना हुआ था। कप्तान लडलो ने नाथों के प्रति कड़ा रुख अपनाया और उनके पास जो वधारे में जागीरें थीं वे ज़ब्त करली गईं। इसी दौरान पोलिटिकल एजेण्ट का भी पत्र आया कि नाथों का दखल राज्य-कार्य में समाप्त किया जाय और नाथों के पास केवल ३ लाख रु. की जागीर रहने दो जाय। व्यवस्था सुधारने की दृष्टि से केपटिन लडलो ने कई नाथों को क़ैद किया और दो नाथों को अजमेर भेज़ दिया।

जब मानसिंह ने अपना वर्चस्व ममाप्त होते देखा और नाथों की यह गति होती देखी तो उन्हें बड़ी ठेस लगी और वह खिन्न–चित्त होकर राज्य-कार्य से उदासीन हो गये। उन्होंने योगियों की तरह भगवा वस्त्र धारण कर लिये और गिरनार जाने का विचार किया तथा जोधपुर के निकट पाल ग्राम में डेरा किया। इस पर पोलिटिकल एजेण्ट पाल में महाराजा से मिला और उन्हें समझाया कि वे जोधपुर नहीं छोड़ें वरना उनकी मृत्यु के बाद उनका उत्तरा–धिकारी धौंकलसिंह हो सकता है, जिसे मानसिंह बिल्कुल नहीं चाहते थे। इस पर मानसिंह पाल से पुनः राईकाबाग आ गये और एजेण्ट के सामने अपने पश्चात् अहमदनगर से तखतसिंह को लाकर गद्दीनशीन करने की इच्छा प्रकट की। पोलिटिकल ऐजेण्ट ने उन्हें आश्वस्त किया कि यह सब उनकी इच्छा के अनुसार कर दिया जायेगा। इसके पश्चात् महाराजा वहां से मंडोर आ गये और संवत् १९०० भादवा सुद ११ को वहीं उनका देहान्त हो गया।

महाराजा के पीछे महारानी देवड़ोजी तथा कई पड़दायतें आदि सतियां हुई। इसके पश्चात् पोलिटिकल एजेण्ट तथा रानियों की इच्छा के अनुसार तखतसिंह को खलीते एवं पत्र लिखे गये और तखतसिंह को अहमदनगर से लाकर संवत् १९०० मिगसर सुदि १० को जोधपुर के राज्य का राजतिलक दिया गया। इसी समय धौंकलसिंह ने भी राजगद्दी के लिये अंग्रेजी सरकार के पास अपना दावा पेश किया, परन्तु उसका दावा निरस्त कर दिया गया और तखतसिंह हो जोधपुर की गद्दी पर बैठा।[1]

इन सब घटनाओं से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि मानसिंह का काल शांति का काल नहीं रहा और उस समय आर्थिक और राजनैतिक संकट भी बराबर बना रहा। जागीरदार भी संतुष्ट नहीं थे। इन सब परिस्थितियों का अंग्रेजों ने पूरा लाभ उठाया और उनका प्रभाव राज्य-कार्य में बराबर बढता रहा। अंग्रेजों द्वारा नाथों का प्रभुत्व कम करने का प्रयास और कानूनी व्यवस्था कायम करने की ओर ध्यान देने के कारण उन्होंने जागीरदारों व जनता का भी विश्वास अर्जित किया।

---

2. ख्यात पृ. 214-239.

उपर्युक्त घटनाओं से यह भी प्रतीत होता है कि राज्य-व्यवस्था में जो गिरावट आई उसका मुख्य कारण नाथ, चारण व मुत्सद्दी लोग थे। मुत्सद्दियों को राजनैतिक परिस्थितियाँ बदलने पर दण्ड मिल जाता था, परन्तु चारण व पुरोहितों का अनुचित दखल बराबर बना रहता था और राज्य-कोष का बहुत सा द्रव्य उन पर खर्च होता रहता था जिससे जनता बड़ी परेशान थी। एक कवि ने अपने दोहे में तत्कालीन परिस्थितियों पर जन-भावना के अनुकूल बड़ी ही मार्मिक टिप्पणी की है:-

चारण मरसी मुलक रा, पुरोहित पड़सी पार।
निरवंश जासी नाथड़ा, जद होसी निस्तार॥

जब हम मानसिंह के व्यक्तित्व और उसकी कार्य-पद्धति पर इस ख्यात के आधार पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि मानसिंह विकट परिस्थितियों में बड़ा धैर्य रखने वाला, अपने व्यक्तित्व से लोगों को प्रभावित करने वाला और संकट की घड़ी में साहस से काम लेने वाला व्यक्ति था। वह इतिहास, साहित्य तथा संगीत आदि ललित कलाओं का अच्छा जानकार था। कर्नल टॉड उससे मिला था और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसने यह सम्मति व्यक्त की थी —

"The biography of Man Singh would afford a remarkable picture of human patience, fortitude and constancy, never surpassed in any age or country .... I received the most Convincing proofs of his intelligence and minute knowledge of the past history, not of his own country alone, but of India in general. He was remarkably well read, and at this and other visits he afforded me much instruction. He had copies made for me of the chief histories of his family, which are now deposited in the library of the Royal Asiatic Society."[1]

यह हम पहले कह आये हैं कि महाराजा कवियों का बड़ा कद्रदां था और उसने कवियों को खूब प्रोत्साहित एवं सम्मानित किया जिसके फलस्वरूप राजस्थानी काव्य की उसके जीवन काल में खूब श्रीवृद्धि हुई और परम्परागत काव्य-धाराएं एक बार चरम सीमा पर पहुँच गईं। महाराजा स्वयं अच्छा कवि था और वह पिंगल व राजस्थानी दोनों में कविता करता था। उसके रचे हुए

---

1. Lieut-Col. James Tod: Annals and Antiquities of Rajasthan, Vol. I, P. 561-62; (1914 A. D.)

ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं ।[1] इसमें कोई संदेह नहीं कि परम्परागत काव्य शैली और रागरागिनियों में गीत लिखने में वह अपने समसामयिक बड़े से बड़े कवियों की तुलना में कई दृष्टियों से श्रेष्ठ कवि कहा जा सकता है ।

मानसिंह के भजन एवं अनेक पद आज भी जन-जीवन में प्रचलित हैं और वाणियों की तरह अनपढ़ लोग भी उन्हें गाते हैं । उसने अपने अत्यधिक साहित्य प्रेम के फलस्वरूप संस्कृत, डिंगल व पिंगल भाषाओं में ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह करवाया था जो पुस्तक प्रकाश' के नाम से प्रसिद्ध है ।[2]

मानसिंह चित्रकला का भी बड़ा प्रेमी था उसने ढोला मारू रा दूहा, पंचतंत्र तथा शिवरहस्य, रामायण आदि के आधार पर अनेक चित्र बनवाये जिनका राजपूत शैली में बड़ा महत्व है । वह भवन-निर्माण-कला का भी प्रेमी था । उसने महा मन्दिर तथा उदय मन्दिर में भव्य इमारतें बनवाई और जोधपुर के किले में जयपोल का निर्माण करवाया तथा कुछ महलों में परिवर्तन भी किये ।[3]

मानसिंह मुख्य रूप से कवि-हृदय था और उसका दृष्टिकोण धन सम्पदा को सदा कलाओं पर खर्च करने का रहा, जिससे वह राज्य के आर्थिक विकास में योगदान नहीं दे सका । फिर भी राजस्थान के समसामयिक राजाओं में उसका बड़ा प्रभाव था और अवसर आने पर वह उनके सामने झुका नहीं । अपनी काव्य-कला से वह लोगों को प्रभावित करना भी खूब जानता था और इस कारण से ऐसी परिस्थितियों में भी उसने जो मारवाड़ की जनता का सम्मान अर्जित किया वैसा यहां के बहुत कम शासक कर पाये ।

महाराजा मानसिंह ने लगभग ४० वर्ष तक राज्य किया अतः करीब अर्धशताब्दी का वृतान्त इस ख्यात में उपलब्ध होता है जो निश्चय ही उस काल को समझने में एक प्रामाणिक आधारभूत सामग्री का काम देता है ।

---

1. द्रष्टव्य—रसीले राज रा गीत, (परम्परा) सम्पादक डा. नारायणसिंह भाटी, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी जोधपुर ।

2. यह संग्रह अब जोधपुर महाराजा द्वारा किले में संस्थापित ''महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश" के रूप में अवस्थित है और इसे एक व्यवस्थित शोध संस्थान का स्वरूप दे दिया है जिसमें ऐतिहासिक महत्व की अनेक वहिएं व कागजात भी शामिल कर दिये गये हैं तथा महत्वपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन एवं कैटलोगिंग का कार्य भी चल रहा है ।

3. द्रष्टव्य—मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग 1, परिशिष्ट (कमठ री विगत) सम्पादक डा. नारायणसिंह भाटी; प्रकाशक-राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर ।

इस ख्यात का सम्पादन हमनें तीन प्रतियों के आधार पर किया है जिनका परिचय निम्न प्रकार है :—

क. रा. शो. सं. ग्रन्थांक १०६०६, पत्र सं. २१२, आकार ४०.६×२६ से.मी.
ख. रा. शो. सं. ग्रन्थांक १०६१०, पत्र सं. १२७, आकार ३६.५×२५ से.मी. (बही नुमा)
ग.[1] रा. प्रा. वि. प्र ग्रन्थांक २०१३०, पत्र सं. ५०४, आकार ५७×२१ से.मी. (बही नुमा)

उपर्युक्त प्रतियों में से 'क' प्रति (संवत् १९३१) को आधार मानकर अन्य दो प्रतियों का उपयोग पाठान्तर के रूप में किया गया है । ग्रन्थ मूलतः साहित्यिक न होकर ऐतिहासिक है । अतः तथ्यगत पाठ-भेद भी ग्रहण किया गया है और यही संभव भी था क्योंकि प्रत्येक ख्यात की लिखावट में थोड़ा बहुत अन्तर तो लिपिकर्त्ता की असावधानी से भी आ जाता है या कहीं कहीं उसी बात को कहने में शब्दों का उलटफेर कर दिया जाता है, पर तथ्य गत बात वही है जो मूल-प्रति में है । अतः पाठान्तर के लिये ही पाठान्तर ग्रहण करने की प्रणाली अपनाकर ग्रन्थ का अनावश्यक कलेवर बढाना समीचीन नहीं समझा गया । परन्तु, किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छोड़ा भी नहीं गया है । अन्य प्रतियों के अतिरिक्त तथ्यों के अव्यवस्थित वर्णन को कहीं कहीं सार रूप में भी पाद टिप्पणी में देना पड़ा है क्योंकि वे तथ्य इस प्रकार अस्पष्ट व बिखरे हुए रूप में थे कि उनको उसी रूप में ग्रहण करना न सम्भव था न उपादेय ही, पर ऐसे स्थल गिने चुने ही हैं ।

उपर्युक्त प्रतियां जिन संस्थानों से उपयोग हेतु मुझे उपलब्ध हुई उनका मैं आभारी हूं ।

इस ख्यात का सम्पादन-कार्य कई वर्ष पहले जब डा. फतहसिंह प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निदेशक थे, उनके आग्रह पर हाथ में लिया गया था । सम्पादन करने के पश्चात् भी अर्थाभाव के कारण प्रतिष्ठान की ओर से इसका प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ नहीं किया जा सका । इस प्रकार एक लम्बी अवधि के बाद यह ग्रन्थ प्रकाश में आया है और मुझे आशा है कि इस ग्रन्थ से न केवल इतिहास अपितु समाज शास्त्र, साहित्य एवं अन्यान्य क्षेत्रों के शोधकर्त्ता भी लाभ उठा सकेंगे ।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जहां अन्य प्रतियों के महत्वपूर्ण पाठभेद दिये गये हैं वहां आवश्यक शब्दार्थ भी लगा दिये गये हैं तथा परिशिष्ट में उस समय के कुछ महत्व पूर्ण पत्र भी प्रकाशित कर दिये गये हैं जिससे इस ग्रन्थ के

---

1 इसमें आदिनारायण से महाराजा मानसिंह तक राठौड़ शासकों का विस्तृत विवरण दिया गया है ।

समूचे महत्व को ग्रहण करने में पाठकों को सुविधा होगी और उस काल की स्थानीय हलचलों को जानने हेतु यह सामग्री उपयोगी रहेगी। ये पत्र पोकरण हाउस जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं, जिसके लिए हम पोकरण ठाकुर साहिब के अत्यंत आभारी हैं ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के निदेशक श्री जितेन्द्र-कुमार जैन तथा उपनिदेशक डा. पद्मधर पाठक का सहृदयता पूर्ण सहयोग मिला तथा प्रकाशन विभाग के श्री गिरधरवल्लभ दाधीच कनिष्ठ तकनीकी सहायक ने प्रूफ संशोधन में सहयोग दिया एवं मेरे अनुज श्री हुक्मसिंह भाटी ने इसकी नामानुक्रमणिकाएं बनाने का श्रम किया है जिसके लिये मैं इन सभी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

नारायणसिंह भाटी

——

विषय–सूची

महाराजा मांनसिंह री ख्यात

।। श्री जाळंधरनाथजी ।।

माहाराज श्री मांनसिंघजी समत १८३६ रा मिती माहा सुद ११ द्रुतीक गुरुवार रौ जनम नै समत १८६० रा मिगसर वद ७ जोधपुर गढ दाखल हुवा। समत १६०० रा भादवा सुद ११ सोमवार नै पाछली रात पोहोर एक रयां[1] मंडोवर में देवलोक हुवा[1]।

माहाराज श्री विजैसिंघजी रै माहाराज कंवार फतैसिंघजी पाटवी हा[2] सो चलियां पछै पासवानजी अरज कर नै कंवरजी सेरसिंघजी नूं जुगराज[3] पदवी दिराई थी। नै पासवानजी रा वाभा तेजसिंघजी चल गया तरै मांनसिंघजी नै पासवांनजी आपरै खोळै ज्यूं राखीया था[4]। सो सेरसिंघजी मांनसिंघजी दोनूं पासवांनजी कनै मांहलैबाग रहता था।

संमत १८४८ रा वैसाख में भींवसिंघजी मतै मालक वणीया[5] जिण समै पासवांनजी सेरसिंघजी नै मांनसिंघजी नै[2] जाळोर मेल दीना,[6] जाळोर पासवांनजी रै पटै थी। पछै सेरसिंघजी तो जालोर सूं परा आया,[3] जिणां नै भींवसिंघजी चूक करायौ[4] नै मांनसिंघजी जाळोर हीज रह्या।

जालोर गढ के महाराजा भींवसिंहजी द्वारा घेरा डालना

माहाराज श्री मांनसिंघजी जाळोर रा गढ में, नै बारै घेरौ माहाराज श्री भींवसिंघजी रौ। जिण फौज में मुसायब सिंघवी इंदरराजजी अर भंडारी गंगारांम, इंदरराज रो मांमो नै इंदरराज रौ छोटो भाई वनराज थौ। सो सैर जाळोर भिळियौ[7] जद कांम आयौ,[5] सो विगत इण हीज वही पोथी मैं मंडी छै।

---

१. ग. पोहर लारली मंडोवर रा बाग में देवलोक हुवा। २. ग. पासवानजी (अधिक)। ३. ग. 1846 रा उरा आया था। ४. ग. संवत 1851 में (अधिक)। ५. ग. सो छतरी जाळोर रै बारै कराई (अधिक)

---

1. मृत्यु हुई। 2. गद्दी के अधिकारी थे। 3. युवराज। 4. गोद के पुत्र की तरह रखा था। 5. अपने आप गद्दी के मालिक बन गये। 6. जालोर भेज दिया था। 7. शहर में फौज ने प्रवेश किया।

पछै जाळौर फौज रा मौरचा सांकड़ा[1]। माहाराज मांनसिंघजी पूरा तंग, खरच रसत री पूरी अड़चल[2]। तरै इंदरराज सूं वात ठहराई कै म्हें गढ खाली कर देसां नै राजलोकां सुधा[3] नीचै उतर जासां। सो आ वात समत १८६० रा आसोज सुदी १ री है। तरै सिंघवी इंदरराजी, भंडारी गंगाराम मालम कराई कै ठीक है, आप फुरमावसो ज्यूं करसां।

पिण माहाराज श्री भीवसिंघजी री पूरी तकरार है सो आप दिनां रौ करार पकौ फुरमाय दिरावै तो तोपखांनौ वंदूक गोळी वंद कर देवां। जद आप दीवाळी रौ वचन दियौ। जद इणां वात मांन लीवी। हमें साफ गढ छोडण रौ वीचारीयौ। दीवाळी नैड़ी आई। पछै श्री जाळंधरनाथजी रौ मिंदर जाळोर रा गढ सूं नजदीक है जठै माहाराज कदे-कदे दरसण करण नूं पधारै हा[4] सो आयस देवनाथजी जाळंधरनाथजी री सेवा करता जिणां नै श्री जाळंधरनाथजी री रात रा आग्या हुई कै माहाराज श्री मांनसिंघजी गढ छोडै है सो काती सुद ६ तांई गढ नहीं छोडै तो कदेई माहाराज श्री मांनसिंधजी सूं गढ छूटै नहीं। नै जोधपुर रो राज इणां नै मिळै। सो आ आग्या हूई जद आयस देवनाथजो आय मालम कराई। जद आयसजी नूं रुबरू बुलाया, अर फुरमायौ–ठीक है कै औ गढ जाळौर रौ म्हां सूं नहीं छुटै नै जोधपुर रौ राज म्हांनुं मिळ जावै तो म्हांरा राज में थांरो सीर घणौ रहसी।[5] नै थांरी आग्या सूं राज रौ कांम होसी। इणताछ[6] पकावट कर दीवी।

पछै दीवाळी नैड़ी आई तरै इंदरराज फेर मालम कराई कै गढ खाली कराईजे। जद आप फुरमायौ–के काती सुद ६ तांई फेर सुस्ता रहौ, पछै दिन काढसां नहीं। जिण री फेर पकावट कर दीवी।

महाराजा भींवसिंहजी की अचानक मृत्यु और स्थिति में परिवर्तन

पछै काती सुद ४ समत १८६० रा माहाराज श्री भींवसिंघजी जोधपुर में देवलोक हुयगया। तरै धाय भाई सिंभूदान, भंडारी सिवचंद, मोहणोत ग्यांनमल वगेरै सारा जिणां मनसोबो कर[7] सिंघवी इंदरराजजी नूं लिखीयौ–श्रीजी माहाराज तौ धांम पधार गया[8] नै लारै राजलोकां रै आसा है[9] अर सवाईसिंघजी पोकरण है जिणां नै वादै कासीद मेलीया[10] है सो थे हाल घेरो उठे

1. मोरचे नजदीक लगे। 2. तकलीफ। 3. राज्य कर्मचारियों तथा कुटुम्ब सहित। 4. दर्शन करने को पधारते थे। 5. मेरे राज्य में तुम्हारा (नाथों का) खूब बोलबाला रहेगा। 6. इस प्रकार। 7. मनसूबा करके। 8. स्वर्गवासी हो गये। 9. रानी गर्भवती है। 10. पत्रवाहक भेजा है।

है ज्यूं हीज राखजौ, सो सवाईसिंघजी आया फेर अठासूं लिखां ज्यूं कीजौ। सो अै समाचार इंदरराज, गंगाराम कनै काती सुद ५ पोता[1] तरै घणी फिकर कीवी। पछै पांणीवाड़ै गया,[2] भदर हुवा,[3] सारौ लोक भदर हुवा। गढ में पिण मालम हुय गई। मन में राजी तो हुवा पिण जांणै हमें कांई हुसी देखी जासी।

पछै पांणीवाड़ै गया सु इंदरराज गंगाराम पाछा डेरै आया। अर मामा भांणेज सला करी कै हमें आंपां नूं कांई कीयौ जोईजै ? जोधपुर वाळा तो लिखै हाल घेरौ है ज्यूं हीज राखजो नै पछै म्है लिखां ज्यूं कीजौ सो आंपां किसा उणां रा तावैदार छां[4]। आंपां तौ सिरकार रा चाकर छां अर जोधपुर वाळा लिखै है कै आसा है, सो देखी जासी, आंपां तो ईकवीस वरस रौ राजा माहाराज मांनसिंघजी छै अर माहाराज विजैसिंघजी रा पोतरा छै[5] सो हमें हक राज रौ इंणा रौ हीज छै। सो आंपां तौ इणां हीज सूं मिळौ अर जोधपुर ले हालौ। आज तांई भींवराजजी[6] रा हरांम खोराई री दिस्ट लगाई नहीं। लूंण री सरीगत[7] थी जितरै आंपां इणां सूं लड़ीया। हमें तो औ धणी नै आंपां चाकर, श्रीजी सारा थोक आछा करसी।

आ वात पकी विचार, ललवांणी अमरचंद इणां कनै रहतौ थौ तिण नूं गढ ऊपर माहाराज श्री मांनसिंघजी कनै मेल मालम कराई–माहाराज श्री भींवसिंघजी धाम पधारीया, इंदरराज गंगाराम मालम करावै है। तरै आप फिकर कीवी अर दोनां नूं रूबरू बुलाया सो इणों मुजरौ निजर निछरावळ[8] कर अरज करी कै आप जोधपुर पधारीजे। जद आप फुरमायौ कै थां दोय जणां रीज सला है कै सारां री है। जद इणां अरज करी कै जोधपुर में है जिणां री तौ सला दूजी है पिण म्हां दोनां री सला आहीज है। आप ताकीद कर फौज दाखल हुईजै अर दर कूचां[9] जोधपुर पधारीजै हमें जेज करणज्यूं है नहीं,[10] सारी वात ठिकाणै आय जासी,[11] किण री सला रो वटसी नहीं[12] म्है फकत सांमधरमां री अरज करां छां। आप मुलक मारवाड़ रा धणी छौ नै म्है चाकर छां सो म्हांरी बंदगी खांद देखीजै[13]। ताकीद करावै अर सारां नै खातरी

---

1. पहुंचे। 2. शोक की रस्म पूरी की। 3. बाल मुंडवाये। 4. हम कौनसे उनके अधीनस्थ हैं। 5. पौत्र। 6. भींवराज के वंशजों ने कभी स्वामी से धोखा नहीं किया। 7. नमक में हमारा हिस्सा था। 8. भेंट न्यौछावर आदि किया। 9. बिना कहीं ठहरे। 10. अब विलम्ब करने की स्थिति नहीं है। 11. सब परिस्थिति अनुकूल हो जाएगी। 12. किसी दूसरे की सलाह कारगुजार नहीं होगी। 13. आप स्वामी हमारी सेवाओं की परीक्षा कीजिए।

रा खास रुका लिखाईजै । जिण ऊपर आप इणां नुं खातरी घणी फुरमाई क थै पीढीयां रा सांमधरमी चाकर छौ ज्यूं हो थांरी बंदगी आज तांई चली आई है । अर थां जिसा जोधपुर रै घर में दूजा नहीं छै[1] । इण ताछ पूरी दिलासा खातर कीवी नै खास रुको लिख दीयो । तिण री नकल—

सिंघवी इंदरराज गुलराज मेघराज कुसलराज सुखराज कस्य सुप्रसाद वांचजो तथा थे श्री बाबाजी रा नै बाभेजो रा स्यांमधरमी चाकर हौ सो हमार म्हांनै जाळौर रा किला सूं सैर पधराया, जोधपुर रौ राज सारौ म्हांनै करायौ सो आ बंदगी थांरी कदे भूलसां नहीं । म्हांरो सदा थां निरंतर मरजी रहसी । थांरी बगसीगिरी नै सोजत सिवाणा री हाकमी नै गांव बीजवो, वणाड़ नै भुरायतां पटै है जिण में म्है कदेई तफावत पाड़ां नहीं[2] । नै म्हारा वंसत रौ[3] हुसी सु थांसूं तथा थांरा वंसत रां सूं तफावत करै तौ तथा म्है थांनै कदैई कैद करां तौ श्री जळंधरनाथजी इस्टदेव धरम करम विचै छै ।

औ रुको निवाजस रै राहा तांबापत्र ज्यूं इनायत कियौ है । थै श्री वडा माहाराज नै श्री बाभजी रा स्यांमधरमी नै हमें मन वचन काया करमां रा स्यांमधरमीज रहौ[4] । म्है इण रुका मैं लिखियो है जिण माफक आखर रौ हो और तरै जांणौ तौ अै विचे लिखिया इष्टदेव लगायत एक वार नहीं सौ वार है । थे घणी खुसी खातर राख जौ ।

इण ताछ पूरो दिलासा कीवी । पछै खास रुका जोधपुर रै गढ में था जिणां वगेरां नूं लिखिया । धायभाई सिंभुदांन वगेरै खास पासवांन अर मुंतसदीयां सारां नूं । जिणां नै लिखियौ कै श्री बडा माहाराज श्री विजैसिंघजी अर श्री बाभाजी रा सारा चाकर हौ अर थांनै वणाया है जिणी तरै थांनै वणीया राखसां,[5] किणी वात रौ फिकर जांणजौ मती । सारां नूं बरावर दरजे मुजब वरतसां । बिनां कसूर किणो नै बिगाड़मां नहीं[6] । इंदरराज नै बगसी अर सोजत री हाकमी, बींजवो गांव अर दासीवास अै म्है राज करां जितरै थांरै ईज रहसी । वगेरै घणी खातरी लिखी ।

---

1. जोधपुर राजघराने में कार्य करने वाले दूसरे नहीं हैं । 2. इसमें कोई हेर फेर नहीं करेंगे । 3. मेरे वंश का । 4. मन वचन कर्म से स्वामीधर्म का निर्वाह करने वाले रहो । 5. जिस स्थिति में हो उसी स्थिति में बनाए रखेंगे । 6. किसी को हानि नहीं पहुंचाऐंगे ।

भंडारी गंगारांम नूं खास रूकौ जिण में लिखियौ कै सिवांणा रो हाकमी नै गांव वणाड़ पटै वगैरै खातर लिखी ।

अर जाळोर री फौज में सिरदार वडोड़ा तौ हाजिर हा नहीं ।[1] नै चांदावत बाहादरसिंघ डावड़ा रा, चांदावत अमरसिंघ नोखेड़ा रौ, दुरजनसाल नोदनसिंघोत नै रुधनाथसिंघोत[2] मेड़तिया वगेरै आसांमी थो । तिणां नुं पिण खातरी रा रुका लिखाया ।

पछै इतरी वात कर इंदरराजजी कागद लिख कासीदां री जोड़ियां जोधपुर चलाई, तिण में अै सभी समाचार लिखिया । कागद थांरा आया अर थां सला लिखी सो ठीक पिण माहाराज मांनसिंघजी ईकीस वरस रा धणी माहाराज श्री विजैसिंघजी रा पोतरा बैठां[3] दूजी सला विचारौ सो आ वात ठीक नहीं । महाराज श्री भींवसिंघजी विराजिया जितरै तौ उणांरै लूंण री सरीगत सूं इणां सूं लड़िया अर हमें तौ म्हांसुं दूजी वात हुवै नहीं[4] अर कदास[5] थें मन में डर लावौ सो माहाराज श्री भींवसिंघजो गढ में विराजिया तौ श्री वडा माहाराज विजैसिंघजी रा चाकरां नै किणी नै विगाड़िया नहीं सो अै माहाराज ही किणी नै विगाड़सी नहीं[6] । तिण रै वचन रा खास रुका इणां कागदां में मेलीया है सो पौतसी । सो किणो वात रौ अंदेसौ[7] जांणजो मतो नै थां लिखोयो कै सवाईसिंघजी पोहोकरण है सो तौ आवैला हीज पिण आंपां मुसदी खास पासवांन हां जिणां ने तो खालसाही वरतण राखणी[8] ।

इण ताछ रा कागद लिख जोधपुर मेलीया । श्री माहाराज मांनसिंघजी नुं तळेटी[9] कचेड़ी रा मैलां दाखल कीया । सारी वात री त्यारी कराई । फौज रा डेरा सिरायचा खडा कराया । श्रीजी नै फौज में डेरां दाखल पधराया नै जोधपुर कागद इंदरराज गंगारांम रा पोता, सो पाछौ जवाब आयौ । समाचार वाचीया, धायभाइ सिंभुदांन, रांमकिसन मोहोणोत ग्यांनमल सिंघवी ग्यांनमल भंडारी सिवचंद वगैरै मुसतदी नै दीवांणजो सिंघवी जोधराज रा बेटा विजैराज नै कांम करता मूंढा आगे पंचोळी गोपाळदास वगेरै सारा जणां विचारी कै आंपां तौ लिखण में पाछ राखी नहीं थी[10] पिण करां कांई,

1. बड़े सरदारों में से कोई नहीं था । 2. रघुनाथसिंह मेड़तिया के वंशज । 3. मौजूद होते हुए । 4. अन्य कोई अनुचित बात मुझसे तो होती नहीं । 5. कदाचित 6. किसी को हानि आदि नहीं पहुंचाएँगे । 7. अंदेशा । 8. ऐसा मानकर चलना चाहिए कि भींवसिंहजी की मृत्यु के बाद गद्दी रिक्त हो गई । 9. किले के नीचे । 10. हम ने तो लिखने में कोई कमी रखी नहीं ।

फौज उणां रै हाथ नै मारवाड़ रा उमराव आउवो, आसोप, रास, चंडावळ, लांबीयां वगेरै छांडीयोड़ा[1] जिणां नूं इंदरराजजी धाटै उतार दिया था सो ऊवै कोटे बैठा है। सवाईसिंघजी पिण अठै नहीं सो जोर आंपणो क्युं ही लागै नहीं।

तरै हार खाय[2] पाछी लिखावट इंदरराजजी गंगारामजी नूं इणां जोधपुर सूं कीवी कै म्हारौ विचार धरियौ रह्यौ अर थांरै तुली ज्यूं थैं करी पिण वचन कथन तौ हमें पका लीजौ सो महाराज श्री भींवसिंघजी रा किणी चाकरां नूं विगाड़ै नहीं नै माहाराज श्री भींवसिंघजी रै खोळै तिलक विराजण रौ ठेराईजौ।[3]

पछै सवाईसिंघजी पिण पौकरण सूं आया। इंदरराज गंगारांम री सला पिण दाय[4] आई नहीं। पिण जोर किहूंई लागै नाहीं।[5] अर मन में आ जांणै के राज दोय वणीया राखणा।[6]

महाराजा मानसिंह का जालोर से कूच कर जोधपुर आना

पछै माहाराज श्री मांनसिंघजी रौ कूच जाळोर सूं हुवो सो दरकूचां गांव सालावास पधारीया। छोटा-मोटा सिरदार नजीक था तिणां नूं खास तथा हुकम रा कागद पोता, सौ तौ सारा हाजर हुवा। नै आगी दूर रा सिरदार छांडीयोड़ा कोई था जिणां नूं खास रुका पोता सुं वहीर हुवा।[7]

सिंघवी इंदरराजजी भंडारी गंगारांमजी मुख-मुसायब[8] सारै कांम री मुकत्यारी थी अर भंडारी धीरजमल परबतसर री तरफ फौज लीयां थौ सो पिण फौज ले आय हाजर हुवौ। अर कोटे सिरदार था सो सारा आय हाजर हुवा ने जोधपुर सूं ठाकुर सवाईसिंघजी पोहोकरण नै सिवनाथसिंघजी वगेरै सिरदार नै मुसतदी खास पासवांन वगेरै सारा गांव सालावास आय हाजिर हुवा। सारां नूं इंदरराजजी मुजरा कराया नै खातर न्यारा-न्यारा नूं दरजे मुजब कराई। महाराज सिगळां री ओळखांण पूछी।[9] पछै उठा सुं कूच हुवौ नै सैर नजीक आयौ तरै हजूर हाथी विराजिया नै लारै छंवर करण नूं पोहोकरण रा ठाकर सवाईसिंघजी बैठा। संमत १८६० रा मिगसर

---

1. राज्य छोड़कर बाहर चले गये। 2. मजबूर होकर। 3. ऐसा निश्चय करना कि मानसिंहजी भींवसिंहजी के गोद गद्दी पर बैठें। 4. पसन्द। 5. कुछ भी जोर नहीं लगता। 6. राज्य के दो टुकड़े करवा देना। 7. रवाना हुए। 8. प्रमुख मुसाहिब। 9. महाराजा ने सब का परिचय पूछा।

वदी ७ जोधपुर रै गढ दाखल हुवा। अर सवाईसिंघजी पोहोकरण सुं आवतां ही माहाराज श्री भींवसिंघजी रा राजलोक देरावरजो, तुंवरजी[1] सूं अरज कराय सींखाय-भखाय[2] कुबद कर[3] चौपासणी मेल दीया था। माहाराज श्री मांनसिंघजी पधारीयां पैहेला हीज।

माहाराज गढ दाखल हुवां पछै सारा सिरदार छांडीयोड़ा तथा घरै बैठा था सो सारा जोधपुर आय हाजर हुवा।

भींवसिंहजी की रानियों का चौपासनी से लौटकर तलेटी के महलों में आना

सारा जिणां मालम करी[4] कै माहाराज श्री भींवसिंवजी रा राजलोक चौपासणी परा गया है सो पराया राजसथांन में[5] आंपणे राज री वेढव दीसै[6] सो पाछा गढ दाखल कराईजै।[7] तरै हजुर फुरमायौ कै म्है तौ चौपासणी मेलिया नहीं, पैला परा गया।[8] सो थे सारा उमराव समजास करनै[9] लावौ। अर थे कहौ ज्यूं म्है खातर तसली कर देवां। तरै सवाईसिंघजी वगेरां अरज करी कै देरावरजीसा रै आसा रौ केवै छै सो कदास कंवर हो जाय तौ किण तरै करणौ? तरै माहाराज लिखत कर चौपासणी रा गुसांईजी विठलरायजी नूं सूंप दीनौ कै भींवसिंघजी रै कंवर हो जाय तौ राज उणां रौ नै म्है जाळोर पधार जासां।[10] नै बाई[11] हुई तौ जैपर उदैपुर परणाय देवां।[12]

पछै चौपासणी सूं जनांनां नूं लाया सो सवाईसिंघजी चांपावत कुबद फेर सीखाई तिण सूं परआरा तळेटी रा मैलां परा गया। सो माहाराज नूं आ वात मन मां आछी लागी नहीं पिण गम खाय गया। पछै ऊठै चौकी-पोरा रौ बंदोबस्त कराय दीयौ। नाजर गंगादास रौ चेलौ रांमदास रेहतो। फेर ही जनांना मांह सुं वडारणीयां वगैरे नुं कनै राख दीवी।

सवाईसिंघ सटपट[13] घालमेल[14] हरांमखोरो मन में पूरौ विचार लीयौ। नै मूंढा सूं केवै कै इंदरराज गंगारांम दोय जिणां रौ हीज कीयौ राजा किण तरै हुसी, ऊमराव थापसी[15] तिकौ राजा हुसी।

1. देरावर और तुंवर जाति की रानियां। 2. बहकाकर। 3. चालबाजी। 4. अर्ज की। 5. अन्य रजवाड़ों में। 6. अपने राज्य की प्रतिष्ठा कम होती है। 7. रानियों को वापिस गढ़ में बुलवा लीजिये। 8. मेरे आने से पहले ही चले गये। 9. समझा बुझा कर। 10. हम जालोर लौट जायेंगे। 11. लड़की। 12. शादी कर देंगे। 13. साजिश। 14. इधर-उधर के गुप्त प्रयास। 15. स्थापित करेंगे।

पछै मळ लाग गयौ[1] तिण सूं राजतिलक माहाराज मांनसिंघजी माह सुद ५ नूं वीराजीया। तरै सिलांमती में मांनसिंघ गुमांनसिंघोत केहण रौ हुकम फुरमायौ ।[2]

माहाराज जाळोर सुं पधारीया तरै राजलोक

१ वडा भटियांणीजी जैसलमेर रा रावळोतां री बेटी तिणां रै वाई सिरेकंवरजी।

१ चावड़ीजी तिणां रै कंवर छतरसिंघजी रौ जनम संमत १८५७ रौ।

माहाराज राजतिलक बिराजीया पछै ओहोदा दीया जिणरी विगत[१]

१ परधांनगी रौ सिरपाव अर हाथी चांपावत सवाईसिंघ सवळसिंघोत नूं, पटै पोहकरण

१ दिवांणगी भंडारी गंगारांम नै सिरपाव हुवौ

१ वगसी सिंघवी मेगराज अखैराजोत नूं सिरपाव हुवौ

१ सिंघवी इंदरराजजी मुसायब सो दिवांणगी बगसी रौ कांम करै, जिणां नै सिरपाव

१ सिंघवी गुलराज भंडारी धीरजमल नूं फौजबंधी रौ सिरपाव दे मेड़तै कांनी विदा किया[२]

१ सिंघवी कुसलराज वनराज रा बेटा रै जाळोर[३] री हाकमी

१ सिंघवी सुखराज वनराज रा बेटा रै सोजत री हाकमी

१ खांनसांमाई भंडारी भांनीरांम दीपावत रै

१ नागोर री हाकमी सिंघवी जीतमल जोरावरमलोत तालकै

---

१. ग. खिजमत दियां रीं विगत तफसीलवार।

२. ख फौजबन्दी में था। (अधिक)

३. ग. सोजत। (अधिक)

---

1. मल महीने के अशुभ दिन आ गये। 2. तात्पर्य यह कि भींवसिंहजी के गोद की तरह गद्दी पर नहीं बैठे।

१. व्यास पदवी प्रोहित चुतरभुज नै[1]

सिंघवी जोरावरमल रा बेटा हजूर कना सूं जाळोर थकां छोड माहाराज श्री भींवसिंघजी कनै उरा आया था सो जीतमल सुरजमल नै बुलाया सो तौ कदमां हाजिर होय गया अर[2] फतैमल सिंभूमल नै बुलाया सो डरता आया नहीं। सिंभूमल तो सीरौही री फौज में थौ सो ऊठो कांनी रय्यो नै फतैमल आऊवै रयौ।

श्री हजूर गढ दाखल हुवा जद सिरदारां री आसांमीयां
जोधपुर हाजर हा तिणां री विगत

खांप चांपावत —

१ सवाईसिंघ सबळसिंघोत पोहोकरण
१ ग्यांनसिंघ नवलसिंघोत पाली
१ इंदरसिंघ किलांणसिंघोत[3] रोहट
१ जालमसिंघ गिरधारीसिंघोत हरसोळाव
१ माधौसिंघ..........[4] सथलांणो
१ भारथसिंघ इंदरसिंघोत थांवळौ
१ माधौसिंघ सिवसिंघोत आऊवौ
—
७

खांप कूंपावत —

१ केसरीसिंघ रतनसिंघोत आसोप
१ बाघसिंघ सिवसिंघोत गजसीपुरो
१ विसनसिंघ हरीसिंघोत चंडावळ
१ सिंभूसिंघ कुसलसिंघोत कंटाल्यौ
—
४

---

१. ख. मारदळिये रा पुरोहित जाळोर रा घेरा में था
२. ख. सूरजमल (अधिक)।
३. ख. आईदांनोत (अधिक)।
४. ख. कलांणसिंघोत (अधिक)।

खांप जैतावत —

१ केसरीसिंघ..........बगड़ी
१ भांनसिंघ[1]..........खोखरो
—
२

खांप करणोत —

१ करणीदांन फतैकरणोत कांणांणा
१ पेमकरण घणसरांमोत बागावस
१ बादरसिंघ..........समदड़ी
—
३

खांप मेड़तिया माधोदासोत —

१ विड़दसिंघ बखतावरसिंघोत रीयां
१ भारथसिंघ फकीरदासोत[2] आलण्यास
१ इंदरसिंघ[3] बीजाथळ
—
३

चांदावत —

१ बाहादरसिंघ देवसिंघोत अलकपुरो
१ सिवसिंघ फतैसिंघोत बळूंदो
—
२

रायमलोतां में[4] —

१ मालमसिंघ लालसिंघोत रांहण रा विसनदासोतां में —
१ गोपालसिंघ वदनसिंघोत ओरूंदो

---

१. ग. भाँनीसिंघ । २. ख. कल्याणसिंहोत । (अधिक)
३. ख. कल्याणसिंहोत । (अधिक) ४. ग. रायपालोंत ।

गोयनदासोत रुघनाथसघोतां री खांप —

१ महेसदांन सालमसिंघोत मारोठ
१ दुरजनसाल नोदनसिंघोत मारोठ
१ सिवनाथसिंघ सूरजमलोत कुचांमण
१ जवांनसिंघ रिड़मलसिंघोत मीठड़ी
१ भैरुसिंघ सुजांणसिंघोत पांचवा
१ विसनसिंघ बाघसिंघोत पांचोतो
१ संपतसिंघ बखतावरसिंघोत लूंणवो
१ नोदनसिंघ मोतीसिंघोत नांवा
१ जोरावरसिंघ माधोसिंघोत सरगोट
—
९

केसोदासोत —

१ अजीतसिंघ सुरतांणसिंघोत बडू
१ मंगळसिंघ बखतावरसिंघोत बोरावड़
१ अमांनसिंघ बुधसिंघोत बूडसू
१ नारसिंघ·······मनांणो
१ कलांणसिंघ[1]··········तोसीणो
—
५

सुरतांणोत —

१ मालमसिंघ देवकरणोत गूलर
१ ठाकुर··········जावला
१ मंगळसिंघ नरसिंघोत भखरी
—
३

परतापसिंघोत —

१ दुरजणसिंघ वीरमदेवोत घांणेराव

१. केवल ख. प्रति में ।

१ विसनसिंघ सिवसिंघोत चांग्गोद
१ कल्यांणसिंघ[1]..........नारलाई
—
३

खांप ऊदावत —

१ ऊरजणसिंघ फतैसिंघोत रायपुर
१ अमरसिंघ जैतसिंघोत छींपियो
१ सुरतांणसिंघ सिभूसिंघोत नीवाज
१ जवांनसिंघ वनेसिंघोत रास
१ भांनसिंघ चांदसिंघोत लांत्रीयां
—
५

खांप करमसोत —

१ परतापसिंघ..........खींवसर
१ बेरीसाल..........पांचोड़ी
१ ठाकुर..........बेराई
—
३

खांप भाटी ऊरजनोत तथा जैसा —
ऊरजनोत —

१ खेजड़ला रा जसवंतसिंघजी
१ रामपुरा रा ठाकुर..........
१ जैसा लवेरा रा ठाकुर
—
३

खांप चहुवांण —

१ छतरसिंघ..........किलांणपुर रा राव पदवी माहाराज भींव-
सिंघजी री रजवाड़ में दुरजणसिंघजी छांड परौ गयौ तरै राव

१. केवल ख. प्रति में।

पदवी छतरसिंघ नै दीवी

१ सिंभुदांन.........संखवास रौ

—

२

खांप जोधा

१ इंदरसिंघ भींवसिंघोत खेरवो

१ पदमसिंघ सिवदानसिंघोत लाडणू

१ जालसिंघ ऊमेदसिंघोत[1] भाद्राजूण

१ ठाकुर.........दुगोली

—

४

डांडी रा गांव अजमेरा रा जठै दरबार रौ हाकम रैतौ—

अजमेरामें जगमालोत मेड़तीया तथा जोधा

१ भिणायत रा ऊदैमांणजी खांप जोधा

१ देवळीयारा अजीतसिंघजी जोधा

१ खरवे रा देवीसिंघजी जोधा

१ मसूदै भैरूंसिंघजी मेड़तीया जगमालोत

—

४

मुसायब मुतसदी

खांप सिंघवी —

१ इंदरराज भींवराजोत मुख मुसायब

१ मेगराज अखैराजोत बगसी

१ विजैराज जोधराजोत

१ ग्यांनमल फतैचंदोत

१ जीतमल जोरावरमलोत[2]

१ सूरजमल जोरावरमलोत

१ अमरचंद खूबचंदोत

---

१. ग. उदैभांणोत। २. ग. सूरजमलोत।

१ चैनमल फतैचंद रो पोतो
१ तेजमल सुमेरमल[1] रो बाप
—
६

खांप भंडारी

१ भंडारी गंगाराम दिवांण
१ भांनीराम दीपावत खांनसांमा
१ भांनीदास रै आगै दीवांणगी थी
१ सिवचंद सोभाचंदोत
१ चतरभुज सुखरांमोत
१ धीरजमल
—
६

खांप मोणोत—

१ ग्यांनमल सुरतरांमोत
१ भांनीरांम सवाईरांमोत
१ ....
—
३

खांप पंचोली—

२ जैतकरण, फतैकरण, रांमकरण रा बेटा
१ गोपाळदास हठीमलोत
२ सताबराय सिवकरण
—
५
१ खांप मुहता वागरेचो वांकीदास

खांप पोहोकरणा ब्रामण—

१ व्यास भाऊजी, मनरूपजी, दोलजी वगेरै
१ प्रोहित चुत्रभुज नु व्यास पदवी दीवी

---
१. ब. सूरजमलोत ।

१ जोसी[1] वालू रो बेटौ रांमदत
१ पणियों सिरीरांम[2]
२ नाथावत व्यास सेरजी, कुसलजी ।
२ फेर............
—
८

खांप आसोपा

१ आसोपा फतैराम
१ आसोपा सुरजमल
१ आसोपा जसकरण
—
३

खांप खास पासवांन--

१ खीची ब्यारीदास
१ धांधल ऊदेरांम
१ पड़ीयार भेरौ
१ पड़ीयार सिंभू
१ गैहलोत बिजयराज[3]
१ सौभावत दोढीदार भगांनदास
—
६

श्री हजूर सायबां साथे जाळोर सुं सिरदार आया

१ आहोर रौ ठाकुर चांपावत अनाड़सिंघजी री चाकरी घणी तिणां नै पटौ वधारौ दीयौ ।[1]

---

१. ग. चावटिया (अधिक) ।
२. ख. आईदांनोत दोढी री चाकरी में रहै (अधिक) ।
३. केवल ख प्रति में ।

---

1. पटे में गाँव बढाये ।

२ दासपां रौ ठाकुर, बाकरा रौ ठाकुर ।

३

मुतसदी पैला तो जोरावरमलोत सिंघवी रा बेटा जीतमल, फतैमल, सिभूमल, सूरजमल कनै जाळोर था पछे सिंघवी जोधपुर माहाराज भींवसिंघजी कनै आय गया था तरै इणां रा तालकदार फंट नै लारै बंदगी में रया जिणा री सारां री ईजत आजीवगा वधाई ।

वडा महाराज श्री धिर्जैसिंघजी री बखत में पासवांनजी री तरफ सूं ओहदेदार जाळोर में था उणां री विगत

१ पींपाड़ रौ चौधरो सवाईरांम, पींपाड़ पासवांनजी रे पटै थी जद चाकर रयौ । जिण नूं जाळोर री कारकूंनी दिराई थी, जिणरा बेटा मूंतो साथबचंद, मांणकचंद[1] वगैरै भायां नू वधाया । मुसायबी रै सिके कर दिया ।[1]

१ नागोर रा छांगांणी पोहोकरणा ब्रांमण । पनालाल, हीरालाल, छांगांणी कचरदास रौ बाप[2] काका पासवांनजी री सेवा में गवईया था जिणां रै जाळोर री पौतदारी पासवांनजी दिराई थी सो कचरदासजी रै व्यास पदवी संमत १८७६ में हुई, नै मुसायबी सरवोसरव[2] कीवी ।[3]

१ लोढो किलांणमल साहामल रौ ।

१ मुंहतो सुरजमल रै काकौ ।

१ सिंघवी जीतमल कनै छोटे दरजै थौ, तिण नूं वधाय दिवांणगी रौ काम करायौ ।

१ मुंहतो अखैचंद आहोर रा ठाकुर अनाड़सिंघजी रौ कांमदार थौ सो जाळोर थकां रुपियो पइसो वगेरै री बंदगी पोतौ ।[3] जोरावरमलोत सिंघवी जाळोर सूं जोधपुर आयां पछै घेरा में खरचो पुगाई वगेरै सला इणां री रही पछै जोधपुर आय अनाड़सिंघजी नू वधारौ दीनो तरै अखैचंद री वसी कढाय दीवी । मुलक में वोरगत[4] लाखां रुपीयांरी मांमलतां कीवी । मरजी पूरी रही । पछै संमत १८७४ में बेटा लिखमीचंद रै नांवे दिवांणगी हुई, महाराजकंवार छतरसिंघजी कनै लीवी ।

---

१. ख. ग. बखतावरचंद (अधिक) । २. ग. बाबा । ३. ग. 1890 तांई कीवी ।

---

1. मुसाहिबों के बराबर स्तर कर दिया । 2. पूरी तरह मुसाहिबी का कार्य किया । 3. रुपये पैसे की व्यवस्था करने की सेवा की । 4. रुपये का देन लेन ।

१ सिंघवी बखतावरमल हिंदूमल रौ बेटो ।

१ खीची चैनजी, जाळोर री किलेदारी ।

१ छांगांणी गोरधन, सनेई, सिवदत गवईयां में था सो इणां नै पिण वधाया[१]

१ दोढीदार नथकरण रांहणां रौ चाकर थौ, सिंघवी जीतमल कनै छोटै दरजै थौ, जिण नै दोढ़ी री दरोगाई दीवी ।

१ सोड सरूप रौ काको सिंघवी जीतमल[२] कनै घोड़ां में दरोगो थौ तिण नूं सिवांणा रै गढ री किलादारी नै गांव पटै दीयौ ।

१ प्रोहित चतरभुज जैचंदोत सिंघवी जीतमस, फतैमल कनै छोटे दरजै थौ । जिण नू वधायौ सो व्यास पदवी दीवी नै मुसायबी कीवी, मरजी घणी रही । बंदगी घेरा री सूं ।[1]

१ भाटी जसोड़ गजसिंघ रौ बडो भाई सुरतो जाळोर में सिलेपोसां में थौ सो घेरा में सुरतसिंघ वगेरै घर रा चार कांम आया[2] जिण बंदगी सूं मुसायबी कराई । आजीवगा गांव पटौ नै संमत १८१७ में गोरधनजी धांधल जोधपुर रा गढ री किलादारी रौ कांम कीयौ ।[३]

१ देवराजोत नथकरण रौ बाप पदमौ पासवांनजी कनै विरादरी में दरोगौ थौ सो बंदगी सूं संमत १८६५ रा में किलादारी जोधपुर री दीवी सी संमत १८७६ तांई तौ रही पछै माहाराजकंवार छतरसिंघजी री घालमेल में रह्यौ[3] तिण सूं संमत १८७६ में मरायौ ।

१ धायभाई देवौ सुरता रौ, कोटेचो खींयो ऐ माहाराज श्री गुमांनसिंघजी रा धावड़ था सो धायभाई री पदवी तो पैला हीज दीवी थी पछै संमत १८७७ में मुसायबी रैतौर आजीवगा दीवी, । पछै संमत १८६५ में जोधपुर रा गढ री किलादारी दीवी ।[४]

---

१. ख. तिणांरा बेटा मूळू आसू वीरमदत्त, बुधलाल हरू वगेरा (अधिक) ।
२. ख. जोरावर मल (अधिक) । ३. ख. गांव गोवां पटै, सला भांजवड़ मे रैता (अधिक)।
४. ख सो 1901 तांई रही ।

---

1. जालोर के घेरे में सेवा की इसलिये । 2. घर के 4 आदमी काम आये ।
3. षड़यंत्र में शामिल हो गया ।

पछै संमत १६०० में माहाराज श्री तखतसिंघजी कैंद कर रुपीया वालाख लीया १२५०००) ने जनांनी दोढी री दरोगाई खींया रै रही।

१ धांधल जीवराज, दांनो, मूळो वगेरै जाळोर में था तिणां नूं संमत रसोड़ो मांगळीयां सुं छुडाय नै दीयौ। पछै संमत १८७४ में माहाराज कंवार कनै रथा तरै १८७६ में सजावार कीया[1,1]

१ नाजर सिभुदास जाळोर में थौ जिण रौ चेलौ इमरतरांम जाट गांव सालावास रौ थौ तिण नूं संमत १८७७ में जनांनी दोडी री दरोगाई नै मुसायबी दीवी।[2]

१ नाई मयाराम, हेमो, सिंघवी जीतमल कनै रैता तिणां नूं वधाया नै अंगोळीया पदवी दीवी। आगला अंगोळिया हररांम किरतो रा बेटा संमत १८६४[3] में वेमरजी रा होय गया[2] तरै अंगोळीया पदवी इंणां नै दी।

१ दरजी चेलो, नांनग, मोती जाळोर री चाकरी, नै भूरे दरजी रा वेटा संमत १८६३ रा घेरा में हाजर नह रया तरां बेमरजी रही, तरै वागा रा कोठार री दरोगाई दरजी चेला नै दीवी। चेलो संमत १८७४ में महाराजकंवार कनै रयो तिण मुदे बेमरजी हुई। तरै कोठार री दरोगाई दरजी नांनग मोती नूं संमत १८७६ में हुई।

१ रावत वारीदार माहाराज भींवसिंघजी थकां रौ हौ सो संवत १८६३ रा घेरा में हाजर नह रयौ। तरै जाळोर री बंदगी सूं वारीदारां री दरोगाई कांना नै दीवी। पछै कांनो माहाराजकंवार कनै रयौ, तरै बेमरजी रही। तरै रांमसा रावत नूं वारीदारां री दरोगाई दीवी। संमत १८७६ में हुई, मरजी घणी रही।

१ भाराबरदार माळी लखौ। केताक अबदार अंगोलीया मांगळीया दरजी वगेरै आगला साबत रया तिके संमत १८६३ रा घेरा में हाजर नह रया तरै जाळोर री चाकरी वाळां नूं ओहदा दीया।

---

१. ख. मरादिया, घर लूटाया (अधिक)।
२. ख. सं 1882 कैंद हुवा रु. एक लाख दिया (अधिक)।
३. ख. सं 1863।

---

1. सजा दी गई। 2. कृपापात्र नहीं रहे।

१ राजगुरु प्रोहित..........नू जाळोर री वंदगी सूं प्रोहित पदवी नै गांव तिंवरी पटै दीवी ।

१ बारठ पदवी आगै मुंदीआड़ रा..........रै थी सो सावत थी ज्युं ही राखी ।

१ वरणसूर जुगतो जाळोर रा घेरा में थो तिणनूं लाखपसाव दियौ । पछै भैरा[1] सूं मरजी वधी तरै खटदरण रौ न्याव भोळायौ[1] । गाव पारलाऊ तांबापत्र दीयौ । श्री हजूर राजतिलक विराजिया जिण वखत वरणसूर जुगतै गुमानसिंघ विजैसिंघोत कै नै आसीस भरी,[2] पैला सिरदारां अरज करी थी जिणसुं भींवसिंघजी रा नांव सूं आसीस भणीजती[3] ।

सवाई सिंह पर महाराजा की कृपा कम होना तथा देरावर रानी के पुत्र होने की अफवाह फैलना

चांपावत सवाईसिंघ रा मन में हरामखोराई री रातदिन घाट घड़ वणी रहै तिण सूं श्री हजूर री मरजी तर-तर खंचती गई ।[4] तळेटी रा मेलां में माहाराज श्री भींवसिंघजी रा राजलोक रहै[5] सो देरावरजी रै कंवर हुवां रौ फितूर खड़ौ कर देरावरजी रौ भाई भतीजो भाटी छतरसिंघजी रै खेतडी मेल दीयौ कै भींवसिंघजी रै कंवर जनमीयौ है । तिण नूं डरता खेतड़ी लेगया है ।

पछै चांपावत सवाईसिंघ किरीया कर[6] चंडावळ रा ठाकुर कूंपावत विसनसिंघ नूं सिखाय-भखाय माहाराज श्री मांनसिंघजी सूं मालम कराई कै तळेटी रा मैलां में भाटी छतरसिंघ फितूर रौ तोफौ खड़ौ कर नै खेतड़ी लेगयौ है । चौफेर चौकी बैठी, कठै ही मारग नहीं पिण फितूर री बात खड़ी करी ।

---

१. ख. वडा वडा काम भैरजी रा हाथ सूं हुया । महाराज री खास खेळी में रैता । कोठे आई बात मालम करता । हजूर घणा राजी रैता । मुसायब सारसतै बरतता । भैरुदांन पछै चैनदान माथै मरजी वधी । भैरुदांन रा बेटा जादूदांन नै दूजै राजस्थान री बातां मुखजबांनी याद थी । तखतसिंहजी री मरजी पूरण (अधिक) ।

---

1. आशिश पढ़ी । 2. बोली जाती थी । 3. पट् दर्शन का न्याय उसके हवाले किया ।
4. महाराजा की कृपा शनै शनै कम होती गई । 5. रानियें रहती हैं ।
6. बात बना कर ।

पछै तर-तर सवाईसिंघजी सूं मरजी हजूर री खंचती गई। अर सवाईसिंघजी कुबदां[1] चलावतौ रयौ। पछै सवाईसिंघजी पोहकरण जावण री सीख री अरज कराई तरै हजूर खातरी फुरमाई पिण मांनी नहीं। पछै श्री हजूर मांहलैबाग दाखल थकां सवाईसिंघजी भाई पाली जिलारा आदमी पांचसौ सातसौ ले कमरां बंदियोड़ा सीख रौ मुजरो करण आया[2] सो बिनां मरजी सीख रौ मुजरो कर पोहकरण नू चढ गया[1]

कांमकरता तौ भंडारी गंगाराम सिंघवी इंदरराज मोणोत ग्यांनमल मुंहतो अखैचंद सूं पूरी मरजी सलाह इणांसूं घणी।

पछै चैत रै महोने हुलकर[2] फिरगियां सूं झगड़ो कर गस्त खाय गयौ।[3] पछै कूच कर मारवाड़ ऊपर आयौ। अजमेर रै गांव हरमाड़े डेरा हुवा। तरै लोढा किलांणमल नै उकील मेलीयौ, वात ठहरी। श्री हजूर रै नै हुलकर रै भाईचारौ ठैरीयौ। हुलकर रा कबीला चैनपुरै राखीया नै जसूंतरायजी रौ पाछौ कूच करायौ। फौज आई थी तरै सांमा सिंघवी गुलराज भंडारी धीरजमल नूं विदा किया था मेड़तीयां री आसामीयां साथे बळूंदा रा ठाकर सिवसिंघजी नूं पिण साथे विदा कियौ थौ जिण नूं दुसालो इनायत हुवौ थौ।

सिंघवी जोधराज रो बेटो विजैराज नास[4] वगड़ी जाय बैठौ रै जोधराज री खवास वांमणी रौ बेटौ सिवराज नूं नै सिवराज री बहू नै[3] ढूंढीया नै ढुंढणी कराय दिया तरै सिवराज नास हरसोळाव परौ गयौ।

पंचोळी गोपाळदास उण रौ कांमेती थौ तिण नूं कैद कर रुपिया ५००००) पचास हजार री कबूलायत कराई,[5] तिण में रुपिया बाईस हजार[४] भराय सांभर री कारनूनी दीवी।।[५]

---

१. ख. सो पोकरण में बेठा कुबधां सरू करी। कागद दुवाई तथा आपरा भला आदमी राजस्थान में तथा सरदारां उमरावां मुसद्दियां कनै मेल मेल धोंकलसिंघ फितूर रौ पंथ अगाड़ी चलावण रौ उदंगळ खड़ो कियो। चवड़ै आग हराम खोराई महाराजा मांनसिंघजी रौ मोड़ वांधियों। खटनटी सरदारां सूं फाड़ातोड़ा करणा सरु किया (अधिक)।
२. ख. जसवंत राय (अधिक)। ३. ग. माथो मूंडाय (अधिक)। ४. ख. 25 हजार।
५. नै फुरमायो इण नै बिगाड़णौ नहीं कारण कै संवत 1863 में जोधपुर भिळगयौ थौ नै धोकलसिंघ रै फितूर में जोधपुर रो डंड उगायौ नै सवाईसिंघजी नै खरची पुगाई नै गढ में हजूर में रसत पुगई (अधिक)।

---

1. अनीतिपूर्ण कार्य। 2. विदा होते समय नमस्कार करने आये।
3. शिकस्त खा गया। 4. भागकर 5. रुपये देने कबूल करवाये।

माहाराज श्री भींवसिंघजी रै राज में खरच जादै थौ सु घटाय कमतो कीयौ ।

जसुंतराय री फौज रौ कूच अठी नूं हुवौ थौ तरै श्री हजूर साहबां रा डेरा मेड़तीया दरवाजा बारै कीया था । संमत १८६० रा चैत मास में ।

देवनाथजी ने जाळोर में जलंधरनाथ जी का वरदान पहुंचाया था जिससे नाथों को मान्यता देना ।

आयसजी श्री देवनाथजी जलंधरनाथजी री आग्यासूं समाचार जाळोर में घेरा थका मालम कीया था जिण ही मुजब जालोर रौ घेरौ ऊठ गयौ अर जोधपुर रौ राज मिळ गयौ जिण सूं असवारी लेण नूं घणे इतमांम सूं[1] सोड-सरूप नूं मेलीयौ । गांव कायथां में आयसां रा घर सांवठा सांसण जठै इणांरा ही घर । देवनाथजी, हरनाथजी, सुरतनाथजी अै तो वडा भाई नै ओपनाथजी, भींवनाथजी छोटा, अै पांचूं भाई मेहेसनाथजी रा बेटा नै केसरनाथजी रा पोतरा सो पांचूं भाई जोधपुर आया जिणां रै सांमी असवारी श्री हजूर साय-ब री कोस अेक सांमा पधारीया ।[2]

सांमेळो कर[3] आयस देवनाथजी नूं सांमा बैसांणीया[4] ने दूजा भायां नै पालखीयां में बैसांण ले आया । सूरसागर डेरा दिया । देवनाथजी नूं गुरु कीया । घणौ मुरातबो बंधायौ ।[5] गुलाबसागर ऊपर[1] नाथजी रौ निज मिंदर करायौ । तिणरी सेवा सुरतनाथजी नूं भोळाई । नै नागोरी दरवाजा बारै माहामिंदर री नींव दिराई, कमठो[6] सुरु करायौ । इंणोरो खरच सांमठौ सरु हुवौ नै मुलक रा काम री सला पिण[2] सरू हुई ।

माहाराज श्री विजैसिंघजी रा कंवर सेरसिंघजी, सूरसिंघजी नूं माहा-राज श्री भींवसिंघजी गढ में चूक करायौ तरै खास पासवांन चूक में हाजर था तिणां नू कैद कर पछै मराया, माहाराज श्री मांनसिंघजी ।

---

१. ख. आथूनी तरफ (अधिक) ।
२. ग. इणां सूं (अधिक) ।

---

1. खूब अच्छे बन्दोवस्त के साथ । 2. एक कोस तक महाराजा उनके सामने गये ।
3. सम्मान स्वागत कर 4. अपने सामने हाथी पर बैठाया ।
5. उनको खूब इज्जत दी । 6. इमारतें बनने का कार्य ।

विगत—

१ ग्रहीर नगौ, तिण रै माथा में खीला ठरकाय[1] मरायौ ।

१ ....नूं हाथी रा पग रै बांद घींसाय[2] मरायौ ।

पछै संमत १८६१ में इतरा जणां नु कैद कीया । विगत—

१ भंडारी सिवचंद सोभाचंदोत

२ धायभाई सिभूदांन जगजी रौ नै रांमकिसन

१ सिंघवी ग्यांनमल फतैचंद रो बेटो ।

छोटा-मोटा फेर माहाराज भींवसिंघजी रा चाकर मरजी में था-व्यास सेरजी, कुसळजी, सो कितरांक नूं तौ कैद किया केईक नास गया। इंदरराजजी गंगारांमजी वचन दिराया था सु मन में संकीया ।[3]

मोहोणोत ग्यांनमल, मुंहतो ग्रखैचंद हस्तै मालम कराय सला में भिळिग्रो ।[4] पछै इंदरराज गंगारांम नू कैद तौ हुई नहीं ग्रौर ग्रौहदा सावत रया बगसी मेगराजजी रै नै सोजत री हाकमी इंदरराजजी रै नै सिवांणा री हाकमी भंडारी गंगारांम रै, पिण घणौं विसेस[१] हवेलीयां में हीज बैठा रहै ।[5]

पछै दिवांणगी रौ दुपटौ मोहोणोत ग्यांनमल नूं मूता ग्रखैचंदजी री ग्ररज सूं हुवौ संमत १८६० रा जैठ सुद..........मेड़तीया दरवाजा रै डेरां ।

मूता सायबचंद नूं फौज देनै मारोठ री तरफ विदा कीयौ । मारोठ रा महेसदांन री बेटी री सगाई खेतड़ी ग्रबैसिंघ रा बेटा सुं कीवी । व्यांव ठेरायौ जद श्री हजूर फुरमायौ के खेतड़ी व्यांव मत करौ, अै खेतड़ी वाळा फितूर[6] री सटपट घालमेल में है, सो सगपण छौडदौ ।[7]

तिण ऊपर महेसदांनजी कयौ कै सगपण तौ सगा है सो छोड़ं नहीं नै सवाय घालमेल राखूं नहीं ।[8] सो ग्रा वात मरजी में ग्राई नहीं, तरै महेसदांन गांव नूं चढ गयौ सु मारोठ घरे जाय बैठौ ।

---

१. ग. घणौं विसत रहै ।

---

1. कील ठोक कर । 2. घसीट कर । 3. मन में शंकित हुए । 4. उनकी सलाह के शामिल मिल गया । 5. परन्तु ये लोग प्राय: ग्रपनी हवेलियों में ही बैठे रहते हैं । 6. बनावटी हकदार धोकलसिंह 7. सम्बन्ध त्याग दो । 8. ग्रौर किसी षड़यंत्र में शामिल नहीं होऊंगा ।

पछै मुंहतो सायबचंद फौज लै गोड़ाटी[1] ऊपर गयौ तरै महेसदांन साफी कर लीवी[2] नै कह्यो हा[illegible] खेतड़ी नहीं करणो ।

पछै पांचवा कनै तथा छोटा मोटा दूजा ठिकांणां कनै रुपिया भराय ढूंढाड़ री गांव [illegible] लेजाय रुपीया ५०००) पांच हजार लीना ।

पछै तैसील कर सायबचंद मुंहतो पाछौ आयौ । पचपदरा री खिजमत सायबचंद रै नांवे हुई ।

पछै कितराक सिरदार माहाराज श्री भींवसिंघजी री वखत मैं[1] छांडीआ था[3] जिणां नूं पाछा बुलाया । पटा निवाजसां दीवी, तिण री इण भाँत विगत

१ आऊवो चांपावत माधोसिंघजी नूं लिख दीयौ ।[2] आऊवो पैली माहाराज श्री भींवसिंघजी चिरपटीया रा ठाकुर चांपावत सूरजमलोतां रै आगै थौ सो पाछौ उणांनै लिख दियो थौ सो चिरपटिया वाळां सूं जबत कर माहाराज मांनसिंघजी पाछौ माधोसिंघजी नूं लिख दीयौ । नै वालोतरो खालसै करीयौ थौ माहाराज भींवसिंवजी सो पाछौ लिख दीयौ । फेर भाईपा जिला रा गांव लिख दीया नै आऊवा रौ कोट सांतरौ[4] करावण नूं रुपीया २००००) बीस हजार दीना नै हाथी दीनौ ।[3]

१ आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी छांड नै गया था तरै माहाराज श्री भींवसिंघजो—आसोप गांव गजसिंघपुरा रा ठाकुर भारथसिंघ नूं लिख दीवी थी सो पाछी केसरीसिंघजी नूं लिख दीवी नै हाथी दीयौ ।

१ रास ठाकुर जवांनसिंघजी ऊदावत छांडीयौ तरै रास लोटोती रा जोधा जालमसिंघ नू लिख दीवी थी सो पाछी जवांनसिंघजी नूं लिख दीवी, वधारा में गांव केकीदड़ौ दीयौ अर सिरपाव में हाथी दीयौ ।

---

१. ग. 1859 (अधिक) । २. ख. परधानगी देवण री वचन थौ पणहाल सवाईसिंघजी रा मुलायजा सूं दीवी नहीं । भींवसिंघजी चिरपटिया रा ठाकुर नूं आउवो दियौ थो पाछो लियौ । ३. ख. निवाजस चोखी हुई । कुरब मुलायजो परधाँन सरसतै हुवौ खातर तसल्ली हुई । (अधिक) ।

---

1. गौडों की जागीरें । 2. अपनी सफाई पेश कर दी । 3. मारवाड़ छोड़ कर चले गये थे । 4. मजबूत ।

१ नीबाज ठाकुर सिभूसिंघजी रै माहाराज श्री भींवसिंघजी फौज लगाय गढ कोट पाड़ नांखीयो थौ ।[1] पछै संमत १८६० में भंडारी धीरजमल हस्तै वात ठैर सुरतांणसिंघजी नूं नीबाज, बरांठीग्रो, सोगास[1] भींवसिंघजी दीना था तिणां सुरतांणसिंघजी तूं गांव पटौ २००००) बीस हजार रौ फेर दीयो नै रुपीया ५०००) पांच हजार रै रढ कराय दीयौ । पींपाड़ खांगटौ दीया । खवासपुरो वधारा में लिख दीयो । नै हाथी सिरपाव दीयौ ।

१ लांबीयां खालसै हुय गई थी सो पाछी[2] लिख दीवी ।

१ रोहट खालसै थौ सो पाछौ[3] लिख दीयौ ।

१ चंडावळ जबत थी सो पाछी लिख दीवी नै गांव ग्रटबड़ौ वधारा में दीयौ ।

फेर ही छोटा मोटा सिरदार छांडांणे में था जिणां रा गांव जबत था सो पाछा लिख दीया ।

१ ग्राहोर ठाकर ग्रनाड़सिंघजी नूं गांव काळू[4] लिख दीवी नै फेर ही मोटा-मोटा गांव लाख १०००००) अेक लाख ऊपजतां रा[2] दीधा, नवो ठिकांणो बांदीयो,[3] जाळोर री बंदगी सूं ।

१ ग्रासीया चारण बांकीदासजी[5] नूं लाखपसाव दीयौ, गांव भांडीयावास रा वासी नै, फेर अेक दोय चारणां नै कड़ा मोती दिरीजीया ।

१ कुमलचंदोत भंडारी ऊतमचंद कवनां नै समजतो, सो श्रीनाथजी माहाराज री नाथचंद्रका वणाई, सो मरजी में ग्राई[4] तिण नूं ग्राजोवगा दीवी ।

---

१. ख. सोगासणी ।
२. ख. मोनसिंघ (ग्रधिक) ।
३. ख. इन्दरसिंघजी (ग्रधिक) ।
४. ख. मेड़ता रौ (ग्रधिक) ।
५. ख. फतेदांन रौ (ग्रधिक) ।

---

1. गढ ध्वस्त कर दिया था । 2. पैदावार वाले । 3. ठिकाना कायम कर दिया । 4. पसन्द ग्राई ।

१ मेड़तीयो रतनसिंघ पाड़सिंघोत श्रीहजूर री बंदगी जाळोर में कीवी तिण नै परवतसर री गांव पीपळाद, स्यामपुरो नै सुदवाड़ लिख दीया। पटो १५००० हजार पनरै री दीयौ।

१ चहूवांण स्यांमसिंघ श्रीहजूर रै मांमा जिणां नै गोढवाड़ री गांव जोजावर सोलंख्यां री थौ सो लिख दीयौ। पछै फेर केई दिनां पछै सिवांणा री गांव राखी लिख दीवी। ठिकांणो बांदीयो संमत १८६० में।

१ दासपां, बाकरो वगेरै नै अेक-अेक गांव फेर दीयौ। प्रगनै मेड़ता रौ गांव नथावड़ो तौ बाकरा रा ठाकुर नै दीयौ बड़गांव दासपां रा ठाकुर न दीयौ।

१ ऊहड़ जैतमाल नूं जाळोर री बंदगी में गांव कोरणो ईंदां कनां सूं छुडाय ठिकांणो बांद दीयौ। संमत १८६० में।

१ मोकळसर रा बालां नै वधारा में गांव..........सिणली वगेरै दीयौ।

१ खेजड़ला रा भाटी जसवंतसिंघजी माहाराज श्री भींवसिंघजी रा राज में सिरदारां सांमल छांडीया था जिण सूं पटो जबत हुय गयौ थौ। सो पाछौ लिखीजियौ नै जसूंतसिंघ रै छोटो भाई जोधसिंघ जाळोर रा घेरा में बंदगी में थौ नै साकदड़ा रा झगड़ा[१] में श्रीहजूर रा मूढा आगे कांम आयौ।[1] तिण रै बेटो सगतीदांन रै जाळोर रौ गांव दूंबड़ियौ तौ आगे थौईज नै हजूर गढ दाखल हुवा तरै संमत १८६० में गांव साथीण लिख दीवी। ठिकांणो बांद दीनो। पटो १५०००) पनरै हजार रो नै नगारो निसांण ईनायत हूवौ।

रांणियों के पट्टों की विगत

संमत १८६० में श्रीहजूर सायवां रौ व्यांव बीकानैर ईलाका रो गांव लखासर रा तुंवर वखतावरसिंघ री बेटी रौ डोळौ आयौ, सुंहुआै। नै तुंवरजीसा रै पटौ १००००) दसहजार रौ हुवौ। श्री वडा भटियांणीजी रै पटौ पनरैहजार रौ हुवौ गांव लांबो, बालो, लीखीजिया। नै कांमदारो ठेट्ठ[2] तो

१. ख. सिंघवी चैनकरण भींवसिंघजी री फौज लेय साकड़दै पौतो (अधिक)।

1. महाराजा की नजरों के सामने युद्ध कर, काम आया। . शुरुआत में।

साथै प्रोहित कनीरांम रै, भाटीयां रौ गुर थौ, पिण कांम में समझै नहीं तरै पोहोकरण छांगांणी रूपरांम राधाकिसन कनीरांम रा साळा था सो कांमदारा रौ कांम इणां नूं भोळायौ। पिण नांवो तो कांमदारा रौ कनीरांम रौ नै पंचोळी गुलाबराय आगै माहाराज भींवसिंघजी रा राज में जनांनौ चाकर थौ जिण नै पिण रूपरांम राधाकिसन रै सांमल राखीयौ।[१]

रांणीजी चावड़ीजी नूं पटौ कंवरजी छतरसिंघजी सूधौ,[1] पटौ हजार २००००) बीस हजार रौ दीयौ। कांमदार पंचोळी सुरजभांण।

माहाराज सेरसिंघजी रा राजलोक १ चवांणजी १ भटियांणीजी नै बायां २ था तिणां नै माहाराज भींवसिंघजी सलेमकोट में राखीया था सो श्री हजूर गढ दाखल हुवा तरै जनांना में पधराया।[2] चहुवांणजी श्रीहजूर रै मासीजी पिण लागता जिणां नै मासीजी पदवी दीवी नै पटौ १००००) दस हजार रौ दीयौ नै भटियांणीजी नूं पटो ५०००) पांच हजार रौ दीयौ कांमदारौ[3] मुहता बछराज रै।[२]

नाथजी के पट्टों आदि की विगत

श्री देवनाथजी माहाराज रै पटो लिखिजीयौ गांव चौपड़ौ वगैरे हजार १००००) दस रौ। सुरतनाथजी ओपनाथजी हरनाथजी वगैरै सारां रै पटा लिखीजीया गुर पदवी नै खेड़ै दीठ[4] रुपियौ कर दीयौ। उदांमो[३] हुई।

श्री हजूर री असवारी सूरसागर देवनाथजी कनै पधारै कदे-कदे देवनाथजी गढ ऊपर पधारै। निज मिंदर तो संमत १८६० में त्यार होय गयौ सो सुरतनाथजी नूं दीनौ अर महामंदिर रौ कमठौ सांवठौ[5] सो मारोमार घणी ताकीद सूं त्यार हुवौ। तळाव मांनसागर खुदीजणौ सरू हुवौ। और हरनाथजी

---

१. ख. पछै भटियाँणीजी ऊपर मरजी वधी तरै रूपरांम राधाकिसन रौ तौर वधियौ। जनांनी दोढी नाजर रौ हुकम इणां पर नहीं। पछै सिरैकंवर बाईजी नुं जयपुर संमत 1870 में परणाया तरै रूपराम व्यास फौजीरांम नुं दायजा में दिया(अधिक)।
२. ख. चवांणजी रौ कांमदारो (अधिक)।
३. ग. छदांमी।

---

1. कुंवर छतरसिंह सहित। 2. जनाने महलों में लाकर रखा। 3. कामदार का कार्य। 4. प्रत्येक गांव के अनुसार। 5. विशाल।

सारा भायां में मोटा जिणां रै जाळोर में मिरै मिंदर री सेवा भोळाई नै आयसां रा घर आगै जाळोर सैर रै बारै था जठै नवौ कमठौ करायौ। जाळोर रा परगना में खेड़ा दीठ रुपियौ हुवौ। नै आेपनाथजी नै जाळोर रौ गांव गोळ पटै दीयौ। सिरकारां न्यारी न्यारी बंदी नै भौंवनाथजी देवनाथजी रै भेळा हीज हा पछै संमत १८७८ में उदैमिंदर जुदौ ठिकांणौ बंदायौ[1] नै सैर वसायौ। महेसनाथजी रा वंस में[2] सारां नूं आजीवगा दे ठिकांणा वांद दीना।

वल्लभ कुल सम्प्रदाय की स्थिति

श्री वल्लभ कुळ रा मिंदर माहाराज श्री अभैसिंघजी रा राज में सेवा चौपासणी पधराई। माहाराज श्री विजैसिंघजी रा राज में सहर में सेवा इतरी ठौड़ पधराई थी। श्री बालकिसनजी सांमजी रै पटै आजीवगा। श्री नटवरजी रौ मिंदर श्री गोपाळजी री सेवा। श्री मदनमोहनजी री सेवा। श्री आचारजजी माहा प्रभूजी री सेवा।

श्री हजूर गढ दाखल हुवां पछै सारा मिदरां दरसण करण पधारै। समौ ऊछब हुवै।[1] तरै संमत १८६० रा वरस में तौ ही जिण मुजब रयां गयौ नै दरसणां नै सारां मिदरां असवारी पधारती। अेक दिन मदनमोहनजी रै मिदर दरसण नूं पधारीया सो श्री हजूर रै जोगेश्वरां रौ[2] इस्टभाव सो भभूत री टीकी श्रीजी साहबां रै थी सो गोस्वांमीजी माहाराज कयौ कै तुम माहाराज विजैसिंघजी रा पोता होय कर भभूत की टीकी देवौ सो हमारा ठाकुर तौ बालक है सो भभूत की टीकी से हमारे मिंदर में नहीं आवणा।[3] सो ऊण दिन सूं श्रीहजूर मिंदरां रा दरसण करण नूं गया नहीं नै कितोक गांव मिंदरां रै पटै रा था सो जबत कीया। बालकिसनजी रा मिंदर रा गांव वौयल ही सो जब्त हुई। नै रोजीनो उगेरे था[4] सो जवत हुआ।

श्री मदनमोहनजी री सेवा ले नै गुसांईजी श्री व्रज नूं गया नै गोद रा ठाकुरजी वीराजिया रया। सायर सूं रोजीनो कर दीया ५) पांच रुपिया और पटो जबत हुवौ।

---

१. ख. खेड़े दीठ रुपियो कर दीयौ (अधिक)।
२. ख. पांच भायां रा पांच ठिकाणा बंधाय दिया।

---

1. उस समय उत्सव होते हैं। 2. नाथों का। 3. बभूती (भस्मी) की टीकी लगाकर हमारे मन्दिर में नहीं आना। 4. रोकड़ रुपये वसूल करते थे।

श्री महाप्रभुजी री सेवा ले भट वहीर हवा। गोद रा ठाकुरजी विराजिया रया नै सायर सूं रोजीनो कर दीयौ। गोपाळजी री सेवा गुसांईजी ले वहीर हुम्रा लारै सेवा रही नहीं। सिंघवी मेगराजजी री हवेली है जठै रे वा विराजती, श्री नटवरजी री सेवा ले गुसांईजी गया। लारै सेवा चौपासणी रा गुसांईजी रै नेड़ा लागता सो ऊवे सेवा राखै। पटौ जबत हुवौ। श्री बाल-क्रिसनजी सांमजी री सेवा अठै विराजिया। वोहूजी माराज व्रजाधीसजी परदेस पधारीया गांव मालावस, वांकलीयां, लाड़वो, तौ पटै रया नै दूजा गांव हाँ सु उतरीया।[1] चौपासणी सेवा विराजी रही। विठलरायजी माहाराज चौपासणी विराजीया रया। श्रीहजूर वडा माहाराज विजैसिंघजी थकां चौपासणी गुरदुवारो, सो नांव सुणीया था, सो सूरपुरौ, चौपासणी, चोखां बुड़खीयो तौ राखीया नं वधारा रौ पटौ ऊतार लीयौ। चौपासणी असवारी पांच सात वार पधारी। मदनमोहनजी रा मिंदर में चटक हुवां पछै[2] नह पधारीया। श्री जोगेस्वरां रो भाव रुवाय में वधियो नहीं जरां पेली ऊजन माफक सारां रौ भाव थौ।

सिरोही के राव पर नाराजगी

श्रीहजूर साहब जाळोर था तरै जाळोर माहाराज भीवसिंघजी रौ घरौ थौ तरै सीरोही रौ राव उदैभांणजी नूं माहाराज श्री मांनसिंघजी केवायौ कै म्हांरा राजलोकां नूं थे कहौ तौ हाल केई दिन रै वास्तै[3] रैवास नूं उठै मेलां, सो राव नट गयो[4] कै माहाराज भींवसिंघजी म्हांसूं बेराजी हुय जावै। िण दिन सूं राव ऊपर बैराजोपो यौ। पछै राजलोक तौ सोरोही रो गांव अरटवाड़ै रया तथा मेवाड़ रौ गांव पदराड़ै गया नै सीरोही राव ऊपर वेराजीपौ धाप नै रयौ।[5]

जसवंतराय का वृत्तांत

जसूंतराय दिखणी फौज लै मारवाड़ में संमत १८६० में आयौ सो महाराज सूं भाईचारौ वांदीयौ नै अंगरेजां सूं डरतौ कबीला अठै चैनपुरै राख गयौ। जसूंतराय कनै फौज अेक लाख आसरै थी। जसूंतराय अरज कराई कै खिरणी रा रुपया सींधीये बादर नूं देता सौ हुलकर कह्यो मत दौ।

---

1. बाकी के गांव जब्त हुए। 2. अप्रिय घटना होने के पश्चात। 3. कुछ समय के लिये। 4. राव ने अस्वीकार कर दिया। 5. खूब नाराजगी रही।

माहाराज साहब री राज बरकरार सिरदार सारा मरजो में अेक सवाईसिंघजी पोहकरण बेठौ बोटा घड़[1] बाकी सिरदार सारा मेड़तीया दरवाजा बारै डेरा। श्री हजूर साहबां रा जठै[1] हाजर।

जयपुर के राजा जगतसिंह तथा उदयपुर के राणा भीमसिंह के लिये गद्दी का टीका

जपुर रा राजा प्रतापसिंघजी[२] पेला भादवा में धांम पधारीया ने टीके जगतसिंघजी बैठा। नै जोधपुर सु टीको नहीं मेलोजीयौ थौ सु पंचोळी सतावराय नै टीको दे जैपुर मेलीयौ नै जैपुर सूं टीको ले हळदिग्रो जोधपुर ग्रायौ। सदामंद रा[2] दसतूर मुजब घोड़ा हाथी वगेरै टीका रौ लवाजमो जोधपुर सूं गयौ नै जैपुर सूं ग्रायौ। माहोमाव दोनूं राजावां रै ईतफाक हूवौ।[3]

उदैपुर रा रांणा भींवसिंघजी पाट बैठा तिणां रै पिण टीकौ नहीं मेलीजीयौ थौ सौ पंचोळी फतैकरण नै टीको दे मेलीयौ नै ऊदैपुर सू टीको लेने ग्राया ग्रौर बीकानेर किसनगढ सूं पिण टीका ग्राया।[३] दिखणी दोलतराव रो टीको ग्रायौ नै ऊकील ग्रासोपो जसकरण थौ।[४]

घाणेराव के ठाकुर तथा सिरोही के राव पर चढाई

घाणेराव ठाकुर मेड़तीया दुरजणसिंघ जाळोर थकां हुकम मांनीयौ नहीं जिण सूं बेमरजी सूं फौज मेली कै घांणेराव बिगाड़ देणौ। सीरोही नै घांणेराव दोनूं ठिकांणां ऊपर बेमरजी सु फौजां मेलण री वाटघड़[4] श्रीहजूर रै रोजीना रहैबौ करे। सु मोणोत ग्यांनमल मूतौ ग्रखैचंद सो अे हाल दोनूं मुख मुसायब सो डणां री सला सूं दोनूं जगा फोजां मेलणी ठेहरी। सो सोरोहो तो ग्यांनमल रौ बेटो नवलमल मोहोणोत नै मूनौ सूरजमल जाळोरी

---

१. ग. मरजी रा ठाकर (ग्रधिक)।
२. ख. सं. 1861 भादवा में [ग्रधिक]।
३. ख. सो तीनूं रजवाड़ां जोधपुर जैपुर उदयपुर में मुख बरतै।
४. ख. उकीलायत रा काम ऊपर ग्रांदी-किसनकरण गयौ।

---

1. बुरी बातें विचारता रहता है। 2. परम्परा के ग्रनुसार। 3. सम्पर्क बढ़ा।
4. विचारों की उधेड़बुन।

चाकर, इणां दोनूं जणां नै फौजां सांवठी दे[1] विदा किया, संमत १८६० रा। जिणां साथे फौज में सिरदार आसोप, नीबाज,¹ रास,² लांबीयां,³ रीयां, बळूंदौ रांहण, वगेरै सिरदार। लारै तोपखांनो नगदी रो लोक पलटणां दस हजार फौज जोधपुर सूं सीरोही ऊपर विदा हुई। खरची खजांनै पोतै थी सु बेहब्रूंदी थी। माहाराज श्री भींवसिंयजी थकां सिंघवी जोधराज मोकळौ रुपीयो पैदास करीयो थौ।

फौज ले दरकूचां सीरोही री धरती में गया सो भोमीया, मैणा, भील भाखर चढ गया।[2] फौज रा लोकां सूं तथा⁴ मारग वहै तिणां सूं रोजीना चौट-फेट करौ पिण फौज सूं सांमा आय, झगड़ौ करै जिसी आसंग[3] सीरोही वाळां री नहीं। सीरोही रा उमराव गांव पाडीव, कालंद्री बुवाडो वगेरै इणां सूं झगड़ौ हुवौ नै उणां ऊपर रुपीयो ठेरीयो।[3] पछै फौज थेट सीरोही गई। तीन⁵ दिन लड़िया। पछै हलौ हुवौ, सिरोही भिळ गई, संमत १८६१ में⁶। साथै सिरदार हा जिणां में ठावा सिरदारां रै तौ लागी नहीं नै डेरा में बेली[4] हा जिणां में किणी रै अेक-अेक दोय-दोय रै लागी, कांम आया। रसाला रा लोक रै लागी, कांम आथा। घायल हुवा। नै सीरोही लूंटीजो। राव उदैभांण भाग नै भींतरोट रा गांवां में गयौ।⁷

सिरोही भिळी रा समाचार जोधपुर आया तरै खुसी हुई। झगड़ा में लागी तिणां री खबर लिरीजी। निवाजसां इनांम रौ लिखिजीयौ। जाळोर रा चाकरां में पेहली मूता सूरजमल रा हाथ सुं कांम सिध हुवो जिणरी श्रीहजूर में खुसी हुई।

घांणेराव फौज दे मुहता साहबचंद नूं, विदा कियौ। साथे फौज में सांमीयां री जमात मेवाड़ मांह सूं बुलाय चाकर राखीया। पालणपुर कांनी

---

१. ख. सुरतांणसिंह (अधिक)।
२. ख जवानसिंह अधिक)।
३. ख. भवानीसिंह (अधिक)।
४. ख. व्यौपारी लोग (अधिक)।
५. ख. ११ दिन लड़िया।
६. ख काती में (अधिक)।
७. ग. भीतरोट रा भाखरां आबूजी री तळैटी गयौ।

---

1. वड़ी फौज देकर। 2. पहाड़ पर चढ गये। 3. हौसला, शक्ति। 4. रुपया वसूल करना निश्चित हुआ। 5. साथ के लोग।

सूं आरबां नै बुलाय चाकर राखीया । फेर दूजो लोक सांवठौ अर छोटा-मोटा सिरदार साथे । फौज चोखी वणी । घांणेराव फोज लागी । सीरोही कायम हुई ।[1] नै घांणेराव फौज लीयां मूतो सायबचंद लड़तौ हौ नै घांणेराव रौ ठाकुर दुरजणसिंघजी तौ चल गया नै टाबर कबीलां नै ले अजीतसिंघजी मेवाड़ में हा । कितोक लोक ऊंचो ढांणां[2] में हौ नै नाळ रौ बंदोवस्त उणांरै हाथ थौ सु मगरा सूं आय फौज री कई[3] वगैरै चढै जिणां सूं झगड़ौ करै । नै घांणेराव में ठाकुर रै काको खवासणियौ[4] वीरमदे लड़ियौ, सो घणौ आछौ[5] लड़ियौ । श्री हजूर री फौज में खरची री बेबूदी घणी रही । सांमीयांरी जमीयत हमगीर होय हल्लो कीयौ सो पाछौ पड़ गयौ । तरै लोकां नूं हमगीर कर फेर हल्लौ कीयौ । सो दोनूं ही हल्ला पेस चढिआ नहीं ।[6] पिण मुलक रा धणी सूं पड़पै[7] जितरो ठिकांणा रौ दरजौ नहीं सो मोरचा सांकड़ा लागा । नित झगड़ा हुवै, गोळा बहै । नै मोटोड़ा सिरदारां री आसांमीयां तौ सीरोही कांनी री फौज में थी नै चांदावत जैतसिंघ¹ वगसीरांमोत नोखा रा ठाकुरां रौ छोटौ भाई.........रै गोळी लागी सो मास अेक पछै चलीयौ ।[8] नै पींडीया रौ चांदावत हणवंतसिंघ रै गोळौ लागौ ओर सांमीयां री जमात रौ लोक घासण मोकळौ आयौ । घेरौ मास रयौ । मांह सेमांन खूट गयौ । धांन मिळै नहीं, तरै गुळ गूंद नै अजमो[9] खाय नै दिन १७ सतरै तौ काढीया ।[10] बारै सुं रसत बड़ण देवै नहीं ।[11] तरै वात कर बारै नीसरीया सो मेवाड़ में गया, टाबर कबीला हा जठै । नै घांणेराव में श्री दरबार रौ हुकम हुवौ । कोट पड़ाय नांखीयौ ।

संमत १८५२ में माहाराज भींवसिंघजी भंडारी सोभाचंद नै फौज दे घांणेराव ऊपर मेलीयो थौ । महीनो दोढ तांई लड़िया[12] पिण घांणेराव भिळियौ नहीं, सो² कायम कीयौ ।[13] जिण में श्री हजूर में घणी खुसी हुई । चांणोद, नारलाई पैला हीज छूट गया था सो तीनूं ठिकांणां खालसै हुवा । नै मुता साहबचंद रौ छोटौ भाई माणकचंद वाहाली हाकम रैहतौ जिण नै घांणेराव राखियौ ।

१. ग. जैतारांम ।
२. ग. सो. हमार इयां ।

1. सिरोही में महाराजा का आधिपत्य हो गया । 2. पहाड़ पर का सुरक्षित स्थान । 3. फौज की टुकड़ियां । 4. खवास का लड़का 5. खूब बहादुरी से । 6. कारगुजार नहीं हुए । 7. मुकाबला करें । 8. मरा । 9. अजवायन । 10. 17 दिन तो निकाले । 11. अन्दर नहीं आने देते । 12. डेढ महीने तक लड़े थे । 13. उस पर अब अधिकार हो गया ।

आहोर ठाकुर अनाड़सिंघजी री हवेली आगे अठै नहीं थी नै आहोर रौ ठिकांणो ओछै दरजै थी नै अेक छोटी जायगा आऊवा रोयट री हवेलियां कनै नजीक थी जिण में आहोर ठाकुरां री लारली पीढियां में कदेक डेरौ हौ सौ ऊण ठौड़ लारला बरसां में श्री हजूर जाळोर विराजिया था नै श्री भींवसिंघजी री रजवाड़[1] में पोहकरणा ब्रांमण चतांणी व्यास अेक दोय जणा पटा कराय हवेलीयां कराय लीवी। ऊण जायगावां रौ इलजांम लगाय नै वीस पचीस घर चतांणी व्यासां रा जबरदस्ती सूं पाड़ नै हवेली री नींव दिराय दीवी। चतांणी व्यासां धरणा-धापा दिया[2] पिण अनाड़सिंघजी रा मुलायजा सूं सुणवाई हुई नहीं[1]

जोधपुर से अंग्रेजों के पास वकील भेजना दिल्ली

संमत १८६० में दौलतराव कना सूं अंगरेजां दिल्ली लीवी[2] नै पातसा अलीगैवर नू दिखणी खावण नै देता[3] जिण विचै अंगरेजां जादा रोजीनौ कर दीयौ।[4] जोधपुर सुं आसोपा फतेरांम नै अंगरेजां कनै दिली उकील मेलियौ।[5]

संमत १८६० रा भादरवा में जैपुर रा राजा परतापसिंघजी चल गया नै महाराज जगतसिंघजी राजतिलक विराजीया। ऊदैपुर रांणो भींवसिंघजी राज करै, बीकानेर महाराजा सुरतसिंघजी राज करै, किसनगढ महाराज किल्यांणसिंघजी राज करै, जैसलमेर में रावळ मूलराजजी था।

जोधपुर में महाराजा मानसिंह गद्दी पर बैठे उस समय परगनों पर अधिकार तथा अधिकारी

संमत १८६० में श्री हजूर गढ दाखल हुवा तरै इतरा परगनों में

---

१. ख. प्रति में (पृष्ठ 12-B) लिखा है कि अनाड़सिंह के अहसान से राजा दबा हुआ था, अतः चताणी व्यासों ने जव अरज कराई तो कहा कि अनाड़सिंह यदि किले में हवेली बनवादे तो भी उसको मैं कुछ नहीं कह सकता।

२. ख. प्रति में (पृष्ठ 12-B) लिखा है कि अंग्रेजों ने भरतपुर जीतना चाहा पर सफलता न मिलती देख पहले दिल्ली पर अधिकार करने की बात सोची और दौलतराव से 15 लाख रुपये दाम में दिल्ली खालसा करवाली। होलकर उनकी बातों में नहीं आया।

---

1. राज्यकाल 2. धरने वगैरा दिये। 3. खर्च के लिये रुपये देते थे। 4. अंग्रेजों ने उससे अधिक देना मंजूर कर लिया। 5. वकील बना कर भेजा।

अमल थौ नै इतरी खिजमतां दीवी [1] जोधपुर पैली भंडारी भांनीराम, गंगाराम रा बेटा रै थी नै ग्यानमल रै दीवांणगी हुई। तरै पछै हाकमी मोणोत भांनीराम सवाई-ांम रां रै हुई। सिवाणौ हाकम भंडारी गंगारांम तालकै। नै पचपदरा री हाकमी मुहता साहबचंद रै तालकै। पाली हाकम.........। बीलाड़े हाकमसिंघवी चैनमल। नागौर सिंघवी जीतमल तालकै। कोलियो ऊपादीया रांमदांन तालकै। मेड़तौ, हरसोर, भेरूंदो परगना तीनां में हाकम रहै। अेक हाकम रहै, सो पैली भंडारी धीरजमल तालकै रही। पछै मोणोत ग्यांनमल तालकै हुई।

परबतसर, तोसीणो, बंवाळ, वाहाल, चारू परगनां हाकम ललवांणी अमरचंद तालकै। मारोठ सांभर ऊपादीया रांनबगस तालकै। दौलतपुरौ पंचोळी जैतकरण तालकै। डीडवाणो, जैतारण, नांवो, सोजत, सिंघवी सुखराज रै नांवै, इंदरराजजी तालकै नै हाकमी रौ कांम गुलराजजी करै।

गोढवाड़ री परगनौ.........। जालोर सूराचंद सांचोर, सिंघवी इंदराजजी तालकै, नांवै कुसळराजजी रै नै कांमकरता भंडारी प्रथीराज।

परगनों फळोधी, सिवांणो, कोटड़ो, ऊमरकोट, परगनो डांडीयांणों हाकम मुंहतो सागरमल। विगत-मसूदो सुमेल, केकड़ी, खरवो, भिणाय रा गांव २६ बंटारा।

जैपुर इलाका रौ गांव नेवाई सुं आयस चोरंगीपावजी नै अठै बुलाया नै डेरौ तळेटी रा मैलां दिरायौ नै कुरब देवनाथजी सरसतै, नै पटौ पांच हजार रौ दियौ।

संमत १८६१ में हजूर रा डेरा मेड़तीये दरवाजा बारै। मेह पेला थोड़ा हुआ[2], जमांनो कम हुवो।[3] धांन रौ भाव रुपिया १) रो १२) आसरै विकियौ।

पछै संमत १८६१ में हजूर रा डेरा तौ मेड़तीयै दरवाजे बार नै हजूर मांहलेबाग दाखल रहै। घोड़ा फेरै, खांखर बावै। भंडारी गंगारांम सिंघवी इंदरराजजी आपरी हवेळीयां में कुदताई सूं[4] बैठा रहै। दोढी चोथै पांचवें आय जावै ने कांम सारौ मूता अखैचंद री सला सूं हुवै। अखैचंद ओदो

1. इस प्रकार लोगों को ओहदे आदि दिये।
2. प्रारंभ में वर्षा कम हुई। 3. फसलें कम हुई 4. मन में कुंद होकर, कुंठित होकर।

खिजमत लेवै नहीं, वोरगत सारी मारवाड़ में वधाई । मुंतौ सायबचंद घांणे-राव फतैकरन नै आयौ सु हजुर री मरजी सायबचंद नू बगसी देण री सो मूंतै अखैचंद अरज करी कै सवाईसिंध तौ बेराजी हुवोड़ा घरे बैठा हीज है नै बगसी गिरि सिंधियां सुं जवत हुवां सूं इंदरराज गंगारांम बेराजी हुय जासी सो हाल सुस्ताईजै ।[1]

व्यास चुतरभुज सूं निरंतर मरजी । दोढी रो दरोगो तौ सोभावत भगांनदास पिण कांम सारौ असायच नथकरण करै । भाटी गजसिंघ, सोड-सरूप सूं निरंतर मरजी । इणां तालके तबेला नै सिलैपोस ।

सिरोही के राव का उपद्रव

सीरोही रो राव ऊदैभांण भीतरोट रा गांवां में बैठो मुलक लूटै । मैणा, भील विगाड करै । मुलक आवादांन हुवै नही[2] अपूठौ[3] खरच लागै जाळोरी में बिगाड़ करै सो नित कूकां आवै[4] अठी नै घांणेराव, चांणोद, नारलाई अै तीनूं सरदार बारै मगरा में बैठा सौ गोडवाड़ वसण देवै[5] नहीं । सिरोही घांणेराव री नित फौज सूं लिखावटां आवै,[6] जिणसु श्री हजूर पूरो विचार ।

तरै दोढीदार नथकरण अरज कीवी कै श्री खांविदों री तपस्या सूं जाळोर रा चाकरां रा हाथ सूं अै दोय ठिकाणा कायम हुवा । पिण हमें सुधरियोड़ो कांम बिगड़ण रौ सरूप है ।[7] सो सिंधवी ईंदरराजजी, भंडारी गंगाराम पीढियां रा सांमधरमी चाकर है नै वरतीयौड़ा है[8] सो अै दोनूं परगना ईंदरराज गंगारांम तालकै कराईजै तौ ठीक है । सो आ अरज श्री हजूर रै मरजी में आई ।[9] तरै सीरोही तौ सिंघवी गुलराज नै भंडारी गंगारांम नै मेलीया नै घांणेराव सिंघवी ईंदरराजजी रा बेटा फतैराज रै नांवै हाकमी दीवी । भंडारी मांनमल बखतावरमल दोनूं भाई फतैराजजी रै साथै मेलीया नै सुरजमल मूंता नै मोणोत नवलमल अै सीरोही री फौज सूं जोधपुर आया । भंडारी गंगारांम सिंघवी गुलराज जाय थांणा घालण ज्यूं था जठै घालीया ।[10] सिरोही री धरती में अेक दोय ठौड़ झगड़ा में मैणा ने सजा दीवी नै रावजी रा लोक सूं चापटो हुवो[11] जठै दांत सीरोयां रा खाटा हुवा [12] चांदावत बादरसिंघ साथै, सो नित

1. थोड़ा विलंब करें । 2. मुल्क में लोक बसते नहीं । 3. उल्टा 4. रोज फरियादें आती हैं । 5. आबाद नहीं होंने देते । 6. रोज लिखित सूचनाएं आती हैं । 7 बिगड़ने की सूरत हो गई हैं । 8. आजमाये हुए हैं । 9, उचित जंची । 10. जहां थाने स्थापित किये जा सकते थे वहां थाने कायम किये । 11. सामना हुआ । 12. सिरोही वालों के दांत खट्टे हो गये ।

झगड़ा हुवै । कितराक सिरदार आसोप, नीवाज, रास, नै सीख हुई ने रीयां, अळूंदो, वगैरे मेड़तीया उठे रया ।

कितरोक लोक मेल दीयौ । जमा खरच बरोबर कर सीरोही रो बंदोबस्त कीयौ । रांहण री ठाकुर मालमसिंघ चलियौ । घांगेराव बखतावरमल प्रतापमल, मांनमल थांणै गया ।नै सांवठा घोड़ा राख बंदोबस्त कीयौ ।

सोजत री हाकमी ईंदरराजजी तालकै सो मगरा रा मेर [1] बिगाड़ घणौ करै । गांव मुरडावो[1] छोगांवी कचरदासजी तालकै हो सौ विगाड़ हुवौ । तरै मालम हुई तरै ईंदरराजजी नै हुकम हुवौ सो गांव केलवाद थांणौ वलाय पंचोळी अखैमल नूं राखीयौ सो बंदोबस्त कीयौ । मूंता सुरजमल रा काका रौ बेटो भाई बाहादरमल झगड़ौ हुवै जठै कांम आयौ ।

संमत १८६१ रा मिती सांवण सुद तीज ३ लोड़ी तीज[2] नूं श्री हजूर कुसी कीवी । सिरदारां नूं तथा खवास पासवांन वगैरे मुतसदीयां सारां गुलाब्यां पोसाखां इनायत कीवी । गिरदीकोट मैं घोड़ा दौड़ाया ।

आऊवा रा ठाकुर माधोसिंघजी चलियां री खबर आई ।[2] सिंघवी जोरावरमल रा बेटा जाळोर सूं भींवसिंघजी कनै आय गया था फतैमल सुरजमल तौ जौधपुर माहाराज भींवसिंघजी कनै आय गया था नै जीतमलजी नींबाज जाय बैठो थौ ।

महाराज श्री मांनसिंघजी गढ दाखल हुवां पछै याद फुरमाया सौ जीतमल सूरजमल तौ हाजर हुवा नै फतैमल आऊवै रयौ, आयौ नहीं । सिंभूमल आयौ नहीं । तरै विसवास ऊपजावण सारूं जीतमल नै नागौर री हाकमी दीवी । सौ संमय १८६१ रा माहा में जीतमल आपरा बेटा ईंदरमल रौ ब्यांव नागौर धाड़ीवालों[3] रै कीयौ । तरै श्री हजूर सायबां जांणियौ कै ब्यांव ऊपर सारा भेळा हूय जासी सौ कैद करणा । तरै धांधम ऊदेरांम नूं घोड़ा ५० दे नं मूंडवा रै मेळा रौ जाबतौ करण रौ बाहनौ कर नै नागोर मेलीयौ सो सिंभूमल

१. ग. मूंडवो २. ख. माधोसिंघजी रा बेटा बखतावरसिंघजी नुं खातर तसल्ली आछी तरै फरमाई कै मोसर आछी तरे कीजौ । ३. ग. धारीवाळां ।

1. मेर जाति के आदिवासी लोग । 2. छोटी तीज ।

फतैमल तौ व्यांव में आया नहीं नै बेटो गंभीरमल नै धीरजमल नै लुगायां[1] आई। सिरकार रा सारा व्यांव में आया भेळा हूवा । धांधल ऊदैरांम ही जांन में गयौ सौ बींद परणीज नै बारै आयौ[2] तरै ऊदेरांम सारां नै पकड़ लीया । सौ लुगायां टाबरां नूं तौ नागौर रा किला में राखीया नै जीतमल, सूरजमल, ईंदरमल नूं जौधपुर लाये सलेमकोट में जड़ दीयो । रुपया ६०००) पंचोळी तखतमल रै ठैरीया नै रुपिया ४०००) चार हजार सिरीचंद रै ठैरीया । ने रुपीया २०००) दोय हजार जेठमल रै ठैरीया नै रुपीया ७०००) सात हजार सिघवी दौलतरांम रै ठेरीया सो इणां नूं देवनाथजी छुडाया । इणां तालकदारां नूं तौ रुपीया ठैहराय छोड़ दीया नै जीतमल ऊपर बेमरजी जिणसूं रुपीया मांगीया नहीं बैठो राखीयौ ।

संमत १८६१ रा माहा मै सिरै मिंदर नाथजी रा दरसण करण नु जाळोर पधारण मुदै श्री हजूर साहबां रा डेरा बखतसागर हुवा ।

महामंदिर की प्रतिष्ठा

संवत १८६१ रा माहा सुद ५ नूं माहामिंदर री प्रतसटा हुई । सेवा पधरीजी । देवनाथजी रौ माहामिंदर में रैवास हूवौ । पछै देवनाथजी कनै नांव सुणावण रौ सिरदार मुतसदी खास पासवांन वगैरे हाजर था ज्यां नै श्री हजूर फूरमायौ । तरै सारा जणां नांव सुणीया नै भेटां कीवी[3] । दुपटा दिरिजिया नै चंडावळ रा ठाकुर[1] विसनसिंघजी अरज कीवी कै म्हैं तो श्री गुसाईजी महाराज रा नांव सुणीया है सौ दूजा नां कांनांव में सुणूं नहीं । तरै हजूर विसेस फुरमायौ जरां[4] सुण तौ लीना पिण डेरै आय सीतंग ऊठायौ[5] नै कटारी गळे घाली ।[6] अर चंडावळ परा गया । नै विसनसिंघजी सूं मरजी खंच गई । नै बिसनसिंघजी रौ छोटो भाई बगसीरांम ऊपर मरजी वधती गई । सो चंडावळ रा ठिकांणा में मालकी[7] बगसीरांम री हुय गई । विसनसिंघजी नै सीतंग ऊठण सुं कटारी गळै घाली ।[2]

---

१. ग. कूंपावत (अधिक) २. ख. मिनखआय पोंता । कटारी खोस लीवी । घाव केई दिनां सूं मिळ गयौ । पिण बात सीतंगरी कियां जावै, सेवा में बेसै सो मन आवै जणां ऊठै । घर रै कांम री भांजघड़ छोड दीवी रा समाचार श्री हजूर नै मालूम हुवा तरै आप हजूर बगसीरांम बिसनसिंघ रा छोटा भाई नुं बुलाय फुरमायी कै ठाकुर बिसनसिंघजी तो जांण नै सितग उठाय बैठा है सो जांणी जितै उतर पड़उतर थांरै जिमे है ।..........मालकी सारे कांम री बगसीरांम रै हुयगी । (अधिक)

---

1. औरतें । 2. दूल्हा शादी कर के बाहर निकला । 3. भेंट चढाई । 4. विशेष तौर से आज्ञा दी तब । 5. पागलों सा व्यवहार किया विक्षिप्तता प्रकट की । 6. कटारी गले में भौंकी । .7 अधिकार का चलन ।

देवनाथजी रा बाप महैसनाथजी रौ भंडारौ हुवौ[1] सु सारा मुलक रा जोगी भेळा हुआ । जगे दीठ[2] रुपिआ २) दोय दिखणा[3] रा दीया । सारा परगनां में श्री नाथजी रा मिंदर करावण रौ हुकम हुवौ । सोमवार रा सोमवार श्री हजूर असवारी कर माहामिंदर दरसण नूं पधारौ ।

धौकलसिंह के नाम से शेखावतों का उपद्रव

संमत १८६१ रा असाढ मैं खेतड़ी, झुंणुझं, नोलगढ, सीकर, वगैरे सारा सेखावतां नूं साथै ले भाटी छतरसिंघ, तुंवर मदनसिंघ धोकलसिंघजी रा नांव सूं डीडवांय जाव अमल कर लीयौ । सेखावत वगैरे चार हजार पांच हजार ५००० भेळा हुवा था सो डीडवांणो सैर लूंट लीनौ । नै डीडवांणा रौ हाकम नास नै दौलतपुरे परौ गयौ । अ खबर जोधपुर आई तरै दीवांण मोणोत ग्यांनमल ताकीद सूं फौज ले चढियौ । सारा सिरदारा हाकमीं नै डीडवाणे जावण रौ हुकम पोतौ ।

कुचांमण, मीठड़ी, मारोठ, वगैरे सारा फौज सांमल हुवा । बूड़सू रा अखैसिंघोत हमगीर रया । फौज नजीक पूगी तरै फिसादी डीडवाणो छोड़ नास गया, सो महाराज री फौज वाळां ऊणां री बहीर लूंटी । घोड़ा, ऊंठ खोसलिया । माहारोठ परबतसर वगैरे चारूं पांचू हाकम जाय डीडवांणा में अमल कीयौ । पछै ग्यांनमलजी दीवांण डीडवांणे पोतौ । आठू मिसलां रा सरदार उमराव ऊठै भेळा हुवा । अर फौज हजार तीस ३०००० भेळी हुई । शेखावतां रौ गांव साहापुरो[1] महाराज श्री अभैसिंघजी परणीया था नै झाड़ोद रा गांव दयालपुरौ, मावौ, साहापुरा वाळा नूं पटै दीया था, सो सीकर रो राव लिछमणसिंघजी साहापुरो छुडाय लीयौ थौ नै साहापुरै वाळो मौवणसिंघजी अठै बंदगी में रहतौ थौ[4] सो दीवांण ग्यांनमल नूं हुकम पोहोतौ कै साहपुरौ सीकर वाळां कना सूं छुडाय मोहणसिंघजी नै दिराय दीजौ । तरै डीडवांणा सूं फौज साहापुरै जाय लागी । दिन दस लड़ाई हुई । पछै हलौ कर भेळ दीयौ । मांय अेक भुरज सोर रौ थौ सो बास्ते[5] पड़ गयौ जिणसूं बुरज उड़ गयौ जिण सूं फौज रौ लोक घणो घायल हुवौ नै मूवा[6] । साहापुरा में अमल मोहणसिंघ रौ कराय दीयौ[२] ।

१. ग. स्यामपुरो । २. ख. सीकर वाळा न्हास सीकर गया । असबाव भेजावण दीनो नहीं । ग्यानमल री फौजआळो रै हाथ आयौ तथा मोहणसिंघ रै रयौ ।

1. उत्तर क्रिया की । 2. प्रत्येक को । 3. दक्षिणा । 4. यहां नौकरी में रहता था । 5. आग । 6. मरे ।

महाराज का जालोर नाथजी के दर्शनार्थ जाना

संमत १८६२ रा भादवा में श्री जलधरनाथजी रा दरसण करण जाळोर पधारीया। साथै हरसोलाव रा ठाकुर जालमसिंघजी नै जाळोर रा सिरदार। नै मुतसदीयां में सिंघवी इंदरराजजी था, हाजार च्यार लोक[1] सूं जाळोर पधारीया। दरसण कर भादवा सुद १४ पाछा जोधपुर गढ दाखल हुआ।

ठा० सवाईसिंघ का षड़यंत्र और कृष्णाकुमारी के टीके को लेकर बखेड़ा खड़ा करवाना

पछै जेपुर वाळा सूं सवाईसिंघजी घालमेल लगाई नै बीकानेर सूं न्यारी लगाई। दूजा किताक ठिकांणा पिण सवाईसिंघजी आदमी मेलीया। जैपुर में चांपावत उमेदसिंघ स्यामसिंघोत गीजगढ रा सवाईसिंघजी रा भाई ऊठै हाईज नै माहाराज जगतसिंघजी सूं सवाईसिंघजी री पोतरी सालमसिंघजी री बेटी री सगाई कीवी थी। ब्याव डोळो मेल जैपुर करणौ ठेरीयो। तरै जैपुर में उकील पंचोळो सताबराय थौ तिण जोधपुर लिख मालम कराई। तरै पोहकरण रा कांमेती हाजर था तिणांनूं फुरमायौ कै ठाकुर नै लिखो कै ठिकांणा रौ डोळो ऊठे गयौ नहीं चाहिजै[1]। पोहोकरण जांन बुलाय परणावौ। तरै सवाईसिंघजी पाछी अरज कराई खांनाजाद नै फुरमायौ सौ तौ ठीक पिण म्हारो तौ आदो चार जैपुर है। ऊमेदसिंघ रौ रैवास जैपुर हवेली में है सो ब्याव हवेली में करसी। पिण माहाराज श्री भींवसिंघजी री सगाई ऊदैपुर कीवी सो ऊवा सगाई हमें जैपुर महाराज जगतसिंघजी सूं करै है जिण री खांवद निगै फुरमाईजे[2]। तरै माहाराज सारा चाकरां नै पूछियौ आ बात किण तरै ? चाकरां अरज करी कै माहाराजा श्री भींवसिंघजी री सगाई ऊदैपुर करण री ठेराई थी पिण टीको आयौ नहीं नै भींवसिंघजी देवलोक हुय गया। तरै जैपुर पंचोळी सताबराय उकील थौ तिण नूं लिखीयौ कै ऊठे परउतर[3] करजै ने ऊदेपुर केवायौ कै आगे सगपण रौ अठै कैवीजीयौ है नै औ सगपण थे जैपुर करण तरै करौ हौ ? पिण उदैपुर वाळां केवणो मांनीयो

१. ख. चढियौ पाळो लोक २-३ हजार आसरै था।

1. ठिकाने की तरफ से डोला वहां नहीं जाना चाहिए। 2. जरा इस बात की तरफ भी ध्यान दें। 3. सवाल जवाब।

नहीं[१] नै टीकौ जेपुर नूं वहीर कर दीयौ। अै समाचार अठै हजूर में मालम हुवा, तरै सला मसलत तौ कीं हुई करी नहीं नै ताकीद कर संमत १८६२ रा माहावद ७ छड़ी असवारी[1] सूं अजांणचूक[2] कूच कीयौ सुं आठ तथा दस पोर में मेड़तै दाखल हुवा। मोंणोत ग्यांनमल दीवांण फौज लीयां सेखावटी में हौ जिण नूं लिखीयौ कै फौज ले जळदी सूं आवजे। नै सीरोही फौज थी तिणां नूं हुकम पोतौ[3] कै सीरोही रा राव नूं हाल बैठांण दीजौ नै फौज ले जळदी आवजौ। हूलकर जसंवतराय नै खलीतो दीयौ कै म्हांरै मावोमाव[4] में किस्सौ है नै थांसू म्हांरै दोस्ती है सो जळदी आवजो।

मारवाड़ में छोटा-मोटा जमींदार सारां नूं हुकम पोतो अर घोड़ा प्यादलां रा नांवा सजणा अरू हुवा। दिन १५ में पचास साठ हजार[२] लोक फौज भेळी हुई। मेड़तै उदैपुर सूं टीकौ वहीर हुवौ नै अजमेरा रा खारीढावा रा गांवां में डेरा हुवां री हजूर में मालम हूई। तरै पिंडां चढण नै त्यार हुवा तरै सिंघवी ईंदरराजजी मालम करी कै टीका रा लोक ऊपर खांवद कूच नहीं कीजै, चाकर नै हुकम दिराईजे, तरै सारा कांम री सूंपना[5] ईंदरराजजी नै हुई। सिंघवी ईंदरराजजी मुंहतो सूरजमलजी वगैरे आऊवा आसोप रा वगैरे सिरदार फौज हजार वीस विदा हुई, सो खारी रा ढावा रा गांव धनोप डेरा हुवा। उदैपुर रा टीका साथै लोक हजार अेक थौ सो भाज नै सीसोदीयां रौ गांव साहापुरा में वड़ गया। तरै ईंदरराजजी साहापुरा ऊपर कूच कीयौ तरै साहापुरा वाळां[३] कह्यो—टीकौ पाछौ ऊदैपुर परौ जासी[6], जैपुर जावै नहीं। सो साहापुरै वाळां जामनी[7] रौ रूकौ लिख दीयौ। तरै ऊदैपुर टीके वाळा पाछा परा गया। ईंदरराजजी पाछा हजूर आया। छोटा-मोटा जमींदार रोजीनदार नै परदेसी मोमनअली, मैमदखां, जीवणसेख, हींदालखां रौ गोळ रसाला पलटणां कर अेक लाख आसरै फौज भेळी हुई।

---

१. ख. प्रति (पृ. 15-) पर लिखा है कि यह सब षड़यंत्र पोकरण ठाकुर सवाईसिंह का था, वह अन्य राजाओं को मानसिंह के खिलाफ करना चाहता था और उसे अपदस्थ कर धौकलसिंह को गद्दी दिलवाना चाहता था। उसने जब अपनी लड़की का डोला जयपुर महाराजा को भेजने की बात की तो महाराजा मानसिंह ने इस कार्य को अनुचित कहा तब सवाईसिंह ने उत्तर दिया कि मेरा तो भाई जयपुर में रहता है सो उसकी हवेली में शादी करूंगा परन्तु राठौड़ों की मांग उदयपुर वाले कछवाहों को दे रहे हैं यह शर्म की बात है। इस पर बात बढ़ गई। २. ख. 10-15 हजार फौज। ३. ख. साहापुरा रै डेरो लगायौ। साहापुरा वाळा कनै तोपां थी नहीं सो सिटगया (अधिक)।

---

1. बिना फौज को साथ लिये। 2. अचानक ही। 3. हुकम गया। 4. आपस में। 5. सारा कार्य-भार सौंपा। 6. टीका पुन: उदयपुर को लौट जाएगा। 7. जमानत।

हूलकर जसुंतराय री फौज में लोढो किलांणमल उकील हौ जिण हस्तै जसुंतराय रा समाचार आया कै हूं आयौ, जेज जांणसी नहीं ।[1]

ईंदरराजजी टीका नै पाछौ घेर दीयौ नै माहाराज मेड़तै डेरा कीया । जिणसूं जैपुर रा माहाराज जगतसिंघजी पिण जैपुर रै बारै डेरा खड़ा कीया नै लोक भेळौ कीयौ । तरै जैपुर रै दीवांण रायचंद अरज करी कै राठौडां री फौज घणी है नै जसुंतराय पिण राठौड़ां रे सांमल हुसी सो आंपां पड़पां नहीं ।[2] जिण सूं माहाराज जगतसिंघजी आगो कूच कियौ नहीं ।

महाराजा मानसिंह व जगतसिंह में संधी का प्रयास

संमत १८६२ रा चैत मैं माहाराज श्री मांनसिंघजी मेड़ता सूं कूच कर डेरा गांव आलण्यावांस कीया । पोहोकरण रा सवाईसिंघजी तौ आया नहीं नै छोटा बेटा हिंमतसिंघजी नूं मेलीयौ । सिंघवी ईंदरराजजी अरज कर लल-वाणी अमरचंद नूं जैपुर मेलीयौ सो जैपुर जाय दीवांण रायचंदजी सूं वात कीवी कै आंपां राठौड़ कछवावा मावोमाव क्यूं मरां हां, सीसोदीया तौ आंपां सूं सदाई न्यारा रया है । आंपां अेक होय नीठ पातसाही गाळी[3] हैं, फेर ही अेक रहसां तौ तुरक दिखणी फिरंगीयां वगैरां नूं जवाब देसां । तरै दीवांण रायचंद कह्यौ–आपस में ईकळास[4] रहै तौ घणी आछी वात है । तरै अमरचंद अरज लिखी, तिण ऊपर हजूर फुरमायौ कै अेक किण तरै हुवां । माहाराज भींवसिंघजी री मांग जैपुर वाळां नूं परणीजण देवां नहीं अै समाचार ईंदर-राजजी अमरचंद नूं लिखिया । तरै अमरचंद रायचंद दीवाण सूं वात कर आ वात कर आ सला ठैराई कै ऊदैपुर री मांग दोनूं राजावां मांय सूं कोई परणै नहीं नै जैपुर रा माहाराज जगतसिंघजी री बैन री सगाई तौ माहाराज श्री मांनसिंघजी सूं करणी नै माहाराज श्री मांनसिंघजी रै वाई सिरेकंवर बाईसा री सगाई माहाराज श्री जगतसिंघजी सूं करणी । सो आ बात माहाराज सायबां री मरजी मैं आई । दुतरफा खलीता लिखीजिया नै अठा सूं टीकौ लै व्यास चुतरभुज नै आऊवा आसोप नीबाज रा सिरदार जैपुर गया । नै जैपुर सुं टीकौ ले हळदीयौ चुतरभुज नै सिरदार आया । दुतरफा सगायां रा टीका दिरीजिया अेकांनगी हूई । फौज रौ खरच सांवठो लागौ जिणसुं मूलक में दोय रुपिया घर बाब घाली । मुंहता अखैचंद री सजा सुं मेड़ता रा माजनां कने रुपिया अेक

1. मैं आया इस में विलंब मत समझना । 2. अपन उनका मुकाबला नहीं कर सकेंगे । 3. मुगल बादशाही को बड़ी कठिनाई से समाप्त किया । 4. एकता ।

लाख लीया जिणदिन सूं मेड़ता मांह सुं पैंतीस ३५¹ लखेसरी[1] हा सो निसरीया ।[2]

जसवंतराय होल्कर के डेरे पर मांनसिंहजी का मिलने जाना

हूलकर जसुंवतराय आयौ । गांव नांदरे नाके डेरो हुवा । जसुंवतराय रै सांमा पधारण रौ नै बराबर बैठण रौ ना फुरमायौ । पिण जसुंतराय तौ कह्यौ म्हांरै तौ माहाराज मालक है । छड़ा घोड़ां सु माहाराज रै डेरै उरौ आयौ । पिण मन में वेराजी । नबाब मीरखां नूं कुरब देण रौ ना फुरमायौ सु ऊही वेराजी हुवौ । दुनरफा सिरपाव मिजमांनियां मेलीजी । माहाराज जलूसी असवारी कर हूलकर रै डेरै पधारीया । हाथी रै हौदे बिराजिया । लारै खवासी मैं नीवाज रा ठाकुर सुरतांणसिंघजी बैस छंवर कीवी । नै जीवणी बाजू बगली हाथी ऊपर रीयां आऊवा रा ठाकुर बखतावरसिंघजी बैठ छंवर कीयो डावी बाजू बगळीं हाथी ऊपर रा ठाकुर विड़दसिंघजी बैठ छंवर कीयौ । सारा सिरदारां रै सिलै कीयोड़ी थी ।[3] जसुंतराय राठौड़ां री फौज देख राजी हुवौ । माहाराज सुं अरज करी कै ऊदैपुर परणीजण री मरजी हुवै तौ कूच कराईजे सु ऊदैपुर परणाय लाऊं ने जैपुर लेण री मरजी हुवै तौ कूच कराईजे सो जैपुर खाली कराय लेवां । तरै हजूर फुरमायौ-सोवेदार थांरो भरोसो इसौईज है, पिण दुतरफी दुरस्ती होय गई[4], फेर कांम पड़सी तौ थे किसा अळगा हौ[5] तरै जसुंतराय कह्यो-आप रौ रूको आवसी जिण बखत आयौरै सूं । पछै जसूंतराय केई दिन उठे रहै, दिखण री तरफ कूच कीयौ । श्री हजूर रा डेरा गांव नोद हीज रह्या ।

अठासुं ईंदरराजजी नै ऊठी नै दीवांण रायचंद दोनूं कारंदा अकल बंद था सो सारी बात दुतरफी अंवेर लीवी, सालीकै लगाय दीवी ।[6] जैपुर पैला ऊकील पंचोळी सताबराय थौ जिण नूं तौ माहाराज भींवसिंघजी रा फूलां साथे गंगाजी मेलीयौ ।[7] नै अमरचंद ललवाणी जैपुर रह्यौ अमरचंद माथे जैपुर माहाराज जगतसिंघजी री निरंतर मरजी, अमरचंद आदमी हुसियार सो जगतसिंघजी नूं हाथ कर लीया ।[8] अमरचंद तौ ईंदरराजजी ने लिखबो करै कै माहाराज श्री जगतसिंघजी सुं अरज करसां ज्यूं मंजूर कर लेसी । मूणोत

---

१. ख. 27 आसामी ।

---

1. लखपती । 2. वहां से अन्य स्थान पर चले गये । 3. बख्तर आदि पहने हुऐ थे । 4. दोनों ओर से सुलह हो गई है । 5. तुम कौन से दूर हो । 6. बात को ठीक रास्ते पर लगा दी । 7. भींवसिंहजी की अस्थियों को लेकर गंगाजी भेजा । 8. अपने वश में कर लिया, अपने अनुकूल कर लिया ।

ग्यांनमल री तरफ सुं मोदी दीनानाथ जैपुर रहै सो ऊणारी झूठी लिखावटां रा समाचार[1] ग्यांनमलजी मालम करवो करै, जिणसुं माहाराज मांनसिंघजी। जैपुर माहाराज री तरफ रौ चुस्तो पड़ियो ।[2]

सिंघवी इन्दरराज पर परदेसी द्वारा तलवार का प्रहार

सिंघवी ईंदरराज रै अेक परदेसी तरवार काढ वावण लागौ, ईंदरराजजी डेरा सुं निसर नाड़ौ खोलता था सो आदम्यां पकड़ लीनी । तरवार वाही सो छिलती[3] कांन रै लागी । इंदरराज रा वेली परदेसी ऊपर तरवार मारता हा सो इंदरराजजी मारण दीयौ नहीं । पकड़ाय लीयो। पछै अे समाचार श्री हजूर में मालम हुवा सो श्री हजूर सुख पूछण[4] इंदरराज रै डेरे पधारीया, असवारी कर नैं। पाटौ बंदायौ।[5] परदेसी नूं घणो ही पूछियो, ऊंचो-नीचो लीयौ ।[6] पिण सांच बोलियौ नहीं, आ कहो के म्हारा मन सुं हीज वाही ।[7] तरै श्री हजूर सुं तकरार घणी फुरमाई तरै इंदरराज अरज कर परदेसी नू सीख दिराई ।

सवाईसिंह को बुलाने के लिये नथकरण को भेजना

दोढीदार आसायच नथकरण नूं सवाईसिंघजी नैं लेण सारूं पोहोकरण मेलीयो सो सवाईसिंघजी तौ आया नहीं नैं ऊणां रै रजवाड़ां सुं खेवटां ने घोड़ा रजपूतां री साजत[8] देखी[१] नै ऊणां सुं वात कीवी । सो नथकरण पाछौ आय करज करी कै सवाईसिंघजी नै आप ज्यूं हुवै ज्युं लगाय लीजै,[9] अेक सवाईसिंघजी लाग जाय नै इंदरराज गंगारांम कांम करबो करै तौ आप विचारी जितरी ही वात हुय सकै है । जद मुंहते अखैचंद मोणोत ग्यांनमल अरज करी कै नथकरण तौ सवाईसिंघजी सुं मिळियोडौ है[10] तरै दोढीदार नथकरण नू कैद कर दीयौ ।

१. ग. घोड़ां वेली री साजां देखी ।

1. असत्य खबरें । 2. वहम हो गया 3. सटती हुई, छूती हुई । 4. स्वास्थ्य की जानकारी करने के लिये । 5. मरहम पट्टी करवाई । 6. अनेक प्रकार से सच बुलवाने का प्रयत्न किया । 7. मैंने अपनी ही इच्छा से वार किया । 8. रजवाड़ों से ताल्लुक व राजपूतों तथा घोड़ों की फौज की सुन्दर व्यवस्था । 9. अपनी तरफ कर लीजिए । 10. मिला हुआ है ।

संमत १८६२ जमांनो फोरो हुवो ।[1] नै संमत १८६३ लागो सोई जमांनो फोरौ हुवौ । सांवण में मेह री खंच[2] रही, फौज री खरज घणौ जिण सूं मुलक में बाव घाली[3] नै सेहरां में डंड नांखीयौ ।[4] जोधपुर में सिंघवी बाहादरमल डंड ऊगावै सो सैर मैं पुरी नवाई बोती । जोधपुर रा गढ रा जावता सारूं खीचो चैनो नै आहोर ठाकुर अनाड़सिंघ राजसिंघोत था। ।

कृष्णाकुमारी की सगाई को लेकर सवाईसिंघ का पुनः षड़यंत्र

चांपावत सवाईसिंघजी पोहोकरण बैठा कागद दुवाई कर वड़लू रा ठाकुर कूंपावत सादूळसिंघ नै फाड़ीयौ[5] नै रास रा ठाकुर ऊदावत जवानसिंघजी नै फाड़ीया । सादूळसिंघ रै बीकानेर राजा सूरतसिंघजी सुं ढब थौ ।[6] सो सादूळ-सिंघजी हस्तै बीकानेर रा राजाजी सुं पकावट कीवी । नै गीजगढ रा चांपावत उमेदसिंघजी हस्ते जैपुर रा राजा जगतसिंघजी नै कैवायौ कै आपरै ऊदैपूर सूं टीकौ आवतो सु माहाराज मांनसिंघजी पाछौ फिराय दीयो, जिणसुं जिहांन मैं आपरी घणी हळको लागी है सो म्हे कहां ज्यूं आप करौ तौ आपरौ आंटो[7] म्हैं लिराय देवां । तरै माहाराज जगतसिंघजी कही-ठीक है, ठाकुर सवाईसिंघजी अठै आवै नै धरम-करम देवै[8] तौ ठाकुर कैसी ज्यूं म्हांको गोविंदजी करलेसी ।[१]

मांनसिंह का जोधपुर को कूच और इन्द्रराज आदि को कैद

मोणोत ग्यांनमल रै दीवांणगी मुहता अखैचंद री सला भेळी । सला भूता सुरजमल री नै सायबचंद पिण सरफराज । सो इणां कांमेतीयां अरज करी कै जैपुर फौज भेली हुई थी सो तौ बिखर गई नै आपस में सगपण होय सफाई होय गई । नै हूलकर[9] आंपणे हाथ में है[२] हमैं हकनाख[10] अठै बैठा खरच

---

१. ख. अर ठाकुरां सवाईसिंघजी मंजूर कर लीवी कै हूं जयपुर जाय हाजर होसूं अर सारी बात री पकावट कर देसूं; सो बेगो ही हाजर हो सूं ।

२. ख. गीत: पती जोधांण सुं हूंत जैपुर पती, अड़ी मत आणो रोळै ।
वींद विन रही वर विन बीनणी, भूप सूं भूप अड़ै मत भोळै ।।
मांन श्री कुस्ण अवतार मन मांनजै, कैसी जगत मन खता खासी ।
पैदलां हैदलां हांय विन दुलहणी, आया सिसपाल जिम आप आसी ।।
अड़ी नव कोट रो नाथ आयो अडर, आमेर करै वात अनड़ी ।
सेवरा बीच कोई उपदरो पेरसो, वेलसो रात रा हाथ वनड़ी ।।
कूरमां छात कहौला किणी कह्यौनीं, धजाबंद मांन सूं पिरथी धूजै ।
परण गढ लावसी करे पदमणी, जयनगर जावसो जनम दूजै ।।

---

1. फसलें अच्छी नहीं हुई । 2. वर्षा की कमी । 3. अनिवार्य कर लगाया । 4. दंड के रुपये वसूल किये । 5. अपनी ओर मिला लिया । 6. मेल मुलाकात थी । 7. बैर । 8. धर्म-कर्म की क़सम लें । 9. जसवंतराय होल्कर । 10. व्यर्थ में ।

क्यूं खावौ सो पाछौ कूच कराइजै । तरे गांव नांद सूं पाछौ कूच हुवौ सो संमत १८६३ रा आसोज वद में मेड़तै डेरा हुवा । मुलक में वाब डंड ऊगाय नै खाय गया । खरची री तंगाई आई । रोजीनदार लोक नै सीख दीवी । सिरदार पिण घणा महिना हुवा तिणसूं खरच सूं तंग हुवा सु घोड़ा रजपूत कनै कम रैया । पेहला घांणेराव चांणोद नारलाई रा मेड़तीया मेवाड़ में हा सु आय पाली लूटी । तरै मुहतो सायबचंद नै फौज दे फोज सुं विदा कीयौ । वगड़ी रा ठाकुर केसरीसिंघजी, चंडावळ बगसीरांमजी, पाली ग्यांनसिंघजी वगैरे सिरदार हजार दस फौज सांमीयां री जमात साथे दीवी । सोजत पाली गोढवाड़ रौ बंदोबस्त कीयौ । बारोठीआ[1] पाछा घाटै चढगया । मोहोणोत ग्यांनमल[1] मूतो अखैचंद वगेरै जाळोरी चाकरां[2] री सला सुं सिंघवी इंदरराज भंडारी गंगारांम नूं मेड़ता रै डेरां कैद हुई । इतरां नूं कैद कीया—

सिंघवी इंदरराजजी बेटो फतैराजजी, गुलराजजी, भंडारी गंगारांमजी, नै उण रै बेटो भांनीरांम, भंडारी मांनमल, वखतावरमल, भंडारी पिरथीराज, धीरजमल, पंचोळी छोगमल, सांवतरांम, ग्यांनमल, वगैरे तालकदारां सुधा कैद कीया । इंदरराजजी गंगारांमजी वगैरां नूं तो जोधपुर मेलीया सो सलेमकोट में बैसांणीया नै गुलराजजी रौ डील बेआरांम[3] हो सु जोधपुर हवेली में राखीया । दोळी चौकी बैठी ।[4] कितराक तालकदारां नै मेड़ता री कचेड़ी में कैद कीया ।

इंदरराजजी नूं कैद कीया सुणिया तरै चांदावत बाहादरसिंघजी जैपुर परा गया नै पोहोकरण ठाकुर सवाईसिंघजी, इंदरराजजी, गगारांमजी, नूं कैद हुई सुणी तरै हँस नै कह्यौ-इणां वांणियां दोनूं जणां[5] म्हारी सला विनां जाळोर सूं माहाराज नै ले आया जिण रौ फळ वेगो हीज[6] मिळ गयौ ।

पोकरण ठा. सवाईसिंह का जयपुर जाना और युद्ध की तैयारियां

सवाईसिंघजी ऊंठ अेक सौ १०० नै घोड़ा अेक सो १०० लेनै वादै[7] जैपुर गया, पोहोकरण सूं चढ नै सवाईसिंघजी वड़लू रा सादूळसिंघजी बीकानेर तिणां था नू लिखियौ सुं बीकानेर रा राजा सुरतसिंघजी सुं अरज कर डेरा वारै

१. ग. ग्यानचंद ।

1. बागी लुटेरे । 2. जालोर के समय के नौकर, जालोर इलाके के । 3. अस्वस्थ । 4. पोहरा बैठा दिया । 5. इन दोनों बनियों ने । 6. शीघ्रही । 7. वादे के अनुसार ।

कराया नै खेतड़ी सु' सेखावत अभैसिंघजी सांवठो लोक[1] लेने जैपुर आयौ, जगतसिंघजी रा डेरा बारै हुवा सो जैपुर इंदरराजजी री तरफ सू' ऊकील ललवांणी अमरचंद हौ सो तो इंदरराजजी नू' कैद हुई जिकां दिनां चल गयो थौ ।[2] नै दिवांण मोहोणोत ग्यांनमल री तरफ सू' मोदी दीनानाथ जैपुर ऊकील हौ जिण सवाईसिंघजी पोहोकरण सू' जैपुर आया जिण री नै माहाराज जगतसिंघजी बारै डेरा किया जिण री खबर लिखी । तरै माहाराज मेड़ता सु' दरकूचां परबतसर पधारीया । सिरदार किताक घरां हा[3] जिणां नै बुलाया । नै रोजीनदार राखणा सरू कीया ।[4] हूलकर जसू'तराय नू' पिण खलीतो[5] दियौ कै हमें कांम री वखत है सो ताकीद सु' आवजो । लोढो किलांणमल हूलकर कनै ऊकील थो जिण नू' लिखियो सोबेदार नू ले वेगो आवजै ।

मूहते अखैचंद अरज करी कै इंदरराज गंगारांम नु कैद कीया जिण री घाल मेल[6] सु' पाछो ऊदंगल खड़ो हुवौ है, सवाईसिंघजी री नै इणां री सला भेळी है । तरै हजूर रीस कर नै फुरमायो कै इणां नू मार नांखौ । सो औ हुकम जोधपुर पोतौ ।[7] तरै आहोर रौ ठाकुर अनाड़सिंघजी किला में थौ जिण पाछी अरज लिखी कै चाकरां रा मावो-माव[8] रा खेदा[9] सू' आप नै झूठी-झूठी मालम कर कैद कराया नै फेर मारण रौ हुकम देरायौ, सो अनदाताजी अै चाकर आपनू जाळोर सु' लाय जोधपुर पधराया[10] तिके है । इणां रै सवाईसिंघजी सु' वालमेल हुती तौ आप नै जाळोर सु' जोधपुर नहीं पधरावता । सो इणां नै कैद किया सो तो जांणी पिण मरावणौ सला नहीं छै । अैड़ा चाकर पाछा वणसी नहीं[11] अनाड़सिंघजी पाछी अरज खांच नै लिखी[12] तिण सु' मराया नहीं ।[१]

परबतसर रा डेरां सारा जमींदार भेळा हुवा । रोजीनदार राखीया ।

---

१. ख. हुणहार तीनूं चारूं रजवाड़ा रो खराब हूण रो आय गयौ सो सवाईसिंघ चांपावत री सला में जैपुर बीकानेर ऊदैपुर आय गया नैं मारवाड़ रा उमराव मुसदी खवास पासवान वगेरां सारां नु' बेकाय दिया सु हूणहार तावै सारा जणां सवाईसिंघजी री सल्ला मान लीवी । जैपुर रा राजाजी नु' मालम आय दरबार में करी.......(सवाईसिंघ) अपने आपरै मुतलब वास्ते ले जावै छै सो स्हेज की वात नही छै ।

---

1. काफी योद्धाओं आदि के साथ । 2. मर गया था । 3. अपने-अपने ठिकाने पर थे । 4. युद्ध के लिये नौकर रखने प्रारंभ किये । 5. पत्र विशेष । 6. राजनैतिक चाल 7. जोधपुर पहुंचा । 8. अन्दरूनी, आपसी । 9 द्वेष भाव । 10. जोधपुर की गद्दी पर बैठाया । 11. फिर प्राप्त नहीं होंगे । 12. विशेष जोर देकर लिखी ।

किसनगढ सूं बूंदी सुं पिण लोक आयौ । फौज पाछी बण गई । जैपुर में सारा कछवाहा भेळा हुवा नै बीकानेर रा राजा सुरतसिंघजो जगतसिंघजी सांमल हुवा । साहापुरा रो राजा जैपुर आयो । माहाराज जगतसिंघजो आपरा खजांना सुं रुपिया २५०००००) पचीसलाख काढीआ । और कितराक राठौड़ां नू सवाईसिंघजी फाड़ीया[1] नै केवायो[2] कूच कर अठै उरा आवौ । तरै रास रै ठाकुर जवांनसिंघजी केवायौ ऊठे आय नैं कांई करां[3] अठै हां सो ऊठे ज्युं हीज जांणजौ ।[4] आऊवो आसोप अठै है पिण माहाराज नै झगड़ो करण देसां नहीं, ले निसरसां ।[5] ने झगड़ा री वखत कितराक सिरदार थां सांमिल आय हुय जासी । आ तजवीज वांधी । सारा ठिकांणा रा आदमी जाय सवाईसिंघजी ने धरम-करम दे-दे नै आवै । जाळोरी रा सिरदारां बिनां[6] कितराक सारा सिरदार मिळियोड़ा ।[7] सवाईसिंघजी सूं बळूंदा रा ठाकुर सिवसिंघजी कनै सवाईसिंघजी रौ आदमी आयौ । तरै पंचोळी जोरावरमल कयौ म्हे तौ दोढी रा चाकर हां नै ठाकुरां सुं इरादो है सो आगलो है ईज । सिवसिंघजी कनै पंचोळी सिरदारमल री नै कोठारी रूगनाथ री सला सो अखावत बगसीरांम नै सवाईसिंघजी कनै मेलीयो सो ललोपतो कर आयौ ।[8]

मीरखां का सवाईसिंह की तरफ मिल जाना

हूलकर जसुंतराय री फौज में मीरखां फौज हजार २०००० बीस सूं थौ जिण नैं फांट नै सवाईसिंघजी बुलायौ । माहाराज मांनसिंघजी रै जसूंतराय सूं मिळाप हूवौ जठै मीरखां नै कुरब देणै रौ ना फुरमायौ थौ जिस सुं मीरखां बेराजी थौ[9] सु[१] सवाईसिंघजी री खेवट[10] सुं मीरखां जैपुर वाळां सांमल हुवौ । जसुंतराय कूच कर आयौ सो किसनगढ रौ गांव तिहोद डेरा किया । नं माहाराज मांनसिंघजी नुं केवायौ कै खरची ताकीद सुं मेलावौ[२] फौज भूखां मरती है । सो खरची री माहाराज रै ही तंगाई । तरै मोहोणोत ग्यांनमल नै मेलीयौ सौ जोधपुर आय ठाकुरजी श्री बालकिसनजी रै मिंदर मांह सुं गेणौ

---

१. ख. सु उण दिन री खटक थी । २. ख. अलल हिसाब रुपिया दो लाख मेलावो ।

---

1. अपनी ओर मिलाया । 2. कहलवाया । 3. वहाँ आकर क्या करेंगे । 4. यहां पर होते हुए भी आप हमें अपने साथ ही समझें । 5. युद्ध से पलायन करवा देंगे । 6. जालोरी इलाके के सरदारों को छोड़कर । 7. दूसरे पक्ष से मिले हुए । 8. ज्यों-त्यों बातों से खुश कर आया । 9. नाराज था । 10 प्रयत्न ।

जवाहर री रकमां लीवी[1] नै माहाराज श्री विजेसिंघजी रा करायोड़ा सेवा में वासण[2] सोना रूपा[3] रा था सो भंगाया नै रुपिया पड़ाया[4] नै सैहर में छतीस पूण[5] ऊपर डंड लीयौ। मोणोत ग्यांनमल रौ पोतो मर गयौ सो लोकां कही— मिंदर रौ गेणौ जबरी सूं[6] लीयौ जिण सूं ग्यांनमल में आ हुई। पछै खरची रा रुपिया लै पाछौ फौज में आयौ।

सवाईसिंघजी जसूंतराय नै जगतसिंघजी कना सुं रुपिया दोय तीन लाख दिराया ने कह्यो—नां तो थे माहाराज मांनसिंघजी सांमल रहौ नै नां जगतसिंघजी सांमल रहौ। पाछौ कूच कर जावौ।

मूता अखैचंद नै खरची दे नै जसुंतराय कनै मेलीयौ सो हूलकर जसूंतराय कह्यौ— इतरी खरची सुं कांई हुवै। तरै अखैचंद पाछी अरज कराई। तरै गींगोली रा डेरां सुं माहाराज असवारी कर पधारीया पिण जसुंतराय आयौ नहीं। पाछौ दिखण री तरफ कूच कोयौ।[१] माहाराज रै कनै सिरदार था जिणां कितरांक रा मन चल विचल[7] हुवा सवाईसिंघजी सुं मीठी करता गया[8]।

जैपुर माहाराज जगतसिंघजी बीकानेर महाराज सुरतसिंघजी कूच कर डेरा मारोठ कीया। चढीया पाळा लोक लाख अेक रै आसरै थौ। माहाराज जगतसिंघजी सवाईसिंघजी नुं वार-वार कहै—ठाकुरां आंपणी फौज में कितराक तौ परदेसी है नै कितराक पिंडारा[9] है, लूंटेरा है। ने ऊठी नै सारा राठौड़ छै सो सारा पिंडां छै। सो आंपां झगड़ौ जीतसां नहीं। तरै सवाईसिंघजी कह्यौ—सारा राठौड़ म्हांसूं मिळियोड़ा है। किताक सिरदारां रा कागद था सु वचाया[10] नै कयौ आप तौ फुरमावता हा कै हूलकर राठौड़ां सुं फंटै नहीं,[11] तिण नू ही म्है फांट दीयौ। सो राठौड़ तौ म्है सारो अेक हां, म्है किसा आप नू मारवाड़ ऊपर ले जावां छां[12] म्हां राठोडां नै माहाराज मांनसिंघजी

---

१. सवाईसिंघजी २ लाख रो बूतो दियो, थे भलां ही थांरै देस जावो। मीरखां जैपुर वाळां री तरफ रह्यो।

---

1. गहने तथा जवाहरात आदि लिये। 2. सेवा में रखे हुए बर्तन। 3. चांदी। 4. बरतन तुड़वा कर रुपये ढलवाये। 5. छत्तीस कौम से। 6. जबरदस्ती से। 7. विचलित हो गये। 8. सवाईसिंह को खुश करने के प्रयास करने लगे। 9. पिंडारी। 10. पढवाये। 11. अलग नहीं होगा। 12. हम कौनसे आपको मारवाड़ पर चढा कर लेजा रहे हैं।

पळेटीया नही ।[1] तरै म्है इतरी कीवी छै । माहाराज कनै सिरदार छै जिणां री नै म्हारी सला अेक छै, सो झगड़ो करै नहीं । फौज मुहमेळ हुसी[2] नै अेक तोप छूटसी नै अठी रा घोड़ा देखसी जितरा घड़ी कितराक सिरदार चढी अणी[3] अठी नूं उरा आवसी । नै किताक माहाराज कनै रैवसी तिके अरज करसी कै सारा उठी सुं मिळियोड़ा है । नै ऊठी कानी लोक सांवठो है । झगड़ो कीयां पड़पसां नहीं,[4] युं कहै झगड़ो करण देसी नहीं नै माहाराज नूं जाळोर लेजावसी । तरै धोकळसिंधजी नू जोधपुर गढ में बैठाय देसां । इण सलाहा रा कागद हरसोळाव रा ठाकुर[१] जालमसिंघजी रा नै रास रा ठाकुर जवानसिंघजी रा आया था सो सवाईसिंघजी माहाराज जगतसिंघजी नै वंचाया । तौ पिण[5] जगतसिंघजी रा मन में अभरोसो कै कदास[6] राठौड़ां म्हां सूं दगौ कीयौ हूवै । तरै सवाईसिंघजी अरज करी कै आपरौ अभरोसो नहीं मिटै तौ आपरा डेरा माहारोठ हीज रखावौ नै हूं फौज लेनै जासूं ।[२] तरै माहाराज जगतसिंघजी फुरमायौ कै ठीक है ।

सवाईसिंह का मानसिंह से युद्ध के लिये प्रस्थान

माहाराज जगतसिंघजी नै बीकानेर माहाराज सुरतसिंघजी तौ मारोठ हीज रया नै मीरखां वगेरे फौज लेनै सवाईसिंघजी चढिया सो नाहरगढ रै नाकै होय गींगोली आया । नै फौज आवण री हलकारां खबर दीवी । तरै अठीसुं ही फौज चढी । डेरां डेरां नकीब फिरिया । श्री हजूर घोड़ै असवार हुवा । कितरीक फौज तौ चढ आई । केईक चड़े छै, पेलोड़ी फोज रौ तोपखांनौ आयौ नै अठी री तोपों री अेक अेक अवाज हुई । नै हरसोळाव रा ठाकुर चांपावत

---

१. ग. चांपावत (अधिक) ।

२. सो कदास आपरै मन में म्हारी जबांन रो सांच नहीं आवै तौ आप तौ डेरा अठै हीज रखावौ नै हूं अगाड़ी लोक तोपखानो ले जावूं छूं सो अगाड़ी री लड़ाई हूं कर सूं जिण रा समाचार आप सुण लेसी पछै लारा सूं आप पधार जासी सु सवाईसिंघजी तोपखानो उपर काजू फौज रो सामान लेय चढिया । हैदराबादियां री फौज 10 हजार, मीरखां री फौज 10-15 हजार थी वगेरे 20-25 हजार फौज लेय सवाईसिंघजी चढिया ।

---

1. अपनाया नहीं । 2. फौज एक दूसरी के समीप आएगी । 3. फौजी तैयारी के साथ, उसी हालत में । 4. युद्ध में उनका मुकाबला नहीं कर सकेंगे । 5. तदुपरान्त भी । 6. कदाचित ।

जालमसिंघ, सथलांणो, धांधीओ, चवां, सवराड़, वगैरै जिला सुदा[1] घोड़ा १५०० पनरै सो सूं चढी अणीयां गींगोली री घाटी सांमो कर दीया । श्री हजूर सूं मालम हुई कै जालमसिंघजी तौ पैली फोज मैं परागया । जितरेक मारोठ रा महेसदांनजी वगैरे मेड़तीया घोड़ा १००० एक हजार सूं चढी अणी पैली फौज में परा गया । गोड़ाटी चौरासी[2] रा सिरदार पिण चढी अणियां परा गया ।[१] पैलोड़ी फोज रा घोड़ा पाळां रा गांव रुणोजा कांनी गोट रा गोट भेळा हुवै नै अठी हजूर कनै आऊवा रौ चांपावत वखतावरसिंघजी नै आसोप कूंपावत केसरीसिंघजी, नीवाज रा ऊदावत सुरतांणसिंघजी, रास रा ऊदावत जवांनसिंघजी, लांबीयां ऊदावत भांनीसिंघजी, कुचांमण रा मेड़तीया सिवनाथ-सिंघजी, बूड़सु मेड़तीया प्रतापसिंघजी, खेजड़ले भाटी जसुतसिंघजी इतरा सिरदार हजूर कनै रया, सो हजूर फुरमायौ कै घोड़ा ऊठावौ तरै रास रा जवांनसिंघजी अरज करी कै सिरदार कितराक तौ उठी परा गया नै फेर जावै हीज है। नै उठी री फौज घणी है झगड़ो कीयां पड़पां नहीं । फैर कांई सवाय में हुसी[3] सो घोड़ा पाछा मारवाड़ में खड़ाईजै[4] हजूर रा घोड़ा री वाग[5] पकड़ घोडो पाछो फेरीयो । हजूर घोड़ा ऊठावण सारु हट कीयौ नं तरवार खाची[२,6] सो धांधल ऊदेरांम पकड़ लोनो सो ऊदैरांम रे हात रै चोरौ आयौ ।

महाराज मानसिंह का युद्ध से पलायन

सेवट अै सिरदार[३] हजूर नू ले नीसरीया नै किणी में हिम्मत ही सु तो आप रौ डेरौ असबाब ले निसरीया सो अजमेर किसनगढ़ तथा मेड़ता रा गांवां में गया । नं बाकी सारो असबाब लूटीज गयो तोपखांनो खजानों फीलेखांनों[7] फरासखांनो वगैरं सारा कारखांनो लूंटीज गया । डेरा बाळ दीया[8] चोखळा रा ।[9] गांव खोखर, अडांणी, स्यांमपुरो, गीगोली लूट लीना बाळ नांखीया, परबतसर लूट लीयौ । परबतसर किलेदार पड़ियार थौ सुं सांमो जाय[10]

---

१. सिलांम कर कहयौ म्हेतो सवाईसिंघजी तरफ जावां छां आप कनै देवनाथजी छै सो लड़ लेसी । महाराज फुरमायो हमें ठाकुरां घोड़ा उठावो ।

२. ख. कहयौ अठैही मरसां-मारसां । ३. ख. हिन्दालखां वगेरे (अधिक)

---

1. साथी योद्धाओं सहित । 2. गौड़ों के इलाके के सरदार । 3. कोई ओर बड़ा अहित होगा । 4. मारवाड़ की ओर रवाने कीजिये । 5. लगाम । 6. तलवार म्यान से बाहर निकाली । 7. हाथियो का सामान । 8. जला दिये । 9. चारों तरफ के । 10. स्वयं सामने जाकर ।

कुंत्रीयां सूंप दीवी । मारोठ पैला होज लूंट लीयौ थौ । महाराज री फौज मांह सुं मिरदार गया जिकां रूपनगर डेरा कीया । पछै सवाईसिंघजो सांमल हुवा ।

इतरा सिरदार फौज मांह सूं वदळ[1] नै गया, तिणां री विगत—

खांव चांपावत—

१ हरसोळाव जालमसिंघ गीरदरदासोत ।
१ सेनणी सबळसिंघ गिरदरदासोत ।
१ पूंदलुं दौलतसिंघ गिरदरदासोत ।
१ सथलांणो माधोसिंघ सिवसिंघोत ।
१ धांध्रीयां..........
१ चवां खुमांणसिंघ
१ सवराड जालमसिंघ ।
१ पाली ग्यानसिंघ नवलसिंघोत गोढवाड़ कानी[1] मुहता सायबचंद कनै फौज में थौ सो सोभत मै आय अमल कर लीयौ ।
—
८

खांप कूंपावत

१ गजसिंघपुरौ भारथसिंघ जगरांमोत ।
१ मांढे रा ठाकुर.......... ।
१ चंडावळ बगसीरांम[2] हरीसिंघोत ।
१ मुंहता साहबचंद कनै थौ सो सोजत में अमल करलीयौ ।
—
२

खांप जैतावत—

१ केसरीसिंघ हिंदूसिघोत बगड़ी, साहबचंद कनै फौज में थौ सोजत अमल करण में सांमल हुवौ लीयौ ।

---

१. ग. विसवासघात कर नै, राठौड़ां रो रांम निकळियौ, नै पगां घर दे परा गया ।
२. ग. चंडावळ ठाकुर विसनसिंघ ।

---

1. गोढवाड़ इलाके की तरफ ।

खांप करमसोत—

१ खींवसर परतापसिंघ भोमसिंघोत
१ बैराई रा कलाणसिंघ जैतसिंघोत[१]
—
२

खांप जोधा—

देवळीये[1] अजीतसिंघ
....
....
—
३

खांप मेड़तीया—

१ रीयां विरदसिंघ वखतावरसिंघोत ।
१ मारोठ महेसदांन सालमसिंघोत ।
१ वळूंदे सिवसिंघ फतैसिंघोत ।
—[२]
३

फतै हुवां रा[2] समाचार सुणियां तरै माहाराज जगतसिंघजी सुरतसिंघजी मारोठ सूं कूच कर परबतसर आया । माहाराज मांनसिंघजी साथै मुतसदीयां में मोणोत ग्यांनमल मुंहतो अखैचंद सुरजमल था, हजूर मेड़तै पधारीया । फागुण सुद बेबचे उतरीया । सैहर मांय सुं गुळ फिटकड़ी मंगाई सो माहाजनां दीवी नहीं । तरै जोसी हरनाथ कोटवाळ थौ सो ताळा तोड़ गुळ

---

१. ख. तेजसिंघोत ।

२. ख. इतरी आसामियां श्री हजूर कनैं हाजर रयां री विगत—आउवां ठाकुर बखतावरसिंघजी, आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी, कुचामन ठाकुर सिवनाथसिंघजी, नीबांज ठाकुर सुरतांणसिंघजी, रास ठाकुर जवांनसिंघजी, बूड़सू रा परतापसिंघजी, लांबियां ठाकुर मांनसिंघजी, रायपुर ठाकुर, खेड़ले ठाकुर जसवंतसिंहजी वगेरे ।

---

1. देवलिया का ठाकुर । 2. विजय होने के ।

फिटकड़ी पोछती कीवी ।[१] रास रा जवांनसिंघजी मारग में सीख करी कै हूं घरै जाय टावर कबीला काढ नै आऊं छूं ।[1] सो गया पिण पाछा आया नहीं, सवाईसिंघजी सांमल गया । नै नीबाज सुरतांणसिंघजी नै लांबीयां भवांनीसिंघजी नूं रास रा जवांनसिंघजी कैता गया[2] कै हजूर जाळोर जावै जरां तौ पौछाय नै उरा आवजो नै जोधपुर पधारै तो हाजर रहजौ सु लिखां ज्यूं कीजौ ।[२]

पछै हजूर जोधपुर पधारीया । फागुण सुद नै फुरमायौ कै म्हे तौ जाळोर पधार जासां । म्हांनू जाळोर रा किला रौ पूरौ भरोसौ आवै छै । जिण ऊपर ठाकुर सिवनाथसिंघजी कुचांमण नै हींदालखां मालम करी कै आप जाळोर मती पधारौ, जोधपुर गढ दाखल हुईजै । जाळोर पधार जासौ तौ जोधपुर आपरै रहसी नहीं । तरै जोधपुर रै गढ दाखल हुवा ।[3]

महाराजा मांनसिंह का जोधपुर गढ में प्रवेश व सुरक्षा की तैयारी और विपक्षियों की चढाई

गढ री मजबूती कीवी ।[४] नै सेमांन नहीं थौ सो ताकीद सुं चढायौ। नै सेहरपना री पिण मजबूती कीवी । पछै लारली फौज में सवाईसिंघजी परवतसर रा डेरा सूं करमसोत परतापसिंघजी, खींवसर वाळा नूं नै बळूंदे सिवसिंघजी नै कह्यौ–नागोर जावौ । आगै नागोर में चांपावत अनाड़सिंह आहोर वाळां रौ काकौ केसरीसिंघ नै सोडसरुप पंचोळी जैतकरण अै तीनुं मालक हा । अर करमसोतां रो लोक पिण थौ सो करमसोत मिळ गया सो अजांणचक[3] अै गया सो तळाव समसरी नहर-नहर होय सैहर में वड़ गया फागुण सुद १५ पुनम नूं नागोर होळी रै दिन भिळ गयौ[4] फितूर वाळा[5] रौ अमल हुय गयौ । मांहला लड़िया पछै बारला किला रै सुरंग लगाई सो सफीळ[6]

१. ख. सो हरनाथ री तो हाजरी सजी नै मेड़ता री रैं तरी-और हाजरी हुई, जदसूं मेड़ता री रैत ऊपर श्री हजूर री पूरी बेमरज़ी रही । सु मेड़तो खराव हुय गयौ । ....मेड़ता री ठावी-ठावी आसांमियां उण मिती सूं अजमेर वगेरे गया ।

२. ख. आप सवाईसिंघ सूं जाय मिलियो । 3 ख. संमत 1862 सांवण सुद में ।

३. ख. कानू मिनखां ने गढ में राखिया । लड़ाई री तैयारी करवाई । सैर में गाडा-गूडो लाग गयो अर नासा-भाग लाग गई सो सैर रा लोकां नूं धरो जरियो नहीं ।

1. सुरक्षित स्थान के लिये विदा करके आता हूं । 2. निर्देश देते गये । 3. अचानक । 4. विपक्षियों द्वारा जीत लिया गया । 5. धोकळसिंह के पक्षधर । 6. किले की दीवार का ऊपरी भाग ।

पड़ी । तरै चांपावत केसरीसिंघ सोडसरुप, पंचोळी, जेतकरणअै वात कर वारै नीसरिया, नै किला में वारलां रो अमल हुय गयौ ।

सोजत मै सिंघवी जोधराज रो बेटौ विजैराज हौ जिण वगड़ी सूं लोक भेळौ कर सोजत में आय अमल कीयौ । सोजत री हाकमी इंदरराज नै कैद हुई तरे पंचोळी गोपालदास रै हुई थी, सो विजेराज आय सीख दीवी । सांभर, नांवो, डीडवांणो, नागोर, मेड़तो, कोलीयो, सोजत, जेतारण इतरी ठौड़ वारलां रौ अमल हुय गयौ ।

परबतसर रा डेरां जैपुर माहाराज जगतसिंघजी सूं दीवांण रायचंद अरज कीवी कै माहाराज आंपांणी मोकळी सज गई है[1] सो अठा सुं[१] कूच कर परबारा ऊदैपुर पधारौ व्याव कर जैपुर दाखल हुईजे । हमें आंपां नूं सवाईसिंघजी लारै जोधपुर जावण री सला है नहीं तरे अै समाचार माहाराज जगतसिंघजी चांपावत सवाईसिंघजी नै फुरमाया कै रायचंद इण तरै अरज करै छै । जिण ऊपर सवाईसिंघजी अरज करी कै हमार ऊदैपुर मती पधारौ पैली जोधपुर पधारौ सु माहाराज मांनसिंघजी तो जनांना[2] लै जाळोर पधार जासी नै धोकलसिंघजी नै गादी बैसांण दो, सौ आपने पकौ जस आय जावै । पछे भलांई ऊदैपुर परणीजण नूं पधारजौ ।[२] सु उठा सूं व्याव कर नै गाजां बाजां सूं जैपुर पधार जासी । इण में आपरौ वडौ नांमून राजसथांनां में हुसी ।[3] इण ताछ अरज[4] करी नै फेर अरज करी कै म्है राठोड़ां दिसा आप सूं पैला अरज करी थी । कै सरवथा लड़सी नहीं[5], इंण तरै लारली वातां सरब मिळी है[6] तौ आही वात मिळ जासी । आप ताकीद सूं जोधपुर पधारीजै । सो रायचंद दीवांण अरज करी थी सो सवाईसिंघजीं मंजूर हूण दी नहीं ।

तरै माहाराज जगतसिंघजी सवाईसिंघजो नूं कह्यो ठाकुरां ठीक छै थे तौ हैदराबादी वगेरै लोक लेनै आगै नै जोधपुर सांमो कूच करौ[7] अर लार

---

१. ख. परबारा । २. ख. आप पेली जोधपुर पधारो अर धोकलसिंघ भींवसिंघोत नुं जोधपुर रै गढ चडाय राज दिरावो सो मारवाड़ 2 पांती री में तो आपरा तेज परताप सूं अमल होय गयो है फगत जोधपुर रै गढ महाराज मांनसिंहजी आडा दरवाजा, जड़ सी आप फौज ले पदारसो जद जोधपुर सूं जनाना ले जालोर परा जासीं ।

---

1. अपनी बात अच्छी निभ गई है । 2. रानियें आदि । 3. सभी रजवाड़ों में आपका बड़ा नाम होगा । 4. इस के उपरान्त । 5. राठौड़ कभी भी अपने खिलाफ लड़ेंगे नहीं । 6. सभी बातें सच्ची होती रही है । 7. जोधपुर की ओर हमारे से आगे प्रस्थान करो ।

का लार[1] दर कूचां म्है भी आवां छां । जद ऊणाई सायत[2] सवाईसिंघजी सांवठी[3] फौज ले कूच कीयौ सो मेड़तै पीपाड़ होय जोधपुर आया । अर मारग मै गांव लूटता बाळता आया नै मोटा गांव था तिणां में पाखती रा गांवां री आसांमीयां भेळो हुई । जिण गांवां मै रुपिआ ठैर-ठैर जामदारीयां बैठती गई ।[4] नै मुलक घणा गांव खराब कीया । जोधपुर संमत १८६३ रा चैत वद ७ सातम मील सातम रै दिन[5] सवाईसिंघजी आय घेरौ दीयौ । मंडोवर रै आस पास डेरौ कीयौ नै लारा सूं माहाराज जगतसिंघजी सुरतसिंघजी वगेरे राजा राव सिरदार सांवठी फौज सुं भखरी, रीयां, काळू, बळूदे रै मारग होय मुलक लूटता जोधपुर चैतसुद १............आया ।

सहैर दोळा[6] मोरचा सवाईसिंघजी पिडां[7] साथै फिर-फिर नै दिराया । फौज में तीन लाख लोग री अफवा थी ।[२]

सिंघवी जोरावरमल रा बेटा जीतमल सुरजमल कैद में हा सो हजूर पिडां सलेमगढ में पधार बारै काढीया । दिवांणगी दीवी नै फुरमायौ कै चाकरी रो वखत है सो किसीक बंदगी करौ हौ । सुरजमल जीतमल दिन ७ सात सैहर में लड़ीया । पछै सवाईसिंवजी सुं विसटाळो कर[8] बारली फौज मै परा गया । धाय भाई सिंभूदांन नै छोडीयौ थौ सोई बारली फोज में परौ गयौ । तरै हजूर विचारीयौ कै जोरावरमलोत तो जाळोर सूं हो भींवसिंघजी कनै उरा आया था नै भींवराजोतां रौ घर तीन पीढी सुं सांमधरमी[9] चाकर है सो इणां नै बारै कांढां तौ ठीक है ।

सिंघवी इन्द्रराज तथा भंडारी गंगाराम को कैद से निकालना

तरै सिंघवी इंदरराजजी भंडारी गंगारांमजी सलेम कोट में था,

---

१. ग. चैत-सुद ७ ।
२. ख. गांव विगड़ गया । रैत रौ कोई धणी नहीं । पराया राज री फौजां सु फिकर किणी नूं नहीं, इण तरै री अधरा तफरी मारवाड़ में हुई । 20-25 कोस तांई फौजां री कही रा घोड़ा चारों तरफ चढै सो लूट खोस धकै आवै ज्यूं कर लेवै ।

---

1. पीछे के पीछे । 2. उसी समय । 3. बड़ी । 4. रुपये भरवाने की जमानतें पक्की होती गई । 5. शीतला पर्व के दिन । 6. चारों तरफ । 7, स्वयं । 8. बातचीत करके । 9. स्वामी-धर्म का निर्वाह करने वाले ।

जिणां नै श्री हजुर केवायो[1] कै म्है थांने लैण नै पधारां । तरै इणां अरज कराई कै आप अठै पधारसी तो म्है बारे आवांला नहीं नै म्हांनै छोडाईजै[1] सो म्हांरा भूंवणसी[2] सो बंदगी करसां । नै दोढीदार नथकरण नू विनां मूदे[3] कैद कीयौ है सो छोडाईजे । तरै इंदरराज गंगारांम नथकरण नू कैद मांहसूं बारै काढीया । इंदरराजजी गंगारांमजी सेखावतां रा वचन ले सवाईसिंघजी सूं कागे[4] जाय मिळिया । वात कीवी, सौ सवाईसिंघजी जोर मैं आयोड़ा था सौ करड़ा जवाब[5] कया कै थे म्हां विनां जाळोर सूं राजा नै लाया सो थे केड़ोक सुख-पायौ ? रिडमलां रा थापिया राजा हूंवै है ।[6] माहाजनां रा थापिया राजा नहीं हूवै । मांनसिंघजी नै केवौ सो जाळोर परा जावै । जोधपुर में राज भींवसिंघजी रो बेटौ करसी नै म्है तो ईतरा कवाड़ा[7] थांरै वासते कीया है जैपुर रै राजा रा रुपिया बाईस लाख खरच पडीया है तरै थे कैद सूं छूटा हो । तरै इंदरराजजी गंगारांमजी कयौ कै गढ तो माहाराज श्री मांनसिंघजी छोडै नहीं नै सेहर तो म्है थांनूं सूंपाय देसां ।[8] ने आसोप, नींबाज कुचामण वगेरै सिरदार मांय है जिकां नै म्हांने म्है कहां जठां तांई म्हांनू पोछाय देण रौ वचन सेखावतां रा दिराय देवौ । तरै सवाईसिंघजी कयौ-ठीक है । पछै इंदरराज गंगारांम पांछा हजूर मैं आय अरज करी कै सेहर तौ संभै नहीं[9] सो लूंटीज जासी सो सेहर तौ बारलां नू सूंप देवां नै लड़ायतो लोक[10] किला में रखाईजै नै राजलोकां[11] नै जाळोर नहीं मैलाईजे । जोधपुर रौ गढ जाळोर ज्यूं ही मजवूत छै । सो आप तौ किला में लड़ौ नै म्है बारै जावां सो घेरो उठावण रौ उपाव करसां ।[12] तरै श्री हजूर फुरमायौ कै थांरै तुलै ज्यूं करौ[13] तरै इंदरराजजी आपरा बेटा

---

१. ख. किसी सबब सूं इकतरफी सुण थानू कैद किया जिण मिती सूं म्हारां जीव नै पण सुख रह्यौ नही । थामें फोड़ा पड़िया जिणरौ थे और तरै समझों मती । जाळोर थकां हिमत बादरी कर कांम थे दोनूं जणां कर इण गढ थे चढीया था ज्यूं ही फेर हिमत बादरी तजवीज करै । म्हांनूं थां दोनूं जणां री पक्की इतबार छै । सो किहीं प्रमावण ज्यूं नहीं..........इण ताछ हद सूं ज्यादे खातर दिलासी इन्दरराज गंगाराम सूं हजूर कीवी थी ।

---

1. हमें मुक्त कीजिये । 2. जैसी हमारे से बन पड़ेगी । 3. बिना किसी कारण के । 4. जोधपुर और मंडोर के बीच एक स्थान । 5. कटु उत्तर दिया । 6. राव रिड़मलजी (जोधा के पिता) के वंश जो के स्थापित किये हुये राजा होते हैं । 7. झंझट, अटकलबाजी । 8. शहर तुम्हारे कब्जे में करवा देंगे । 9. हिफाजत नहीं की जा सकती । 10. लड़ने वाले लोग । 11. राज परिवार । 12. घेरा उठाने का उपाय करेंगे । 13. तुम्हें ठीक लगे वैसे करो ।

फतैराजजी नै भंडारी गंगारांम आपरा बेटा भांनीरांम नै तौ गढ में राखीया नै इंदरराज गंगारांम तळेटी आया।[1] सू चैत सुद नू सहर बारलां नू सूंप दीयौ नै इंदरराजजी गंगारांमजी नै आसोप केसरीसिंघजी नै आऊवै वखतावरसिंघजी नींबाज सुरतांणसिंघजी कुचांमण सिवनाथसिंघजी, बूड़सू परतापसिंघजी लांबीयां भांनसिंघजी नै राज रौ रसालौ नै भंडारी चुतरभुज ऊपादीयौ रांमदांन वगेरै छोटा मोटा चाकरां नै ले सेखावतां रा वचन सुं सिंघवी इंदरराजजी भोंवराजोत वारै डेरा कीया। नै सेहर में आंण दुवाई धोकलसिंघजी री फिरी। तुंवर मदनसिंघ कौटवाळ आयौ।

गढ में इतरा जणा हाजर, तिणां री विगत-१

१ करणोत ठाकुर इंदरकरणजी गांव समदड़ी वाळां री मौरचो चांवंडा माताजी रै थांन।

१ जसोल रौ ठाकुर महेचो जसूंतसिंघ डेरौ नगारखांना नीचली साळ में।

२ महेचो मोहकमसिंघ पेमसिंघ दोनू भाई गांव सेरडा रा ठाकुर रा काका।

१ मेड़तीयो रतनसिंघ पहाड़सिंघोत कुचांमण रा भायपा में सो हाजर।

१ भाटी उरजनोत खेजडलो तथा साथीण वगेरै मौरचो फतैपोळ।

१ आहोर रा ठाकुर अनाड़सिंघजी राजसिंघोत।

१ दासपां रा ठाकुर उदैराजजी२।

१ भेंसवाडा रा चांपावत।

२ जोधौ विजैसिंघ अनाड़सिंघ अै दोनूं भाई गांव साई रा।

१ जैतावत सालमसिंघ गांव खोखरा रो मौरचो रांणोसर नैं रुपीया ७००३ सातसौ निजर कीया।

२ आयस देवनाथजी, सुरतनाथजी।

---

१. ख. गढ में आदमी 5000 आसरै तिणांरा भी ख्या जुदा-जुदा।
२. ग. उदैसिंघजी। ३. ग. रु. 800)

---

1. किले से नीचे आये।

मुतसदी—

२ व्यास चुतरभुज, लोढो किलांणमल गढ में हा जिणां नूं वारै मेलीया ।

१ मोहोणोत ग्यांनमल सुरतरांमोत पिंडांगढ में नै टावर भादराजण ।

१ मुहतो अखैचंद नै साळो मोतीचंद हुकमचंदोत ।

१ मोहोणोत जीतमल ।

३ मुहतो सवाईरांम साहबचंद, परतापमल कबीलां सुधा[1] गढ़ में डेरौ लखणा पोळ ।

२ मुहतो सुरजमल जीतमल दोनूं भाई डेरौ फतैपोळ ।

१ चंडवाणी जोसी सिंभूदत सिवकिसनोत ।

१ राजगुर प्रोहित गुमांनसिंघ धांधजां री जायगा में डेरौ ।

१ प्रोहित वालचंद कबीलां सुधो ।[2] सो खासो रसोवड़ो हाथ सूं करतौ ।

२ प्रोहित सालगरांम बोड़ो सवाईरांम ।

१ मोणोत जालमसेण[१] ।

२ पंचोळी काळूराम नै दूजौ फैर काळूरांम, अखेचंद मुहता रौ कांमैती[3] ।

१ छांगांणी कचरदास हीरालाल रौ ।

३ छांगांणी सिवदत्त, गोरधन, सनैही अै तीनूं सगा भाई ।

१ भंडारी बागमल सिवचंदोत दीपावत

१ मुहतो अमरचंद गुमांनचंदोत पीपाड़ रौ ।

१ लोढो चैनमल तौ गढ में नै भाई किलांणमल कनै ।

---

१. ग. जालमसिंघ ।

---

1. परिवार सहित । 2. विशिष्ट लोगों के लिये भोजन अपने हाथ से बनाता था। 3. कामदार, कार्यकर्त्ता ।

१ व्यास नवलराय विदियाधर रौ सो श्री आतमारांमजी री सेवा तालकै ।[1]

३ पंचोळी इंदरभांण, मुसरफ गाढमल, मंगनीरांम, जुमलै जणा तीन ।

१ मूतौ तखतमल भाटी सगतीदांन रौ कांमेती ।

२ आद बगसी बोरो रांमनाथ नै व्यास सरूपरांम जुमलै दोय ।

२ मोंणोत प्रेमचंद व्यास सिरदारमल ।

१ पारख भगवांनदास पाली रौ ।

१ मुनसी पंचोळी जीतमल सांभर रौ ।

२ वेद मूतो जैचंद भाई सेवो पालणपुर रा सो मीरखां कनै हुकम सूं जुमलै दोय ।

इतरा जणा पछै आयां, विगत—

१ दोढीदार पंणियो सिरीरांम मास अेक पछै आयौ ।

२ छांगांणी सिवलाल जोधराज पनालालोत । पनालाल गींगोली कांम आयौ।[2]

१ भंडारी सिरीरांम भवांनीरांमोत दीपावत कबीला सुधौ ।

२ भंडारी हिंदूमल, सुरांणो जेठमल दिन २० बीस पछै ।

२ सुरांणो फतैमल, मोहोणोत केसरीचंद दिन १५ पनरैं पछै ।

इतरा जणां गढ[१] में अटकीयोड़ा हाजर—

१ सिंघवी ग्यानमल फतैचंदोत । घेरा पछै छूटौ ।

२ भंडारी सिवचंद नै बेटो अगरचंद ।

२ सिंघवी फतैराज, भंडारी भांनीरांम । अै इंदरराजजी गंगारांम रा बेटा सो इंदरराज गंगारांम नू कांम रै मुदै तळेटी ऊतारीया

१. ग. पाट ।

1. महाराज विजयसिंहजी के गुरु आत्मारामजी की समाधी की सेवा के लिये नियुक्त । 2. गींगोली की घाटी में युद्ध हुआ था, वहां काम आया ।

तरै इणां नूं गढ में चांपावत अनाडसिंघजो कनै राखोया ।

१ धाय भाई रामकिसन भींवसिंघजो रा चाकर ।

—

६

खवास पासवांन—

१ देवराजोत नथराज पदमावत ।

२ भाटो नगराज, गेहलोत फतौ ।

४ खीची चैनो, वनो, सेरो, भींवौ, हरीदास रा बेटा ।

६ धांधल ऊदैरांम, बखुतदास, भांनो, सेरजो छाजजो, सुखो, रुगो, गांव साळवा वगेरै रा ।

२ सौडसरुप, रतनौ, अै भारमलोत ।

३ दरजी चेलो, नांनग, मोतीरांम ।

२ अंगोळीयो मयारांम, हेमो, जाळौर रा ।

२ पड़ीयार जालौ[1] सिभू भैरुदासोत ।

४ माहाराज श्री गुमांनसिंघजी रा चाकर
३ सोलंखी मुकनौ, पेमो, मासींग, रूपै रा बेटा ।
१ नै रूपा री माजी बाईजी री धाय[1] ।

—

४

परदेसी—

२ अतीतां मैं[2] संभूभारथी, खेमभारथी, महंत नै मुहरतां ।

१ जमादार हीदालखां कनै आदमी ।

१ जीवणसैख कनै आदमी ।

२ पठांण मेमदखां, पठांण सतारखां ।

२ सेख अेवजअली, मीर मोसद अली ।

---

१. ख. मूळौ ।

---

1. राजकुमारी की धाय । 2. सन्यासियों में से ।

२ पुरबीयो भवांनीसिंघ, नेरोदासिंघ ।
२ पुरबीयो मांनधातासिंघ, पुरबीयो गिरवरसिंघ ।
४ पुरबीयो रतनरांम, पुरबीयो रांमगुलांम पठांण गुलांमीखां ।

जोधपुर रा घेरा में चारण हा जिणां रा नांव—

१ वणसूर जुगतो गांव कोटड़ा रौ ।
१ सांदू पीथो गांव भदोरा रौ तिण नु गांव चीमरांणी १ ने खेड़ो १ इनायत कीयौ ।
१ सांदू हरसींग गंगावत मिरगसर रौ तिण नै गांव खरुकड़ो[1] नै पातावो इनायत कीयौ ।
१ बारट भैरौ गांव रोवाड़ा[2] रौ तिण नै गांव बांडीयावास नै नीवोल रौ वास इनायत कीयौ ।
२ बारट सेरौ गांव खारी रौ नै बारट ऊमौ, गांव मोरटऊका रौ, तिण नै गांव आंनावस इनायत कीयौ ।
१ बारट दांनौ गांव आकणादी[3] रौ, तिण नै गांव इकडांणी री तीजी हैंस रा खेत[1] नै रुपिया १००) री वरसोद हुई[2] ।
१ रतनू ईंदो गांव विणजीया रौ तिण नै गांव वासणी इनायत हुवौ ।
१ रतनू कुसलौ चांपासणी रौ ।
१ रतनू मेघौ गांव सीरवा रौ ।
१ रतनू माहारांम गांव घड़ोई रौ, तिण नै गांव कटारड़ौ इनायत ।
१ आसीयो पनौ गांव भांडियावस रौ, तिण नै गांव चिडांणी रौ आद[3] इनायत हुवौ ।
१ खिड़ियो नगो गांव जूसरी रौ, तिण नै गाव मेडास इनायत हुवौ ।
१ लालस नवलौ गांव जुडियै रौ, तिण नै गाव नेरवौ इनायत हुवौ ।

---

१. ग. बद्दूकड़ा । २. ग. रोडावा । ३. ग. ओकणती ।

---

1. तीसरे हिस्से की जमीन । 2. प्रति वर्ष 100) रुपये दिये जाते । 3. आधा हिस्सा ।

१ खिड़ियौ केसरो गांव कावलीयां रौ, तिण नै गांव द.ढारीयौ इनायत हुवौ ।

१ बारट सोवौ गांव खारी रौ ।

१ ....गोपाळो.......... ।

माहाराज श्री मांनसिंघजी रै फुरमायोड़ौ गीत खुद्द सांगर कौ दुहौ-अथै गीत —

ठौड़.ठौड़ त्रंब ठेहरिया, भड़ थपिया कै छोड ।
बाली लाज तजे के बहिया, सतरै जद रहिया सुकब ।।१।।

बारली फौज में तीन लाख लोक सो, मंडोवर बालसमंद चैनपुरै सैहर रै चौफेर डेरा । नित कहिश्रां चढै । मुलक लुंटै सवाईसिंघजी रौ डेरौ कागै । सींगोरीयां री भाखरी ऊपर बीकानेर रौ मोरचौ । नै मोवण कुंड रै मिंदर ऊपर व्रह्मपुरी मैं आसोप री हवेली में वगेरै गढ रै च्यारूं तरफ मौरचा लगाया । नित झगड़ा हुवै । सिंघवी जीतमल सुरजमल अै बारै परा गया था सो सवाई-सिंघजी कनै दिन ७ सात¹ दिवांणगी री कांम कीयौ । नागौर में इंणां रा टाबर कबीला रोकीयोड़ा था[1] जिणां नूं छुडाय सुरजमलजी तौ नास गयौ[2] नै जीतमलजी पकड़ीज गयौ । बीकानेर री फौज में कैद रयौ । पछै परदेसीयां नूं सूंक दे[3] नीसरीया सो जेतावतां रा गुड़ा गयौ सवाईसिंघजी कनै सिंघवी चैन-करण दीवांणगी लीवी, सिंघवी सिभूमल पिण सवाईसिंघजी सूं आय मिळीयौ । धांधल, खीची, पड़ियार, अंगोलिया, अबदारी वगेरै कितराक छोटा मोटा चाकर माहाराज भींवसिंघजी रा सवाईसिंघजी सूं आय मिळिया । श्री हजूर सुं सवाईसिंघजी रै नै रास ठाकुर जवांनसिंघजो रै नांवे खास रुका मेलीया था— थांरा घरांणा सांमी दिस्ट दीजौ ।[4]

इंदरराजजी कयौ नागौर थां नीचै है ईज नै फेरूं थे कहौ जिकै परगना धौकलसिंघजी नै देवां । तरै सवाईसिंघजी कह्यौ कै जोधपुर छोड़ जाळोर परा जावौ नै रुपिया बाईस लाख जैपुर रा राजा रा खरच पड़िया है सो देवौ । इण ताछ जोर री वातां कीवी नै परपूठ सवाईसिंघजी इसा आखर कया[5] कै धोला मुहढा रा[6] छौरा भेळा हुवा है सो तांडो लूंट लेसां नै इंदरराजजो गंगारांमजी नूं पकड़ लेसूं । सो अै आखर इंदरराजजी सुणिया नै सिरदारां पिण

१. ग.. दिन 10 ।

1. नजर बंद थे । 2. भाग गया । 3. रिश्वत देकर । 4. तुम्हारे घराने के गौरव की तरफ दृष्टि देना । 5. ऐसे शब्द कहे । 6. योग्यताहीन चेहरे वाले, कम अनुभव वाले ।

सुणिया। तरै खेतड़ी झूंझणुं वगेरै सेखावतां रा वचन हा सु सेखावतां नु कह्यौ थांरा घोड़ा साथे दे म्हांनु नीबाज तांई पोछाय दौ।

इन्द्रराज का जोधपुर से नीबाज की ओर प्रस्थान करना—

सो कुचांमण, आऊवो, आसोप, नीबाज वगेरै सिरदार नै इंदरराजजी गंगारांमजी सेखावतां रा घौड़ा लै जोधपुर सूं नीबाज गया ने नीवाज सूं बावरै गया। डेरा किया। ऊठा सूं लोढौ किलांणमलजी नूं तौ पटैल दौलतरावजी व नै मेलीयो कै थे म्हांरी खिरणी रा मालक हौ सो थांरी चढी खिरणी तौ म्है देसां। थै आवौ नै मीरखां रै सवाईसिंघजी सूं खरची बाबत झौड़ हुय गयौ[1] तरै तगादौ कर चढ गयौ तरै इंदरराजजी भंडारी पिरथीराज नै मीरखां कनै ऊकील मेलीयौ अर वात बांधी[2] कै खरची म्हें थांनै घणी देसां थे म्हांरे सांमल रहौ। जरै नबाव मीरखां कही अच्छा, पिण हमारी फौज में हाल खरची की तंगाई है सो कुछ तौ पैली लावौ। सो इंदरराजजी कनै रोकड़ रुपिआ नहीं तरै वळूंदा रा ठाकुर सिवसिंघजी सवाईसिंघजी सांमल थौ नै वळूंदा में पाखती रा गांवां री आसांमीयां घणी भेळी हुई थी सो इंदरराजजी फौज ले जाय बळूंदा कना सूं रुपीया तीस हजार भराय[1] मीरखां नूं दीया[2] पछै मीरखां नै भंडारी पीरथीराज फौज ले ढूंढाड री तरफ गया। नै ढुंढाड रो मुलक लूंटणौ सरू कीयौ। भंडारी चुतरभुज, ऊपादीयौ रांमबगस नै बूड़सू रौ ठाकुर परतापसिंघ अै सारा वडू आया। चोरासी रा सिरदार सारा भयो, गेंडो, सरनावड़ौ वडू वगैरै फौज भेळी कर परबतसर डीडवांणा में पाछौ श्री हजूर रौ अमल कर लीयौ (बाबरै बैठां.बैठां इंदरराजजा वि.तराक सिरदारां नै फेर फांटीया नै खरची पिण सिरदारां कनासूं मंगाइ।

गढ पर बाहर वालों के हमले

जैपुर रै रायचंद[3] दीवांण खरची मेलणी बंद करदी नै माहाराज जगतसिंघजी नूं अरजी लिखी फोज नूं खरचो सवाईसिंघजी देसो सो जैपुर री

१. ग. तकड़ मार कर (अधिक)। २. ख. रकत में लिखा है कि मीरखां नै सरदारों को उलहाना दिया कि तुम लोग केवल अपनी गरज के समय हमारे से दोस्ती करते हो फिर भूल जाते हो तब सरदारों ने कसम खाई और मीरखां को अपनीं और मिलाया (28-A)। ३. खरची देणी बद कर दी (अधिक)।

1. बोल-चाल हो गई। 2. निश्चय किया।

फौज खरची बिनां नित बिखरती जावै । दौलतपुरै सीकर रा सेखावत राव लिछमणसिंघ आय गढ रै घेरौ दीयौ ने मांह पड़ियार अमरदास नै लाड—खांनीयां कतार फाड़ सेमांन कर बड़ गया । महीना दोय लड़िया पछै सीकर वाळा फीटा पड़[1] पाछा परा गया ।

ईतरी जायगा श्री हजूर रौ अमल रयौ[2]—जोधपुर गढ में जाळोर, सिवांणौ गढ में तौ अमल श्री हजूर रौ रयौ नै सिवांणा खास में भंडारी धीरजमल अमल कीयौ । दौलतपुरौ, घांणेराव, वाहाली[3], सिव ऊमरकोट वगेरै में गढां में तौ अमल माहाराज मांनसिंघजी रौ रयौ नै परगनां में सवाईसिंघ री फौजां रा तुंगा[4] मेल दीया सो सारी जायगा तैसील लीवी ।[5]

गोपालदास पंचोली द्वारा शहर की जनता की सुरक्षा का उपाय—

जोधपुर सैहर लुटीज जावतौ पिण पंचोळी गोपाळदास फतैपोळ जाय मालम कराई कै मरजी हूवै तो बंदगी में हूं, गढ में आऊं । जद हजूर सूं दाऊदखां हस्तै फुरमायौ के तूं बारे हीज रेहै चाकरी कर देखावसी तौ आफी[6] मालम पड़ जावसी । तरै गोपाळदास सवाईसिंघजी सूं बात कीवी कै सेहर क्यूं खराब करावौ हौ सु वाजबी पईसो हूं पैदास कर देसूं[7] सैहर री कोटवाळी हाकमी, सायर, सवाईसिंघजी गोपाळदासजी तालकै कर दीवी । सो गोपाळ—दास वारली फौज वाळां री अजाजीती[8] हूण दीनी नहीं सैहर री रईयत री प्रतपाळ राखी[9] और गढ में पिण सैमांन सारूं घिरत वगेरे जोईजतो[10] सो मेलतौ नै रौकड़ रुपिआ पिण सैहेर मांहसुं ऊगाय नै मेलीया तिण सूं गोपाळदास पंचोळी री श्री हजूर बंदगी जांणी ।

संमत १८६४ लागौ, मेह सावण में मोकळा हुवा । पिण धंगा रा सबब सूं[11] मुलक सूनौ नै लूटा-खोसौ[12] तिण सूं खेतीयां हुई नहीं । धान रुपिया अेक १) रौ पकौ पनरै सेर विकतौ ।

बारली फौज वाळा फतैपोळ री सफील रै सुरंग खोदी । तिण री खबर गढ में पड़ गई । सो तेल ऊनौ कर नै[13] बारलां ऊपर डेहरा भर-भर ऊपर सुं नांखीयो

---

1. अपमानित होकर । 2. उस समय अधिकार था । 3. बाली । 4. टुकड़ियें । 5. रकम उगाही । 6. अपने आप । 7. वाजिब रकम पैदा करके मैं आपको दे दूंगा । 8. अत्याचार । 9. सुरक्षा को कायम रखा । 10. आवश्यकता होती । 11. झगड़े के कारण । 12. लूट खसोट । 13. तेल गरम करके ।

सो कितराक तौ तेल सूं बळ मर गया। नै बाकी रा नास गया। फतैपोल खैजड़लं रा भाटीयां रौ डेरौ थौ सो इणां तरवारां म्यांनां बारै ले बारै निकळ गया। झगड़ौ कीयौ। नै रांणीसर रा ग्रुरज कांनी पिण सुरंग बारलां लगाई सो ऊठै नूं पिण झगड़ौ हुवौ जठै तुंवर बाहादरसिंघ[१] कांम आयौ। तिणांरी छतरी रांणीसर में है। नै लखणा पोळ बारै रासोळाई में जैपुर रा दादू पंथियां मोरचौ घालियो थौ सो रातरा किले री बारी खोल नै जसोल ठाकुर जसूंतसिंघजी वगेरै गया सो मोरचा उठाय दीया। जसूंतसिंघजी रौ परधांन सोडो किरतसिंघ कांम आयौ। तिण री छतरी जैपोळ बारै छै। श्री हजूर रौ फुरमायोड़ौ कीरतसिंघ रौ दूहौ—

तन झड़ि तेगां तीख,[1] पौळ तणौ मुख पोढियौ।
किरतो नग कोड़ीक[2], जड़ियौ गढ जौधांण रै॥

नै फेर चवांण सांमसिंघजी राखी रा कांम आयौ तिण री छतरी जैपोळ बारै है। इण तरै रौजीना झगड़ा हुवै।

जान बत्तीसी तथा आंबा का सवाईसिंह की तरफ होना—

लोढो किलांणमल दौलतरावजी कना सूं फौज लायौ। आंबो नै ज्यांन बत्तीसी फौज रा मालक था सो सवाईसिंघजी, बगड़ी कैसरीसिंघजी, बळूंदे सिवसिंघजी, पाली ग्यांनसिंघजी, चंडावळ बगसीरांमजी वगेरै सिरदार हजार दोय २००० फौज सूं संमत १८६४ सांवण वद ११ आंबा ग्रर ज्यांनबत्तीसी सांमा चढिया। मेड़ता रै गांव देवरिये डेरा कीया नैं इंदरराजजी नै समाचार दीया कै थे आवौ, म्हां सूं मिळौ सो बात बांधां[3] तरै इंदरराजजी रा डेरा गांव कुड़की हुवा नै हाथीभाटै आंबा ज्यांनबत्तीसी रा डेरा हुवा। कुड़की देवरीया रै डेरां बात हुई। इंदरराजजी कयौ—नागौर, डीडवांणो, कोलीथो, मेड़तो, परबतसर, मारोठ, सांभर, नांवौ ग्रै तौ धोंकळसिंघजी नूं देणा नै जोधपुर, जाळोर, सोजत, जैतारण, सिवांणो, पचपदरो, पाली, देसूरी, सिव, उमरकोट, फळोदी ग्रै माहाराज मांनसिंघजी रे राखणा नै जोधपुर वगेरे सारा राखौ। तरै सवाईसिंघजी कह्यो नागोर वगेरे तौ माहाराज मांनसिंघजी रै राखौ नै जोधपुर वगेरे धौकळसिंघजी रै राखो। दिन तीन चार तांई ग्रड़बी रही[4] जितरै सवाईसिंघजी आंबा ज्यानबत्तीसी नूं फांट लीना। सो इणां

१. हजूर रा साळा (ग्रधिक)।

1. तलवारों की तीखी धारों से। 2. करोड़ रुपये का, अमूल्य। 3. इन से बातचीत कर सुलह करें। 4. बात उलझी रही।

सवाईसिंघजी सांमल डेरा कर दीया । तरै सवाईसिंघजी जोर में आय गया नै इंदरराजजी सु बात करणी मोकूब राखी[1] नै सिंघवी चैनकरण नु कयौ कै ज्यांनवलीसी तु लेनै सोभत जैतारण कांनी जावौ । सो इणां तौ लांबीयां, नीबांज, आऊवा वगेरे ठिकांणा कनां सु रुपीया तैसील कीया ।

मीरखां को अपनी ओर मिलाने का इन्द्रराज का प्रयास सफल

सवाईसिंघजी संमत १८६४ रा सांवण सुद ५ पाछा जोधपुर आया, घेरो घणौ तंग कीयौ अर इंदरराजजी कूच कर किसनगढ गया नै मीरखां कनै इंदरराजजी री तरफ सु भंडारी प्रिथीराज नै कुचांमण रा ठाकुर सिवनाथसिंघजी गया, नै रुपिया चार-पांच लाख रौ रुकौ मीरखां नु देण रौ रुको ठाकुरां सिवनाथसिंघजी लिख दीयौ घराघरू ।[2] मीरखां नै कयौ कै सिवलाल बगसी जैपुर सू फोज ले नै जोधपुर नै विदा हुवौ छै जिण नै झगड़ो कर विगाड़ दियां सू[3] लाख अेक रुपिया थांनै देणा नै बाकी रा ही म्हांरै सांमल रयां सू भरती कर देणा, जिण वचन मैं चूकां तौ थांकै भेळो खांणौ खाय[4] मुसलमान हूय जावूं । इण तरै रा पका वचन कुचांमण रा ठाकुरां सिवनाथसिंघजी नबाब मीरखां नु दीया । जोधपुर सू श्री माहाराजा साहबां जवाहर री रकमां मेली । सिरदारां पिण गैणा रोकड़ मेलीया ।[5] वळूंदा रा ठाकुर सिवसिंघजी देवरीया रा डेरां खरची सारु रुपिया अेक हजार रोकड़ा दीया नै आपरी जमीयत रा घोड़ा इंदरराजजी कनै राखीया । पछै गेणौ जवा[ह]र वैच अठी-उठी सू रकम भेळी कर रुपिया अेक लाख इंदरराजजी मीरखांजी नू खरची रा मेलीया । कुचांमण सिवनाथसिंघजी बूड़सु परतापसिंघजी वगेरै फोज सांवठी भेळी हुई ।[6] मीरखांजी नै सांमल ले कूच कीयो[१] सो जैपुर रौ बगसी सिवलाल रा डेरा गांव फागी हुआ था सो मीरखांजी सिवनाथसिंघजी गांव फागी जाय बगसी सिवलाल सु झगड़ौ कीयौ । माहाराज री फतै हुई । सिवलाल भागौ नै सिवलाल रा डेरा असबाब सारा लूट लीना । फागी फतै हुई जिण रा कागद गांव वडो रौ चारण सांईदांन लाय गढ में दीया था । सु

१. ख. कूच जोधपुर सूं कर डेरा बीसलपुर किया नै मजल री मजल 25 हजार रुपिया सिंघवी इन्दरराजजी गंगाराम देणा किया सो उणां रा कांमेती भंडारी पिरथीराज वगेरे 20 थेली नगद सूंप दीवी नै कह्यौ काल रा डेरा फेर 20-25 थेली कीये मुजब थांनै रोजीना दीयां जासां ।

1. बात करना स्थगित कर दिया । 2. अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर । 3. उसे क्षति पहुंचाने पर । 4. तुम्हारे शामिल भोजन करके । 5. गहने व रोकड़ रुपये भेज । 6. अच्छी संख्या में फौज शामिल हो गई ।

घेरौ खुलियां पछै उण चारण श्री हजूर नै दुहौ सुणायौ—

फागी जुद पाई फतै, लूंट लियौ सिवलाल।
वे कागद म्है आंणीया,[1] मांन अभनमा माल[2] ।।

तरै इण बंदगी सुं सांईदांन नै वरसोंद[3] रुपिया १४०) अेक सौ चाळीस री प्रगने सोजत ऊपर कर दीवी।

श्री हजूर इण बंदगी सुं मीरखांजी नूं खास रुको दीयौ जिण में नवाब भाई रौ ईलकाब लिखियौ। नै सिरदारां नूं नै इंदरराजजी नूं खातरी रा खास रुका दीया जिण में लिखीयौ—बाबरै, किसनगढ, फागी, चाकरी में हौ जिणां री घेरा में हाजर है जिणां सुं वदती[4] चाकरी मालम हुसी।

परवतसर, मारोठ, डीडवांणो मेड़नीयां वडू वगेरां नै भंडारी चुतरभुज ऊपादीयौ रांमदांन छुडाय लीया था नै माहाराज श्री मांनसिंघजी रौ अमल कर लीयौ थौ सो सवाईसिंघजी दिखणी आंवा ज्यांनव्रतीसो नू फाड़ीया तरै परवतसर, मारोठ, डीडवांणौ फेर छुडाय लीया था सो माहाराज री फागी फतै हुई जरै परवतसर, मारोठ, डीडवांणौ पाछा श्री माहाराज मांनसिंघजी रौ अमल कर लीयौ। वडू रा नै गोड़ाटी रा नै चौरासी भाड़ौद रा सिरदारां भंडारी चुतरभुज ऊपादीयौ रांमदांन रै सांमल हुय वडू रा ठाकुर अजीतसिंघजी श्री दरबार रा घोड़ा पाळा ५०० पांच सौ भंडारी चुतरभुज कनै था जिणां नै मास दोय २ तांई वडू राखीया, रोटीयां, घास, दांणो अर सुं दीयौ। परवतसर परगना रा सारा सांमधरमी रया।[5] अेक जावला रो ठाकुर वाघसिंघ सवाईसिंघजी कनै गयौ थौ।

मीरखां का ढूंढाड़ लूटते हुए जयपुर तक पहुंचना—

पछै सिवलाल री फौज विगाड़ नै मीरखांजी सिवनाथसिंघजो ढूंढाड़ रो मुलक लूंटता लूंटता गया सो जैपुर सुं कोस तीन उगी तरफ गांव झूठवाड़ौ जठै डेरा कीया। झूठवाड़ा रा वाग रा रुंख सारा काट नांखीया। जैपुर रा दरवाजा जड़ीज गया[6]। भंडारी पीरथीराज सिवनाथसिंघजी थेट जैपुर गया सो अेक दिन तौपां मांड गोळा वाया,[7] पछै पाछा झूठवाड़ै

1. उस खबर का पत्र मैं गढ में लाया था। 2. राव मालदे का वंशज। 3. प्रतिवर्ष। 4. बढकर। 5. महाराजा की ओर रह कर स्वामी-धर्म का निर्वाह किया। 6 जयपुर शहरपना के दरवाजे बन्द हो गये। 7. तोपें लगाकर गोले लगाये।

डेरो आया । पछै झूठवाड़ै सुं कूच पाछौ कीयौ नै किसनगढ सुं सिंघवी इंदरराजजी आऊवा रा वखतावरसिंघजी, आसोप केसरीसिंघजी, नीवाज सुरतांणसिंघजी, लांबोयां भानीसिंघजी, सुमेल रा थांनसिंघजी भाटी वगैरै इणां कूच कीयौ नै परवतसर कांनी सुं भंडारी चुतरभुज ऊपादीयो रांमदांन नै चौरासी रा मेड़तीया बड़ अजीतसिंघजी, बोरावड़ रा मंगलसिंघजी, खालड़ रा मोकमसिंघजी, मनांणा रा जूंझारसिंघजी, तोसोणै रुगनाथसिंघजी, भईये हरदांनसिंघजी, गेडे सुखसिंघजी, सरनावड़ें फतैसिंघजी वगैरै सारा गोयनदासोत नै ऊदावत कालीयाटड़े परतापसिंघजी पीह रा वखतावरसिंघजी वगैरै फोज हजार पांच ५००० इंदरराजजी सांमल हुवा ।

मीरखांजी इंदराजजी संवत १८६४ रा भादवा में अजमेरा रा गांव हरमाड़ै सांमल हुवा । कंटाळीया रा सिभूसिंघजी, आलण्यावास रा भारतसिंघजी मीरखांजी सांमल भंडारी पिरथीराजजी साथे था । बंवाळ रा ऊदावतां नै गोयनदासोत मेड़तीया जैपुर रा गांव घणा लूटोया । मीरखांजी इंदरराजजी कने लोक सांवठौ भेळौ हुवौ नै ढूंढाड़ रौ मुलक लूटीयौ । लुगायां सईकड़ां पकड़ पकड़ नै लावै[1] नै अदेले लुगाई वेचे[१],[2] लूट सुं मीरखांजी वगैरे सारी फौज मैं चंदगी हुई । नै मीरखांजी सिंघवीजी कनै खरची मांगी तरै इंदरराजजी परवतसरवाटी रा मेड़तीयां नै कह्यौ कै रुपिया असो हजार[२] निजर करौ । तरै वडू रै साह चुतरभुज रुपिया अेक लाख रौ विराड घालीयौ ।[3] नै चंडवांणी जोसी सिरीकिसन नै घडिग्रो राजारांम अे छोटे दरजै थोड़ो पूंजी सुं अजमेरा में बोपार करता था जिणां नै इंदरराजजो खातर कर इणां नूं बोरा कीया । लाख रुपियां री साद सिरीकिसन राजारांम री मीरखांजो सुं कराय नै परगना री तेहसील ऊपादीया रांमदांन कर नै सिरीकिसन राजारांम नूं भरती रुपियां री कर दीवी ।[4] ऊण दिन सुं राजारांम सिरीकिसन रौ जमाव सरू हुवौ नै भाग वधियौ ।[5]

पछै जावला रा ठाकुर रौ गांव झालरा ऊपर फौज मेली, रुपीया २५०००) पचीस हजार लीया । मीरखांजी इंदरराजजी सांवठी फौज सुं जैपुर सांमो कूच कीये री माहाराज जगतसिंघजो नूं खबर लागी । तरै वीकानेर

---

१. ग. घर रा धणी नै देय रुपिया लेवै ।
२. ग. एक लाख ।

---

1. खूब औरतों को पकड़ पकड़ कर लाते हैं । 2. अकेले में एक औरत को वेचते ।
3. एक लाख रुपये देने की जिम्मेदारी ली । 4. उनको रुपये वापिस दे दिये ।
5. इज्जत बढी, तकदीर बढी ।

माहाराज सुरतसिंघजी सवाईसिंघजी वगैरै सारां नू भेळा कीया, ग्रांमा-सांमा दोसा-वासा काढीया[१.1]।

संमत १८६४ रा भादवा सुद १३ रात रा जैपुर रा राजा जगतसिंघजी जोधपुर सुं वहीर हुवा। सवाईसिंघजी मोकळा वरजिया[2] पण रया नहीं। बीकानेर रा राजा सुरतसिंघजी पिण वहीर हुवा रातौरात सवाईसिंघजी वगेरै सारी फौज वहीर हुय गई।[२] हालीयो जितरौ तौ ग्रसबाब ले गया बाकी ग्रसबाब डेरा बाळ गया[3]। माहाराज जगतसिंघजी सुरतसिंघजी भाज गयां री[4] भादवा सुद १४ परभात रा मालम हुई। वड़ी खुसी हुई। तोपां री सिलकां हुई। गढ सैर रा दरवाजा खुलिया।

श्री हजूर साथे पधार नै ग्रायसजी देवनाथजी नूं महामिंदर पधराया,[5] सैहर रा माहाजनां लोकां नै मुजरौ हुवौ। खातरी दिलासा फुरमाई। माहाजनां ग्ररज कीवी के हिंदू था जिण रा मुसलमांन हुय जावता। लुगायां नू तुरक लेजावता सो गोपाळदास पंचोळी रैत री ग्रावरू राखी है। पछै गोपाळदास नूं हवेली सूं बुलाय पूरी खातरी फुरमाई।

माहाराज जगतसिंघजी जैपुर रौ मारग लीयौ। सुरतसिंघजी नागौर हुय बीकानेर गया। नै सवाईसिंघजी नागौर रया। मीरखांजो इंदरराजजी नै खबर पौती तरै दर कूचां गांव पावे डेरा कीया। मारग में जगतसिंघजी री फौज रा घोड़ा ऊंठ वहीर गोयनदासोत मेड़तीया दोय तीन मुकांमां तांई लूंटिया[3]। जगतसिंघजी री फौज रा ग्रादम्यां रा नाक कांन घणा रा काटीया। माहाराज जगतसिंघजी रा डेरा दांतै रै गांव नोसल हुवा। इंदरराजजी मीरखांजी रा डेरा गांव·········हुवा। छेती थोड़ी हीज रही[6] जगतसिंघजी कनै फौज तौ

१. ग. नै कह्यौ सवाईसिंघजी री वातां सूं म्हारो ग्रठै ग्रावणौ हुय गयौ। म्हांने रायचंद ग्ररज करी तिण नै वरजियौ, मांनी नहीं जिण सूं म्हारो मुल्क ढूढाड़ खराब कर दियो हमें म्हे तो चढ जासां। तरै सवाईसिंहजी कह्यौ चढो मती सुस्तावो, इतरा दिन में धौकलसिंह रौ काम तो सही हुवौ नहीं (ग्रधिक)। २. ग भाग गई।

३. ख. ख्यात में लिखा है कि मानसिंहजी ने इन्द्रराज व मीरखां को खास रुक्के शाबासी के लिखे जिनमें मीरखां को भाई कहकर सम्बोधित किया तथा फौज लेकर ढुंढाड़ से कूच किया। हरमाड़े डेरा किया। मीरखां को 2 लाख रुपये देने थे ग्रत: एक लाख रोकड़ दिये तथा 1 लाख का जुरमाना परवतसरवाटी के मेड़तियो पर इन्द्रराज ने डाला, तब शाह चतुरमुज के मारफत रुपये 90 हजार रोकड़ नवाब को दिलवाये। जावला ठाकुर वागसिंह सवाईसिंह की तरफ था उससे रुपये 2500) भराये। (पृ. 31 B)

1. एक दूसरे में दोषारोपण किया। 2. मना किया। 3. जला कर चले गये। 4. भाग गये उसकी 5. महामंदिर में विराजमान किया। 6. थोड़ी-सी दूरी रही।

सांवठी थी पिण कूच लंबा-चंबा कीया । तिण सूं लोक थाक नै हेरान हुय गया । नै इंदरराजजी मीरखांजी नू कयौ-झगड़ो कर सां। सो अेक तुंगो[1] हजार दसेक फौज रो थौ तिण सूं झगड़ौ कीयौ । श्री दबार री फतै हुई। जैपुरीयां री फौज भाग छूटी । तरै जैपुर रै दीवांण रायचंद रुपिया लाख अेक इंदरराजजी नै दीया । नै माहाराज जगतसिंघजी नू कुसळे जैपुर दाखल कीया[१] । अेक लाख रुपिया आया सो इंदरराजजी प्रवारा मीरखांजी नूं खरची पेटै दीया ।

श्री हजूर इंदरराजजी सुं घणा मेरबांन हुआ नै तारीफ फुरमाई । पोहोकरण सवाईसिंघजी चंडावळ बगसीरामजी, पाली ग्यांनसिंघजी, बगड़ी केसरीसिंघजी, हरसोळाव जाळमसिंघजी, खींवसर परतापसिंघजी, लवेरे रा भाटी उम्मेदसिंघजी, संखवाय वगेरै नै नागौर पटी रा सिरदार लाडणू दुगोलो वगैरै नै जैतारण रौ गांव लोटोती वगैरै सारा सिरदार सवाईसिंघजी साथै नागौर गया ।

मीरखां तथा इंद्रराज का जोधपुर की ओर प्रस्थान तथा महाराजा द्वारा अपने पक्ष के जागीरदारों, चाकरों, आदि को पुरस्कृत करना—

नवाब मीरखांजी नै सिंघवी इंदरराजजी जैपुर कांनी था सो फौज ले जोधपुर आया । सिरदार पिंडां साथे था श्री हजुर में मुजरो हुवौ । खातरी फुरमाई कै थां जिसा उमराव नै इंदरराजजी गंगारांमजी जेड़ा मुतसद्दी हुवै नै जोधपुर रौ घेरो ऊठै । सो इण री तारीफ कठा तांई फुरमावां । मीरखांजी नै नवाब पदवी नै भाई पदवी नै बरोबर बैसण रौ कुरब हूवौ । नै गांव पादवां २ डांगास पटै हुवा । नै खरची में परगना नांवौ वगेरे दिया । मैमदखां नै पिण

१. ख. ख्यात में उद्धृत गीत—

जगो जयपुर गयौ तिका वात सुणजो जरूर, हुंमैं वोह नारियां कीध हांसी ।
उवारूं जी उवारूं रुपिया जी आप पर, पण उदैपुर परणिया सु कदे आसी ।।
असंक दळ लेय चढ्या छा अठा सूं, वाजतां छतीस घण बाजा ।
गया जिण डांण आया नहीं, राणावत तणों रथ कठै राजा ।।
क्रोड़ रा खजाना खाय खाली किया, पण उदमाद सुरंग पीठी ।
देखावो राजा मोय सीसोदणी, देखावो कोउ धण नाय दोठी ।।
नाथ आमेर नूं हंसै अगा नैणीयां, गायणियां मिळै गीत गाया ।
ढोढियां डोळियां ऊतरै दायजी, ब्याव कियो जिसी वनी लाया ।।

1. एक टुकड़ी ।

नबाव पदवी हुई। दातारांम मुनसी मीरखांजी रौ नू गांव…………हुवौ नै लालौ लालसिंघ नै राजा बाहादुर पदवी दीवी। आऊवा रा ठाकुर वखतावर-सिंघजी नू परधांनगी नै गांव चिरपटिया वधारा में[1]। चिरपटिया रा फितूर सांमल था[2] जिण मुदै गांव लोहावट सारण नै भाईपौ जिलौ आछी तरै ठाकुर रा कैणा मुजब लिख दीया। पिंडां ठाकुरां रै पटौ रेख ६२०००) बासट हजार री लिख दीवी। अर दीवांणगी सिंघवी इंदरराजजी नै सिर पाव हूवौ। ऊठण रो कुरब हुवौ। पटौ तौ लियौ नहीं नै दरसोद रुपिया १२०००) बारै हजार री हुई नै दूहौ उण वखत वणाय ने श्री मुख सूं फुरमायौ—

पडतों घेरौ जोधपुर, आतां दळां असंभ ॥
आभ डिगंतां ईंदड़ा, थे दीधौ भुज थंभ ॥'१॥

औ दुहौ कै नै श्री हजुर फुरमायौ कै भींवराज सूं लेनै आजतांई थे सारा ही भाई सांम धरमी सुं बंदगी पोहता।[3] थां सिवाय चाकर इण घर में कुण है? खातरी कर सारा मुलक रौ मुकत्यारी रौ कांम सूंप दीनौ[1]। नै सिंघवी बाहादरमल, भंडारी पिरथीराज, मांनमल, मोदी मूलचंद, पंचोळी अखैमल, वगैरै इंदरराजजी रा कांमेती तालकदारां नै सिरपाव गांव पटा आ जीवगा देनै सिरकारां वांद दीवी। बगसी सिंघवी मेगराज रै नांवै दीवांणगी वगसी अेकण घर। मूतौ सुरजमल नै इंदरराजजी दोनूं सांमल कांम करै।

आसोप केसरीसिंघजो नै गांव गजसिंघपुरौ वधारा में दीयौ। गज-सिंघपुरा वाळा फितूर सांमल गया तिण सुं ऊणां रौ पटौ सारौ आसोप वाळां नूं लिख दीयौ। वड़लू सादूळसिंघजी पैली तौ सवाईसिंधजी सांमल रयौ[4] पछै घेरा में खरची मेली, तिण सुं पटौ सावत रयौ। न चंडावळ बगसीरामजी नागौर सवाईसिंघजी सांमल रयौ नै विसनसिंघजी सीतंग उठाय वर वैठो थौ कटारी खाय नै, तिण रै चंडावळ सावत रही। नींवाज सुरतांणसिंघजी नै वधारा में गांव खवासपुरो नै वर वगेरै भाईपौ जिलौ लिख दीयौ। लांबीयां भांनसिंघजी रै गांव कठमोर, दयालपुरो जोधां रा था सो लिखीजिया। नै कांणेचो बळूंदा रा नै वधारा में हुवौ, भाईपौ जिलौ सुदो[5]। रास जवांनसिंघजी

---

१. ख. जोधपुर खास री कचेड़ी री हाकमी मूंता सुरजमल रा बेटा बुधमल रैं नांवै हुई। भंडा रै खोळी दूजी घालीजी अर सैर में अणदुवाई माराज श्री मांनसिंघजी री फिरी।

---

1. आगे जो जागीर थी उसके विस्तार के रूप में। 2. धौंकलसिंह की तरफ थे।
3. स्वामी धर्म का निर्वाह करते हुए सेवा की। 4. सवाईसिंह की तरफ रहा।
5. ठाकुर के भाईयों आदि को भी उसमें अधिकार दिया।

फंटिया था पिण पाछा लगाय लीया, पटो सावत रयौ। रायपुर उरजनसिंघजी सवाईसिंघजी कनै गया। पिण रुपिया ठैहराय पगै लगाय लीया। छींपियै ग्रमरसिंघजी पिण सवाईसिंघजी सांमल गया था। तिणां नूं ही रुपिग्रा ठेहराय पगे लगाय लीया। रोहट इंदरसिंघजी नू वधारा में गांव खजवांणो दीयौ। भाईपो जिलो फैर सवाय में लिख दीयौ। कंटाळीयै सिभूसिंघजी नूं वधारा में गांव नींबली नै सेखावास लिख दीया। ग्राहोर ग्रनाड़सिंघजी नै गांव बीसलपुर, बीलावस, वेनावस, ग्रटवड़ौ, खारीयो, सथलांणो, मांडावास, लिख दीया। ग्रालणियावास भारथसिंघजी नै वधारा में फालकी, कौड[1] दीया। नै मिरोदीयो कुचांमण सिवनाथसिंघजी नै नांवा री कोडी वधारा में दीवी। वरण गांव री उठांतरी नै रैंण बाब ग्रदखर[1] कर दीवी। धणकोली नीबी भाइयां रै लिखाई, भाईपो जिलौ लिखाय दीयौ। बूडसू परतापसिंघजी नूं चांदावत बाहादरसिंघ रौ गांव डाभरौ,[2] ग्रलकपुरौ वगेरै गांव सतरै लिख दीया। खेजड़ला रा भाटियां रै गांव धाकड़ी, कुरलायां भाईपो जिलौ कर पटौ रेख रुपिग्रा १०००००) अेक लाख री दीवी। भादराजण भंवरी रै वधारौ घेरा में वडु बोरावड़ रै ग्राजवो नै तोसीणो रै टापरवाड़ौ भाईपो गेडो सरनावड़ा वगेरै री सारां री चाकरी भरीजी। किणी नै गांव किणी रै खेत बेरा दीया। किणां रै वेतलवी। सारां नू निवाजस जथाजोग[2] दरजै मुजब सारां नूं राजी किया। जाळोरी रा दासपां बाकरा रा चांपावत मंडला वालां री सारां री खबर लीवी। जैड़ी चाकरी जैड़ी निवाजस दीवी। रुपावत बीकानेर वाळां सुं मिळ फलोधी गमाई थी सु तो पाछी छुडाय लीवी नै रुपावतां नू मुलक बारै काढ दीया। ने रूपावतां रा गांव पातावतां नै चाकरी सूं लिख दीया।[3]

---

१. ग. कोटड़िया

२. ग. डाभड़ौ

३. ख. पातावतां की खांप ग्राउ रा सरूपसिंघ वगेरै री चाकरी फलोधी मैं ग्रमल रुपावतां बीकानेर वाळां रो कराय दियौ तौ सो झगड़ा में ग्राऊ रो ठाकर सरुपसिंघ काम ग्रायो तिण बंदगी में सरुपसिंघ रा बेटा हरीसिंह नुं वधारा में रूपावतां रा पटा रौ गांव भींयासर फलोधी परगने रो रु. 5000) री उपज रो लिख दियौ सो हाल बहाल है ग्रर दूजा काका बाबा पातावतां नुं गांव मूजासर, मोरियो, चाखू चीभूणो वगेरे रूपावतां रा जबत कर इणां नूं लिख दिया ग्रर रूपावत फितूर फंथ में पस गया था तरै रूपावतां रा गांव जबत कर पातावतां नुं लिख दीया नै रूपावतां नै मुलक बारै काढ दीना सो बीकानेर में पटौ तो मिलियो नहीं नै घर री खेतियां कर दिन काढिया। पछै सन् 1896 में सिरदारां नु गांव दिरीजिया जद एक मूजासर वगेरे दिरीजिया। मूजासर बीकानेर रै राजवियां रै पटै थौ सो मूजासर री एवज में फलोधी रो गांव जांभो दियौ।

---

1. ग्राधी। 2. यथायोग्य।

बळूंदे सिवसिंघजी हरामखोरां में था पिण रुपिया ठेहराय पाछा पगे लगाय लीया। कांणोचे विनां बाकी पटौ लिख दीयौ। रीश्रां बिड़दसिंघजी हरांमखोरा में था तिणां रै रुपिया ठेहरीया नै गांव सरासणा, अरणोयाली विनां बाकी रौ पटौ लिख दीयौ। सारा सिरदार वडा अर छोटा भोमीया वगेरै जोधपुर रा गढ में संवत् १८६४ रा घेरा में था तथा गांव बाबरै, फागी किसनगढ राड़ में सांमल था नै चाकरी पोहोता तिणां सारां नू आजीवगा जथा-जोग आछी तरा सूं कर दीवी। मुतसदी सिंघवी इंदरराजजी ने मुहता सुरज-मलजी, साहबचंदजी अखेचंदजी, व्यास चतुरभुजजी, छांगांणी कचरदासजी वगैरे सारां नूं निवाजसां हुई पटा खिजमतां सारां रै हुवा। मरजी चोखी रही खास पासवांन दोढीदार नथकरण नै खीची चेनौ सोडसरूप नै भाटी गजसिंघ देवराजोत नथो वगेरे सारां री चाकरी भर दीवी। परदेसीयां मै हींदालखां रौ लोग गोळ भरीजियौ सो काळू, भावी वगेरै पटौ लिख दीयौ। ने २२०० बाईस सौ आदमी घोड़ा राखीया[1]। गुलांमीखां नू बीलाड़ो पटै लिख दीयौ। घोड़ा पाळा १००० अेक हजार। मैमदखां, जीवणसेख, अेवजअली, मोसमअली, पुरबीयौ गिरवरसिंघ वगेरै पलटणां रौ वगेरै लोक सारौ वधायौ। परतां वधाई। इमत्याज कीया। अपसरां नु गांव पटा दीया। लालौ खूबचंद गोळ में वधियौ। दाऊदखां नै वधायौ। हिमतराय लालौ तौ जीवण सेख रै ऊकील नै गुलामीखां रै ऊकील तुलारांम, मैमदखां रै ऊकील पंचोळी वखतावरमल, अेवजअली रै ऊकील पंचोळी इमरतरांम सो इणां सारां नू आजीवगा दीवी। परदेसी दस हजार चाकर १००००) सो रुपिया १२०००) बारै हजार जोधपुर री कचेड़ी सूं महीना रा महीने दिरीजै। नै बाकी घटै सु दूजी जमी मांह सूं दिरीजै। सो परवारा नबाब मीरखां नू दिरीजै।

जमां थोड़ी नै खरच घणौ तिण सुं अड़चल। सो सिंघवी इंदर-राजजी बिनां दूजां सूं रस आवै नहीं[1] सिरदारां कनै रेख रुपीयां १०००) अेक हजार लार रुपीया १३५)[2] अेक सौ पेतीस नै दस रुपीयां घर बाब घाली। नै फेर मीरखांजी रो विराड़ रेख रुपीया १०००) अैक हजार लार रुपीआ २००) दोय सौ बेमरजी रा ठिकांणां[2] कने मुकरड़ै लीना।[3] १०००००) लाख अेक[3] रुपीया पैदास कर परदेसीयां नूं दीया।

---

१. ग. रसालदार कियौ (अधिक)।   २. ग. रुपिया 130)।
३. ख. लाख दो रुपिया।

---

1. अन्य किसी से व्यवस्था बैठे नहीं। 2. वे ठिकाने जिन पर कुछ नाराजगी थी।
3. एक साथ लिये।

इण मुजब मुतसदियां नूं खिजमतां दीवी—

मैड़तौ, सांभर, नांवौ लोढा किलांणमल तालकै । परबतसर उपादीया रांमदांन तालकै । जैतारण भंडारी मांनमल तालकै । सोजत इंदरराजजी तालकै, सुखराजजी रै नांवै । पाली चांपावत ग्यांनसिंघ दाब लीवी थी, सो सिंघवी सिभूमल नै मेल छुड़ाय लीवी । गोढवाड मुहतो साहबचंद तालकै । जाळोर मुहता सुरजमल तालकै । सिवांणौ, पचपदरौ,[१] दौलतपुरो, डीडवांणो, इण तरै सारां नू भोळाया ।[1]

डांडी रा अजमेरा रा गांवां में थांणो रहतौ सो घेरा में दिखणीयां भिणाय केकड़ी मसुदो खरवो अजमेरा नीचै लिख दीया सौ पाछा छूटा नहीं । सुमेल रा गांव ६ नव रया सो मेड़तै नीचै नांखीया । वगड़ी खालसै सो पंचोळी गोपाळदास तालकै हुई । पाली हरसोळाव वगेरै सिरदार नागौर था जिणां रा पटा जबत हुवा । सो आवता गया तिणां नू रुपिया ठेहराय ठेहराय पटा लिख दीया ।

आयसजी देवनाथजी रा भाई भतीजां रै मोकळौ[2] पटो हुवौ । भाव वधियो[3] नै सोमवार री सोमवार असवारी माहामिंदर पधारै । आयसजी री अग्या मंजूर ठेहरी । इंदरराजजी रै नै आयसजी रै मेळ । आयसजी चवड़ै तौ कांम में भिळै नहीं नै इंदरराजजी कांम अग्या मुजब करै ।[२]

मीरखां की सहायता से सवाईसिंह को मरवाने का षड्यंत्र

पछै श्री हजूर रै नै मीरखांजी रै अेकंत सला हुई । हजूर फुरमायो-नबाब थे म्हांरो राज वणियौ राख दीयौ तिण री तारीफ कठा तांई करां पिण सवाईसिंघ म्हांनू इतरा फौड़ा घालीया[4] सो इण रौ वदळौ किण तरै आवै । जद नबाव कह्यौ कै आपकी मरजी है तो सवाईसिंघ का सिर गिणिया दिनां में हाजर कर दूंगा । पिण फरेब नै दगा बिना वो सखस नही मरेगा । जद हजूर फुरमायौ—चावै ज्यूं करौ पिण इण हरांमखोर नू सभा दिया विनां म्है सुख

१. ख. भंडारी गंगाराम तालकै (अधिक) । २. ख. पछै श्री हजूर 1864 रा काती सुद पूनम नूं श्री हजूर मीरखां नूं याद कियौ । नबाब गढ ऊपर आयौ । मोतीमहल में पोर एक तांइ रह्या ।

1. सब की व्यवस्था सौंप दी । 2. काफी बड़ा । 3. आस्था बढ़ी । 4. इतना कष्ट पहुंचाया ।

सूं राज कर सकां नहीं म्हांनू इण घणा फोड़ा घालीया है। सो थांसूं वात छांनी नहीं। जद नबाब कह्यौ अब खरची बाबत तगादौ करूंगा आप हमकूं मनाईजो अर म्हें मनूंगा नहीं जद सवाईसिंघ हम से वात वणावैंगा। जब म्हैं आपके मुलक का नुकसाण करूंगा। जद सवाईसिंघ हमसे धीज जावैंगा।[1] जद सब कांम आप का सही हो जायगा। तरै आप फुरमायौ हर ऊपाव करौ पिण औ कांम हुवां सूं म्हांनू राज करण रौ सुख आवसी। जद मीरखांजी कयौ—म्हैं जोधपुर आय घेरौ लगाऊं नै गोळा लगाऊं जठा तक आप अंदेसा लाईजो मती।[2] इण ताछ श्री हजूर नै मीरखांजी रै इकंत[3] सला हुई जिण री खबर किणी नू पड़ण दीनी नहीं।

पछै संमत १८६४ रा पोस तथा माह मैं मीरखां खरची रौ तगादौ कीयौ। तरे इंदरराजजी कह्यो कै तोड़ काढ खरची दे देसां, पिण मांनी नही। तरै श्री हजूर पिंडां असवारी कर नबाब रै डेरै पधारिया। पिण नबाब तौ अेक ही वात मांनी नहीं नै छाडांणो कर जोधपुर सूं कूचकर मुलक विगाड़णौ सरू कीयौ। पंचोळी अनोपरांम, उपादीया रांमदांन नबाब कनै ऊकील फौज में मेलीया विसटाळा मोकळा कीया[4]। पिण मांनें नहीं नै मुंहढा मांह सूं हळकौ बोलै। सो आ वात सवाईसिंघजी सुणी तरै नागौर मैं कुसी[5] कीवी[१]।

सवाईसिंघजी नागौर में राज तौ धोकळसिंघजी कना सूं करावै नै दीवांणगी सिंघजी चैनकरण कनै कराई। हाकमी पंचोळी अखैमल कनै करावै। सवाईसिंघजी नबाब मीरखां कनै भला आदमी मेलीया नै केवायौ कै थे म्हांरै सांमल आवौ, थांरी खरची म्हे चुकाय देसां, म्हांरी मदत करौ नै धरम-करम पका कर लैवौ[6]। तरै नबाब हांकारो भर लीयौ[7] नै उठासुं कुच कर डेरा गांव मूंडवे कीया। तरै सवाईसिंघजी केवायौ कै डेरा जोधपुर सांमा करौ। तरै नबाब केवायौ कै अेक दफै ठाकुरसाब सै मुलाकात करेंगे। खरची की पकावट हमकूं आजावेगी पीछे ठाकुरसाब कहेंगे ज्यूं करेंगे।

---

१. ख. इन्दरराज वगेरै मुसदियां नूं लारै रा लारै मेलिया कै नबाब नुं मनाया पाछा लावो। औ गया पण नबाब एक ही बात मानी नहीं अर केई तरै रा कावादेवा किया.... दातारांम मुंशी नू कह्यौ-नवाब नूं ढाबो, पण नबाब मानी नहीं।

---

1. मुझ पर विश्वास हो जाएगा। 2. किसी प्रकार का संदेह मत करना। 3. एकांत में। 4. बातचीत से समझौता करने का काफी प्रयत्न किया। 5. खुशी। 6. धर्म कर्म की पक्की शपथ आदि लो। 7. नबाब ने मंजूर कर लिया।

तरै नवाब नूं नागोर बुलाया मूडवा, सूं छड़ी असवारी घोड़ा २००[१] दोय सौ सूं नवाब नागोर गयौ । संमत १८६४ रा चैत वदि १४ तारकीनजी री दरगाह में सवाईसिंघजी वगैरां सूं नवाब मिळिया । घड़ी दो २ तांई इक तरफा धरम-करम हुवा । पोहोकरण सवाईसिंघजी, चंडावळ बगसीरांमजी, पाली ग्यांनसिंघजी, वगड़ी केसरीसिंघजी, वगेरै सारा सांमल होय वात कर नवाब नै सीख दीवी । तरै नवाब कह्यौ—हमारी फौज में खरची बाबत सिपायां का तगादा है सो म्है तौ मूंडवै जाता हूं अर कल हमारे वहां आपकी मिजमांनी है[1] सो मूंडवै आवौ सो वहां सारी वात की पकावट कर लेंगे । घणी जमा खातर रखौ, गिणिया दिनां में जोधपुर मांनसिंघजी से छुडाय लेंगे । इण तरै धरम-करम कुरांन बीच में दे मीरखांजी तौ मूंडवे पाछा आया, ने चैत सुद २ दूज सवाईसिंघजी, बगसीरांमजी, ग्यांनसिंघजी, केसरीसिंघजी चढिया पाळा लोक हजार २०००) दोय[२] सूं मुंडवै गया । मिजमांनी नवाब दीवी । रात ऊठे हीज रह्या । मीरखां रै खरची री बाबत परदेसियां रो पूरो तगादो मैमदखां कर राखीयौ । सो मीरखां सवाईसिंघजी नूं केवायो थै आय नै सिपायां नू खरची की खातरी कर दौ, पीछे जोधपुर सांमां कूच करां । तरै नवाब रै डेरै सिरदार गया सो आगै अेक मोटो साईवांन[2] । तिण में बिछायत थी नै साइवांन रै चौफेर[3] तोपां लीद्रां सिपाई धरणै बैठा था सो सिरदारां साथै आदमी १००० अेक हजार सिरदारां मैहमदखां सूं खरची देण री वात विगत कीवी । तरै मैहमदखां कहयौ—म्हे जायकर नवाब कूं बाहर ले आऊं । यूं कहे मैमदखां तौ नवाब कनै गयौ । फेर यूं सुणी कै सिरदारां कनै मीरखां रो साळो बेठौ थौ सो ऊही जावण लागौ तरै सवाईसिंघजी हाथ पकड़ पाछौ बैसांणियो नै कयौ—म्हारै कनै कोई न छै सोबैठा रहौ । पछै नवाब रौ ही इसारौ पोथो[4] सो अेके समचै[5] साईवांन री डोरीयां तरवा रां सूं काट नांखी । सु साईवांन नीचे सारा दबरा गया । नै ऊपर सूं तोपां रै बत्ती दीवी सु सारा भूंजींज गया । सिरदारां रा आदमी साईवांन बारै ऊभा था तिणां नै तरवारां गोळी टपां सु मारीया । नै सिरदारां रा डेरा ऊपर लोक गयौ सु कितराक तौ तोपां सुं उड गया नै कित-राक तुरकां कोस लीया संबीया जीकां नूं तो मार लीया बाकी रा भाग छूटा ।

संमत १८६४ रा चैत सुद ३ तीज गिणगोर रै सै दिन सिरदारां नू चूक हुवौ ।[6] पोकरण सवाईसिंघजी, पाली ग्यांनसिंघजी, वगड़ी केसरीसिंघजी

---

१. ग. घोड़ा 500 । २. ग हजार एक ।

---

1. आपकी मेहमानदारी है । 2. शामियाना । 3. चारों तरफ । 4. नवाब का इशारा पहुंचा । 5. एक साथ । 6. गणगोर पर्व के ही दिन सरदारों को धोखे से मारा ।

चंडावळ बगसीरांमजी कांम आया नै सिरदारां रा आदमी छ सौ तथा सात[१] सौ मारीआ गया तथा घायल हुवा। कितरांक नू पकड़ लीया बाकी भाग छूटा। घोड़ा ससतर खोस लीया। सवाईसिंघजी नागोर सु मूडवा ने चढिया तरै सुकनीयां वरजीया था।[1] सो होणहार सो मांनीयो नहीं। च्यारू सिरदारां-रा माथा ऊंट रा बोरा में घाल जोधपुर मेलीया सो फतैपोळ बारणे लेय नांखीया। माथा लेने मीरखांजी री तरफ सु लालो हणुंतराय नै सिरकार री तरफ सु ऊकील पंचोळी अनोपरांम आया था। सो हजूर घणा राजी हुवा[२] नै तोपां री सिलकां हुई।[2] अनोपरांम हणुंतराय नै कड़ा मोती हुवा। हजूर सु फुरमायो-इणांरा माथां सु बजार में[३] दड़ा रमावौ।[3] तरै आऊवा रा ठाकुर वखतावरसिंघजी अरज कर नै च्यारुं माथा नै भेळौ दाग दिरायौ।[4]

मीरखांजी रै नांवै खलीतो घणी सुसरेखां रा लिखी जीयौ। सिरदारां नू चुक हुवौ तरै नाठा जिकां नागोर जाय खबर दीवी तरै नागोर में हरसोळाव रा ठाकुर जालमसिंघजी खींवसर रा ठाकुर प्रतापसिंत्रजी भाटी छत्रसिंघ,[४] तुंवर मगनसिंघ मुखत्यार था सो भाग नै बीकानेरी में गया। बाकी रा मतै मतै नास गया[5]।

मीरखां का नागोर पर कब्जा तथा दंड वसूल करना

पछै संमत १८६४ रा चैत सुद ४ चौथ नवाब मीरखां मूंडवे सूं नागोर जाय माहाराज श्री मांनसिंघजी रौ अमल कर लीयौ। नागौर रा किला में तोपां वगेरै चीज वस्त आछी देखी सो मीरखां ऊरी लीवी। नै मीरखांजी सूं मिळ प्रोहित रांमसा नागोर री कोटवाळी लीवी। रैत नू बूरी तरै तसतीयां दीवी[6] घणौ जुलम कर रैयत कना सुं डंड ले नै मीरखां नू खरची में दीयौ। रांमसा रा जुलम सूं नागोर खराब हुवौ। नै नागोर रा परगना में पिण मीर-खांजी डंड लीयौ। लाडणू पदमसिंघजी जोधा नै दुगोली सिवनाथसिंघजो जोधा वगेरै छोटा-मोटा जमींदार नागोरवाटी रा नोखौ, नींवड़ी, देसवाळ ऊलादण रा चांदावतां वगेरै ऊपर सिंघवी इंदरराजजी रुपिया ठैहराय ठैहराय लगाय लीया।[7] हरांमखोरा में था तिणां नू मुलक सारौ जिण दिनां लूंटीज नै बरबाद हुवौ।

१. ग. चार सौ पांच सौ। २. ख. आम दरबार कियौ, खुशी मोकळी कीवी (अधिक)। ३. ख ढेढां कना सूं (अधिक)। ४. ख. भाटी सूरतसिंघ।

1. शकुनी लोगों ने मना किया था। 2. खुशी में तोपें छोड़ी गई। 3. गेंद की तरह इनसे खेलो। 4. च्यारों सिरों को शामिल ही जलवाया। 5. भाग गये। 6 पीड़ा पहुंचाई। 7. क्षमा कर अपनी ओर किया।

सवाईसिंह के स्थान पर सालमसिंह का ठाकुर होना व उसका संघर्ष

सवाईसिघजी नू चूक हुवां री खवर पोहोकरण पोती तरै कारज कर[1] सालमसिंघजी टीकै बैठा नै साथ भेळौ कर फळोधी आया। थळ रा गांव बिगाड़ीया। तरै सिंघवी इंदरराजजी री तरफ सुं जसुवंतरायजो सिंघवी धनराजजी रा बेटा नै मुंहता सुरजमलजी री तरफ सूं पंचोळी राधाकिसन अै दोनू जणां नू लोग दै विदा किया। सो झगड़ौ सालमसिंघजी सू कीयौ दो तरफा आदमी कांम आया नै घायल हुवा। पछै सिंघवी इंदरराजजी चांपावत सालमसिंघजी नू लिखीयौ कै सवाईसिंघजी हरांमखोरौ कीयौ सो सझा पाई नै हमें थै पादरा ठिकांणा में बैठा रहौ[2] जरां तो थां सूं खेचल होसी नहीं।[3] नै इंण तरै अफंड[4] करसो तौ पोहकरण थां सूं छूट जासी। तरै सालमसिंघजी पाछा पोहकरण जाय बैठा।

पछै हरीयाडांणा रा चांपावत वुधसिंघजी नू सालमसिंघजी माहामींदर मेलिया सो आग्रसजी देवनाथजी कनै आय डेरौ कीयौ। नै रेख बाब गढ ऊतरी भर देणी नै जमीयत रा घोड़ा चाकरी में राखणा कबूल कीया। तरै देवनाथजी माहाराज गांव मजल, धुनाड़ौ, लिखाय दीया नै कींक जिला रा गांव लिखाय दीया।

सवाईसिंघजी नू चूक हुवां पछै सिंघवी इंदरराजजी हजूर में अरज करी कै हरांमखोरां सझा पाई हमें सारां नू लगाय लीजै तौ उठी रौ जथौ विखर जावै। तौ ऊदैपुर वीकानेर सूं आंटौ लेवां।[5] घर रा चाकरां नै तौ सजा पोहच गई[6] नै फेर पोछती जावसी। तरै अरज मंजूर कीवी। पछै कितराक सारां नू लगाय लीया। और पैला गांव मजल धूनाड़ा वगैरै पोहोकरण रौ पटौ जवत थौ नै भंडारी चुतरभुज तालकै थौ तरै पोहोकरण रा माहाजन थळी रा गांवां में रेहता तिणां कना सूं रुपिआ हजार दस १००००) डंड रा लीया था। फळोधी में बीकानेर वाळां रौ अमल थौ सो सालमसिंघजी वात कर पोहोकरण जाय बैठा तरै सिंघवी जसुंतराय फळोधी ऊपर गया नै इणां कनै परदेसी वगैरै फौज हजार १०००० दस थी नै पातावत दरबार री फौज सांमल था नै रूपावत बीकानेर वाळां सांमल फळोधी में था सो सिंघवी जसवंतराय झगड़ो कर फळोधी बीकानेर वाळां कनै छुड़ाय लीवी दरवार री फौज मै पातावतां

1. मृत्यु-भोज आदि करके। 2. सीधे तरीके से अपने ठिकाने में बैठे रहौ। 3. तुम्हें छोड़ेंगे नहीं। 4. झगड़े, उत्पात। 5. बदला लेवें। 6. दण्डित कर दिया।

झगड़ौ आछौ कीयौ। पछै सिंघवो जसूंतरायजी फळोधी वाळां कनै रुपीया १००००) दस हजार डंड रा लीया नै हाकमी जसुंतरायजी रै हुई।[1] संमत १८६५ लागतां पेला हळोतीया में विरखा हुई थी पछै। सांवण मैं मेह री खंच रही[1]। पछै भाद्रवा में विरखा घणी हूई, जिण सुं ऊनाळीयां[2] चोखी हूई। सांवणू फोरी हुई। धांन रौ भाव अेक १) रुपिआ रो दस।) सेर रो थौ। सो ऊनाळी में ।।) बीस रौ हुवौ। पका तोल रौ विकीयौ।

सिघवी इन्द्रराज की बीकानेर पर चढाई

संमत १८६५ में सिंघवी इंदरराजजी बीकानेर ऊपर फौज ले विदा हुवा, मुहतो सुरजमलजी पिण साथै थौ नै सिरदारां री आसांमीयां इण मुजब साथे ही, विगत—

१ आऊवो बखतावरसिंघजी।
१ रौयट इंदरसिंघजी खांप चांपावत।
१ आसोप केसरीसिंघजी खांप कूंपावत।
५ नींबाज सुरतांणसिंघजी ऊदावत।
१ लांबीयां भवानीसिंघजी।
१ छीपियो अमरसिंघजी ऊदावत।
१ रीयां बिड़दसिंघजी।

ईडवो, चांदारूण, बळूंदौ सिवसिंघजी नोखौ, नीवडी मेड़तीया नै भादराजण रा जोधा नै जसूंतसिंघजी खेजड़ला रा भाटी, फेर ही छोटा-मोटा सिरदार जाळोरी वगेरै रा था। सो हजार दस १००००) फोज तौ जमीदारां री थी नै हजार दस १००००) परदेसी रोजीनदारां री थी। सिंघवीजी हजार वीस २००००) फौज ले वीकानेर रा मुलक में गया। तरै वीकानेर री फौज हजार ७०००)सात सूं सिरदार मुसायब सांमा आया नै गांव उदासर रै डेरां झगड़ौ

१. ख. संवत 1865 रा सांवण में नवाब मीरखांजी नागोर में हांकम वैसांण जोधपुर आयौ। श्री हजूर नवाब रै सांमां कोस १ तांई असवारी कर पधारिया। पछै दूजै दिन नवाब गढ उपर आयौ, वात हुई। श्री हजूर दूहो कह्यो—

वैरी मारण मीरखाँ, राज काज इन्द्रराज।
म्हे तो सरणै नाथ रै, नाथ सुधारै काज।

महाराजा सूं इजाजत ले, मीरखां जैपर गयौ। (अधिक)

1. वर्षा की कमी रही। 2. गेहूं चने आदि की फसल।

हुवौ । दुतरफौ तोपखांनौ छूटौ । इंदरराजजी री फोज मैं गांव ईडवा रो ठाकुर हणूतसिंघ जी रै गोलौ लागौ सो कांम आयौ । गांव छापरी रौ चांदावत पहाड़-सिंघ कांम आयौ । भाद्राजण रा डेरा मैं अेक ऊदावत ऊदजी री आंख रै गोली लागी ।[१] ईंदरराज जी री फतै हुंई ने बीकानेर री फौज भाग नै पाछी बीकानेर गई । बीकानेर वाळां फोज री अवाई सुण मारग मैं गांवां में वेरा नाडीयां में ऊंट गधा काट-काट नै नखाय दीया । सो डेरा हूता जठै तथा मारग में सिंघवी जी हाडका[1] तौ नाडीयां मांह सुं बारै नखाय देता नै नाडी कूवां मे गंगाजळ नखाय देता । सौ पैहला तौ सिंघवी जी नै सिरदार पीवतां जरै सारी फौज वाळा पांणी पीवता । पांणी री पखालां हजार अेक १००० ऊंटां माथै सिंघवी जी रै साथै थी नै बीकानेरी मैं जमांनो चोखौ थौ सो मतीरा घणा हुवा था सो फौज रौ लोक मारग मैं मतीरा खावता तिण सूं पांणी री गरज सझ जावती । ने कठै कठै बीकानेर वाळा सींगीमोरा रा भाथड़ा नाडी वेरा कुवां मैं नखाय दीया था सो खबर पड़ गई । तिण सूं निगे कर[2] पांणी पीवता । बीकानेर सूं कोस चार पांच ऊली कांनी गांव गजनेर है जठै डेरा हुवा । तरै बीकानेर वाळां विसटाळो इण मुजब कीयौ[3] रुपिया लाख तीन ३०००००, फौज खरच रा देंण री कबूलायत बीकानेर वाळां लिख दीवी ने इंदरराजजी वगैरै सारां रौ समा-दांन आछी तरै कीयौ ।[4] रुपीया एक लाख १०००००, सिंघवीजी इंदरराजजी नूं मिजमांनी रा दिया नै सिरदार साथे था जिणांरी मिजमांनीयां रा रुपीया दोय-दोय हजार मेलीया ।

आयसी जी देवनाथ जी रै बीकानेर रौ गांव पांचू भेंट करायो[२] नै गीगोली सू बीकानेर वाला हाथी वगैरै लेगया था सो पाछा लीया । फलोधी सूं तोपां वगेरै लेगया था सु उरी लीवी ।

लौढो किलांणमल ने हीरासिंघ गजनेर रा डेरां इंदरराजजी सांमल हूण नू आवता था, तिणां सूं बीकानेर री फौज झगड़ौ कीयौ सौ किलांणमल हीरासिंघ रा पग छूट गया ने किलांणमल हीरासिंघ रौ असबाब बीकानेर वाळा ले गया था सौ पाछौ मंगायौ । जोधपुर रौ हरांमखोर सिरदार, मुतसदी, खास पासवांन वगेरा नू बीकानेर रा मुलक में राखणा नहीं जिण रौ इकरार कीयौ । इण तरै बीकानेर वाळां सूं जाब ठेहराय[5] चैत रै महिने सिंघवी इंदरराजजी

---

१. ख. दस बीस काम आया, दसबीस रै घायल हुया (अधिक) । २. ख. संवत 1902 मे महाराजा तखतसिंहजी पधारियां पछै लिखमीनाथजी सूं बीकानेर वालां पाछौ जब्त कियौ (अधिक) ।

---

1. हड्डियें । 2. पूरा पता करके । 3. इस प्रकार समझौता किया । 4. इद्रराज वगैरे को अच्छी तरह सतुष्ट किया । 5. शर्तें तय करके ।

फौज ले जोधपुर आया । इंदरराजजी सुरजमलजी सिरदारां नू श्री हजूर घणो खातर फुरमाई । पछै कितराक सिरदारां नू घरां री सीख दीवी ।

मीरखां का मानसिंहजी से मिलने को आना

इंदरराजजी बीकानेर ऊपर चढिया जिणां दिनां नागौर सु मीरखांजी छड़ी असवारी जोधपुर आया । श्री हजुर घणी सुसरेखा कीवी[1] नै फुरमायौ कै थां जिसा दोस्त हुवै तरै म्हांरी मरजी मुजब सारा कांम हुवै[1] परगना परवतसर, मारोठ, डीडवांणौ, सांभर, नांवौ, कोलीयो अै परगना मीरखांजी री खरची में काढ दीया[2] मे मीरखांजी कूच कर जैपुर री धरती में गया । ढूंढाड़ रा गांव ऊपर रुपीया ठेहराया नै मुलक लूंटीयौ । सिरकार री तरफ सु उकील पंचोळी अनोपरांम नै भंडारी पिरथीराज था ।

लोढा किलाणमल द्वारा थांवळा पर चढाई

संमत १८६५ रा आसाढ में लोढो किलांणमल मैंमदसा नै रजा-बाहादुर री फौज ले जाय थांवळै घेरो दीयौ महीनो अेक लड़िया थांवळो पोहकरण री भायपा में गीजगढ रा चांपावत उमेदसिंघजो रै थौ सो उमेदसिंघ जी तौ ढुंढाड री तरफ कांम आय गया नै थांवळा रा किला में उणां रा आदमी था सो वात कर रुपिया हजार अेक खरची रा ले नै निसरीयौ । थांवळा रा किला में श्री हजूर रौ अमल हुवौ । नै परबतसर, मारोठ, मेड़तौ, नांवां री हाकमीयां लोढा किलांणमल तालकै थी नै हाकमीयां री पैदास परबारी मीरखांजी री खरची में दिरीजती ।

इन्द्रराज का बीकानेर से लौटना और नागोर के जागीरदारों से दंड वसूल करना

इंदरराजजी सिंघवी बीकानेर सु पाछा आय नै मुलक में रेख हजार रुपीया २००) दोय सौ नै दस रुपीयां घर बाव रा भरावण री सरु कीवी । नै नागोर री हाकमी[2] फतैराजजी रे नांवे थी सौ लाडणू रा सिरदार कनै रुपीया

१. ख. प्रति में यह वृतांत कुछ भिन्न तरीके से पहले दे दिया गया है ।
२. ग. इन्दरराजजी का वेटा (अधिक) ।

1. खूब आव-भगत की । 2. खर्च के लिये मीरखां को दे दिये ।

३५०००) पैंतीस हजार[1] लीया । नै फेर ही फितूर रै, ने सवाईसिंघजी रै सांमल सिरदार छोटा मोटा था तिणां सारां कना सु रुपीया ठेहराया नै नहीं दिया जिणां रा ठिकांणा बिगाड़ दिया, बीकानेर रो गांव खरबूजी छुड़ाय थांणो घालीयो थो सो बीकानेर री वात ठैर गई तरै खरबूजी री थांणौ उठाय लीयो ।

जयपुर महाराजा का सन्धी का प्रस्ताव स्वीकार करना

मीरखांजी जैपुर रौ मुलक लूटै सो जैपुर सु ऊकील अठै आयो नै आपस में दुरस्ती री वात कीवी । तरै आयसजी देवनाथजी इंदरराजजी श्री हजूर नै मालम करी कै बीकानेर सु नक्से रै साथ[1] वात हुय गई ज्यूं ही जैपुर सु वात हुय जाय तो ठीक है । तरै इंदरराजजी रा बेटा फतैराजजी नै मुथा सुरजमलजी नै आऊवो, आसोप, नीबाज रा सिरदारां नै जैपुर मेलीया । सो जैपुर रा माहाराजा जगतसिंघजी सु फतैराजजी इण मुजब जाब ठहरायौ–फितूर धोकळसिंघ री वात रौ फेर आंबेज राखणौ नहीं नै उणां सु सटपट[2] करणो नहीं । गींगोली सु हाथी तोपां वगैरह असबाव ले गया था सो सारौ पाछो लीयौ । उदैपुर री सगाई बाबत फेर बात करणी नहीं ।[२] नै मारवाड़ रा सिरदार बेमरजी रा[3] उठे हा जिणां नै सीख दिराई । चांदावत बाहादरसिंघजो रै पटै उठारौ गांव करणसर थौ सौ जबत करायौ । हरसोलाव रा ठाकुर जालमसिंघरी घोड़ांरी बाईस रुपियां री सरं में अंगरेजां कनै राखीया चाकरी में । मीरखांजी रै फौज रा खरचरा रुपीया.......) जैपुर वाळां कनै लीया । नै दोनूं साहबां रै आपस में अेकांनगीं राखणी[4] जिण रौ खलीतौ जैपुर माहाराज कनां सु सारी कलमां घलाय लिखत ज्यूं श्री हजूर रै नांव लिखाय लीयौ ।

माहाराज जगतसिंघजी कनां सु मीरखांजो रै नांवै खलीतो लिखायौ इण माफक माहाराज श्री मांनसिंघजी सु वरतण राखसां[5] राज री जुमेवारी है । फतैराजजी जैपुर में मुसायबी ज्यूं कांम कीयो । डिगी रा खंगारोत मेग-सिंघजी सु फतेराजजी पाग बदळ भाई हुवा । नीबाज ठाकुर सुरतांणसिंघजी सूं छोटा भाई भोमसिंघजी रास खोळे बेसणा ठैरोया । नै चांपू नाथावत किसनसिंघजी[३] री बैन परणीया ।

---

१. ख. चालीस हजार । २. ख. आ वात संवत 1865 री है ।
३. ग. केसरीसिंघजी ।

---

1. तय शुदा तरीके से । 2. साजिश । 3. मांनसिंहजी के जो कृपापात्र नहीं थे । 4. मेल रखना । 5. इस प्रकार का बर्ताव रखेंगे ।

संमत १८६६ जमांनो सरासरी[1] हुवौ गेहूं रुपिये १) अेक रा सेर अठारै बिकीया ।

मीरखां का उदयपुर की ओर कूच तथा कृष्णाकुमारी का विषपान

जैपुर री वात ठेरीयां पछै मीरखांजी कूच कर मेवाड़ में गया । सिंघवी इंदरराजजी री तरफ सूं ऊकील पंचोळी अनोपरांम साथै थौ, मेवाड़ रा गांव लूटता खोसता बाळता खास उदैपुर नजीक जाय डेरा कीया । नै नूरो ताव दीयौ[2] तरे राणैजी भला आदमी मेल मीरखांजी नै भंडारी प्रथीराज, पंचोळी अनोपरांम नूं केवायौ कै थे म्हांरो मुलक किण मुदै विगाड़ौ हौ ।[3] तरै मीरखांजी तौ कयौ कै मांग माहाराजा श्री मांनसिंघजी नू परणाय दौ नै पिरथीराजजी, अनोपरांमजी कही रांणैजी री तरफ रौ खलीतो माहाराजा मांनसिंघजी रै नांवै देवौ सो मरजी हजूर री हुसी ज्यूं करसी । तरै सिसटाचारी रौ खलीतो रांणैजी मेलीयौ तरै श्री हजूर मीरखांजी नू लिखीयौ के वाभाजी भीवसिंघजी री मांग है सो म्है तो सरवथा परणीजां नहीं थांरै तुलै ज्यूं कीजौ । औ समाचार मीरखांजी उदैपुर वाळां नूं कया । तरै ऊणां विचारीयो कै आ मांग यूं हीज रयां सुं फेर कोई दिन म्हारा जीव नू दुख हुसी । जिण सुं उदैपुर वाळां आपरी बाई नूं जेहर दे नै मार नांखी[१] नै मीरखांजी नै पिरथीराजजी, अनोपरांमजी नू कह्यौ—मांग रो झगड़ौ तौ म्है मेट दीनो है ।

गोढवाड़ रा सिरदार घांणेराव, चांणोद, नारलाई रा म्हांरै मुलक में बैठा है अर मारवाड़ रौ विगाड़ करै है सो आज पछै म्है इंणां नू कोई तरै री मदत देसां नहीं । थांरा चाकर है सो मनाय लेण में सला है । नै मीरखांजी री फौज-खरच रा रुपीया ठेहरीया इण तरै उदैपुर रौ फैसलौ हुवौ ।

मीरखांजी रो पाछो कूच हुवौ पछै कुचांमण ठाकुर सिवनाथसिंघजी री अरज सुं घांणेराव, चांणोद, नारलाई वाळां ऊपर क्यूंक रुपीया ठैर पटा लिखीजीया ।[4]

संमत १८६६ रा ऊनाळा में अजीतसिंघजी घांणेराव रा नै चांणोद रा तेजसिंघजी नारलाई रा पिरथीसिंघजी जोधपुर आय श्री हजूर रै पगै लागा ।

---

१. ग. दूजी ख्यात में लिखियौ है कै. . , . .म्हां मुवां विनां रजवाड़ा रौ किस्सौ मिटै नहीं सो जहर खाय मर गई ।

---

1. साधारण । 2. खूब परेशान किया, दबाव डाला । 3. हमारे देश में किस कारण से नुकसान करते हो । 4. कुछ रुपये वसूल करने का तय करके उन्हें पट्टे लिख दिये ।

सिंघवी इंदरराजजी बीकानेर रा राजाजी कनै कबुलायत कराई तिण री नकल—

कबूलायत १ माहाराजधिराज श्री सुरतसिंघजी लिख दीवी तथा जोधपुर रा श्री दरबार री फौज खरच रा रुपीया च्यार लाख अेक ४००००१) ठेरीया तिण में छूट रुपीया ४००००) चालीस हजार बाकी रुपीया तीन लाख साठ हजार अेक ३६०००१) मतु राठौड़ सुरतसिंघ ऊपर लिखियौ सो सही। मतारा दसखत आचारज पुरसोतम साहा अमरचंद रा छै श्रीजी हुकम सुं संमत १८६५ रा मिती मिगसर वद ५ तिण री किसतां वसुलायत री[1]—

१४५०००)	ओळमें[2] जणा ५ सुरांणो ताराचंद वगेरै रा आया सु।
५००००)	रूको १ देरासरीया आचारज परसोतम, रांमसा, अमरचंद, दरबारी सवाईरांम फागुण सुद १५ दैण रौ।
७२०००)	कंपू तालकै मैमदसा तालकै हूँडियां सिकारी, पंचोळी जसकरण, दरबारी सवाईसिंह।
२६८०००)	बाकी रुपिया ९३००१ (मधे आया सु रुपिया ८४९४५॥-)॥ चौरासी हजार नव सौ पैंतालीस रुपीया साढी नव आंना सो पोते दाखल। आ कबूलायत[1] सूंपी ढोलीयां रै कोठा।

सिंघवी इंदरराजजी नै माहाराज श्री मांनसिंघ जी खास रुका लिखिया तिणां री नकल—

'सिंघवी इंदरराज कस्य सू प्रसाद वाच जे तथा अेक–दोय वार रुका आया ज्यां में उपाय कांम वणांवण री लिखी नै थारा घर रो स्यांमधरमपणौ नै थारा अंगरौ म्हांरी बंदगी में कायमपणौ जांणां छां ज्यूं ही अबार किताक सिरदारां नै चाकरां नै अेकठा राख सांमल ले कूच कीयौ सो आ थारा ही करण री थी। अबै लिखण रौ मुद्दौ अठासूं तौ औ छै कै फायदा रा वडा

१. ग. तफसील वार उतारी (अधिक)।
२. ग. असल (अधिक)।

1. रुपये वसूल होने की किश्तों। 2. जमानत के तौर पर रोके हुए।

चाकर छौ ज्यां नै मरजी री रूहरण[1] तौ मंगावरण मुनासब ही छै दूजौ म्हांरी तरफ सु मुकत्यार छौ[2] कोई कांम आंतरै रो[3] हाल लिखरण तरीके न होय तौ फायदो सिरकार रौ देखौ ज्यूं कीजौ । थे करसो सु फायदै बंदगी रौ ही कर सौ सो विनां पहला महरम ही म्हानै कबूल छै । रुका थांरै साथै छै ज्यां नै मेलीया है नै फेर लिखौ ज्यां नै जिरण रीत ही लिख मेलां । दूजा समाचार सारा फतेराज नं फुरमाया है सु लिखसी कोई यां नै हुवै तौ ऊदेरांम नै वा दूजा आदमी नै थां कनै लिखौ तौ मेलां । जाळोर सूं गढ पधाररण री बंदगी थांरा हाथ सूं वरणी जिरण सूं सवाय थां जिसा चाकरां री जुररत अजमायस रो वखत है । सो इरण नै थे जरूर जरूर अजमावसौ ईज आ निसचै मांने छै । अठे किले री श्रीजी री कृपा प्रताप सुं मजबूती छे बारलो ऊपाय थां सारू छै थे जळदी कीजौ अरज जळदी पोहोचावजौ । संमत १८६३ रा वैसाख वद ११ । आडी ओळ में[4] –सिरदारां चाकरां नै रसाला आद दे लगावरणा जरूर सारां नै अरजी आई नहीं सु लिखजौ नै तजबीज डौळ कांई विचार नै अठासूं कूच कीयौ सु, सारौ अेहवाळ अंतस[5] री वात लिखजौ ।'

'सिंघवी इंदरराज कस्य सु प्रसाद वाचजौ तथा थां सांमल लिखाया समाचार अंगरेजां रै जाव लगायत रा सिरदारां समसत रा रूकां सूं वाचरण में आया सु लिखिया मुजब रुका लिख मेलीया है । औ ऊपाय नेक वीचारीयौ । परंत जळदी कीजौ थां नै विसेस कांई लिखरण में आवै । उठा रा अठा रा कांम रौ दोनू फिकर थां नैं छै । सु हर सूरत कसर नह राखसौ ही नै अठै लिखरण ज्यूं जांरणौ सु अठै लिखसौ । थांरी सला मुजब सो हुसी । किताक समाचार अेक प्रसताव केवाबट रै राह वा दूजा ही फेर फतैराज नू फुरमावरण में आया छै सु ऊरण प्रसताव समाचारां ऊपर दिसट दे[6] अठा री सार बेगी करजो[7] थांरा हाथ सुं तुंगा लगायत[8] इरण घर रा वड़ा वड़ा कांम हुआ छै हमें इरण घर में औ कांम वरिणयौ है सो जोधपुर रौ आछौ लागौ ज्यूं कररण वाळौ थां बिनां दुजौ ध्यांन में न आवै छै सु थे कोजो, सिवाय कांई लिखां[9] पाछौ जाब जळदी लिखसौ । संमत १८६३ रा जेठ वद १४ ।' अै खास रुका जोधपुर घेरौ थौ तरै इंदरराजजी नै लिखीया था ।

'सिरदारां समसतां सूं म्हांरो जुहार सिंघवी इंदरराज साहा किलांरण-भल कस्यु सु प्रसाद वांचजो तथा श्री जी रै इकबाल सूं थांनै वडो जस आयौ

---

1. मेरी इच्छा की जानकारी । 2. सब अधिकार तुम्हें हैं । 3. ज्यादा आगे का । 4. पंत्र के हासिये में लिखा । 5. अन्दरूनी । 6. उनको ध्यान में रखकर । 7. यहां की सुध जल्दी लेना । 8. फौजी अभियानों तक के 9. इससे बढकर क्या लिखें ।

वडो नांमू'न पायौ तिण री तफसील तौ लारा सुं लिखां छां नै हाल भादवा सुद १३ तेरस सोमवार पाछली रात रा गढ सूं मोरचा ऊठाय जैपुर वाळां कच अठा सूं कीयौ जिण मुदै दु टिपौ लिख चलायो है[1] व्योरा वार लारा सूं लिखां छां अबै इण रौ मारग में हलकारां री सावधांनी राख आछी रीत समांधांन हुवै।' संवत १८६४ रा भादवा सुद १४ चौदस। अै खास रुका सिंघवी पेमराजजी सिंघवी इंदरराजजी रा पोता जिणां रै कनै विजनस देख[2] नै नकलां उतारी छै।

महाराजा मानसिंह के चाकरों के जिम्मे कार्य आदि का वृत्तांत

संवत १८६६ में मेड़ता री हाकमी कौटवाळी नै सायर तीनूं पंचोळी गोपाळदास रे हुई मावारी रा रुपीया पचीस हजार महीने रा महीने जोसी सिरी किसन री मारफत खजांनै पोतै।

मुता सूरजमल जैपुर सूं आयां पछै तुरत कैद हुई। जैपुर मैं वरतण[3] ठीक रही नहीं तिण सूं सो रुपिया अेक लाख री कबूलायत हुई।

जोधपुर री कोटवाली सिंघवी बाहादर मल रे सो बडो जुलमी थौ जोधपुर में डंड पड़ीयौ।

संवत १८६६[1] आयसजी देवनाथजी रै कंवर लाडूनाथजी हुवा भारी ऊछब हुवौ। जोधपुर में घर दीठ गुळ सेर अेक दीयौ।[4] गांव मडार सूं दैवडां रौ डोलो आयौ श्री हजूर छोटा देवड़ीजी परणीजीया[2]

जोधपुर री किलादारी खीची चैना रा बैटा सूं ऊतर देवराजोत नथकरण रै हुई नै रसोड़ा री दरोगाई धांधल जीवराज दांना रै।[3]

खीची चेनौ मरगयौ नै बेटो जालौ मनीजै, तिण रै जाळोर री किलेदारी। नै खीची विहारीदास रै कपड़ां रै कोठार री दरोगाई[4]। तबेले

---

१. ख. असाढ रौ जनम (अधिक)।

२. ख. सिंघवी इन्दरराजजी रौ ब्याव दूजौ फळोदी डढा तथा मूतां रै हुऔ (अधिक)।

३. ख. महाराज कुमार छतरसिंह कनै रहै, धांधळ मूकों बभूतै रा रहै जिणांरै गांव केरू पट्टै (अधिक)। ४. ख. गैलोत रै हुई (अधिक)।

---

1. संक्षेप में पत्र लिखकर भेजा है। 2. उसी समय देखकर। 3. वर्ताव।
4. प्रत्येक घर को सेर गुड़ खुशी में बांटा गया।

दरोगो पिड़ियार जालौ भेरा रौ। दोढी री दरोगाई सोभावत भगवांन दास नै आसायच नथकरण रै सीर में।[1] परणियो सिरीरांम वाकब सौ सरफराज[2]। कांम सारै री मालकी सिंघवी इंदरराजजी री सत्रो सरब कांम करै।[१]

सिंघवी ग्यांनमल भंडारी सिवचंद घेरा मैं कैद में था। फायदा री अरज करता[3] सो घेरौ खुलियां छोडीया। सो सिंघवी ग्यांनमल नू गांव पातां रो वाड़ौ नै भंडारी सिवचंद नै गांव धवौ पटै दीया। खालसा रा गांवा रौ हवालो मोणोत ग्यांनमल तालुके हूवौ।

पंचोळी लालजी महाराज श्री बगतसिंघजी रौ दीवांण थौ जिण रौ पड़पोतो राधाकिसन मुहता सुरजमल कनै चाकरी करतौ घेरा में हाजर रयौ। पछै सुरजमल मूंताजी री तरफ सूं जोधपुर री हाकमी रौ कांम करतौ। मूतै अखेचंदजी विचारी कै सिंघवी इंदरराजजी री दिवांणगी ऊतराय पंचोळी राधाकिसन लालजी रौ पडपोतौ है तिण नूं दिरावणी जिणसूं साभर, डीडवांणो, दौलतपुरौ, कोलीयो अै चारूं हाकमीयां मासवारी कराई[4]. राधाकिसन सूं परदेसीयां रा रुपीया सादीया[5] सो दिरोजिया नहीं। तरै हाकम्यां जबत हूई।

मुंहते अखेचंदजी अरज करी-सिंघवी इंदरराज कांम सकरड़ाई[२]-[6] सुं करै है ने आप सुरजमल नै सांमल राखीयो पिण सुरजमल मे[3] जुड़त नहीं[7] सो दीवांणगी मोहोणोत ग्यांनमल नूं दिराई जै। तरै फुरमायौ ठीक। तरै दीवांणगी ग्यांनमलजी नै धांमी तरै ग्यांनमलजी कयौ के इंण बखत रौ कांम इंदरराजजी सूं हीज होसी। पछै भंडारी सिवचंदजो नूं दोवांणगी धांमी सो ऊवां ही इंणीज तरै अरज करदीवी।

मुहता अखैचंदजी री वीरगत रौ विस्तार सिरकार में सिरदारां में नै गांवां में नधियौ सो इणां रौ खत हुवां पछै ऊतरै नहीं।

---

१. ख. इन्दरराज रै कीयोड़ी बात दूंजा सूं उथलीजै नहीं नै इन्दरराज चावै सो काम कर लेवै।

२. ग संकड़ाई।

३. ग. कांम री (अधिक)।

---

1. शामलात में। 2. अतिरिक्त। 3. लाभदायक सलाह देते थे। 4. प्रतिमाह के हिसाब से रुपये बांध कर कार्यवाही। 5. रुपये देने की जिम्मेदारी ली थी। 6. कड़ाई के साथ करता है। 7. काम करने की तजबीज नहीं।

घड़ीयो राजारांम नै जोसी सिरीकिसनजी री दुकांन सूं कुल ऊठे[1] नै सारा मुलक री पैदास इणां री दूकांन आवै खजानै रुपीयौ आवण जावण रौ मुदो नहीं। दोनू जणां री मुलक में वोरगत वधी नै राज में इणां रौ पूरौ चलण।

जाळौर री हाकमी मूता सायबचंद रै हुई। जोधपुर रै चांतरा री मुसरफी व्यास विनोदीरांम रै हुई। ऊमरकोट री हाकमी भंडारी सिवचंद रै हुई।[१]

परवतसर, मारोठ, डीडवांणो, लोढा किलांणमल तालके हुई। मेड़ता री हाकमी पंचौळी गोपालदास रै नै मालकोट[2] में मीरखांजी रौ रिसालदार अजीमुलाखां रहै। गांव डांगास दोनु पादूवां बीलाड़ो मीरखांजी रै पटै, मीरखांजी रो हाकम बीलाड़ा फरीअंद देवै।

दरीबे नांवे में मीरखांजी आपरौ हाकम फरजुलाखां नू राखीयौ। जमां परबारा लेण लागा नै फरजुलाखां नांवा रा समंद में गढरी नींव दिराई।

मीरखांजी ढुंढाड मांय सुं असवार हजार ५००० पांच लै जोधपुर आया सो पांच लाख[२] रो तोड़ कढाय[३] खरची ले पाछा गया। आयसजी देवनाथजी री वायां दोय तौ गांव वैजनाथजी री पालड़ी रा जोगेश्वर किरपानाथजी रा बेटां नूं परणाई। हाथीयां चढ तोरण वांदीया दोनू जंवायां नू श्री हजुर सूं गांव दोय दीया नै देवनाथजी री बाई अेक जाळोर इलाकै वांकड़ीयो बडगांव परणाई।

आयस देवनाथजी री सला लीयां सिंघवी इंदरराजजी कांम करै। तळाव पदमसर ऊपर श्री नाथजी रौ मिंदर वडा भटियांणी जी करायौ।[४]

श्री तुंवरजीसा रै कंवरजी हुवा सो वरस अेक रा हुवां पछै चलगया।

---

१. ख. काम करता मोदी अजबनाथ गयौ, संवत 1868 में गयौ।

२. ख. पचास हजार।

३. ग. कराय।

४. ख. धांनमंडी मांयलो मिंदर नायजी रौ सायर कनेलो राणीजी तुंवरजी करायौ। जोसी श्रीकिसन कड़ा पालकी मोतियां री कंठी सिर पाव कियौ, मरजी मोकळी चढी (अधिक)।

---

1. सरकार के खर्च के लिये रकम उठाई जाती है।

2. राव मालदे का बनाया हुआ मेड़ता का कोट।

संमत १८६७ लागौ हळोतीया रौ मेह हूवौ। सांवरण भादरवा नैं बरखा हुई नही। अनकाळ तिणकाळ दोनू पड़िया।[1] सो लोक माळवै गया। धांन जौधपुर रा तोल रौ पकौ सात सेर ७ विकियौ। माहा सुद ११ लगायत सुद १२ मावटो[2] जबरौ हूवौ[१] वित[3] मुलक में जीवतौ रयौ सु घणौ सूत्रौ। ऊण ठारी सूं।

बळूंदा रौ पटौ सांवण में जवत हुवौ। पेसकसी रा रुपिया १४०००) चवदे हजार[२] ले पाछौ पटौ लिख दीयौ।

मिगसर में रास रा ठाकुर जवांनसिंघजी चलीया लारै जळेबीयां रो मोसर हूवो।[4] काळ वरस रा कारण सूं लोक भेळौ घणौ हूवौ जिण सूं मौसर सुधरियौ नहीं। जवांनसिंघजी रै ठाकुरांणी राजावतजी नीबाज रा ठाकुर सुरतांणसिंघजी नूं कयौ थांरा बेटा नूं खोळै लेसूं[5] पिण भोमसिंघजी[3] नै चांमू रा नाथावतां रै परणाया तरै सुरतांणसिंघजी नाथावतां नूं वचन दीयौ थौ, जिण सूं आपरा भाई भोमसिंघजी नूं जवांनसिंघजी रै खोळै दीयौ। सिंघवी गुलराजजी हस्तै हुकम जीवा[6] रा रुपीया ३००००) तीस हजार ठैरीया।

संमत १८६७ रा माह में मेड़ता री हाकमी कोटवाळी, सायर पंचोली गोपाळदास सूं तागीर होय[7] नै प्रोहित रांमसा रै हुई। पनरै १५०००) हजार री मावारी ठेहराई। सो मास २ दोय रही। पछै माहावारी सभी नही[8] तरै लोढां तालकै हुई।[४]

नवाब मेमदसा फौज ले मुलक में आयौ। गांव हाथीभाटे डेरा हूवा। चढी खरची मांगी जरै जोधपुर रा मुसायबां कयौ-म्है तौ खरची मीरखांजी नू परी दीनी, पिण मांनी नहीं। तरै मैमदसा नू लाख अेक खरची रा दीया नैं मुलक में रेख बाब नांखी।[9] मगरा में मैमदसा री फौज रा ऊंट ले गया तरै लारै वार चढीया। सो मैमदसा चांगचीतार जाय डेरा कीया। सो मास २

---

१. ग. ठंड घणी पड़ी (अधिक)।

२. ग. 19 हजार।

३. ग. भीमसिंघजी।

४. ख. कल्याणमल तातेड़ मेहकरण काम करता मिलिया (अधिक)।

---

1. अन्न और चारा-घास का अकाल पड़ा।

2. माघ मास में होने वाली वर्षा। 3. पशु धन। 4. जलेबियों का मृत्यु भोज किया। 5. गोद लूंगी। 6. नये ठाकुर की गद्दी नशीनी के समय लिया जाने वाला सरकारी कर। 7. हटाई जाकर। 8. प्रतिमाह इतने रुपये नहीं दिये जा सके। 9. रेख के हिसाब से प्रत्येक गांव में रुपये वसूल किये।

दोय डेरा उठै रया । चांग सूनी रही । पछै श्री हजुर सुं हुकम पोतौ तरै चांग सूं कूच कीयौ । चांग रा डेरां गांव सेवरीया रौ चांदावत रतनसिंघजी नवाब मेमदखा कने चाकर रयौ । मेमदखाजी ढूंढाड रौ मुलक लूंटीयौ । तरै खंगारोतां नाथावतां सेखावतां वगेरै रा ठिकांणा राजावत रतनसिंघजी हसतै निवड़ीया ।[1] जिण सूं ढुंढाड़ में रतनसिंघजी रौ वड़ौजस हुवौ । मेमदखा री फौज में श्री हजुर री तरफ सुं ऊपादीयो रतनचन्द नै राईको सरूप ऊकील रहता ।

मुता अखेचंदजी आपरा बेटा लिखमीचन्द रौ ब्यांव फळोधी रा ढढा सादूलजी री बेटी सूं कीयौ । जांन में दोय हजार अढ़ाई हजार आदमी था । जोधपुर में सैर सारणीं कीवी[2] सीरो पुड़ी रौ जीमण कीयौ । खांप-खांप नै न्यारी न्यारी जिनस तोल दीवी । ३६ छतीस ही पूण[3] नै जीमाई । सेवगां ने जणै दीठ रुपिया २) दोय हजार हा ज्यांनै नै घरां बैठा था जिणां सारां नू दीया । मारवाड़ सारी में ।

मुहता सायबचंद बाप रौ कारज लाडुवां रो कीयौ । जाळौर सैहर नै जाळोरी रा बावन गांव रा माहाजनां नू जीमाया । संमत १८६६ में । नै सेवगां नै त्याग रा रुपीया जणै दीठ दोय दोय दीया ।

मुता सुरजमल बाप रौ नै काका रौ ओसर सोझत में कीयौ सो सोझत री छतीस पूंण नूं सीरौ जीमायौ । संमत १८६५ में । सोझत में श्री चांवडा माताजी रै भाखरी रे पागोतीया बंदाया ।[4]

संमत १८६७ रा माहा में घड़िये राजारांम सतरूंजा रौ संग काढीयौ[5] सिंघवी जसुंतरायजी इंदरराजजी रा भाई नै धनराजजी रा बेटा । नै संग रा जाबता सारू श्री दरबार सूं आदमी घोड़ा ५०० पांच सौ दे साथे मेलीया । इणां गिरनारजी परसीया । सिंघवी इंदरराजजी री तरफ सूं रुपीया हजार ५०००) पांच हजार लगाय नै गिरनारजी ऊपर अंबका माताजी सुं ले दतातिरीजी[6] तांई पगोतीया बंदाया ।

सिंघवी इंदरराजजी रै सदावरत था सोजत में तौ भीवराजजी थकां रौ श्री पुसकरजी में श्री दुवारकाजी में सतभांमाजी रा पिडां हसतै । श्री हर-दुवारजी में अखेराजजी रै तळाव बीलाडै जैतारण वगेरै १२ बारै ठौड़ सदावरत सिंघवी इंदरराजजी रै था ।

---

1. छुटकारा पाया । 2. पूरै शहर को भोजन करवाया । 3. छत्तीस पवन जात । 4. पहाड़ी पर देवी के दर्शनार्थ चढ़ने के लिये सीढ़ियां बनवाई । 5. शत्रुंजय की धार्मिक यात्रा निकाली । 6. दत्तात्रेयजी ।

मीरखांजी कनै उकील पंचोळी अनोपरांम पेहला तौ ऊपादीयां रांम-बगस रा जुमे में था पछै सिंघवीजी इंदरराजजी जुमे में रयौ नै भंडारी पीरथी-राजजी टेठ सूं इंदरराजजी जुमे रया।

लोढो किलांणमलजी नबाब मैमदसा कनै हौ सो कैद हुवां पछै कांम रयौ नहीं। पछै संमत १८६९ गुणतरा में रूपनगर चलिया।[1] संमत १८६८ रा वैसाख में सिंघवी इंदरराजजी रा मां मरगया तिणां लारै खांड रा सीरा री सैहर सारणी कीवी। ३६ छतीस पूण जीमाई।

संमत १८६८ लागौ। असाढ में वरखा चोखी हुई। पछै साखां तीड खाय गयौ।[2] भाग सभागी जमांनो हुवो।[3] जोधपुर में पको नव दस सेर रौ धांन विकीयौ।

नबाब मीरखांजी मेमदसा ढुंढाड में तैसील कर नरुकां रै गांव लावै[१] फौज लगाई। लावौ छूटौ नहीं। लावा रा नरुका झगड़ा में तीखा रह्या।[4]

मेड़ता री हाकमी भंडारी मांनमल रै रही सौ पाछी पंचोली गोपाल-दास रै हुई।

संमत १८६९ लागौ सौ मुलक में मेह हूवौ नहीं। पवन घणौ वाजीयौ संमत सितसटो अटसटौ तौ लगता काळ हा नै तीजो संमत गुणंतरौ माहा भयां-नख काळ पडीयौ। लोक माळवै गयौ। हजारां आदमी भूखां मरता मर गया। जौधपुर में धांन रुपीया १) रौ तीन सेर विकीयौ।[२]

वड़लू रौ ठाकुर सादूळसिंघजी चलियौ सो तीन सेर रा मूंग खरीद नै तीयो[5] कीयो। ईसो काळ कदेई पडियौ नहीं।

चंडवांणी जोसी सिरीकिसन आप रा घर सूं गोवां री थूली रंदाय आपरी न्यात री लुगायां भूखां मरै तिकै जीमण जावती। धांन मण पांच तथा सात लागतौ जाज माट[6] रोकड़ पिण देता।

सिंघवी इंदरराजजी रै नै मूता अखेचन्दजी रै ही जौधपुर में सदावरत थौ। मुलक रा कांम में मुकत्यार सिंघवी इंदरराजजी देवनाथजी री आग्या सूं

---

१. ग. गांव लांवै।

२. ख. गरीब लोग भूखां मरतां आपरा पेट रा टाबरां नुं बेचै पण लेवण वाळा नहीं।

---

1. काल कवलित हुआ। 2. टिड्डी दल फसल खा गया। 3. तकदीर के अनुसार जमाना हुआ। 4. युद्ध करने में तेज रहे। 5. मृत्यु के पश्चात तीसरे दिन किया जाने वाला क्रिया कर्म। 6. थोड़े बहुत।

करै इंदरराजजी नु पांच वरस रा वचन री खातरी रा वचन श्री हजुर सुं देवनाथजी रा दिराया[१] ।

आहोर ठाकुर अनाड़सिंह पर महाराजा का कोप

आहोर रा ठाकुर आनाडसिंघजी रै नागोर रौ गांव बलायौ पटै हौ जठारा जाट में किणी चोरी रौ इलजांम आयौ । सो जाट रै बदळै अनाडसिंघजी श्री हजुर रै पाट हाथ लगाय दीयौ । पछै उण जाट में चोरी रौ मुदो सावत हुय गयौ ।[1] सो झूठो पाट हाथ लगायौ तिण सू मरजी में फरक पड़ गयौ । सो बेमरजी देखी तरै अनाडसिंघजी कोटे परा गया । उठे भालै जालमसिंघ पटो हजार ४००००) चालीस रौ लिख दीयो।[२]

इन्द्रराज द्वारा वित्तीय स्थिति सुधारने के लिये अभियान

सिंघवी इंदरराजजी श्री हजुर सूं अरज कीवी कै रसाला रा लोक रै खरची री पूरी तंगाई है नै श्री बाईजीसा री सगाई जैपुर करी जिणां रौ ब्यांव[2] पिण करणौ है सो मरजी हुवै तौ मुलक में तैसील करूं ।[3] श्री हजूर फुरमायौ कै थारै तुलै ज्यूं कर । तरै इंदरराजजी भादवा में सारो राज रो रिसालो ने ३६ छतीस कारखांना ले कूच कीयौ । आसोप डेरा हुवा । ठाकुर गौठ चोखी कीवी । आसोप रा ठाकुर केसरीसिंघजी नू साथै ले नागौरवाटी में गया गांव मांझी रा डेरां पंचोळी गोपाळदास कना सूं रुपीया हजार २०००० बीस लीया । नागोर परगना सुं तैसील कर मेड़ता रा परगना में गया । रीयां ठाकुर विड़दसिंघजी आगीवांण होय नै मेड़ता री हाकमी भंडारी मांनमल नू दिराई । पंचोळी गोपाळदास नू गांव सादड़ी वगेरे गांव ३० तीस रौ हवालो दीयौ । मेड़तावाटी में हजार री रेख लारै रुपीया ५००) पांच सौ लीया । परबतसर वाटी में हजार री रेख लारै रुपीया ३००) तीन सौ लीया । नै बेरा बाब घाली[4] सो बेरा दीठ रुपीया ७०) सितर लीया नै सोजत जैतारण रा परगना में हजार री रेख लारै रुपीया ३००) तीन सौ[३] लीया । दस रुपीया १०) घर बाब भराई ।

---

१. ग. दूजौ कोई अरज करण पावै नहीं तिणरी दोढी ऊपर हेलो पाडीज गयौ तिण सूं सिरदार मुसदी वगेरै सह बेराजी (अधिक) ।
२. वडलू रौ ठाकर कूंपावत सादूळसिंह मर गयौ (अधिक) ।
३. ग. घर वाब रा (अधिक) ।

---

1. चोरी साबित हो गई । 2. शादी ।
3. प्रत्येक तहसील से अतिरिक्त रुपया वसूल करना ।
4. प्रत्येक कुए के मालिक से रुपये वसूल किये ।

भराई ।¹ नींबाज रा सुरतांणसिंघजी नू पिंडां बुलाय नै तीन सौ रुपीया ३००)रेख लार नै दस रुपीया घर बाब भराय लीवी । रायपुर रास वगेरै सारां कनै इणीज मूजब भराय लीया । सोभत में रेख बाब गुलराजजी भराई । गौडवाड़ में फतै-राजजी भराई । जाळोरी में भंडारी पिरथीराजजी भराई । परवतसर हाकम सिंघवी बाहादरमलजी नूं मेलीया । मारोठ सिंघवी किलांणमल नु मेलीयौ । जैतारण हाकम मूता सुरजमलजी रै थी । गुणांतरा काळ में राज रो रिसालो तबैलौ फीलखां नो दोढी रौ लोक वगेरै नूं सिंघवी इंदरराजजी बारै लेजाय निभाय लीया ।[1] मुलक में तैसील चोखी कीवी । दोय साखीया[2] गांव हा जिणां सूं तो रुपीया गुंहगो भाव हो धांन रौ जिण सूं भरीज गया नै इक साखीया गांव हो जिके सूंना हुय गया । माहा वद ७ रौ सूरज परब² हो नै सोभोती वितीपात वहिध्रत वगेरै पांच परवीयां रौ जोग्य हो सु इंदरराजजी पुसकरजी गया । मारग में चांदावतां रो गांव वसी आयौ तिणां कनै रुपीया ५०००) पांच हजार लीया । इंदरराजजी पुसकरजी में पुन्य घणौ कीयौ ।

जैपुर सूं माहाराज जगतसिंघजी रौ खास रुकौ सिंघवी इंदरराजजी नै भंडारी सिवचंदजी नै बुलावण मुदे[3] आयौ जिण रा जबाब में सिंघवी इंदर-राजजी नै भंडारी सिवचन्दजी जैपुर रा माहाराज नै पाछौ कागद लिखियौ जिणरी नकल—

"श्री जळंधरनाथजी"

'आखर माराज जगतसिंघजी का संगही इंदरराजजी वा सोचंदजी थांकी अरजी आई सो मालूम हुई । सो अबै थे जरूर आंण हाजर होला । घड़ी येक री ढील नहीं करोला । अठा की पकाई जाणौला म्हांको भरोसौ राखौला । देवीसिंघजी नै पाछा सूं भेजां छां सौ जरूर आवोला ।'

'स्वारूप श्री सरब ओपमा विराज मांन राज राजैन्द्र माहाराजा धिराज माहाराजा श्री सवाई जगतसिंघजी हजूर सदा सेवग सिंघवी इंदरराज भंडारी सिवचंद रौ मुजरौ मालम हुवै । अप्रंच खास रुको इनायत हूवौ सो माथै चढाय लीयौ । म्हांनू ऊठे आवण रौ लिखीयो सु समाचार बारे दीनारांमजी नू कया छै । सु अरज लिखसी । अरज माफक जाबरी पुखतगी हुवां आवण री जेज न

१. ख. परवतसर री हाकमी सिंघवी बादरमल रै हुई ।
२. ग. गिरण ।

1. उनका निर्वाह करवा दिया । 2. दो फसल वाले । 3. बुलाने के आशय का ।

हुसी । अठै हुकम श्री माहाराज री है । सेवगां ऊपर किरपा फुरमावै है जिण था विसैष फुरमाय खास परवांना इनायत करावसी ।'

संमत १८६९ रा चैत सुद ७ आड़ी ओळ में माहाराज जगतसिंघजी रा आखर छै । इंदरराजजी सिवचंदजी कागद लिखियो ऊणहीज कागद रा सीराडा में जगतसिंघजी खास दसकतां पाछौ जाव लिख मेलीयौ ।[1] औ कागद सिंघवी इंदरराजजी रा पौता पैमराजजी कनै विजनस हाजर छै ।

इंदरराज सिंघवी आउवा आसोप आदि का जयपुर जाना—

पछै सिंघवी इंदरराजजी भंडारी सिवचंदजी जैपुर गया । आऊवा, आसोप, नींबाज रा सिरदार नै जोसी सिरीकिसनजी इंदरराजजी रै साथे था । नै कुचांमण रा ठाकुर सिवनाथसिंघजी मिसर सिवनारांयण सांमल जैपुर में कांम करता था ।

इंदरराजजी जैपुर गया तरै पेसवाई में मुसायत्र दरवाजा बारै सांमा आया । नै माहाराज जगतसिंघजी असवारी कर श्री माहादेवजी रा मिंदर तांई सांमा पधारीया । जैपुर में इंदरराजजी रौ घणो कुरब मुलायजो रयौ । संमत १८६८ रा बैसाख में जैपुर गया था सो संमत १८७० रा भादवां तांई इंदरराजजी जैपुर रया । ब्यावां मुदे घणा दिन सलावां हुई । माहाराज जगतसिंघजी फुरमायौ कै म्हे जैपुर सुं बारै पधारां तो मीरखांजी म्हांने पकड़ लेवै । तरै इंदरराजजी अरज कीवी कै आप खुसी सूं पधारै, मीरखांजी कोई वात करै तो म्हारी जुमेदारी है । तरै संमत १८७० रा भादरवा सुद ८ नै सुद ६ रै सावां रा दुतरफा ब्याव ठेहरीया । तिण री अरजी इंदरराजजी री अठै आई । पंचोळी गोपाळदासजी हस्ते ब्यांव री त्यारी हुई । मेड़ता री हाकमी गोपाळदासजी रै थी । आयसजी देवनाथजी अरज कर बीकानेर माहाराज सुरतसिंघजी रै नांवै कुंकुमपत्री रौ खलीतो लिखायौ । नै नागोर माहाराज सुरतसिंघजी री मुलाकात ठेहराई ।

महाराज मानसिंह व जगतसिंह का विवाह के लिये रूपनगर की ओर प्रस्थान—

अठासुं श्री हजूर नागोर रै रस्तै कूच कीयो जनांना समेत नागोर रा मेलां में दाखल हुवा । बीकानेर रा माहाराज सुरतसिंघजी नागोर

१. ग. तिण री नकल इण भांत–सिंघवीजी इंदरराजजी वा सिवचंदजी थांकी अरजी आई सो मालूम हुई सो अबै थे जरूर आण हाजर हुवौला । घड़ी एक री ढील नहीं करौला । अठा की पक्काई जांणौला । देवीसिंघजी नै पाछा सुं भेजां छां सो जरूर आवौला । (अधिक)

आया ।[१] मुलाखात कर पाछा बीकानेर गया नै श्री हजूर नागोर सूं कूच कर किसनगढ़ इलाके रूपनगर डेरा कीया । सिरदार जांन[1] में सारा साथै हा । अेक पोहकरण विनां मोकळी फौज थी जांन री त्यारी घणी आछी हुई । किसनगढ़ माहाराज किलांणसिंघजी जांन में था नै अजमेरा रा सिरदार मसूदे रावजी देवीसिंघजी वगेरै सारा जांन में साथै था ।

जैपुर माहाराज जगतसिंघजी रा डेरा जैपुर इलाके रै गांव भरवे हुवा रूपनगर मरवे तीन कोस री छैती । दोनू फौजां रो लोक हजार चालीस तथा पचास रै आसरै थौ । पैले दिन भाद्रवा सुद ८ आठम रा सावां तो श्री हजूर कछवाईजी नै परणीजीया दूजै दिन भादरवा सुद ६ नम रै सावां श्री सिरेकंवर बाईजी रौ व्याव माहाराज श्री जगतसिंघजी सूं हुवौ । नम रै दिन विरखा साव दैस[2] घणी भारी हुई ।

सदामंद सरस्ते सिरै दरबार हुवौ आंपणा सिरदारां नै किसनगढ रा सिरदार जीवणी मिसल बैठा । जैपुर रा सिरदार डावी मिसल में बैठा । माहाराज श्रीमांनसिंघजी रै डावी वाजू तौ माहाराज श्री जगतसिंघजी बैठा नै जीवणी बाजू किसनगढ रा माहाराज बैठा ।[२] पछै पांतीयो हूवौ ।[3] तीनूं माहाराज भेळा अरोगीया । किसनगढ माहाराज किलांणसिंघजी रै समरपण थौ तो पिण दारू मांस भेळौ अरोगीया ।

जैपुर रा माहाराज श्री जगतसिंघजी साथै कवेसर पदमाकर थौ तिणसूं चरचा करावण मुदै कविराज श्री बांकीदासजी नू जोधपुर सूं डाक में रूपनगर रा डेरां बुलाया । चरचा कराई । जैपुर रा पदमाकर नू हराय दीयो कविराजजी बांकीदासजी नै माहाराज श्री मांनसिंघजी नै जैपुर रा माहाराज दोनू राजावां हाथी सिरपाव इनायत कीया सरस्ता मुजब दोय तरफा दायजा

१. ख. जनांने सहित बड़ी त्यारी सूं नागोर आया । दोनूं मारावां रो मिलाप दस्तूर मुजब हो गयौ । दोनूं राजावां रैं मन रागांथी सो मीठा चस्मा हो गया । गांव पांचू देवनाथजी नूं दियौ जिणरी दस्तावेज पेला नहीं थो सो खास रुको वगेरै लिखावट वगेरै मजबूतीं कर बीकानेर पधार गया (अधिक) ।

२. ख. श्री महाराजा मानसिंहजी बिराजिया । उमराव आठूं आप आपरी जागा बैठा । (अधिक)

1. बरात । 2. पूरे देश में । 3. भोजन की व्यवस्था हुई ।

दिरीजीया ।[१]

नबाब मीरखां द्वारा जगतसिंह को आश्वस्त करना —

नबाब मीरखांजी पिण रूपनगर आया था नै माहाराज जगतसिंघजी री खातर तसली मीरखांजी कनै सुहजूर कराई ।

रायपुर रा ठाकुर ऊरजनसिंघजी भ्रादवा सुद ११ ईग्यारस रूपनगर रा डैरां चलिया तिणां लारै ठाकुरांणी साथै हा सो ऊठै हीज सत कीयौ ।

धौकलसिंह के पक्ष के सरदार जो जयपुर की फौज में थे उन्हें माफी देकर कुछ पट्टे लिख दिये—

अजमेरे रा सिरदार आया था तिणां नु सिरपाव हुवा । फितूर कांनी रा सिरदार बगडी सिवेनाथसिंघजी, खींवाडै गजसिंघजी, बेराई जसवंतसिंघजी, करमसोत हरसोलाव जालमसिंघजी रा भाई सबलसिंघजी दोलतसिंघजी नै फेर ही छोटी-मोटी आसांमीयां जैपुर री फोज में आया था सो अेक हरसोलाव जालमसिंघ विनां सारां नू इंदरराजजी हजूर में अरज कर लगाय लीया । किणीक नै तौ आदो दूदो पटो लिख दीयौ किणीक नै रोजीनो कर दीयौ ।[1] चांदावत बादरसिंघजी नै जैपुर री त्रफ सुं गांव घाट, पनवाड, हरमोली वगेरै लाख रौ पटौ हौ तिणां नै पिण देवनाथजी माहाराज रौ वचन दिराय हजुर रै पगां लगाया । ने बाहादरसिंघजी रा घोड़ा अेक सौ रोजीनदारां में थांणै तालकै राखीया । धोरीमंनां रै थांणै राख्या । दोनू राजावां रै आपंस में घणौ राजीपौ रयौ ।[2] नै दोनू राजावां रा कूच हूवा । श्री बाईजीसा रै साथै सिंघवी मेगराजजी नें व्यास सिवदासजी भंडारी सिवचंदजी नै सिरदारां री आसांमीयां

---

१. ख. नबाब मीरखां बाईजीसा रै हथलेवै में एक हजार असरफियां घाली । जैपुर रै मुलक रौ पटो नवाब रै कब्जै में थौ सो बाईजी रै हथलेवा में घाल दियौ । अजमेर रा सिदार आया था तिकां नै सिरपाव दिरीजीया फितूर पंथ रा सिरदार जाय जयपुर रह्या सो जगतसिंहजी रै साथे आया सो जगतसिंहजी रा केणा सूं हरसोलाव रा जालमसिंह सिवाय सारां रा मुजरा इन्दरराजजी कराया । सिरपाव दिया (अधिक) ।

---

1. प्रतिदिन के खर्च के रुपये बांध दिये । 2. खूब स्नेह रहा ।

नू मेलीया । नै कुचांमरण रा ठाकुर सिवनाथसिंघजी पेहला ही जैपुर रा माहा-
राज कनै मुसायबी करता हा सो ऊरा नै ही पाछा मेलीया ।

श्री बाईजीसा रै व्याव रा नोता रा हजार अेक री रेख लार रुपीया
चालीस ४०) लीया । नै १०) दस रुपीया घर बाब लीवो ।

कछवाईजीसा री जात देण सारु जाळौर जलंधरनाथजी रै सिर
मिंदर हजूर पधारीया ।

लोढ़ो किलांणमलजी संमत १८६९ में चल गयौ । तिण रा भाई
तेजमल नू पाछी राव पदवी हुई ।

सराई दोडिया सौ जाळौर रो गांव गौळ ओपनाथजी रै पटै हौ, जठा
री सांढीयां[1] ले गया । सो इंदरराजजी जौधपुर सूं बाहार चढिया । गांव धोरी-
मनै जाय थांणौ घालीयौ । छोटा भाई गुलराजजी नै चांदावत बाहादरसिंघजी
नै धोरीमनै राख इंदरराजजी पाछा आया ।

बड़लू रा ठाकुर सादूलसिंघजी गुणांतरा में चला गया था सो[2] आसोप
रा ठाकुर केसरीसिंघजी अरज कर पटौ सारौ आसोप हेटै घाल लीयौ सादूल-
सिंघजी रै खोळे किणी नू बेठायो नहीं ।

दिवांणगी बगसी जाळौर, गोढवाड़, सोभत, जैतारण सिव री हाकमीयां
इंदरराजजी रै जुमै । मुंहता अखैचंदजी बोपार करै नै अेक पाली री हाकमी
भतीज फतैचंद रै नांवै ।[3]

पोहोकरण रा सालमसिंघजी रा छोटा भाई हिमतसिंघजी जमीतलै ।
धोरीमनै सिंघवी गुलराजजी कनै हाजर हूवा ।[4]

---

१. ख. पांच सौ (अधिक) ।

२. ख. तिणरै लारै खोळै वैसांणियो नहीं (अधिक) ।

३. ख. और मूंतो अखैचंद वणियो वजायो मुसाहिव । वोपार करै घर में खिजमत लेवै
नहीं सिरफ पाली री हाकमी भतीज फतैचंद रै नांवै सिवाय हजूर घांमी पण खिजमत
लीवी नहीं, कारण बौपार में घणौ फायदो । मांमलत करै रुपियौ कठेई अटकै नहीं जबरी
सूं उगावै । और संवत १८७० रा सीयाळा में जैपर कमछबाईजी परणिया था तिणरी
जात देण नै जाळोर पधारिया पाछा वेगा हीज जात देय पधारिया ।

४. और श्री बाईजी रा व्याव री नेतौ रेख एक हजार लार २००) पड़िया नै मुसदियां
कनां सूं पिण लिरीजियौ ।

सिरोही के राव उदैभांण का गंगाजी जाते समय पकड़ना—

संमत १८७० तथा ७१ में सीरोई रौ राव देवडौ उदैभांण श्री गंगाजो वगेरै जात्रा कर पाछा सीरोही जावता पाली डेरा कीया। तिण री खबर जोधपुर लागी तरै परदेसी छोटेखां कलंदरखां वगेरै २०० घोडा दोय सौ लेनै चढिया। सो राव नू पकड लाया। मांहलावाग में अटकाय दीयौ[१] नै रुपीया पचास तथा साठ हजार रौ रुकौ लिखाय छोड दीयौ।

संमत १८७१ लागौ विरखा चोखी हुई पिण ऊंदरा घणा हुवा तिण सूं खेतां में विगाड घणौ हूवौ। तिण सूं जमांनो खासो भलौ हूवौ।[२]

अखैचंद और इन्द्रराज के बीच विद्वेष तेजी पर—

मुंहता अखेचंदजी रै सिंघवी इंदरराजजी सुं अवरणत[1] थी सो जांणीयौ देवनाथजी कनै सूं हजूर नै अरथा कराय नै विगाड देसी।[2] सो इण डर सूं अखैचंदजी निज मिंदर सरणे जाय बेठा ने मोहोणोत ग्यांनमलजी री सला सूं उठे बैठा किरियावां करै।[3] आसोज रै महीनै इंदरराजजी श्री हजूर में अरज करी कै अखैचंद निज मिंदर बैठो किरियावां करै है रोज रौ हरेक कांम सुधरतौ देखै जिको फंसाय देवै। सो श्री खांवद म्हारै कनै कांम करावण री मरजी हूवै तौ मरजी कांनी रौ ऊपर रयां सूं[4] कांम होसी। तरै फुरमायौ कै म्हांरै कांनी सूं तौ थारै ऊपर इकत्यारी है। थारी सला हुवै ज्यूं नै फायदौ दीसै ज्यूं सरवो सरब कांम[5] कीयां जा। अखैचंद किरियावां करै है सो म्हांसूं ही मालम है। पिण किरिया कर नै अदबे[6] तौ म्हांसूं मालम करावसी। म्हांरो हुकम होसी ज्यूं हुसी। हुकम देणौ तो म्हांरै ईकत्यार हैं, तूं कुसी राख कांम करै है ज्यूं कीयां जा। इण तरै पूरी खातरी फुरमाई।[7]

---

१. ख. रसोड़ा सूं थाल गयौ, ईजत सू रहयौ पछै कबूलायत ६० हजार री नै १० हजार छूट ५० हजार रौ रुकौ २ महीनां रै करार रौ लिखाय लियौ। पछै राव कह्यौ म्हारो महाराजाजी सु मुजरो करावो। जद मुजरो हुवै। पछै राव अरज करी कै आप जद सूं गढ चढिया उण दिन सूं सिरोहीं लारै क्यूं पड़िया इसो कांई गुनो कियो।......बरस एक में २४ हजार रुपिया दियां जासूं सो लिखाव लिखाय लीवो सिरपाव दे विदा कियो (अधिक)।
२. खेती रा लोकां ऊंदरियो जमांनो नांम दियो (अधिक)।

---

1. अनवन। 2. मुझे नुकसान पहुंचायेगा। 3 चुगलियें करता है। 4. आपकी कृपा रहने से ही। 5. सभी प्रकार का कार्य। 6. कार्य रूप में परिणत करे। 7. पूरी तरह से आश्वस्त किया।

कांम सिंघवीजी कियां गया। न्याहत अखैचन्दजी ग्यांनमलजी नै नीबाज, आसोप वगेरै कितराक मोटोड़ा सिरदारां सूं सट पट[1] सिंघवीजी सुं कांम डिगावण री कीवी।[2] जिका परोखत[3] श्री हजूर सूं परवारी मालम हुई। सिंघवीजी पिण मालम कीवी। जद श्री हजूर सुं दोटी ऊपर चवडै पोस वदी हुकम मारै महीनै म्हेलीयो कै राज रौ कांम सरबोसरब इंदरराजजी गुलराजजी करसी। कोई परवारी अरज राजरा कांम री इंणां बिनां कीजौ करावजौ मती। कोई अरज करसी करावसी तौ मरजी में नहीं आवसी। इंण तरै वो सबदी हुकम हुवौ[4]। तरै सिंघवीजी कांम खुल नै करण लागा। जद बेचावगे वाळा[5] हा सो सारां संको खायौ।[6] मोहोणोत ग्यांनमलजी पिण संको खाय निज मिंदर अखेचंदजी सांमल जाय बैठा। मूता सुरजमलजी साहबचंदजी वगेरै पिण हवेलीयां रहै। वगत सर[7] गढ ऊपर जाय आवै। हजुर रौ मोसर[8] सिंघवी जी अरज करावै जद कांम काज रा मुदा सु इंणा नें मौसर हुवें। दूजां किणी नूं हुवै नहीं।[9] यूं संमत १८७१ रा वैसाख तांई कांम वडा छाकौटा सूं इंदरराजजी कीयौ।

मैंमदसा का खरची के रुपयों की वसूली के लिये आना—

पछै वैसाख में नबाव मैमदसाजी री फौज खरची मुदै आई। मेड़तै डेरा कीया। सिंघवीजी सांमा ऊकील मेलीया-मुलक रा गांव खराब कीजौ मती थांरी खरची रो तोड काढ देसां।[10] पिण मीरखांजी अर मैमदसाजी रै तौ औहीज सरस्तो हौ[11] सो बरसा-वरस[12] ऊनाळू साख ऊपर तौ मैमदसाजी आवतौ सो गांव बिगाडता नै सांवणू साख में मीरखांजी आवता सो ऊवै ही गांव बिगाडता। पिण इंदरराजजी जिसा सकरड़[13] कांमैती हा सौ लाखां रुपीया देणा कर सदाय देता नै पाछौ कूच कराय देता। सौ संमत १८७१ रा में ही मैमदसाजी आया सौ मेडतै डेरा कर मैडतौ लूंट नै तैस मैस कर दीयौ।[14]

हाकमी पंचोळी गोपाळदास रै थी सौ गोपाळदासजी तौ जोधपुर हा नै कांम करता काको अभैमल हो सो नबावा रा डेरा हूवा नै नबाव रो बंदोबस्त सैर में हूण री निजर आई तरै चढ नै जोधपुर उरौ आयौ। मूंढा आगे कांमे-

---

1. गुप्त विचार विमर्श। 2. सिंघवी से काम हटा देने के लिये किया। 3. प्रत्यक्ष रूप से। 4. जबानी हुक्म हुआ। 5. उसे न चाहने वाले। 6. शंकित हुए। 7. निश्चित समय के अनुनार। 8. मौका, अवसर। 9. और किसी को अवसर नहीं मिलता। 10. तुम्हारी खरची के रुपयों की व्यवस्था जैसे तैसे कर दी जायगी। 11. उनका तो यही ढ़ंग था। 12. प्रत्येक वर्ष। 13. मजबूत, कुशल। 14. बिल्कुल बरबाद कर दिया।

तीयां में पोहोकरणो बिरांमण सेवग कालूरांम थौ सो ऊनालू साख री तैसील करण मुदै फौजबंदी कर परगना में हो सो थावळै किलो जांण थांवळै जाय डेरो कीयौ । नबाब री फौज री कई[1] परगना में जावै जिण सुं चापटा[2] करवौ करै ।

नवाब मेडते तातेड मेहकरण नु कांम करता राख नै फौज रौ कूच कर जोधपुर आयो सेखावतजी रै तळाव डेरा कीया । सिंघवीजी वात विसटाळो कर रुपीया तीन लाख ३०००००) खरची रा देणा कीया । नवाब रौ राजोपौ कीयौ ने श्री हजूर में मुजरौ करायौ । रजाबंद पाछौ कूच करायौ । ३०००००) तीन लाख रुपीयां री साद में सवा लाख १२५०००) रुपिया तो पंचोळी गोपाळदासजी सुं सदाया । मेड़ता री हाकमी चांतरौ[3] सायर यांरै थी । जिण सुं परगनां रो रेख विराड[1] घर गिणती पेटै तथा हवालौ गांव अणंदपुर भावी ४००००) चालीस हजार रा गांव फेर गोपाळदासजी तालकै कर दीया । नै ८००००) असी हजार सिंघवी बाहादरमल रै परबतसर री हाकमी ही तिण री तैसील माथै सदाया । नै लाख रुपियां री फेर सिंघवीजी दूजी जमी ऊपर राजा रांम किसनजी[2] सूं सदाया ने फोज पांच छव हजार हीज थी जिण सूं नबाब सवाय जोर दीयो नहीं ।[4] कूच कर ढूंढाड़ में परौ गयौ ।

सिंघवीजी निराला हुय[5] संमत १८७२ रा सांवण तांई कांम कीयौ । आयसजी देवनाथजी सिंघवी इंदरराजजी कांम करै । दूजा किणी रौ वटे नहीं ।[6] जिण सू सिरदार मुतसदी सारा नाराज । आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी रौ सिको पखाल भरण नूं माहामिंदर गयौ थौ सो झालरा ऊपर देवनाथजी रा चाकर सुं लडाई हुई सो सिका नू कूटियौ । नै गैर जबां बोलीयौ । तरै सिके आय ठाकुरां नै कयौ सो ठाकुर सब्र कीयौ सो इण ताछ आयसजी लोकां नै खारा लागण लागा ।

मीरखां का खरची उगाहने के लिये सेना सहित जोधपुर आना

संमत १८७२ लागो जमांनो सरासरी हूऔ नै भादरवा में नबाव मीरखांजी पिंडां फौज हजार १५००० पनरै लेनै आण पड़ीयौ । मारग में आवतां मुलक लूटियौ तौ नहीं नै जांमदारीयां कर नै गांव वर गांव रुपीयां

१. ग. बाव । २. ग. सिरीकिसन ।

1. लूट के लिये जाने वाली फौज की टुकड़ी । 2. लूटपाट । 3. वह स्थान जहां कर वसूल किया जाता था । 4. इससे अधिक प्राप्त करने के लिये बाध्य नहीं किया । 5. निश्चित होकर । 6. और किसी की चलती नहीं ।

ठेहरावतौ आयौ । नवाब डेरा सेखावतजी रै तळाव कीया ।

अखैचंदजी ग्यांनमलजी जांणीयौ—मेमदसा नै तौ थोड़ा रुपीया देनै इन्दरराजजी काढ दीयौ पिण औतौ सांवठा मांगसी सो रुपीया कठा सु ंलावसी । हमकै दाव आयौ आजांण सिरदारां हसतै नवाव नू केवायौ के श्री हजुर सायब तौ मोसर ही देवै नहीं देवनाथजी इन्दरराजी जोर दै मरजी ऊप्रांयत कांम करै है आप श्रीजी सायबां रा भाई हौ सो औ संकट मरजी कांनी रौ आप सु ंकटसी सिरदारां नवाब नूं कयौ कै देवनाथजी इन्दरराजजी नु आप चूक कराय काडो[1] तो अखेचन्दजी रौ कांम में पेच पड़ जावै ।[2] तौ आपरी खरची हां मन चाही देसी । तरै मीरखांजी देवनाथजी इंदरराजजी नू चूक करण रौ विचार कीयौ । अर सिंघवीजी नू कैवायौ कै हमारी खरची चुकाय देवौ । सिंघवीजी नू अखैचंदजी री सटपट री खबर पड़ गई ।[1] सो सिंघवीजी तळैटी जावै नहीं । सास्ता गढ ऊपर रहे ।[3] हजूर मीरखांजी री चाकरी रौ पूरौ ल्याज राखे । पिण लाखां रुपीया मांगै सो कठा सूं लावै । देवनाथजी इंदरराजजी जांणीयो कै हमको पेच दुसमणां रा सिखावणा सूं भारी है सो हर वेंत कर[4] रुपीयां रो तोड काढ कूच कराय देवां तौ ठीक है । पिण दोनू जणां रौ वस पौंचीयौ नहीं ।

देवनाथ व इन्द्रराज को मारने का षड़यंत्र बना—

न्याहत सिरदारां री नै अखैचंद ग्यांनमल री हमगिरी सूं नवाब आप री फौज रा कपतांनां कुमेदांना सूं सला कीवी कै देवनाथजी इंदरराजजी तौ तळेटी आवै नहीं सो थे धंगाई पांच पचीस भेळा हुय गढ ऊपर जाय दोनां नै चूक करौ तौ अखैचंद खरची चुकाय देवै । जद पठांण कुतबदीखां वगेरै जणा २७ सताईस फोज में धंगाई हा टाळवां[5] जिणां नवाब नै कयौ म्है औ कांम

१. ख. ख्यात में लिखा है कि मुसलमान लोग ब्राह्मण की एक लड़की को उड़ाकर लेगये इसे इन्दरराज ने बहुत बुरा माना और उस मुसलमान को हाथी के पैर के बंधवाकर मरवा डाला । इस घटना से मीरखां के साथी और उत्तेजित हो गये और रकम का तकाजा जोरों से करने लगे । परिस्थिति में अधिक तनाव बढता देख श्री हजूर खुद तलेटी के महलों में बधारे । मीरखां को बुलवाया वह 500 पठानों सहित मिलने आया, सलाम की और फिर महला बाग में दोनों की मुलाकात की जिसमें मीरखां सिस्टाचार से पेश आया पर उसने अपनी रकम का तकाजा पूरी तरह किया । हजूर ने रकस जल्दी चुकाने का आश्वासन दिया (पृ 52-53) ।

1. धोखे से मरवा डालो । 2. काम अखैचंद के हाथ लग जावे । 3. सदा गढ पर ही रहते हैं । 4. हर प्रकार की अटकल लगाकर । 5. छंटे हुए ।

करसां । सो संमत १८७२ रा आसोज सुद ७ रात रा २७ सताईस जणां मरण मतै री खैरायत वांट[1] आसोज सुद ८ दिन ऊगै फौज मांह सू गढ ऊपर आया । करावीणों[2] भरीयोंडी सावधांन हुवोडा । आगे खावखा में आयसजी नै सिंघवीजी नै सिंघवीजी रौ कांमेती मोदी मूलचंद सला करता हा । नै श्री हजुर मोतीमैल में बीराजीया हा । कनै व्यास चत्रभुज नै दूजा ही छूट वाळा हाजर हा । पठांण खावखा में आयसजी सिंघवीजी रै चोफेर जाय बैठा आयसजी सिंघवीजी पठांणां नूं कह्यो कै थां आयां पैहला ही खरची रौ तोड विचार लीयौ है सो श्री हजुर में मालम कर पाछा आवां । यूं कहै मोतीमैल में जावण लागा सो जावण दीना नहीं नै खावखा री वारली खिडकी रो आडौ दे दीनौ नें पूछै करा-बीणों छोडी[1] सो आयसजी देवनाथ जी सिंघवीजी इंदरराजजी नू मार नांखिया । इंदरराजजी रौ कांमेती मोदी मूलचंद रै ही लागी सो घरे आय नै मूवौ । नै तिंवरी रौ प्रोहित गुमांनसिंघ मारीजियौ । भारावरदार खावखा रा झरोखा कांनी सू दोढी कांनी कूद पडियो तिण रै लागी करावीणां छूटी तरै व्यास चुतरभुज मोतीमैल री खिड़की रौ आडौ जड़ दीयौ ।[2] श्री हजुर सूं पूछीयो कांई हूवौ–तरै व्यास चुतरभुजजी अरज करी चूक हूवौ । दौलतखांना में हाकौ हुवौ । दोढी नै सूरजपोल मंगळ कर दीवी ।[3] पोळां सारी मंगळ कर दीवी ।

श्री हजुर फुरमायौ कै खावखा रै डागळै सांवठौ लोक चढाय छात फोड़ पठांणां नै मार नांखौ जद हजूर कनै हाजर हा जिणां अरज करी कै सेहेर लूटीज जासी । हजूर फुरमायौ सेहेर भलांई लूटीजौ पिण इणां हरांम खोरां नै तौ मार नांखौ । नवाब मीरखां फौज ले चढ ऊभौ रयौ । नै आसोप, नीवाज वगैरै सिरदारां नै अखेचंद नू आदमी मेल केवायौ कै हमारा पठांण जो मारीया गया तौ थां सूं समज लेसूं नै सेहेर लूट लेसूं ।

तरै सिरदार गढ ऊपर आया । अखेचंदजो नूं निज मिंदर सूं गढ ऊपर बुलाया । सेठ राजारांम नै जोसी सिरीकिसन नू गढ माथै बुलाया । नै कयौ–राज री नै मुलक री बोरगत रा मालक थे हौ सो नवाब रा रुपीया साद कूच करावौ । नहीं तौ थांरं गैर फायदो हुसो । जद अखैचंदजी बात नू समज लीनी ।[4] कै थेट सुं खोटा म्हैं गूंथीया है सो हमें नटियां कांई हुवै ।[5] कोई तीजी

---

१. ग. झोक दीनी ।
२. ग. दरजी चोला रौ भाई सिवजी मारीजियौ ।

---

1. अन्तिम समय का दान पुण्य करके । 2. एक प्रकार की बन्दूक । 3. सूरज पोल का दरवाजा बंद कर दिया गया । 4. अखैचन्द परिस्थिति को समझ गया । 5. अब मना करने से क्या होगा ।

हुवौ ।[1] जद सिरदारां नु कह्यौ थे नबाब रौ ठैराव करसौ जिण में आदा रुपीया तो हूं साद लेसूं नै आदा सेठजी नै जोसी जी सुं सदावौ । जद सेठजी जोसीजी ही हांकारौ सिरदारां कनै भर लीयौ । तरै सिरदारां आपरा कांमेतीयां नै नवाव कनै फौज में मेल नबाब रा मुंसी दातारांम हस्ते वात ठेहराय रुपीया साढा नव लाख देणा कीया । पूणा पांच लाख तौ अखेचंदजी सादीया नै पूणा पांच लाख सेठजी. जोसीजी[१] सादीया । पठांणां नूं खाबखां मांह सुं सावत काढ नै फोज में कुसले[2] पौंछावण रौ वचन कर लीयौ ।

पछै सिरदारां हजूर में अरज कराई नै देवनाथजी रा छोटा भाई भींवनाथजी नै सिरदारां केवायौ कै थांनै ही तुरक मार नांखसी जीवता रैहसौ तौ देवनाथजी री अेवज में मुसायबी थे करसौ सो हजुर में अरज पठाणां नै नही मारण री थें करावौ । तरै माहामिंदर सूं भींवनाथजी अरज कराई । जद हजुर हांकारौ भरीयौ । तरै पठांणां नूं खाबखा रै मैल मांह सूं काढ नै सिरदारां मीरखांजी री फोज में पुगाय दीया ।

आयसजी नू गढ ऊपर जै मिंदर कनै गऊखांनो हौ जठै समाध दीवी । सिंघवी इंदरराजजी नू संवी पोळां उतार[3] रासोळाई ऊपर दाग दीरायौ । इंदरराजजी कनै ही मोदी मूलचंद नू दाग दिरायौ ।

आसोज सुद ८ आठम पोर रात गई जठा तांई गोरंमो[4] रयो दिन तीन तांई सैहर रा दरवाजा मंगळ रया[5] दसरावा[6] नूं रांवण मारण रौ दसतूर दरवाजा मंगळ थकां कीयौ । श्री रामचन्दरजी री असवारी दरवाजा तांई पधारी । बारै पधारीया नहीं । रुपीया साढा नव लाख ले मीरखां तौ कूच कीयौ सो ढूंढाड़ में गयौ । नै मीरखां चढियौ तरै सिरदारां मुलाखात री अरज कराई तरै फुरमायौ म्हे तौ इण कुतैखां रो मूंढौ देखा नहीं ।

राज्य कार्य मूहता अखैचंद के हाथ में आना—

कांम री मालकी आसोप, नीबाज, कंटालीयो, आऊवो, चंडावळ वगेरां री सलासूं मूंता अखेचंद री ठैरी दीवांणगी खालसै । नै कांम अखैचंद करै । नगसीगिरी रौ कांम भंडारी चुतरभुज नै सीरदारां भोळायौ । श्री हजूर चुपका होय[7] वीराज गया किणी कांम री अरज करावै तौ पाछौ क्यूं ही जबाब फुरमावै नहीं ।

१. ग. श्री रांमजी राजारांमजी ।

1. कोई और विपदा आएगी । 2. सकुशल 3. मुख्य द्वार से ले जाकर । 4. अशान्ति
5. शहर पना के दरवाजे बंद रहे । 6. दशहरा । 7. शान्त होकर ।

गुलराजजी फौज लीयां सोभ्रत कांनी हा सो ग्रा वात सुणी तरै राज रौ रसालौ कनं हौ सो लेनै कोट रै ढांणै परा गया। सिंघवीजी रा बाव्रस्ता[1] सैहर में हा सो छिप गया मोदी मूलचंदजी हस्तै लाख रूपीयां रौ हवालौ-हो जमां सांवठी पोतै भेळी हूवोड़ी थी सो मूलचंदजी रा भाई बेटा कनै पौकरणा बीरांमण दोय तीन हा तिके थेलीयां उचकाय सदरा हुय गया।

सिंघवी जोरावरमलजी रा वेटा सिभूमलजी ग्राऊवे वगेरै सरणै रहता था तिणां नै ग्रखैचंदजी केवायौ कै मीरखांजी री खरचो रा रूपीयां में सवा लाख री मदत करौ तौ मुलक मे पाछा वाड़ देऊ नै गौढ़वाड़ री हाकमी दिराऊं। तरै सिभूमलजी रूपीया सवा लाख १२५०००) देणा करनै गोढवाड़ री हाकमी लीवी। श्री हजुर ग्राछी तरै जांणलीयौ कै ग्रखैचन्द मोहोणोत ग्यांनमल नै सिरदारां सांमल होय ग्रायसजी नूं नै इंदरराज नूं चूक करायौ है। सो उण दिन सूं हजूर पूरा कुंद होय गया। मौसर देवै नहीं।

गुलराज की महाराजा से प्रार्थना तथा जोधपुर ग्राना

पछै कोट रा ढांणा सूं गुलराजजी ग्ररज लिखी कै मरजी सवाय इंदरराज काम कीयो हुवै नै मरजी रा विस्वां सूं चूक हुवै जद तौ चाकर ने सजा मरजी हुई ज्यूं दीवी। नै दुसमणां री घालमेल सूं मरजी सवाय[2] कांम हुवौ तौ दुसमणां सूं समज सकूं छूं। नै मरजी मुजब राजरौ कांम कर सकूं छूं। जद गोसे पाछौ फुरमावणौ हूवौ के हरांमखोरां मरजी सवाय ग्रौ कांम घालमेल कर करायौ है हमार मांहांरौ फुरमावणौ चलै जिसो वखत नहीं है तूं थारा पांण[3] सूं हाजर हुय सकै तौ थारा डील री रिछया[4] कर नै राज रा कांम री बंदगी कर सकै तो म्है गाढा कुसी[5] हां।[१] इण ताछ इसारौ पोंछियो।[6] गुलराजजी कनै ग्रापरी सिरकार रा दीसता ग्रादमी भंडारी पिरथीराज मांनमल सिंघवी वादरमल वगेरै सारा परगनां ऊपर हा जठा सूं जाय कोट रै ढांणै साभल हुवा। सिरकार वणीयोड़ी नै पिंडां रौ घर वणियोड़ौ[7] नं तालकदारां

---

१. ख. ग्ररजी वाच नै फड़ाय दीवी नै पाछौ फुरमायौ खिजमतदारां नुं कै गुलराज नूं केवायदो कै हाल थांरो ग्रावणो ठीक नहीं। हमार पर चक्र सारो इयां रौ है सो देवनाथ इन्द्रराज वाळी थांमें होसी सो म्हारा बिन बुलायां ग्रबे ग्रावजो मती। ग्रै समाचार गुलराज ने संवत 1872 रा पोस में पोंता।

---

1. कुटुम्ब के लोग। 2 ग्रापकी इच्छा के विरूद्ध। 3. तुम्हारी ग्रपनी ताकत के भरोसे। 4. रक्षा। 5. खूब प्रसन्न। 6. संकेत पहुंचा। 7. समृद्ध हुग्रा।

रा घर वणियोड़ा सौ कोट सूं हजार २००० दोय घोड़ा बेलियां रौ मेळ कर[1] कूच कीधौ सो संमत १८७२ रा माह सुद ३ तीज आय राईकैबाग डेरा कीया। नै आऊवा रा ठाकुर बखतावरसिंघजी, नीबाज सुरतांणसिंघजी, आसोप केसरीसिंघजी, चंडावळ विसनसिंघजी, कंटाळीयै सिंभुसिंघजी, वगेरै सिरदार नै भंडारी चुतरभुज आप आपरी हवेलीयां सूं चढ चांदपोळ दरवाजा बारै दिन ऊगतां नीसरिया सो सूरसागर नै राजबाग विचौ जाजम बिछाय घड़ी अेक बैठा सारा भेळा हुय गया। तरै उठा सूं चढ अखेराजजी रै तळाव कनै हुय चौपासणी गया। मुंहतौ अखेचंदजी गढ में आतमारामजी री समाद[2] में जाय बैठौ।

दूजै दिन गुलराजजी सांवठै साथ सूं गढ ऊपर आया मालम हुई। खावखा में हाजर हुवौ। खातर फुरमाई कै इंदरराजजी श्री आयसजी रौ साथ दीयौ। पूरी बंदगी जांणजै, कांम थारा पर करसूं पिण थूं धणी सावचेती सूं कीजै।[3] म्हांरा वस री वात है नहीं। तरै गुलराज अरज करी कै आप गाढी कुसी रखावै।[4] तरै उणी बखत दोढी दिवांणी मोर थी सो मंगाय नै फतैराज रै नांवै दीवांणगी दीवी। नै बगसी वगेरे सारौ कांम इणां नूं सूंपियौ।

पछै सारा सिरदार चोपासणी सूं चढ चंडावळ गया नै। चंडावळ सीरा री गोठ री त्यारी हुई। सो सिंघवी चैनकरण नूं हुकम पोतौ सो फौज लेनै चेनकरण चंडावळ गयौ। सो चंडावळ चैनकरण नू आयौ सुणीयौ तरै सिरदार गोठ बिना जीमीयां मतै मतै[5] चढ नै आप आप रै ठिकांणै गया।[१]

संमत १८७२ रा चैतवद ११ इग्यारस व्यास चुतरभुज भाई कांमीतीयां सुधो कैद कीयौ। झरणा मे अटकाय दीयौ।[6]

मुलक रो कांम गुलराज फतैराज करै। हाकमीयां ओदा वगेरै सारा इणांरै ईकत्यार। पिण श्री हजुर तौ मोसर देवे नहीं। असवारी कठै ही करै नहीं। आयसजी इंदरराजजी रा अपसोच[7] आगै किणी वात सूं चित लगावै नहीं। तौ पिणं[8] गुलराज फतैराज तौ कांम कीयां ही जावै। इणां नूं काम रै

---

१. ख. ख्यात में लिखा है कि सरदारों ने 10 मण का सीरा बनवाया था सो वे छोड़कर भाग गये और वह सीरा चैनकरण की फौज के काम आया। हजूर को खबर मिली तो उन्होंने कहा—चैनकरण सीरो भलो खुवायो (पृ. 56B)।

---

1. साथियों को शामिल करके। 2. समाधी। 3. परन्तु पूरी सावधानी से कार्य करना। 4. आप पूरी तरह आश्वस्त रहें। 5. अपनी-अपनी सच्छा के अनुसार। 6. झरने के पास की जगह में बंदी बनाया। 7. अफसोस। 8. फिर भी।

भदै कदै कदे मोसरहोजावै सो इणां काका भतीजां कांम चलायौ । जोधपुर में तौ गुलराजजी कांम करै अर बारै फतैराजजी फौजबंदी लीयां परगनां में फिरै ।[१] अखैचंदजी सुरतनाथजी हस्तै भींवनाथजी सूं ढत्र लगायौ ।[1] मूता ऊतमचंद माहामिंदर रा कांमती नू फाड़ीयो । अर भींवनाथजी नूं कैवायौ कै सिंघवीयां देवनाथजी नू राज रा कांम में अगवांणी कर मराया । गुलराजजी मरजी सवाय कांम करै है नै मुलक खावै है । ने हजूर कींही फुरमावै नहीं । सो महाराज रै छत्रसिंघजी सतरै बरस रा मोटीयार कंवर है सो कंवरजी रा हुकम सूं नै भींवनाथजी री अग्या सूं कांम वरतसां ।[2] भींवनाथजी माहाराज माहामिंदर में बिराजिया कुसिया करबो करौ ।[3] इंण तरै ऊतमचंद हस्तै भींवनाथजी सूं पकी कीवी । जोसी मगदत इण ताछ रा संदेसा भुगतावै ।[4]

छतरसिंह को युवराज पदवी दिलवाने का षड्यंत्र

अखैचंद आतमारामजी री समाद में बेठै बेठै हीज कंवरजी छत्रसिंघजी सूं अरज कराई कै श्री हजुर साहबां तौ जाळोर सूं आद लै आज तांई वडा वडा राड़ा खेवीया है[5] पिण देवनाथजी मुवां पछै देवनाथजी रा करायोड़ा जंत्र-मंत्र[6] हा सू जिण सूं कर हजुर नै बेहम रौ कारण हुय गयौ है । नै गुलराज मतै मालक हुय गयौ है । सो आप म्हारी सला में आवौ तौ मालक कर देवां ।[7] नै इंणी ताछ कंवरजी री मां श्रीचावड़ीजी नूं समाचार कैवाया के अेक सिंघवीयो बिनां सारौ मुलक म्हारै सांमल है सो श्री हजूर सायबां रौ जीव जोखौ तौ करां नहीं,[8] मोतीम्हैल में विराजीया कुसीयां करौ । नै राज रौ कांम आपरी नै कंवरजी री मालकी सूं करसां । तरै कंवरजी रैं पिण राज करण री हर चाली ।[9]

इण सला में सांमल जोसी मगदत, फतौ, व्यास विनोदीरांम मुनसी जीतमल, खीची बिहारीदास, धांधल मूळौ, दांनौ, जीयौ वगेरै था । मगदत ने

---

१. ख. 22 परगनां री खिजमत श्री गुलराज इकतियार पण श्री हजूर न तो बारै असवारी करै न सिरै दरबार करै । न गुलराज नै कदेई मोसर देवै............संवत 1872 रा फागुण लगात 1873 तांई काम बराबर कियौ जिणमें किणी री कांई बंटियौ नहीं नै श्री हजूर असवारी एक दिन करी नहीं ।

---

1. सांठ गांठ की । 2. कार्य चलायेंगे । 3. आनन्द करते रहो । 4. इस प्रकार के संदेश ले जाता है । 5. बड़े-बड़े झगड़ों का सामना किया है । 6. तांत्रिक क्रियाएं । 7. आपको राज्य-कार्य का अधिकार दिलवादें । 8. महाराजा की जिन्दगी पर कोई आपत्ति नहीं आएगी । 9. इच्छा हुई ।

विहारीदास झागड़ा दे ने[1] किलादार देवराजोत नथकरण नु पिण सांमल लीयौ। कंवरजी सूं अरज मूते अखैचंद कराई के सारां नू सांमल लेलीया है। तरै कंवरजी फुरमायौ के सिरदारां नू सांमल लेवौ। तरे अखैचंदजी अरज कराई के आऊवौ, आसोप, नीवाज, चंढावळ वगेरे थेट सू म्हारे सांमल है नै खेजड़ला रा भाटी म्हारे सांमल है। जिके कहै छे सारा मुलक रा सिरदार जांणे नै म्हे जांणां। सो आप गाढी कुसी रखावौ।[1]

संमत १८७३ रा चैत में अखैचंदजी ऊतमचंदजी साथे भींवनाथजी नूं केवायौ के आप गढ ऊपर पधार नै कंवरजी नु बारे पधरावण री[2] हजूर में आग्या करौ। तरे उतमचंदजी भींवनाथजी नू ले गढ ऊपर आया। मोती मेहल में बुलाया। श्री हजूर रे दोढ वरस री खिजमत वधियौड़ी थी। संपाडौ कीयां नूं ने कपड़ा धौवायां नूं कई महीना हुवा। इण तरे ब्रह्मरूप हुवोड़ा मोसर दीयो।[3] भींवनाथजी पेला तो देवनाथजी मारीया गया जिणरा रोवणा रोया।[4] पछे कयौ के आपरौ सरीर इण तरे हुय गयौ, हमें जोगीयां री प्रतपाळ कुण करसी।[5] पिण इतरा में भूंडा में भली है[6] सो छतरसिंघजी मौटीयार बेटा आपरे है, जिणां नै कांम भोळाय दिरावौ। ने म्हारौ ने लाडूनाथ रौ हाथ पकड़ाय दिरावौ तौ आप रां गुरदुवारा री पाल[2] रह जाय। तरे हजूर फुरमायौ के श्रीजी री ईछया है ने आप कीवी चावसौ ज्यूं हूसी[7] पिण घणा पिस्तावसौ[8] इतरौ फुरमाय ने ब्रहमरुप देखाय गुम होय गया।[9] पछे भींवनाथजी ऊंची नीची वातां री अरजां कीवी पिण हजूर तौ पाछा बोलिया ही नहीं। घड़ी दोय घड़ी बेठा रह्या तरे ऊतमचन्द भींवनाथजी नूं कह्यौ—श्री हजुर रौ जीव वस नहीं है सीख कर माहामिदर पधारीजे। तरे सीख कर माहामिदर पधारीया।

---

१. ख. ख्यात में लिखा है चउवाणी जोशी शिम्भूदत्त छतसिंह को पढाता था उससे महाराज कुमार ने सलाह मांगी तब उसने कहा कि ये सभी लोग राजनैतिक षड्यंत्र में उलझे हुए हैं और श्री हजूर इन पर बहुत नाराज हैं क्यों कि इन्होंने देवनाथ व इन्द्रराज को मरवाया था अत: आपको हजूर स्वयं फुरमावे तब जुगराज पदवी ग्रहण करना। (पृ. 159 A)

२. ग. पालण।

---

1. पूरा प्रयत्न करके, बहकाकर। 2. राज्य दरबार में लाने की। 3. मिलने का मौका दिया। 4. अफसोस व्यक्त किया। 5. नाथों का पालन कौन करेगा। 6. इस खराब परिस्थिति में इतनी बात तो ठीक है। 7. आप करना चाहते हो वैसा ही होगा। 8. परन्तु बहुत पछताओगे। 9. चुप हो गये।

ऊतमचन्द साथे सारी विगत अखेचन्दजी नूं केवाई तरे अखेचन्दजी ऊतमचन्द नूं पूछियौ के राजाजी किरिया करे ज्यूं तरै है के कीकर है[1] ? तरै ऊतमचन्द कह्यौ-राजाजी में तौ क्यूं ही कळा कोय नहीं[2] थे ईतरी खेवट कर लीवी है[3] तौ हमें जेज[4] क्यूं करौ हौ, में थांरै भेळा हां। फतैराजजी रा मेडतै डेरा। साथै जिनसी दांनसिंघ मेमदसा अेवजअली रौ लोक नै भाद्राजण वगेरै इणां रै ढ़ब रा[5] सिरदार साथै। भाद्राजण वाळां रौ भरोसो जादा। जोधपुर में गुलराजजी¹ सांवठा आदम्यां सूं परभात रा गढ ऊपर आवै सो तीजा पौर तांई कांम करै। अखैचंदजी री रचना जांण लीवी।[6] जद गुलराजजी अरज कीवी सो हजूर तौ पाछौ क्यूं ही फुरमायौ नहीं। हौणहार टळै नहीं। सो गुलराजजी जाणियौ किण रौ मगदूर है सो म्हनै हाथ घाळै।[7]

गुलराज सिंघवी की हत्या—

संमत १८७३ रा वैसाख वद ३ तीज तीजा पौर[8] रा गढ ऊपर गया, हवेली सूं निसरतां सुकन फौरा हुवा, सुकनियां कह्यौ-आज मत पधारौ। तरै कयौ थोड़ी वार रहै नै पाछा ऊरा आवसां।[9] आदमी ३०० तीन सौ साथे नै गढ ऊपर गया। सो सिंघवीजी तौ मांह गया नै आदमी सिणगार चौकी ढबिया।[10] नै अखेचंदजी आतमारांमजी री समाद में हा जठा सूं किळैदार नथकरण देवराजौत नै केवायौ कै आज जिसौ लैह आवसी नहीं।[11] तरै नथकरणजी सारी पोळां रौ बंदोबस्त करायौ नै पिंडां आदमी २०० दोय सौ सूं मांह आयौ। खीची बिहारीदास, जोसी मगदत, व्यास विनोदीरांम मुनमी जीतमल, धांधळ वगेरै मांय हाईज। गुलराजजी खाबखा में गया, घडी दो अेक बैठा। किलेदारां अफ सुं आदमी हौ जिण सिंघवीजी रौ हाथ पकड़ियौ नै कह्यौ-कैद रौ हुकम है। आ कहै कटारी ले लीवी दोढी मंगळ कर दीवी।[12] सूरजपोळ मंगल कर दीवी। किला रा आदमी नथकरणजी साथै हा जिणां नू तौ पैली दोढी में ले लीया हा फक्त सिंघवीजी रा आदमी हा जिणां नु ऊपर सूं हेलौ पाडियौ[13] के गुलराजजी

---

१. ग. फतैराज (अधिक)।

---

1. कार्य करने की कुछ क्षमता बची है या नहीं। 2. महाराजा में अब किसी प्रकार की कार्य क्षमता नहीं रही। 3. इतना प्रयत्न कर लिया है। 4. विलंब। 5. इनके पक्ष के। 6. अखैचंद का षड्यंत्र जान लिया। 7. किस की हिम्मत है सो मेरा अपमान करे या बंदी बनावे। 8. तीसरे पहर। 9. थोड़ी देर ठहर कर वापस आजाऊंगा। 10. बाकी आदमी शृंगार चौकी के पास रुक गये। 11. आज जैसा अनुकूल अवसर आएगा नहीं। 12. ड्योढी का दरवाजा बंद कर दिया। 13. ऊपर से आवाज लगाई।

नै कैद हुई, थे तळेटी जावौ ।[1] किणी वात री हुजत कर सौ तौ भूंडा दीस सौ । इतरी राज सूं कयां पछै आसंग पड़ी नहीं कांई आदमी नीचे तळेटी गया। कितराक आदमी तौ सिंघवीजी री हवेली गया नै कितराक आप आप रै गांवां गया । सिंघवीजी नू च्यार ४ घडी रात गयां सलेम कोट में बैठांणीया नै रात आदी ढळियां[2] पछै कांमेत्यां सारां भेळा होय सला कर कंवरजी सूं अरज करी कै आ रकम जींवती राखण री नहीं,[3] आपरौ राज नहीं जमण देसी । तरै चूक करण रौ हुकम हूवौ[4] । म्हेमदखां री पलटण में सिपाई दोय तीन जणा हा ज्यां नै मेलीया । अे सलेम कोट में गया । सिंघवीजी नू नींद आई थी । चाकर पग दाबतौ थो, सो सिपाई तरवारां काढीयां गया चाकर देख नै सिंघवीजी नै जगाया सो सिंघवीजी बैठा हुतां तरवारां वुही ।[5] सिंघवीजी नै चूक हूवौ सो दोवड में बांध[6] गिड़ां कांनी गुड़ाय दीया ।[7] दूजै दिन परभात रा सिंघवी बखतावरमलजी¹ पिडां साथै जाय अखराजजी रै तळाव दाग दीयौ[8] ।

फतैराजजी रा डेरा मेडतै हा बाबस्ता अठै हाजर हा सो छिप गया । फतैराजजी नूं समाचार घरू पोहोता[9] । नै राज सूं जिनसी दांनसिंघ नै हुकम पोहोतौ कै खरची रा बाहना सूं फतैराज नूं अटकाय दीजौ[10] । दांनसिंघ नै मीरखां रै ऊमरखां पिण फौज में मांमला री किस्त बाकी री लेखा बाबत[11] उठै हौ । जिणां नै ठीक हुई[12] कै फतेराजजी रा घर में समाचार गुलराजजी नै चूक हुवां रा आया है सो त्रढ नै जावै है । जद ऊमरखां आपरा आदम्यां री चौकी बेसांण दीवी नै अटकाय दीया । नै कह्यौ म्हांरी खरची लावौ तौ जावण देवां । तरै जिनसी दांनसिंघ जांणीयौ म्है बदनांम केहण नै हुवां । फतेराजजी नूं तौ ऊमर खां अटकाया हीज है । आ खबर भादराजण रा ठाकुर बखतावरसिंघजी नै हुई तरां इणां आप रा डेरा रा सांवठा आदमी[13] फतैराजजी री मदत में त्यार कीया । मेड़ता री हाकमी पंचोळी गोपाळदास रै ही सो इणां रै घर में समाचार गुलराजजी नूं चूक हूवां रौ आयौ । जद गोपाळदासजी पिंडां उठे था सु जांणियौ गुलराजजी सूं म्हारै इंदरराजजी थकां सूं ले नै अणवणत है[14] पिण गुलराजजी जिसा मुसायब मारीया गया नै फतेराजजी फेर मारीया जावसी सो वात आछी

१. ग. परतापमल (अधिक)।

1. तुम लोग किले के नीचे जाओ। 2. आधीरात व्यतीत हो जाने पर। 3. यह व्यक्ति जिन्दा रखने लायक नहीं है। 4. मार डालने का हुक्म हो गया। 5. बैठे होते समय तलवारें चली। 6. दो परत वाले कपड़े में लाश को बांध कर 7. किले के ऊपर से बाहर पत्थरों पर लुढका दिया। 8. दाह क्रिया करवाई। 9. निजी तौर पर समाचार मिले। 10. रोक लेना। 11. बकाया रकम का हिसाब करने के लिये। 12. मालुम पड़ी। 13. बाकी संख्या में सिपाही। 14. अनबन है।

नहीं । इंणां नै पिंडां री मेनत सुं तथा रुपीयौ पईसो रा पेच में[1] आवतां ही काढां तो मोटो अैसांन है । वखत री चाकरी जांणसी[2] । आ विचार कचेड़ी सूं फोज में गया । ऊमरखां सूं मिळिया । फतैराजजी नूं पूछाई कै अै खरची री कहै छै आप कांई विचारी है । जद फतैराजजी कह्यौ-जीव भलांई इंणां रै लेणौ हुवै तौ लेवौ[3] मो कनै खरचौ रो टकौ अेक देण नू नहीं । थे हर ऊपाव करता जीवता काढ सौ तौ थांरौ ईसांन जांण सूं । जद गोपाळदासजी रुपीया ५०००) हजार ऊमरखां नै घर सूं देणा कर साद लीया । फतैराजजी दोळी[4] चौकी ऊमरखां री¹ थी सो उठाई । गोगाळदासजी फतेराजजी नू कयौ गुलराजजी नू चूक हुवां रा समाचार आय गया है । हमे आप रै तुलै जठै जावौ ।

तरै फतेराजजी आपरौ धर रौ साथ लेने भादराजण वाळां नूं साथे ले वहीर हुवां । भादराजण वाळां कह्यो-मरजी हुवे तौ भादराजण लेजाऊं । जद फतेराजजी कह्यौ-कुचांमण पौछाय दौ । जद इणां कुचामण पौछाय दीथा नें भाद्राजण वाळा प्रबारा घरे गया । भाद्राजण वाळां रौ ने गोपाळदासजी रौ अेसांन फतेराजजी जांणीयौ । गुलराजजी रा बेटा फौजराजजी टाबर ही था ।[5] सो फौजराजजी री मां फौजराजजी ने ले कुचांमण गई । मेगराजजी, कुसल-राजजी कुचांमण गया ने इणां रा बावस्ता मांनमलजी, बाहादरमलजी वगेरे सारा ही कुचांमण भेळा हुवा ।

गुलराजजो नू चुक हुवां पछे तीजे दिन अखेचंदजी भींवनाथजी नू गढ ऊपर बुलाया । सिरदार पिण गढ ऊपर आया । हजूर में मौसर री अरज कराई । हजूर मन में जांण लीनौ अे कंवर ने बारे काढण री अरज करसी[6] सो फुरमायो मे तो श्रीजी रौ भजन करसां । कंवर नू लावो सो जुगराज पदवी देवां ।

कुंवर छतरसिंह को युवराज-पदवी मिलना ।

सो पछे आखातीज रौ मुहरत थौ सो संमत १८७३ रा वैसाख सुद ३ तीज आखातीज[7] रे दिन श्री हजूर आप रा हाथ सूं जुगराज पदवी रौ

---

१. ग. सात (अधिक) ।

---

1. रुपये के लोभ में । 2. ऐसे अवसर पर की हुई सहायता को सदा मानेंगे । 3. मेरा प्राण ये लेना चाहें तो भले ही लें । 4. चारों तरफ । 5. नाबालिग था । 6. छत्रसिंह को युवराज पदवी देने की अर्ज करेंगे । 7. अक्षय तृतिया ।

तिलक कर दीयौ । रात पोहोर दोढ गयां आसरे महाराज कंवर छतरसिंघजी ने जुगराज पदवी री सिरपाव पेहराय बारे पधराया । तोपां री सिलक हुई ।

महाराजकंवर छतरसिंघजी रौ जनम संमत १८५७ रा । दूजे दिन वैसाख सुद ४ चौथ नू वजार सिणगारीजियौ । दिन पोर चढियां आसरे माहाराज कंवार री असवारी लवाजमा सूं हुई ।[1] खासा में वीराजीया । खिड़कीया पागा जांमो वगेरै सारौ लवाजमो राजावां रे दस्तूर मुजब मुंहढा आगे । खुले खासे विराजीयोड़ा आयसजी देवनाथजी रा बेटा लाडूनाथजी साथे था । असवारी सिरे बाजार[2] पधारीया श्री बालकिसनजी महाराजा रा मिंदर कने पधारीया । गुसांईजी व्रजाधीसजी माहाराज मिंदर रे झरोखे ऊपर[3] बेठा था सो माहाराजकंवार री असवारी पधारी तरे बेठा होय अेक हाथ सूं आसीरवाद दीयौ । महाराजकंवार दोनू हाथ सुं निमस्कार डंडवत कर खासे में विराजीयां कोत्री । अर लैजामातर मिंदर कनै खासो ढाबीयौ । पछै धीमे धीमे असवारी सिरै वजार होय माहामिंदर दोफार आसरै दाखल हुवा । मिंदर में भेंट कर पछै लारले दिन रा[4] गोळ री घाटी हुय गढ दाखल हुवा । श्री हजुर कनै मुजरै पधारीया[1] श्री हजुर तो मुंहडे सूं बोल क्यूं ही फुरमायौ नहीं ।

कांम में मालकी मुख अखेचंदजी री ।[5] दिवांणगी अखेचांदजी रा बेटा लिखमीचांदजी रै नांवै नं बगसी भंडारी सिवचांदजी रा बेटा अगरचांदजी रै नांवै हुई । किलेदारी देवराजोत नथकरण रै पेहला सूं थी । बेटो गुमांनीराम व्यास विनोदीरांम रौ माहाराज कवार री छूट में ।[6] कोटवाळी व्यास विनोदीरांम रै ईज पैहला सू थी । रसोड़ा री दरोगाई धांधल ऊदेरामजी गोरधन रै थी सो इणां नू तौ सीख दीवी ने धांधळ मूळजी, दांनजी नू दीवी । ने गांव केरु पटै दीयौ । रसोड़ा री मुसरफी जोसी मगदत रा भाई फतैदत नूं हुई । कपड़ा रै कोठार री दरोगाई नै गांगांणी रा खीची बिहारीदास नै इनायत हुई । डीडवांणा री हाकमी भंडारी विठलदास रै हुई । फेर ही ओहदा खिजमतां अखैचंदजी रं तुलिया[7] जिणां नै दिराया ।

मुनसी जीतमल रै गांव पटै नै जैतारण री कारकूंनी । किलेदार नथजी मुसायब, विहारीदास खीची री सला भैळी । मुनसी जीतमल व्यास

---

१. ख सांमी तो करड़ी निजर सूं जोयो ।

---

1. पूरे राजसी लवाजमे के साथ । 2. मुख्य बाजार के बीच में होकर । 3. झरोके पर । 4 दिन अस्त होते समय । 5. मुख्य रूप से काम का मालिक अखैचन्द हुआ । 6. महाराजकुमार की निजी सेवामें । 7. मरजी में आया ।

विनोदीरांम अखैचंदजी कनै मुकत्यार । मुख अकल री कूंची[1] मगदत जोसी सो इणां सारां रै मावोमाव[2] में कोई राजी वेराजी हुवै तौ पाछी दूरस्ती करावणी । तथा सला आगी चलावणी ।[3] सो सारा जणा मगदतजी रै इकत्यार कीवी । मगदतजी श्री वालकिसनजी रा मिंदर रा भात्रीक हा[4] सो कंवरजी रै गुसांईजी रो भाव वधायौ ।[5]

गुसांईजी व्रजाधोसजी माहाराज सुं माहाराज कंवार नू नांम सुणावण री वीनती कीवी । तरै व्रजाधीसजी फुरमायौ कै माहाराज श्री अभैसिंघजी सुं लगाय नै नांव तो चोपासणी सुणींजै है ने म्हांरो नै उणां रौ अेक कुळ अेक घर है । सो नांव तौ उठे हीज सुणो । तरै माहाराज कंवार चोपासणी जाय नांव सुणिया ।

पोहोकरण रा ठाकर सालमसिंघजी घरे बैठा हा जिणां नू खास रुको दे बुलाया । परधांनगी इंनायत कीवी । आहोर ठाकुर अनाडसिंघजी कोटे था सु तिणां नू खास रुको दे बुलाया ।

संमत १८७३ रा जेठ में पाली रा माहाजन रो माल पाली सूं जोधपुर आवतो हौ सो[१] खोसीज गयौ[6] सो माहाजन असवारी में कूकीयो[7] सो गांव रोहट, काकांणी रा सिरदारां कना मुं माल रा रुपिया[२] दिराय दिया । इण बात सुं माहाराज कंवार रौ राज तेज नै जस हुवौ । महागज कवार रै चवांणो रौ डोळो[8] गांव किलांणपुर सूं आयौ सु मांहलावाग में व्याव हुवौ । पछै माहाडोळ में विराज रात रा आतसवाजी छूटतां गढ दाखल हुवा । व्याव दूजौ गांव ओसियां रा भाटी रावळोतां रै कीयौ । डोळौ आयौ ।

जोसी मगदत री अरज सूं श्री बालकिसनजी रै मिंदर संमत १८७४ रा सांवण महीना में हींडोरा रा दरसण करण नू दोय तीन वार पधारीया । मिंदर रा मुंहडा आगै साथीण रौ ठाकुर भाटी सगतीदांन सूं बाहाला-जौड़ी घाल[9] घोडा फेरीया ।

---

१. ग. रोहट कांकांणी बिचै (अधिक) ।

२. ग. विजक मुजब (अधिक) ।

---

1. मुख्य सलाह की कुंजी 2. आपस में । 3. सला के अनुनार कार्य करवाना । 4. बालकिसनजी में भक्ति-भाव रखते थे । 5. गुसांईजी का भक्ति-भाव पैदा किया । 6. लूट लिया गया । 7. महाजन ने फरियाद की । 8. चहुवानों ने अपनी लड़की शादी के लिये भेजी । 9. घोड़े पर चढ़े हुए एक दूसरे के हाथ पकड़ कर ।

सिंघवी गुलराजजी नै चूक हुवां पछै सिंघवी चैनकरण कांणांणा रा ठाकुर स्यांमकरण करणोत री हवेली सरणे जाय बैठो थौ। आगै चैनकरण सिरदारां ऊपर चढ नै चंडावळ गयौ थो संमत १८७२ में, सो गोठ री त्यारी छोड सिरदार भाज गया नै गौठ चैनकरण लूंट लीवी। जिण वगेरै दोस थौ[1] सो आऊवो, आसोप, पोहोकरण, रास, नींवाज, चंडावळ, कंटाळीयौ नै अखेचंदजी वगेरै मुतसदियां सांमल हुय माहाराज कंवार सूं अरज करी कै चैनकरण मोटौ सिरदार नै हरांमखोर छै। माहाराज श्रीमांनसिंघजी जाळोर सूं पाली लूंट पधारीया तरै माहाराज श्री भींवसिंघजी री तरफ सूं चैनकरण गांव साकदडै पूग झगडौ कीयौ नै मुंहढा मांह सुं गैरवाजबी बोलीयौ[2]। सो माहाराज सा रै मन में इंण नूं सजा देण री पूरी थी। पिण इंदरराज रा मुलायजा सूं दिरीजी नहीं। सो इण नू पकड सजा दै मार नांखण ज्यूं छै। कंवरजी हांकारौ भरीयौ[3]। तरै सिरदारां करणोत स्यांमकरणजी नै कयौ चैनकरण हरांमखोर छै सो इणां नु पकड़ाय दैवौ। आंपां नु अेक सला राखी चाहीजै। तरै सांमकरणजी कयौ कै आज तांई किणी सिरदार री हवेली मांह सूं आयोड़ा नू पकड़ायौ नहीं[4] सो म्है किण तरै पकडावां। तरै सिरदारां कही कै माहाराज कंवार पिंडां पधार आपरा चाकर नै हाथ पकड़ लेजावै तिण में आंपणी कीही ओर तरै लागै नहीं[5]। तरै इंण तरै ठेहराय माहाराज कंवार असवारी कर कांणांणा री हवेली सूं चैनकरण नूं लीयाया। नै सीवांणची दरवाजा बारै तोपं सुं ऊडाय मराय नांखीयौ।

मीना[6] दोय तीनेक तौ कवंरजी दरबार करणो राज रौ कांम करणौ वगेरै करीना रै साथै वरतियौ। पछै तौ रूळियारगी रै चाळै लागा[7]। रात रा मांहलाबाग में तथा सैर में रह जावै, दोय च्यार आदमीयां सूं। मरजी आवै जठै चल्या जावै। खास केली रा आदम्यां[8] नूं लेय कायलांणै पधार जाणै। उठै भगतणियां पातरीयां[9] नूं बुलाय लेवै[१]।

---

१. ख. भगतण सजनी नूं चाकर राख लीनी, सो छांनै राखै। इण तरै री बातां नादानी री करणी सरू करी। जदे एक दिन जोसी सम्भूदत्त माराज कंवार सूं अरजकरी कै आप मांनसिंहजी रा कंवर हो अर राज री अकतियारी करौ हो। अर आपरा मूंडा आगे फोरा आदमियां री सौवत है सो आ बात आछी नहीं।

---

1. जिस का दोष उस पर था। 2. गैर जबां बोला था। 3. कुंवर ने स्वीकृति देदी। 4. गिरफ्तार नहीं होने दिया। 5. किसी तरह अन्यथा नहीं समझा जागया। 6. महीने। 7. लंपटता में फंस गये। 8. अपनी मरजी के यारदोस्त। 9. वेश्याएँ।

श्री हजुर मोतीमेल में विराज्या रहै । ऊंनमतपणा री दछा राखै[1] । रसोड़ा सुं तासळी[2] आवै सो मेल देवै । पछै मरजी हुवै तरै थोडा घणा अरोगै । कबूतर मोकला कनै राखै सो रसोडा सूं जिनस आवै सो पैला कबूतरां नू चुगायां पछै आप अरोगै । सो अेक दोय वार कबूतर मर गया । जद पछै रसोवड़ा सूं जिनस आयोड़ी अरोगता नहीं नै ढब सूं बारै नखाय देता[3] । केई वार दोय-दोय च्यार-च्यार दिन तांई लांघण काढ देता[4] । खिजमतदारी में झाराबरदार माळी लखौ रहै । ऊण नै समझाय दीयौ सो ऊण रा घर सूं रोटीयां आवै जिण मांह सूं रेहण देवै[5] सु ढब सूं हजूर अरोग लेवै ।

चेले दरजी कंवर सूं अरज कर नै साप मंगाय तकीया री खोळी में घाल दीयौ सो हजूर निघे घणी राखता[6] सु लख गया[7] । तकीयो बारै नखाय दीयौ । झाराबरदार लखै उण बखत में श्री हजूर री घणी तन मन सूं बंदगी कीवी हजूर उनमत पणौ राखै । खिजमत करावै नहीं[8] । कपड़ौ धोवावै नहीं । लोग जांणै राजाजी साफ गेला होय गया है । भटियांणीजी तुंवरजी कदेक दरसण करण नूं मोतीमैल में जावै पिण हजूर तौ बोलै नहीं । नै कबूतर चुगायबो करै । चावड़ीजी जावै तरै जादा ऊनमत पणौ दिखावै ।

मूता सुरजमलजी नू अखेचंदजी कयौ थे तौ जाळोर रा चाकर हौ सो थां सूं म्हारै कांई वात रौ अंदेसो नहीं । सुरजमलजी वखत देख अखैचंद सूं मिळाय लीवी[9] । फौजबंदी रौ दुपटौ दिरायौ फौजबंदी कर मेड़ता रा परगना में गया । पंचोळी गोपाळदासजी मेडतै हाकम हौ सो परगना रौ लोक[10] लै सुरजमलजी सांमल हुवौ । कुचांमण रा ठाकुर कंवरजी री सटपट में नहीं था सो कुचांमण रौ गांव लूटीयौ । रुपया चालीस हजार ४००००) ठेहराया । पंचोळी गोपाळदासजो फतैराजजी नै काढीया । जिण दोख सूं अखेचंदजी गोपाळदासजी नू कैद करण री कंवरजी सूं अरज करी । तरै कंवरजी फुरमायौ गोपाळदास तौ सांम धरमी है घेरा में रस्त पोंहोंचाई सैहर रुख वाळियौ[11] सिंघवी इंदरराज इण नै नहीं चावतौ हौ पिण हजूर इण नै हाकमी दीवी । तर अखैचंदजी अरज कीवी कै गौपाळदास रै सिंघवीयां सूं ढब नहीं है[12] तो

1. उन्मत्तता की दशा बनाई रखते हैं । 2. भोजन का थाल । 3. अवसर निकालकर बाहर डलवा देते । 4. भूखे रहजाते । 5. उस खाने में से बचाकर रखता है । 6. बहुत ध्यान रखते थे । 7. पता चल गया । 8. दाढी नहीं बनवाते । 9. समय की हवा देखकर अखैचंद के साथ हो गया । 10 फौज नौकर चाकर आदि । 11. शहर की सुरक्षा की । 12. सिंघवियों से मिलावट नहीं हैं ।

कुडकी खाली कराय लैसी । सो खास रुको दीरायौ कै कुड़की खाली कराय लीजै । तरै गोपाळदासजी सुरजमलजी सूं फंट नै कुडकी फौज लगाई । जिनसी रौ लोक हजार दौय २००० नै परगना रा जमीदार खेड़ वगेरै लोक हजार अेक गोपाळदासजी कनै थौ । गोपाळदासजी फंटीयां पछै मूता सुरजमलजी री फौज रा ऊंठ चांदावत बाहादरसिंघ ले गयौ । बाहादरसिंघ कनै घोडा ४०० चार सौ था । पछै बाहादरसिंघजी कुड़की में फौज सूं लडै जिणां ऊपर घोड़ा ४०० च्यार सौ ५०० पांच सौ ले कुचांमण सूं आवै । सो भगडौ कर जावै । दोय तीन वार फौज माथै राती वासा दीया[1] । पिण गोपाळदास बडो मजबूत रयौ । अखैचंद जी ईसका सुं[2] खरची मेलै नहीं सो गोपाळदासजी घर सूं खरच खावै । मोहलां नूं पुरा तंग कीया । मेड़तीयो रतनसिंघ पाड़सिंघोत रै अखैचंदजी सुं ढब हौ सो रतनसिंघजी रौ कांमेती खंगारोत लालसिंघ जोधपुर हौ जिण हस्तै जबाब कीयौ कै अेक वार फौज ऊठाय देवौ पछै म्है गढी खाली कर देसां । तरै अखेचंदजी गोपाळदासजी नू लिखियौ कै कुडकी सूं फोज ऊठाय मेडतै ऊरा आवजो । तरै गोपाळदास लिखियौ के गढी खाली कीयां बिनां मोरचा उठाऊं नहीं । तरै अखैचंदजी कंवरजी सूं मालम कीवी कै सिघियां रै जोर मुदे बाहादरसिंघ रो है सो इंण नै लगाय लेवां तौ सिघवीयां री बांय तूट जावै[3] । पिण गोपाळदास मांनै नहीं । तरै कंवरजी फुरमायौ के गोपाळदास म्हांरा खास रुकां सुं कुडकी गयौ है सो गढी में सिरकार रौ अमल हुवां पछै फौज ऊठी चाहीजै । तरै बाहादरसिंघजी मंजूर कीवी । तरै कुडकी री गढी में हजूर रो निसांण मेलीयौ[4] । ने गढी रा कांगरा पाडीया । पछै मोरचा ऊठाया । पछै अखैचदजी अरज कर गोपाळदासजी नू कैद कराया । रुपिया ५००००) पचास हजार ठैहरीयां में पांच हजार ५०००) छूट नै बाकी पैंतालीस हजार ४५०००) री तीन किस्तां कीवी । मेड़ता जैतारण री हाकमीयां दीवी ।

व्यास चुतरभुज संमत १८७२ रा चैत सूं कैद थौ भरणा में जिणां रै रुपीया अेक १०००००) लाख ठेहर सीख हुई । व्यास पदवी बाहाल रही । जोसी मगदतजी आपरा बाप लारै मरदां रै साथ लाडुवां री जिमणवार कीवी । अठै आज पेहली पोहकरणा ब्रांमणां रै खरच रो जीमणवार जळेबियां री हुती । सु लाडु सरू हूवा । दिखणा[5] रौ रुपीयो सवा १।) आदमी दीठ दीयौ ।

जोसी सिंभूदत माहाराज कंवार सूं अरज करी कै आप राजा हौ सो मातबरी राखी जोईजै[6] आप कनै छूट में छोरारोळ है[7] सो आ वात नादांनी री नही राखी जोईजै । इंण ताछ खांच नै अरज करी सौ माहाराज कंवार कनै छूट

1. फौज पर रात को हमले किये । २. ईर्ष्या के कारण । 3. बांह टूट जाएगी, उनका पक्ष कमजोर पड़ जाएगा । 4. वाद्ययंत्र । 5. दक्षिणा । 6. बड़प्पन रखना चाहिए । 7 आपके पास बचपना करने वाले व्यक्तियों का जमाव है ।

में हा जिणां नै खारी लागी[1] सो माहाराज कंवार नूं सीखाय भरवाय सिंभूदतजी नूं कैद झरणा में कराया। सिंभूदतजी ग्रन जळ छोड दीयौ। तरै तीजे दिन सीख दीवी।

माहाराज कवार मांहलेबाग पधारै। ग्रासो[2] ग्ररोगै। गिरदीकोट में हाथीयां री लड़ाईयां करावै। साटमारां रै छिपण री भींत ग्रडग री कंवरजी कराई। व्यास चुतरभुज नूं कैद हुई।[1]

ग्रंगरेजां कनै उकील ग्रासोपो विसनरांम रहतौ सो दिली मैं ग्रेहदनांमो सिरकार ग्रंगरैजी रै नै सिरकार जोधपुर रै ग्रापस मै हुवौ तिण री नकल—

सिरकार अंगरेजी नै सिरकार जोधपुर माहाराजा मांनसिंघजी बहादुर नै जुगराज माहाराज कंवार छतरसिंघजी बहादुर नै सिरकार अंगरेजां री तरफ सूं मिस्तर मटकलप साहब बाहादुर च्यारलस साहब[3] बाहादुर माफक मरजी गवरनर साहिब बाहादुर कै ग्रर जौधपुर की सिरकार की तरफ सूं उकील ग्रासोपा विसनरांम ग्रभैराम री मारफत अैहदनांमो ठेहरीयौ मुकांम दिली जहांनांवाद

१ कलम पेहली — प्रथम दोस्ती हितारथ ग्रपणायत सिरकार कंपनी अंगरेज बाहादुर ग्रर ऊणां री ग्रौलाद रै हमेसां पीढी दर पीढी पुस्त दरपुस्त कायमी रहेगी। दोस्त दुसमण अेक तरफ का, दोस्त दुसमण दोनू कना री का होसी।

---

१. ख. ग्रंगरेजा रो फैलाव मुलक में होण लागो पातसात धीमी पड़ण लागी। ग्रंगरेजां नै राजस्थान रै ग्रापस में ग्रैदनांमा उदैपुर जैपुर वगेरां रै हुवा तिणरा समाचार विसनराम रा दिल्लो जहानावाद सुं ग्राया। तिण में लिखियौ कै ग्रांपणै भी ग्रैदनांमो होयण रो सब केवै छै सो उठी सूं कलमां रो मसोदो उतार श्री हजूर माहाराजा मानसिंहजी सूं ग्ररजकर फेर किसी भले ग्रादमी नूं मेलाईजो सो कौलनांमो करलेवां। तरै जोधपुर सूं हुकम पोतो के मसोदो कराय श्री हजूर मालम कराय मेलियो है फेर ऊंचनीच हुवै सो सवाल जवाब कर लिखावट पक्की कराय लीजो। तरै मसोदो दिल्ली ग्रासोपा बिरांमण कनै ग्रायो तरै ऐदनामा री कलमां १० ठेरी सिरकार ग्रंगरेज री तरफ सूं मिस्टर मटकल साब वहादर ग्रर जोधपुर री तरफ सूं उकील ग्रासोपो व्यास विसनराम मारफत कलमां ठेरी तिणरी नकल—

---

1. बुरी लगी। 2. विशेष प्रकार की तेज शराब।
3. मि. चार्ल्स थियाफिलास मेटकाफ।

२ कलम दूसरी— जोधपुर रा राज मुलक री रखवाळी को जुमो सिरकार अंगरेजी की है।

३ कलम तीसरी— माहाराजा मांनसिंघजी बाहादुर नै औलाद उनकी पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त कंपनी बाहादुर की सिरकार की बंदगी हिफाजत करसी। और दूजी सिरकार सूं सिरदारां सूं सिरकार लगावट राख सी नहीं।

४ कलम चौथी— माहाराजा मांनसिंघजी बाहादुर पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त सिरकार अंगरेजी कै बेमरजी इतलाय ना. किणी सिरदारां सूं किणी सिरकार सूं सवाल जबाब करसी नहीं। हेत हितारथ कौ कागद[1] दोस्त भायां नै भलांई देवौ।

५ कलम पांचमी— माहाराज मोसूफ पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त झगड़ो किणी सूं खड़ो नही करसी और जो कदाच किणी सूं किणी कारण तकरार होसी तो ऊण रो निवेड़ौ[2] सिरकार अंगरेजी री तजबीज मुजब होसी।

६ कलम छठी— जो कुछ मामलो आगा सूं सिरकार जुदी फरद माफक राज जोधपुर का सूं सिरकार सिंधीया बाहदुर नै पोंवै हौ सो हमें आगा सूं सिरकार अंगरेजी में पोहोचीयां करसी। नै सीधीया बाहादुर सूं हमें मामला बाबत क्यूं ही प्रीयोजन रहेसी नहीं।

७ कलम सातवीं— माहाराज मोसूफ जाहर करै कै जोधपुर का राज सूं सिंधीया बाहादुर सिवाय मांमलो किणी नूं पोहोचै नहीं है दूसरौ किणी नूं आज तांई दीयौ नहीं है नै हमें मांमलौ पोहोचावण रौ सिरकार अंगरेजी में करार पायौ है सो मांमलौ को दावौ सींधीया बाहादुर तथा कोई दूसरौ करसी तौ जिण रौ जबाब सिरकार अंगरेजी मन मनावसी।

८ कलम आठमी— अेक हजार पांच सौ असवार बुलाये माफक जोधपुर की सिरकार सूं अंगरेजी सिरकार में जाय हाजर होसी। और जरूरत रै बखत सारी फौज जोधपुर का राज के बंदोबस्त करणै सिवाय फौज कंपनी सिरकार के सामल होसी।

९ कलम नवमी— माहाराजा साहब मोसूफ नै औलाद इणां री पीढी दर पीढी पुस्त दर पुस्त आपणा मुलक कै ऊपर हुकम हकूमत का मालक रहैसी। और अंगरेजो सिरकार की अदालत को दखल जोधपुर का राज में नहीं रहसी।

---

1. कुशल क्षेम का पत्र आदि।
2. निपटारा।

१० कलम दसमी— ग्रौ कौलनांमौ इए सुदी दस वातां मटकलप साहब की मोर दसकतां सुधी ग्रौर व्यास विसनरांम ग्रभैरांम की मोर दसकतां सुधी दिली में हुवो है सो दोढ महीनै में मोहर दसकती गवरनर जनरल साहब बाहादुर[1] का ग्रौर माहाराजा मांनसिंघजी साहब बाहादुर माहाराज कंवर छतरसिंघजी बाहादुर का अैहदनांवा हुवा है सो दुतरफा पोतसी । फकत.......।

मुतालबां री फरद री नकल—

माहाराज साहा सर मंद राजहाय हिंदूसथांन राज राजैश्वर माहाराजा मांनसिंघजी साहब बाहादुर की नालस जो कोई भाई ठाकुर रजपूत राज जोधपुर की सिरकार अंगरेजी कूं ग्राय कर वास्तै ग्रपनी गरज कै ग्ररज करै तौ सुणै नहीं मुराद दफै नवमी में अेहद नांमा कीया है सो ऊपर लिखी गई है ।

परगना गोढवाड़ का श्वरगवासी माहाराजा विजैसिंघजी कूं रांणा ऊदैपुर का ग्रड़सीजी नै अेवज कुम खरच कै दीया था सो माहाराज कंवार छतरसिंघजी बाहादुर तांई पीढी चार हुई है सो कबजै हमार राज जोधपुर कै में है सो राणा ऊदैपुर की तरफ सूं इस गौडवाड़ परगना का दावा करै जवाब करै तौ उसकी सुणवाई सिरकार अंगरैजी करै नहीं ।

जबाब सिरकार अंगरेजी की तरफ सूं—कोई मुलक पीढी दर पीढी से कबजै राज जोधपुर के है जो ऊसी राज में समज्या जायगा ।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से— नबाब मीरखां जयपुर का नौकर था ग्रौर पीछे जोधपुर में रया सो कोई मकांन मीरखां के नीचै रह जाय तौ माहाराजा साहब लेवे ऊसकी सुणवाई सिरकार अंगरेजी करै नहीं । जबाब सिरकार अंगरेजी की तरफ सै—। इस वात का माहाराजा साहब कूं ग्रखत्यार है ।

सवाल राज जोधपुर की तरफ सै— मोजे मो मुलक कदीम कोई सरणै ग्रावै ऊस कूं सूंपते नहीं है इस सिरकार की रसम है सो जारी रहैगी ।

जबाब सिरकार अंगरेजी की तरफ सूं — कै सिवाय दूसमणी सिरकार कै जो कोई सरणै ग्रावैंगे तो कदीम का दसतूर मुजब जारी रहैगी ।

1. लार्ड हेस्टिंग्ज ।

सवाल राज जोधपुर की तरफ सै— तीन बरस हुवा किला ऊमरकोट का सबब निमकहरांमी नौकरां के बीच कब्जे टालपुरियां कै हुआ है सो माहाराजा साहब फौज अपनी भेजें तो सिरकार इसकी मनाई नहीं करें।

जवाब सिरकार अंगरेजो की तरफ सूं— माहाराजा साहब फौज अपनै तौर पर भेजेंगे तो हमारी सिरकार नहीं बोलेंगे।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से— सीरोही का देवड़ां के पास स्वरगवासी माहाराजा विजेसिंघजी की वखत सै फोज भेज मांमला लीया गया था सो मांमला देवै या जमीयत अपनी से नौकरी करै सो इसमें सिरकार सीरोही का देवड़ां की सुणै नहिं।

जवाब सिरकार अंगरेजी की तरफ सै— माहाराज विजैसिंघजी की बखत में जो वात थी सो मजबूत रहेगी।

सवाल राज जोधपुर की तरफ से— फौज माहाराजा साहब की तरफ दिखण में नहि भेजेंगे।

जवाब सिरकार अंगरेजी की तरफ सै— कै नरबदा की पेलै तरफ नहीं भेजेंगे।

सवाल राज जोधपुर की तरफ सै— मांमला संमत १८७५ रा दरसा ज्यांहांनावाद कै दूसरी फरद के लिखी गई है सो पोंची जायगी।

जवाब सिरकार अंगरैजी की तरफ से— कै मंजूर है। फकत.......।

दिल्ली में साहब अेहदनांमो करण री हुकम दीयौ तरै ऊकीलां साहब सुं अरज कीवी—मसोदो जोधपुर मेल मंजूरी मंगाय लेऊं तरै साहब बाहादुर कह्यौ इसी वखत करौ देर करणै में तमारै हरज होगा। तरै अैहदनांवा नीचै व्यास विसनरांम दसकत कर दीया नै हजूर री सही करावण वास्तै अेहदनांमो जोधपुर मेलीयौ सो अठा सुं अैहदनांमौ पाछौ मेलीयौ जिण साथै मुतालबां री फरद कर मेली सो साहब बाहादर मंजूर कीवी।

कंवरजी संमत १८७४ रा चैत वद ५ पांचम चलिया नै कौलनांमा में संमत १८७५ रो लिखियौ है सो अठै राज में संमत सांवण वद १ सूं फिरै है जिण सूं कंवरजी चैत में चलिया सो संमत १८७४ रौ लिखियो है नै

जोतस मैं संमत चैत सूं लिखियो है जिण सूं कौल नांवौ मै पिचंतरौ घरीयो है ।

कुंवर छत्रसिंह की मृत्यु और मानसिंहजी की उदासी

कुंवरजी छतरसिंघजी रै गरमी रौ रोग हुय गयौ । डील मे तज गया[1] बेग्रारामी वध गई । तरै कांमेतीयां मांहलैबाग में दाखल कीया । संमत १८७४ रा चैतवद ४ माहाराजकुंवार छतरसिंघजी देवलोक हुवा । सो अेकदिन तौ जाहर कीया नहीं ।[2] नै ग्रा सला ठेराई कै कंवरजी रै उणोयारै[3] कोई ग्रादमी हाथ ग्राय जावै तो उण नै कंवरजी री ठौड़ थाप देणा ।[4] पिण ग्रा सला पार पड़ी नहीं । तरै चैत वद ५ रै दिन माहाराज कंवार नू मंडोवर दाग दीयौ । नै इसी वात उठाई कै कंवरांणीजी चवांणजी रै ग्रासा है ।[5]

सांवण महीना में कवरांणजी चवांणजी चल गया ।[6] कंवरजी देवलोक हुवा तरै सारा जणा सला कीवी के भदर हुवां कै नहीं ।[7] तरै मोणोत ग्यांनमल कयौ—राज कर नै देवलोक हुवा है सो भदर तौ हुवा चाहीजै । तरै सारा चाकर सहर मुलक मारवाड़ भदर हुवा । अेक पोहोकरण रौ ऊकील चांपावत बुध-सिंघजी गांव हरियाडांणा रा ठाकुर भदर हुवा नहीं । कह्यौ माहाराज सा विराजिया है सो भदर कीकर हुवां ।

कंवरजी देवलोक हुवां री हजूर मालम हुई सौ ऊनमत पणा में धुंण लीवी नै क्युं ही फुरमायो नहीं । बेहोसी सवाय में देखावण लागा ।

कंवरजी थकां राज रौ कांम करता तिके हीज मुतसदी मुसायब कांम करै । पोहोकरण सूं सालमसिंघजी ग्राथा, ग्राऊवौ, ग्रासोप, नींबाज रा ठाकुर ग्रठै हाईज । सिरदारां बाळसमंद डेरा कीया ।

संमत १८७५ रा सांवण में कुंवरांणीजी चल गया तरै कवरजी रै रासै वाळा ईडर सूं कंवरजी रै खोळै लावण री सला कीवी थी । तरै गांव डांवरा री करमसोत भांनसिंघ खींवसर रौ उकील जिण कयौ म्हारै बांडीयो

---

1. बिलकुल निर्बल हो गये । 2. इस घटना का पता नहीं चलने दिया । 3. कुंवर की शक्ल का । 4. बैठा देना । 5. गर्भवती हैं । 6. मृत्यु हो गई । 7. बाल मुंडवाये या नहीं ।

ऊंठ ईसो है सो ईडर सूं वादे ले आऊं।[1] पछै आही सला पार पड़ी नहीं[1]। हजूर कनै भटियांणीजी जावै। सारी हकीगतां केवै। पिण हजूर तो पाछो कीहूँही फुरमावै नहीं।

कांमेतीयां चावड़ीजी भटियांणीजी नू कैवायो कै हजूर नै वारै पधरावौ नहीं तौ मुलक रा जमीदार फितूर खड़ौ करसी। जद भटियांणीजी सा कांमेत्यां नूं केवायौ कै मुंढौ किण रौ सु फितूर करै। नै हजुर सुं मालम करी कै अै कांमेती हमें ग्रौ उपाव करसी नहीं तौ ग्राप वारै पधारौ। पिण हजूर नू तौ किणी री परतीत ग्रावै नहीं[2]। जिण सूं पाछो क्यूं ही जाब देवै नहीं। उनमतपणा री दसा राखै।

सो ग्रा वात अंगरैजां री सिरकार में ग्रखवार तेरीक जाहर हुई-कंवर था सो चल गया ग्रर माहाराज बेहोस है। राज सूंनौ है। तरै दिली रै साहव वाहादुर मुनसी वरकतग्रली नू जोधपुर मेलियौ। के तुम माहाराज सें रूबरू मिल के ग्रावौ सो बेहोसी ग्रछी होण जैसी है या किस तरै है।

अंग्रेजों की तरफ से बरकतअली का जोधपुर आना—

साहव रा खलीता ले वरकतग्रली जोधपुर ग्रायौ ग्रासोज में। मुसायब सिरदारां रा कांमैती वरकतग्रली नै साथे लै सारा हजूर में गग्रा। सो हजुर उण दिन तो पाछौ किहूंई[3] फुरमायौ नहीं[2]। दूजै दिन वरकतग्रली अेकलौ हजूर में गयौ, खलीतो दीयौ। मुखजबांनी समाचार कया। तरै जोधपुर रौ पंचोळी मुनसी गिरधारीलाल नूं बुलाय हजुर खलीतौ बचायौ[4]। बरकत-

---

१. ख. ख्यात में लिखा है कि सरदारों ने डेरे बालसमंद पर कर रखे थे उन्होंने ईडर से खोळे लाने का प्रस्ताव चावड़ीजी के सामने रखा तो उन्होंने कोई जवाव नहीं दिया तब उन्होंने निश्चय किया की अजमेर में अंग्रेजों का अफसर रहता है उससे निवेदन करें ताकि वह समुचित व्यवस्था करवावेगा। (पृ. 63B.)

२. ख. ख्यात में लिखा है कि जब महाराजा बोले नहीं तो ४ घड़ी सभी कामेती बैठे रहे पर अंत में थक कर चले गये। बरकतअली ने सरदारों से कहा कि महाराजा तो बोलते ही नहीं ऐसी हालत में राज क्या करेंगे। तब कई जागीरदारों ने कहा कि आप इनको जानते नहीं, आप अकेले जाओगे तो बात करेंगे। (पृ. 64 A)

---

1. निश्चित समय पर ले आऊंगा। 2. किसी का विश्वास नहीं आता।
3. कुछ भी। 4. पढवाया।

अली कह्यौ-दिली के वडे साहब सदर के हुकम सूं हमकूं आप कै पास मेजा है। आप ने अपनी जांन के खतरे से ये हालत कर रखी है। अब आप कूं राज करणा होय तौ आपका हौसला बैहोसजा होय जैसा फुरमावौ आपका राज आप कै अखत्यार है। मरजी होवै जिस तरै वंदोवस्त करै। तरै हजूर मुनसी सूं खुलासै वात करी कै भींवसिघजी रौ दाकौ हुवां पछै संमत १८६० रै वरस म्हांरो जाळोर सूं अठै पधारणौ हूवौ। जद सूं सिरदार म्हांनै फोड़ा घालै है अर हमारा तनू[1] चाकर हा तिके ही हरांमखोर हुय कंवर नै बारे काढ म्हांरा जीव री घात विचारी। जद जीव बचावण नै आ विरती झाली है।[2] हमें कंवर री इण तरै हुई तौ पिण सिरदारां चाकरां रौ ईतवार म्हांनै आवै नहीं। सिरकार कंपनी म्हारी मदत राखै तौ राज रौ बंदोवस्त आछी तरै कर सकां हां।

तरै वरकतअली अरज करी कै आप खुसी से राज करौ। हरांमखोरां कूं सजा दैवौ। कंपनी सिरकार का हुकम है और अंग्रेजी सिरकार का अखबार-नवेस यहां रहेगा सौ जो आप कूं केणा होय। सो ऊस कूं केह देणा। ऊवो सदर में रिपोट कर दीया करसी। अर पीछा आप कूं जवाब मिल जासी। पछै पाछौ खलीतो लिख दियौ।[3] तरै बरकतअली सदर रौ पाछौ जवाब भुगतीयौ। जितरै हजूर केईक दिन हा ज्युं हीज काढीया।

अंगरेजी सिरकार रौ मुनसी बरकतअली आयां पैहला बालसमंद रै डेरां सिरदारां सला विचारी कै हजुर जांण नै आ दसा धारी है केवै हां सहीज है। तिण री निरणै करण सारू[4] पोहोकरण रौ कांमैती चांपावत बुधसिंघजी[१] नै हजूर कनै मेलीया। सो बुधसिंघजी जाय मुजरो कीयौ। तरै हजूर मांमूल मुजब ताजीम दीवी। वात विगत तो क्यूं ही कीवी नहीं। हजूर री तरै देख पाछा आय सिरदारां नू कह्यो कै हजुर नै गेहला कहै तिके गेहला है। हजूर नै वारै पधरावौ दूजी कांई सला विचारणा में फायदो नहीं छै। तरै सिरदारां बारै पधारण री हजूर में अरजां कराई। पिण हजूर सुं तौ पाछौ क्युं ही फुरमायो नहीं।

जैपुर में वाईजीसा रै कांम जोधपुर रो व्यास फौजीरांम करतौ जिण सूं माहाराज जगतसिंघजी री मरजी वध गई सो मुसायवी करण लाग गया सो

१. हरियाडाणा रौ (अधिक)।

1. खास निजी। 2. यह वृत्ति पकड़ी है। 3. दिल्ली को जबाब भेज दिया। 4. इसका निर्णय करने के लिये।

फौजीरांमजी सूं ढब लगाय फतैराजजी कुचांमण सूं जैपुर गया सो जैपुर में कुल मालकी री खेवट सरू कीवी[1] तरै जेपुरीयां जांणीयो कै राज में इणां रौ फैल पड़ीयौ,[2] आछौ नहीं। सो माहाराज जगतसिंघजी नै कोई तरै रो बेंम घाल नै व्यास फौजीरांमजी नू कैद कराय दीया। तरै सिंघवी फतैराजजी जैपुर सूं भागा सो पाछा कुचांमण उरा आया। नै विचार कीयो कंवरजी तौ चल गया है हजूर साहब हा ज्यूं विराजीया है नै हरांमखोर मतै मालकी करै है सुं आंपां ही जोधपुर चालौ। सो मतै माचजावां[3]। ठाकुर सिवनाथसिंघजी नू सला पूछी तरै सिवनाथसिंघजी कयौ कै ऊतावळ करसो जितरी थांरै हरकत छै। हजूर साहबां रौ ब्रस पोहोचीयां आफी[4] बुलाय लैसी। पिण सिंघवी बाहादरमल वगेरै तालकदारां री सला सूं ताकीद कर फतैराजजी आप रा घर रा घोड़ा बेली वगेरै सांवठै साथ सूं कुचांमण सूं जोधपुर नै कूच कीयौ। तरै कुचांमण सूं ठाकुर सिवनाथसिंघजी पिण फतैराजजी साथै कूच कीयौ।

फतैराजजी मारग में आवतां परबतसर मेड़ता में आप रा हाकम कोटवाल बैसांण दीया। सांवण में संमत १८७५ रा कुचांमण ठाकुर सिवनाथसिंघजी, फतैराजजी जोधपुर आया। डेरा बालसमंद कीया।

मुनसी बरकतअली जोधपुर सुं पाछौ जाय वडा साहब नै सारा समाचार कह्या। नै अंगरेजां रौ जवाब पूरी दिलजमी रौ हजूर कनै आयौ। तरै हौसला सुं वात करण लागा।[5] रसोड़ा रा मुसरफ जोसी फतजी साथै मूथा अखैचंदजी वगैरै अरज कराई—आपरा सरीर री गत और तरै हुय गई नै सिंघवी मतै कांम रा मालक हुय गया तरै आपरा कंवरजी रा हात सूं कांम करायो।[6] फितूर नै तो ताकीयो नहीं।[7] इण वात रौ मरजी में हरांमखोरो तुलीयौ हुवै[8] तो म्हनै सजा दिराईजै। नै खांवद[9] विचारो तौ चाकर हां, आगै ही चाकरी कीवी नै फैर बणसी ज्यूं चाकरी करसां। इंण ताछ फतजी लारै अरज कराई तरै फुरमायौ—अखैचंद वगेरै नै कैदै कांम करो, हौ ज्यूं ही खुल नै कीयां जावौ[10] कोई तरै रो विचार लावौ मती, थे फितूर री विचारता तौ हरांमखोरो थौ, थे तो हुती वात कीवी है। म्हे म्हांरा हाथ सूं जुगराज पदवी कंवर नै दीवी नै थां सारां नू कंवर नूं भोळाय दीयौ। सो मालक तौ किणी

1. सारा कार्य अपने अधिकार में लिया। 2. राज्यकार्य में इनका बहुत अधिक दखल हो गया है। 3. अपने आप वहां अधिकार प्राप्त कर लेंगे। 4. अपने आप। 5. पूरे होश के साथ बात-चीत करने लगे। 6. ऐसी स्थिति में आपके ही कुंवर के हाथ से राज्यकार्य करवांया। 7. धौकलसिंह को गद्दी पर बैठाने की चेष्टा नहीं की। 8. इस कारण आपके मन में हमारी हरामखोरी नजर आई हो। 9. मालिक। 10. जिस स्थिति में हो उसी तरह खुलकर काम करते रहो।

मोटा चाकर नूं ही कांम भोळाय देवै[1] तो ऊ कहै ज्यूं करणौ चाकर रौ धरम है। सो थां में तार चूक है नहीं।[2] इंण ताछ पूरी खातर फुरमाई। तिण सुं सारां रै दिलजमी आई।[3]

संमत १८७५ रा दिवाळी नू जनांना मांय सूं नै सारा सिरदारां मुतसदीयां खांच नै अरज कराई[4] आज जरूर बारै पधारीजै तरै फरमायौ–आज तौ खंच मत करौ दोयां–चारां में[5] जरूर बारै पधारसां।

माहाराजा मानसिंह का पुनः राज्यकार्य संभालना

पछै सिरदारा मुसायबां री अरज सूं काती सुद ५ पांचम[1] नू खिजमत पधराई। संपाड़ौ कीयौ[6] पोसाक पधराई। आथण रा[7] दरबार कीयौ। सारा जणां निजर निछरावळ कीवी।

फुरमायौ कै म्हांरौ तौ मांय विराजणो हुय गयौ नै कंवर रौ समौ हुय गयौ।[8] पिण थां जिसा चाकर उमराव था तौ सारी वात ठीकांणै रही। इण ताछ पूरी खातर फुरमाई। सिरदारां नू फुरमायौ डेरा हवेलीयां में करौ। फतैराजजी नू इतरा दिन तौ कीह फुरमावणो हुवौ नहीं नै उण दिन फुरमांयौ–तूंही सैहर में डेरौ करदे।पौर रात गयां मोसर बोडीयो।[9]

दूजै दिन सिरदारां हवेलीयां में डेरा कीया। फतैराजजी कनै घोड़ा बेली सांवठा[10] सो हवेली में मागे नहीं। तरै फतैसागर माथै डेरा कीया। फतैराजजी कुचांमण सूं आवतां परबतसर मेड़ते मारग में हीज आप रा हाकम कोटवाळ राख दीया था नै जोधपूर आयां पछै जोधपुर री हाकमी ऊपर तौ सिंघवी बाहादरमलजी नू मेलीयौ नै सोजत री हाकमी काका रा बेटा भाई सुखराजजी तालकै कर दीवी। गोढवाड़ रो हाकमी पंचोळी अखैमल नू मेल दीयौ थौ। सो अखैचदजी हजूर में अरज—करी फतैराज मतै हाकम आप रा मेल दीया है जिण री कांई मरजी है। तरै फुरमायौ फतैराज रा आदमी ऊठायदै नै दूजा आदमी अर हाकम मेल दै। तरै अखैचंदजी दूजा हाकम मेल दीया नै फतेराजजी रा आदमी ऊठ आया।

---

१. ख. आसोज सुद ३।

---

1. काम करने को कहे। 2. तुम्हारी किसी प्रकार की गल्ती नहीं है। 3. सभी को विश्वास आया। 4. पूरा जोर देकर विनती की। 5. दो चार दिनों में। 6. स्नान किया 7. संध्या समय। 8. मृत्यु हो गई। 9. बात-चीत का अवसर दिया। 10 घोड़े फौज आदि बड़ी संख्या में।

पांचां सातां दरबार हुवै फतेराजजी रोजीना गढ ऊपर जावै । पिण खातर तसली तार नहीं ।[1] तिण सुं पूरा कुंद ।

पोस सुद ५ पांचम श्रीहजूर री असवारी सीरै बाजार होय माहामिंदर पधारीया ।[१] बाजार सिणगारीयो रईयत नू दिलासा खातरी फुरमाई । रईयत नू डंड माफरा हुकम रा कागद लिखीजिया । कांम री मालकी अखैचंदजी री, दूजा ही ओहदा खिजमतां कंवरजी रै राज में था सो साबत राखीया । हरांमखोरां नू पूरी मैहरबांनी दिखावै ।

संमत १८७५ रा माह महीना में अखैचंदजी अरजकरी–जमां खरच रो कटकणो बांधीयां विनां[2] कांम धकै नही । तरै फुरमायौ—थारै तुले ज्यूं ही सालीको बांध । तरै अखैचंदजी सिरदारां नु कयौ कै राज में जमां तौ कम है नै खरच ज्यादा है सो अेक अेक गांव थे सारा छोडौ । बाकीरां सूं हुं छुडाय लेसूं । तरै आऊवो, आसोफ, नींबाज, खेजड़लो, चंडावळ वगेरै तौ अखैचंदजी री सला सांमल सौ ना किण तरै देवै नै कुचांमण रायपुर भाद्राजूण अं सांमधरमा में सो ना कीकर देवै । सारा सिरदारां हांकारौ भरीयो ।[3]

अखैचंदजी अरज करी—अेक–अेक गांव घोडण रौ हांकारो सिरदारां नू भराय दीयौ है । आप श्रीमुख सूं फुरमायौ सो छोड देसी । तरै दरबार कर सिरदारां नू फुरमायौ कांमेती अरज करै है के जमा वधायां सूं नै खरच घटायां सु कांम धकसी । सो खरच रा कटकणा तो म्है राखसां ने जमां वधावण री मदत थे सारा सिरदार देवौ । तरै सिरदारां अरज करी कै मरजी मुजब करदेसां ।[4] पछे नींबाज रौ तौ गांव खवासपुरो, आऊवा रौ गांव रीयां, चंडावळ रौ गांव खारचीयां, इणताछ[5] अेक–अेक गांव सारा सीरदारां छोडीया । तरै बाकी रा ही छुडाय लीया । लाख तीन ३०००००)[२] रो हवालो हूवौ ।

जिण दिनां पांच मुसायब गिणती में हा[6]— मुहता अखेचंदजी. भंडारी सिवचंदजी, व्यास चुतरभुजजी, भंडारी चुतरभुजजी, मूतो सुरजमलजी

१. ख. नाथजी रा दरसण किया अर देवनाथजी री मातम पोसी कराई । लाडूनाथजी री मावां नु दिलासा कंवाई कै होणहार सोतो हुय गयौ हमें नाथनी आछी हीज करसी (अधिक) ।
२. ख. दो लाख असरै ।

1. महाराजा की ओर से किसी प्रकार का आश्वासन नहीं । 2. बजट बनाये बिना । 3. सभी सरदारों ने एक-एक गांव छोड़ना स्वीकार कर लिया । 4. आपकी जैसी मरजी होगी वैसा ही करदेंगे । 5. इस प्रकार । 6. पांच मुसाहिब माने हुए थे ।

इणां पांचां तालके हवाला रा गांव बराबर वांट ने कर दीया। हजूर रा हुकम विनां ने अखेचंदजी री दूवायती[1] विनां जमां खरचणी नहीं। औ बंदोवस्त कीयौ। सिंघवी सुमेरमलजी अरजी दीवी के दफतर रौ कांम सूंपावै तौ खांनाजाद रे दांनसदारी कांमूपणा री मालम पड़ै। तरै हजूर अखेचंदजी ने पूछियौ—इण तरै सुमेरमल अरजी दीवी है। तरै अखैचंदजी अरज करी के इसा दांनसदार चाकरां ने ओहदा खिजमतां दिरीजसी जद ही राज ऊंचौ आवसी। तरे सुमेरमलजी नू दफतर हुवौ।[2] दफरत रौ कांम आछौ कीयौ।

बूड़सू फौज मेल छुडाय लीवी। बूड़सू ठाकुर ढूढाड़ में गया। मुलक में चोरी धाड़ा बंद हुवा। हुकम बरकरार। बूड़सू री फौज में मूता सुरजमलजी रौ बेटो बुधमल फौज मुसायब थौ।

परधांनगी रौ सिरपाव पोहकरण रा ठाकुर सालमसिंघजी ने हुवौ। नींबाज रा ठाकुर सुरतांणसिंघजी पंचायती में हजूर सूं अखैचंदजी नु फुरमायौ दिवांणगी तौ थारे हीज रहसी ने बगसीगिरी रौ ओहदौ सिंघवीयां रे तीन पीढी सू है सो बखसी ने सोजत री हाकमी फतेराज नू देवां। सो अखेचंदजी रा मन में तो नहीं भाई। पिण कयौ–ठीक है। तरे बगसीगिरो रौ सिरपाव सिंघवी मेघराजजी ने हुवौ। पोहोकरण सालमसिंघजी नू परधांनगी रौ ने मेगराजजी नू बगसोगिरो रौ सिरपाव साथे हुवा। सुखराजजी रे नांवै सोझत री हाकमी हुई। जोसी सिरीकिसनजो सूं पूरी मरजी। सो राज रौ कांम काज लेण री विसेस फुरमावे। तरे सिरीकिसनजी अरज करी के पांचू मुसायबां तालकै हवाला रा गांव है सो सारा म्हारे तालकै कराय दिराईजे[1] नै पंचोळी गोपाळ-दास ने फुरमाय दिराईजे सो हवाला रौ कटकणो लगाय देवे।

---

१. ख. बांरठ आसियो बांकीदास ऊपर श्रीहजूर री मरजी कविराज पदवी दीवी लाख पसाव दीया, संपूरण मरजी रही परन्तु लारला दिनां में महाराज कुंवर छतरसिंह कने जलंधरनाथजी रा धरम री निंदा कीवी कै—मान को नंद गोविंद रटै जब, कांन फटां की गांड फटै। फेर गजल जोड़ी कै—आये जलंदर, लाये दलंदर सब दुनियन कूं कीवी कलंदर ठोड़ ठोड़ बनाये महामंदिर। इणताछ राजकुंवर नूं राजी राखण खातर कहता था जिण रा समाचार हलकारांरी फरद में मालूम हुवा जद बांकीदास नुं गढ ऊपर बुलायो, रूबरू आय मुजरो कियौ जद हजूर फुरमायो दोढीदार नुं कै इण नूं पूछ—गोविंद रटै रौ ते किण रै सिखायै कंवर कने कह्यौ जद बांकीदास नुं धूजणी छूट गई सो किही जबाब आयो नहीं जद आप फुरमायो कै इण नुं अठा सूं काड देवौ तरै बाहूड़ा पकड़ पाछ पगलियां दोढी
क्र. प. उ.

---

1. स्वीकृति। 2. दफ्तर का कार्य सौंपा गया।

सो संमत १८७६ रा आसोज में सारौ हवालौ सिरीकिसनजी तालकै हुवौ । पंचोळी गोपाळदास नै फुरमायौ तूं सिरकारी ईजतदार चाकर है पिण मांरा फुरमावणा सूं सिरीकिसन नू हवालो केवटाय दै ।

संमत १८७६ रा सांवण मै तीजां ऊपर जनांना सहेत सूरसागर पधारीया व्यास विनोदीराम हस्तै सूरसागर तय्यारी हुई थी सो विनोदीरामजी रा बेटा गुमानीरामजी नु चांनणी रा कड़ा इन्नायत हुवा । सरद पूनम वगेरें असवारीयां दोय तीन वार जनांना सहत सूरसागर पधारीया । हजारां रुपीया खुसी में खरच पड़ीया ।

धांधल गोरधनजी तालकै सिलेपौस १०० अेक सौ साजीयागढ ऊपर धांधलां री जायगा में डेरौ हुवौ । भाटी गजसिंघजी तालकै सिलेपोस १०० अेक सो सजिया । गढ ऊपर जे मिंदर कनेली पोळ रै मांहले पसवाडै डेरौ हुवौ । खीची चैनजी रा बेटा जालजी तालकै सिलैपोस १०० अेक सौ सजीया । गढ ऊपर खीचीयां री जायगा में डेरौ हुवौ । रसोड़ा री मुसरफी छांगांणी कचरदासजी रै हुई । रसोड़ा री दरोगाई धांधल मूळजी दांनजी रै, पिण हजुर रो खांन पांन छांगांणीयां रै हातै । फतजी जोसी नै फुरमायौ तूं रसोड़ा री मुसरफी थकां हाजर रहतौ ज्यूं हाजर रया कर । थां बिनां म्हांनै आवड़ै नहीं ।[1] फतजी साथै अखेचंदजी वगेरां नू खातर फुरमायबो करै ।

बारै काढ दियौ । अर फुरमायो के चारण मगती जात है सो सीख दो । तरै वांकीदास उठा सूं भागो सो गोळ री घाटी, मारग होय पादरो भाद्राजण ठाकुर बखतावरसिंहजी नुं आय कह्यौ के जोधांणनाथ कोपियो है सो थां सूं ढावणी आवै तो ढाब । नहीं तो मांको तो मरणो आयो सो घूजतो घूजतो आयो अर दस्तां लागणी सरू होय गई नै उठै हीज सरणै वैठ गयो । पछै एक दोय दिनां सुं भाद्राजण रै ठाकुर गढ ऊपर जाय श्रीहजूर में मालम करी कै आसियो चारण वांकीदास म्हारी हवेली वेठो है अर दस्तां लोगै है के हजूर म्हां पर कोपिया म्हारी बुध खराव हुय गई जिणसूं म्हारा मूंढा सूं कोई आखर ऊंचो नीचो निकल गयौ सो हमें तों घणो ही पिसतावै है सो मरजी हुवै तो हवेली में राखूं और मरजी हुवै तो सीख देऊं, मगती जात है जद आप फुरमायौ कै वड़ा वड़ा री मिनखांरी बुध में फैर पड़ गयौ जिण सरस्ते इण चारण री बुध भिसट हो गई सो इणनुं कांई कहां छां । मरजी आवै जठै वेसो मरजी आवे जठे जावो कीं लायक नहीं (पृ 68 A.B.)

---

1. तुम्हारे बिनां मेरा मन नहीं लगता ।

अखैचंदजी नू फुरमायौ माहाराज श्री गुमांनसिंघजी ऊपर देवळ करावणो है सो तूं मडोवर जायगा देख आव ।[1] सो वैसाख सुद ९ अखेचंदजी मडोवर गया । सो पाछा आवतां नागोरी दरवाजा बारै जिनसी रौ डेरौ हौ । जिनसी रो लोक अखेचंदजी रो रथ पलटण में लेगया । तरै लिखमीचंदजी हजूर में अरज करी, तरै आदमी मेल जिनसी सूं समजास कराई । तरै जिनसी कयौ कै म्हारी चढ़ी चढी खरची दीयां छोडसूं[1] नै म्हां ऊपर राज सुं लोक मैलसी तौ जोधपुर नै माहामिंदर लूट लेसां ।[2] तरै हजूर सूं माहामिंदर रौ ही जावतौ करायौ । नागोरी दरवाजा नै मेड़तीया दरवाजां सिरदारां वगेरै लोक रा डेरा कराया । किलेदार[3] आपरै गांव लोड़तै हौ जिण नै कासीद मेलायौ ।[2] अखेचंद सुं परदेसीयां इंण तरै धणो कीयौ है सो तूं जळदी सूं आवजै । तरै नथजी पिण आय गयौ ।

हजूर फुरमायौ कै अखेचंद नुं लोक मेल छुडाय लेवौ । इण सला मुदै सारा गढ ऊपर भेळा हुवा । तरै धांधल गोरधन नू फुरमायौ कै लोवापोळ[3] रौताळो दिराय दै । तरै गोरधन लोवापोळ आय नायकां नू कयौ कै लोवापोळ मंगळ कर ताळा री कूंचीयां उरी दैवो । हूकम है । गोरधनजी कूंचीयां लै हजूर में गया तरै गोरधनजी नै भाटी गजसिंघजी नै खीची जालजी नै फुरमायौ कै हरांमखोर सारां नुं पकड़लौ । जोसी सिरीकिसनजी नै गोरधनजी सांमल राखीया ।

संमत १८७६ रा वैसाख सुद १४ चोदस नरसींग चुतरदसी नूं इतरा जणां नूं पकड़ीया—

१ दिवांण मुंहतौ, लिखमीचंदजी अखैचंदजी रा बेटा नै गढ ऊपर पकड़ीया नै लिखमीचंदजी रा बेटा मुकनचंद नै कांमेती गुमासतां[4] नै हवेली पकड़ीया नै घर लूंट लीयौ । नै खत हा सौ राज में ऊगाया ।[4]

---

१. ग. गजदरां नुं जाय देखाय आव ।
२. ख. सरदारां नै विसटाळो कियौ—हजूर फरमायो जाय जिनसी कना सूं अखैराज नै छुडावौ ।
३. ग. नथौ (अधिक)
४. ग. रांमचंदर (अधिक)

---

1. मेरी खरची के जो रुपये बकाया हैं वे मिलने पर छोड़ूंगा । 2. पत्र वाहक सवार भेजा । 3. लोहापोल । 4. उनके पास उधार के खत थे सो रकम राज्य ने वसूल की ।

१ किलेदार देवराजोत नथकरण ।[1]

१ व्यास विनोदीरांम नू गढ ऊपर पकड़ीयौ नै बेटा गुमांनीरांम नू घरै पकड़ीयौ ।

१ मुनसी पंचोळी जीतमल ।

१ जोसी मगदत तौ पेहला हीज मरगयौ थौ नै मगदत रौ छोटौ भाई फतैचंद ने मगदत रौ बेटौ विठलदास नै फतजी रौ बेटौ दामोदर नूं पकड़ लीना।

१ धांधल मूळा, जीयौ दोनां नू तौ गढ ऊपर पकड़ीया नै दांनौ जाळोर किलेदार थो सु उणनै जाळोर मे पकड़ीयौ । दरजी, चेलौ वगैरै जणा ८४ चौरासी नूं अेकण साथै पकड़ीया ।

खीची विहारीदास तळेटी हौ सो जिनसी रा लोक रा धंगा मुदै खेजड़ला सायसीण रौ डेरौ फतैसागर ऊपर थौ सो खेजड़ला रै डेरे वीहारीदास जाय बैठौ । तरै बिहारीदास नै लेनै खेजड़ला रा ठाकुर सादूलसिंघजी नै साथीण रा ठाकुर सगतीदांनजी खेजड़ला री हवेली उरा आया । हजूर में मालम हुई तरै भाटीयां नू समजास कराई । पिण विहारीदास नु पकड़ायौ नहीं । तरै भाटीयां री हवेली ऊपर कलंदरखां नै विदा कीयौ । भाटीयां री हवेली ऊपर गया । झगड़ौ हुवौ सौ अेकवार तौ राजरा लोकां[2] रा पग छूट[1] गया । पछै नीसरणीयां लगाय सिपाई हवेली में कूद पड़िया । तरवारां सूं झगड़ौ हूवौ । भाटी सगतीदांनजी रै तरवारां ऊगणीस १९ लागी ।[3] दोनू कांनी रा आदमी मरण गया नै घायल हुवा । खीची बिहारीदास झगड़ौ कर कांम आयौ । आ हजूर में मालम हुई तरै राज रा लोक नू झगड़ौ मौकूफ करण रौ[2] हुकम पोतो । सगतीदांनजी भाटी रै पाटा बंदावण सारू हजूर सू नायता मेलीया । पछै जिनसी नू खास रुकौ लिख मेलीयौ अखैचंद नूं गढ ऊपर पौछाय दीजै तरै गढ ऊपर पौछाय दीयौ । सारां रै बैड़ीयां घाल सलेमकोट में कैद कीया । [3]तस्तीयां दिरीजी कबूलायतां हुई ।[3]

---

१. ग. पदमावत लोड़ता रौ (अधिक)
२. ग. आउवे री हवेली री तरफ सूं (अधिक
३. ग. पण बचगयौ (अधिक)

---

1. एक बार तो राज्य की फौज के पैर उखड़ गये । 2. झगड़ा बंद करने का ।
3-3. कष्टकारक सजा दी गई एवं जुर्माने के रुपये कबूल करवाये ।

पछै प्रथम जैठ सुद १४ चोदस नू इतरा जणां नू सोमल रा प्याला पाया—

१ दैवराजोत किलादार नथकरण । नथकरण प्यालौ पी लियौ नै कयौ हरांमखोरो तौ घणी कूपीतां सूं मारै जिसौ कीयौ हौ[1] पिण घणी बडा है सु सोरा मारीया ।

२. मुंहता अखेचंद कह्यौ–रुपीया पचीस लाख २५०००००) देऊं नहीं मारो तौ पिण मंजूर हुई नहीं । अर प्यालौ पाय दीयौ ।

३. व्यास विनोदीरांम ।

४. मुनसी पंचोळी जीतमल ।

५. जोसी फतैचंद ।[१]

इंणां पांचू जणां नू तो सौमल रा प्याला पाय मराया नै धांघल मूळो, दांनौ, जीयो इंणां नु तसती दीवी जिण सूं मूवा ।

वैसाख सुद १४ चौदस अखैचंदजी वगेरै नै पकड़ कैद कीया तर पोहोकरण नीबाज रा ठाकुरां नै केवायौ कै कंवर रा रासा में अै हरांमखोर हा जिणां नू सभा दीवी । जोसी सिरीकिसन बोरो हुवोड़ौ राज रा कांम सूं अदा-यलो[2] रेवे है सो ठाकुरां इण नै थे समजावौ सो राज रौ कांम चलावै । सिरी-किसन केवै जिण नै ही इण रै सांमल राख देवां । सो थांरी मालकी सूं कांम वरतावे है ।[3] दोनू सिरदारां सिरीकिसनजी नै हुसीयार कीया ।[4] मूथा सूरज-मलजी नू सांमल राखीया । पोहकरण नींबाज री सला सूं सिरीकिसनजी सुरजमलजी कांम करै ।

दुजीद जैठ सुद १३ रै दिन इतरा जणां नू फेर कैद कीया—

१. मुथो सुरजमलजी बेटा भाई भतीजा सुदो ।

१. जोसी सिरीकिसनजी ।

---

१. ग. जिणरै लारै जोसी मगदत्त री बहु सत कियौ करणा कै मगदत्त र वेटे विठलदास नुं मगदत्त री एवज में प्यालो देण हा सो इण कह्यौ म्हां बैठां इण नुं मत दो हुं लेसू तिण सूं सती हुई कै म्हारा धणी री एवज प्यालो लियौ है ।

---

1. बहुत बुरीतरह मारे ऐसा किया । 2. अलग ।
3. तुम्हारी देखरेख में कार्य करता रहे । 4. कार्य करने के लिये तैयार किया ।

१. पंचोळी गोपाळदास ।

१. व्यास चुतरभुज तो पैलाहीज मर गयौ थौ नै चुत्रभुजजी रा बेटा सिवदास लालचंद ।

पोहकरण रा कांमैतीयां नै मांय बुलाया फुरमायौ श्री देवनाथजी इंदरराजजी नै चूक करावण वगेरै घालमेल में थे हौ नहीं सो नीवाज वाळां रै सांमल रैजो मती ।[1] दूतीक जेठ सुद १५ पूनम रै दिन ग्राथण रा सुरतांण-सिंघजी नीवाज रा पोहकरण री हवेली गया । सालमसिंघजी नै कयौ कै हमें ग्रांपां नू ही वारी ग्रावती दीसै है ।[1] तरै सालमसिंघजी कयौ कै ग्रापरी हवेली कांम पड़ै तौ म्हांनू देजो[2] ने म्हांरै कांम पड़सी तौ ग्राप नूं समचौ देसां । तरै सुरतांणसिंघजी पाछा हवेली गया । ऊणीज पाछली रात रा नींबाज री हवेली ऊपर लोक विदा हुवौ । सौ अेक पलटण रौ सिपाई ग्रागै जाय नींबाज रा ठाकुर सुरतांणसिंघजी नूं खबर दीवी । तरै सुरतांणसिंघजी तांगै बैस सारा बैलीयां नै साथै ले पोहकरण री हवेली जावण सारूं वहीर हुवा । सो मोतीचौक ग्रावतां राज रौ लोक सामो मिळगयौ तरै पाछा हवेली में बड़ीया । सुरतांण-सिंघजी रै साथै ग्रादमी ५०० पांच सौ था सो ग्रादमी २०० दो सौ ठाकुर रै साथै पाछा मांय वड़िया वाकी रा गळियां में बिखर गया । हवेली घेरीज गई ।[3] फतैराजजी, मेगराजजी, कुसलराजजी अै तीनू भाइयां नूं नीवाज री हवेली ऊपर मेलीया । कुचांमण रायपुर रा ग्रादमी राज रा लोक सांमल नीवाज री हवेली ऊपर गया ।[2] सुरतांणसिंघजी रा छोटा भाई सूरसिंघजी हवेली में हा सो सुरतांणसिंघजी फतैराजजी नू कैवायौ हरांमखोरो है तौ म्हांमें है सूरसिंघ तौ टाबर है सो इंण नै बारै जावण दौ । तरै फतैराजजी हजूर में मालम कराई सो मरजी में नही ग्राई ।[4] हजूर फतैमेल में विराजीया था सु मुसायबां नै ताकीद फुरमाई के सुरतांणसिंघ रै मारीयां री मालम हुसी पछै थाळ ग्ररोगसां । भंडारी चुतरभुज रै गोळी लागी तोपां सूं हवेली उडावै सु तौ सैहररी जागावां पूटै । नै ग्रादमी सेहर रा मरै । जिण सूं वार ग्रावै[5] नहीं । तरै दोफार ढळतै हवेली रै सुरंग खोदी । तरै मांहलां जाणीयौ कै हमें सारा मारीया जासां । तरै सुरतांणसिंघजी सूरसिंघजी सुधा ग्रादमी १८ ग्रठारे पौळ

१. ख. नाथ जी फुरमायौ कै म्हांरो बावसू उत्तमचंद मूतो नीवाज री हवेली में है सौ जाण पावे नहीं (युद्ध का यह भी कारण था) ।

२. ग. कै स्याम रौ काम नै बाप री वैर है सौ ग्रै गया (ग्रधिक) ।

1. ग्रब ग्रपनी भी बारी ग्राती दिखती है । 2. सूचना देना । 3. हवेली के घेरा लग गया । 4. स्वीकार नहीं किया । 5. मौका लगता नहीं ।

खोल नै नीसरीया । सो बारै आवतां ही सांमौ तोपां री छररौ छूटौ जिण सूं सारा कांम आया । असाढ वद १ अेकम । कांमेती जोसी नगजी[1] ऊदावत मालजी वगैरै ठाकुर साथे कांम आया । रायपुर रा ठाकुर रूपसिंघजी नै लांबीयां रा ठाकुर भांनसिंघजी नू दाग देण रौ हुकम दीयौ । सो इणा नै दाग दियौ ।

पोहोकरण रा ठाकुर सालमसिंघजी तांगे बैस पाळा आदमी साथै ले माहामिंदर परा गया नै पछै माहामिंदर सूं चढ न पोहकरण परा गया ।[2] आसोप ठाकुर केसरीसिंघजी हजूर संमत १८७५ रा में बारै पधारीया तरै सुरतांणसिंघजी नूं कह्यौ थौ कै आंपणौ हरांमखोरो राजा कदेई भूलै नहीं जीव लीयां छोडसी[1] सो घरै हालौ । सो सुरतांणसिंघजी मुसायबी रा भूखा मांनी नही । नै केसरीसिंघजी नू कह्यौ—हजूर री आंपां ऊपर पूरी मरजी है । आप घरै क्यूं जावौ । तरै केसरीसिंघजी कयौ—म्हारै माथौ अेक हीज छै ।

पछै केसरीसिंघजी तौ माजी री मांदगी रौ वांहनो कर दस पनरै दिनां री सीख कर आसोप जाय बैठा । सो सुरतांणसिंघजी नू चूक हुवां री खबर लागी तरै आसोप सुं चढ बीकानेर रो गांव देसणोक परा गया । सो संवत १८७७ रा पोस में देसणोक ही चळ गया । अर उठे ही कारज हूवौ ।[2]

आसोप रो पटौ जिलो सारो सालसै हुवो । फकत अेक आऊवो बखतावरसिंघजी रै रयौ । पोहकरण रा मजल धुनाड़ो वगेरे जबत हुवा । चंडावळ रौ पटौ जिलौ सारो सालसै हुवौ । ठाकुर विसनसिंघजी मेवाड़ में गया । रोयट रो पटो खालसे हुवौ ठाकुर मेवाड़ में गया । खेजड़लो सायसीण रौ पटौ जिलो जबत हुवौ । नीबाज रौ पटौ जिलौ जबत हूवौ । नीबाज खाली करावण सारूं भंडारी धीरमलजी नूं फौज दे मेलीया ।

आगे माहाराज श्री भींवसिंघजी रा राज में धीरमलजी नीबाज लड़िया था जिण नांमून सूं धीरजमलजी गांव रोहीचै सरणे बैठा था जिणां

१. ख. ख्यात में लिखा है कि नगजी ने ठाकुर को बहुत समझाया था कि यहां से नीबाज चलना अच्छा है पर ठाकुर ने बात मानी नहीं ।

२. ग. पाछा जीवता फेर जोधपुर आया नहीं नै सं. १८७६ में पोहकरण में मुवा । (अधिक)

1. अपने प्राण लेकर छोड़ेगा । 2. वहीं उनका क्रिया-कर्म किया गया ।

नूं बुलाय नै फतैराजजी मैलीया सो कितराक दिन धीरजमलजी जैतारण रया पछै नीबाज गांव सू नजीक डेरा कीया । सो मांहला गोळा आय फौज में पड़िया तरै डेरा पाछा सिरकाया मोरचा लगग्या नहीं ।

संमत १८७६ रा असाढ सुद मै बीकानेर किसनगढ रा कंवर ऊदैपुर परणीजण नू गया जिणां री जांन में सिघवी कुसलराजजी नूं मेलीया था नै लारे पचोळी अनोपरांम नै मेलीयौ ।

कुसलराजजी जांन सू पाछा आया तरै फतैराजजी नू फुरमायौ कै धीरजमल सूं क्यूं ही हुवौ नही ।[1] कुसलराज ने नीबाज मेल दे । तरै फौज मुसायबी रौ दुपटौ इनायत कर भादवा सुद ७ सातम नै विदा कीया । संमत १८७७ रा किलकिला तोप मेली । मोरचा सांकडा लगाया ।[2] कुसलराजजी रै हाथ रै गोळी लागी । कांमेती पंचोळी कंवरचंद रै हिचकी¹ ठोडी रै गोळी लागी । पड़दार ताजखां रै गोळी लागी । सु कांम आंयौ । ताजखां मोरचा में चाकरी आछी कीवी थी । गांव बर री गढी कुसलराजजी खाली कराई नै कांनपुरा री गढी खाली कराय लीवी थी ।

नाजर इंमरतमरांम नूं श्री हजूर सूं घोड़ा २०० दोय सौ देनै नीबाज फौज में मेलीया नै नीबाज रा ठाकुर सांवतसिंघजी रै खरची री तंगाई आय गई तरै नाजर इंमरतरांमजी हस्तै बिसटाळो ठेहराय पुरबीयौ दांनसिंघ रा नै कायमखांनी अलफुखां रा वचन ले बदनोर तांई पुगातण रा नै कबीला असबाब ले ठाकुर सांवतसिंघजी मेवाड़ में गया ।² नीबाज में हजूर रौ अमल हुवौ । मैलायत कोट पाड़ नांखीया ।[3]

नीबाज फौज लागां पैली रास रौ गढ सिंघवी सुखराजजी खाली कराय लीयौ थौ सो रास रौ गढ नै बर री गढी पड़ायां कुसलराजजी नू आऊवौ खाली करावण रौ हुकम पोतौ । तरै कुसलराजजी उठा सूं कूचकर सोजत डेरा कीया । तरै फतैराजजी अरज कीवी कै नीबाज सात महीना³ फौज लड़ी जिण में रुपिया साढा छव लाख खरच पड़ीया नै आऊवा रौ मोटौ कांम है सो मरजी हुवै ज्यूं करां । तरै फुरमायौ—पटौ तौ सारौ ही खालसे है ईज नै आऊवा रै

१. ग. छिलती ।
२. ख. उणांरा गुजारा माफक ढब कर मेवाड़ वाळां उणां नै ढाब लिया । (अधिक)
३ ख. दस महीना ।

1. धीरजमल से कुछ भी नहीं हुआ । 2. मोरचे और नजदीक लगाये ।
3. गिरा दिये ।

नजीक थांणो राख देवौ । तरै पंचोळी कंवरचंद नै गांव भगवांनपुरै थांणौ घाल ऊठे राखीयो ।[1] घोडा ३०० तीन सौ, पाला ५०० पांच सौ, तोपां दोय २ । कंवरचंद थांणो चोखौ[2] जमायौ ।

कुसलराजजी जोधपुर आया तरै कड़ा, मोती कंठी सिरपेच, पालखी, इनायत हुवा । गांव सूरायतां पटै हुवौ । खातर दिलासा आछी तरै फुरमाई ।

संमत १८७७ रा भादवा सुद ४ चौथ रात रा सोमल रा प्याला पाय मारीया इणां नूं चोकेळाव सलेमकोट में सूं लाय नै पाया । जिण में जोसी सिरीकिसन नै प्यालो पावण वास्तै सलेमकोट मे सूं चोकेळाव लेगया । तरै सूरजपोळ कनै आवतां श्रीमाहाराज नै सराप दीयौ नै घणा दुरवचन कैया । जोसी सिरीकिसन नै मूतो सुरजमल इणां दोना नूं सोमल रा प्याला पाय मराया ।[१]

संमत १८७७ रा कंवरजो छतरसिंघजी री मांजी रांणीजी चावड़ीजी नै अेकण मैल में बंद कर दीया पछै तुरत हीज चल गया । नाजर विंदावन कंवरजी रा सटपट में थौ जिण नै कैद कीयौ थौ सो नाक काट छोडीयौ ।

जती हरकचंद कंवरजी रै ओखद करतौ दारू री भटियां कडावतो कंवरजी री मरजी में थौ तिण नूं कैद कर नाक काटीयौ । फेर केद कीयां पछै आयसजी लाडुनाथजी अरज कर छुड़ायौ ।

संमत १८८५ में मुहता अखैचंदजी रौ घर लूंटीयौ सो रुपीया १२९०००) अेक लाख गुणतीस हजार रौ अेवज नीसरीयौ[3] नै खत खातां री वहियां राज में आई सो फतैराजजी रुपिया उगाया नै अखैचंदजी रा बेटा लिखमीचंदजी नै पोतो मुकनचंदजी कैद में था सो माहामिंदर रा कांमदारां री अरज सूं रुपीया ३००००) तीस हजार ठेहराय नै संमत १८७९ में छोडीया । नै अखैचंदजी री हवेली खालसे हुय नै वाभा लालसिंघजी नै ईनायत हुई । अखैचंदजी रौ भतीजौ फतैचंद रे रुपीया २७०००) सताईस हजार ठेहरीया । इण रे पाली री हाकमो थी । मुहता सुरजमल रे बेटा बुधमल रे रुपीया

---

१. ग. इणां सराप दियौ कै म्हनै जैर रौ प्यालो पाय मरावै है सौ म्हारै लारै वंस नहीं है नै लारै लुगाई रोवती सो ईस्वर रै घरे सांच है तो म्हारै लारै वंस नहीं है ज्यूं थारै ही लारै वस नहीं रहणी (अधिक)

---

1. थाना स्थापित कर वहां रखा । 2. अच्छा । 3. माल निकला ।

५५.०००) पचावन हजार ठेहरीया, पछे छोड़ीया । व्यास विनोदीरांम रा बेटा गुमांनीरांम रै रुपीया १५०००) पनरे हजार ठेहरीया, पछै छोड़यौ ।

जोसी मगदतजी फतजी रा बेटा विठल दामोदर रे रुपीया ८०००) आठ हजार ठेहरीया पछे छोड़ीया । देवराजोत नथकरण किलेदार रौ बेटौ अमलदार कंडीर थौ,[1] तिणरे ४०००) चार हजार ठेहराय छोड़ीयौ ।

मुनसी जीतमल रौ बेटो टाबर थौ सो तो मर गयौ ने फकत लुगाई रह गई ।जोसी सिरीकिसन रै बेटौ नहीं । पंचोली गोपाळदास कैद में थौ तिण रै रुपीया २५.०००) पचीस हजार ठेहरीया । सौ रुपीया पांच हजार ५.०००) वारै काढीयौ । रुपया बाकी रया तिण बावत फेर कैद हुई तरै रुपया १७०००) सतरै हजार भराय डीडवांणा री हाकमी दै छोडीयौ ।

संमत १८७७ में ओहदा इण मुजब हुआ

१ दिवांणगी सिंघवी फतैराज जी रै सिरपाव हुवौ । नैं कांम री कुल मुखत्यारी हुई ।[1]

१ किलैदारी भाटी गजसिंघजी धांधळ गोरधनजी रैं सांमलायत में हुई ।

१ रसोड़ारी दरोगाई धाधळ गोरधनजी रैं हुई ।

१ रसोड़ा री मुसरफी छांगांणी कचरदासजी रै हुई ।

१ जालौर री कीलैदारी खीचो जालजी रैं हुई ।

१ कपड़ां रै कोठार री दरोगाई खीची जाळजी रै हुई ।

१ कपडां रै कोठार री मुसरफी पंचोळी मुरलीधर रै हुई ।

१ पाली री हाकमी सिंघवी फतैराजजी तालकै नै सोभत री हाकमी पेहला हीज थी ।

परवतसर री हाकमी मुंहता मलूकचंद रै, सिरीकिसनजी सुरजमलजी रा कांम में हुई थी सो सावत रही ।

---

१. ग. बगसीगिरी सिंघी मेगराज रै पैंलाइज हुय गई थी ।

---

1. बहुत बड़ा अफीमची था ।

संमत १८७६ मै कुचांमण, भाद्राजण, रायपुर, लाडण, अै चारू सिरदारां नै वधारा पटा दीया। नै कुचांमण भाद्राजण री सिरकार रा कांम मै पंचायती भांज घड़[1] रही[१]

१ मारोठ री हाकमी भंडारी तेजमल धीरजमलजी रा वेटा रै हुई।

१ नागोर री हाकमी सिंघवी गंभीरमल फतैमलोत रै हुई। गजसिंघजी रा ढव सुं हुई।[2]

१ मेड़ता री हाकमी सिंघवी गंभीरमल फतेमलोत रै हुई। गजसिंघजी रा ढव सुं हुई।

१ गोढवाड़ री हाकमी सिंघवी इंदरमलरै संमत १८७५ में हुई थी। मरजी सूं[3] सो साबत रही।

१ फळोधी री हाकमी सिंघवी सुमेरमल रा भाई हरखमल रै हुई।

१ जाळोर री हाकमी भंडारी पिरथीराज रै फतेराजजी रै तालकै।

१ डीडवांणा री हाकमी सिंघवी जसूंतरायजी रै, सो सिंघवी फतेराजजी तालकै।

१ नांवा री हाकमी सिंघवी फतैराजजी तालकै। कांम करता मोहोणोत खूबचंदजी।

१ पचपदरा री हाकमी भंडारी गोयनदास विठलदासोत रै हुई।

१ जनांनी दोढी री दरोगाई नाजर ईमरतरांम रै हुई। नै मुसायवी रौ कांम करतौ।

१ जोधपुर री हाकमी[२]

११

राज रौ कांम पांच मुसायबां री सला सूं हुवै-

१. ग. कारण कै बडोड़ा सिरदार पोकरण आउवो. आसोप. नीबाज बेमरजी में। (अधिक)

२. सिंघी फतैराज तालकै।

1. हस्तक्षेप। 2. गजसिंह के पक्ष के कारण हुई। 3. महाराजा की स्वयं की इच्छा से।

१ दीवांण सिंघवो फतैराजजी ।

१ छांगांणी कचरदासजी ।

१ भाटी गजसिंघजी ।

१ धांधल गोरधनजी ।

१ नाजर ईमरतरांमजी ।

—

५

खींवसर रा ठाकुर बेमरजी रा तौ थाईज[१] नै कतारां पाड़ी[1]। भाटी गजसिंघजी रा गांव गोवां सूं खेचल कीवी[2]। तरै गजसिंघजी री अरज सूं खींवसर रा ठाकुरां भोपालसिंघजी नू लिखावट हुई कै कांम रौ मुदो है सो ताकीद सूं हाजर हुई जौ। तरै ठाकुर जोधपुर आया। हजूर में मुजरो हूवौ। पाछा बारै आवतां नै दौलतखांना में पकड़ लीया। बेड़ीयां घाल सलेमकोट में कैद कीया। खींवसर पांचोड़ी डांवरौ वगेरै पटौ जिलो सारौ जबत हुवौ। सो सिंघवी फतैराजजी तालकै हूवौ। ठाकुर रै रसोड़ा सूं थाळ नै ढोलिया रौ हुकम हुवौ। बरस पांच कैद में रया। पछै रुपीया............ठेहराय नै छोडीया। खींवसर ठाकुर भोपालसिंघजी पांचोडी रा ठाकुर नै उकील मांनसिंघ डांवरा रौ।

संमत १८७८ रा मैं वगसी सिंघवी मेगराजजी, धांधल गोरधनजी भाद्राजण ठाकुर बखतावरसिंघजी वगेरै अंगरेजी सिरकार री चाकरी में घोड़ा १५०० पनरै सौ अैहदनांवा री लिखावट मुजब दिली गया। केई महीना उठै रया। पछै संमत १८७६ में पाछा आया।

देवनाथजी नू चूक हुवां पछै देवनाथजी रा छोटा भाई भींवनाथजी माहामिंदर में मालकी करै। देवनाथजी रा बेटा लाडूनाथजी टाबर। तिणां नू पूरा तंग राखै। तरै लाडूनाथजी निज मिंदर आय बैठा तरै हजूर सूं मोकळी समजास कीवी। पिण लाडूनाथजी मांनीयौ नहीं, नै कयौ म्हारी जायगा में भींवनाथजी कांई मांगै। आप भींवनाथजी नू माहामिंदर में राखसौ तौ हुं गिरनार परौ जासूं। तरै लाडूनाथजी नै तौ माहामिंदर सुपायौ। पछै नाजर इमरतरांमजी हस्तै उदैमिंदर वाग भालरो उणां हस्तै कराय भींवनाथजी नै

---

१. ग. संवत 1863 सूं (अधिक)

---

1. कतारें लूटी। 2. छेड़छाड़ की।

अठै राखीया । नै माहामिंदर बराबर ईजत आजीवका कर दीवी । नाजर इमरतरांमजी भींवनाथजी री पूरी खेवट में हौ[१] ।

पांचु ही मुसायवां अेकठ राख[1] राज रो कांम कीयौ । मछै दोय धडा हुवा[2] । सिंघवी फतैराजजी भाटी, गजसिंघजी छांगांणी, कचरदासजी री तौ माहामिंदर सांमी सला रही । नै नाजर ईमरतरांमजी, धांधल गोरधनजी री ऊदेमिंदर सांमल सला रही । माहोमाह में खायकीयां री चुगलीयां हजूर में कीवी ।

नांवा री हाकमी सिंघवी फतेराजजी तालकै थी ने कांम करता सिंघवी जसुंतराय नै मोहोणोत खूबचंद रया सु नांवा रै वाकानवैस प्रोहित भीखनदास हौ जिण रुपीया २०००००) दोय लाख री खायकी सावत कीवी ।[२] फैर ही फतैराजजी री खायकीयां चावी कीवी । जिण माथै फतैराजजी दिवांणगी थकां रुपीया दोय लाख २०००००) निजर कीया । ने धांधल गोरधनजी री नै नाजर इमरतरांमजी री चुगलीयां खायकीयां री फतेराजजी चावी कीवी सो गोरधनजी तौ रुपीया ५०,०००) पचास हजार निजर कीया नै नाजर इमरत-रांम संमत १८८१ में बाईजी रौ ब्यांव बूंदी हुवां पछै कैद कर रूपिया अेक लाख १०००००) ठैहरीया । तिण में वीस हजार छूट हुवा २०,०००) । बाकी ८०,०००) असी हजार भराया । नै जनांनी दोढी री दरोगाई ईमरत-रांमजी सूं जवत हुय मुसलमांन नाजर वसंत नै हुई ।

संमत १८७९ में मिगसर में व्यास सिवदासजी नूं कैद हुई व्यास पदवी छांगांणी कचरदासजी रै हुई[३] ।

---

१. ख. देवनाथजी रौं भंडारो संवत 1876 में करायो महामिंदर में लाडुवांरों ।
0 संवत 1879 जमांनो चोखो हुवो । ऊनाळी चोखी हुई । धान 1) रो अधमण ठेरियो ।
0 पुस्तक प्रकास नै विद्यासाळ रो कांम व्यास संभूदत्त रै हवाले हुवो । लाखां रुपियां रो जमा खरच हुवो । (अधिक)

२. ख. भीखनदास ने 10) महीनो कराय दियो सो नांवां री कचेड़ी सूं घणा बरसां तांई पावतो रियो ।

३. ख. श्री हजूर सारा मुसायवां ने बुलाय नै आप दरबार में फुरमायो के थांरा आपस रा झगड़ा सूं सिरकार रो कांम बिगड़ै है सो सगळा एक हुय जावो । सगळां री चुंगलियां सुणसां नहीं । (अधिक)

---

1. एकता रखकर । 2. दो दल हो गये ।

संमत १८७९ लागतां असाढ सुद १ अेकम सूं लगायत असाढ सुद ९ नम तांई मेह रौ झड़ घणौ[1] रयौ[1] सैर में हवेलीयां ४५०० पैंतालीस सौ आसरै पडी नै नवी नदीयां चाली। जमांनो चोखौ हुवौ[2]।

जागीरदारों का अजमेर जाकर अपने पट्टों के बाबत शिकायत करना—

संमत १८८० रा में आसोप रौ कांमेती कूंपावत हरीसिंघ गांव बासणी रौ, आऊवा रौ कांमेती पंचोळी कांनकरण, चंडावळ रौ कांमेती कूंपावत दौलतसिंघ, नींबाज[3] रौ कांमेती वगेरै अजमेर वडा साहब बाहादूर कनै गया नै कयौ म्हांरा पटा जबत है सो हजूर साहबां ने केणौ कर बहाल करावौ। नहीं तौ मुलक में फिसाद हुसी। तरै वडा साहब हुकम दीयौ कै माहाराजा साब की दोढी जावौ। माहाराज परवरस[2] करेंगे तरै ऊकीलां कयौ–म्है जोधपुर जावां तौ माहाराज म्हांनूं मार नांखै तरै साहब बाहादुर कयौ हमारै भेजे हुवे कूं माहाराज साहाब कुछ नहीं कहेंगे। तरै उकील जोधपुर नै वहीर हुवा। हजूर रा उकीलां हजूर में लिख मालम कराई कै सिरदारां रा ऊकीलां नूं सीख दिराय दीवी है। तिण ऊपर नाजर ईमरतरांमजी नै फतैराजजी री तरफ सूं पंचोळी छोगालाल नै घोडा २०० दोय सै सूं चढाया। सु चढिया सो गांव चोपड़ा रा तळाव ऊपर ऊतरीया था। सो जांझरकै जाय घेरीया।[3] सो आऊवा रौ कांमेती पंचोळी कांनकरण तौ दिसाफरागत गयौ थौ[4] सो नास अजमेर गयौ ने बाकी रा कूंपावत हरीसिंघजी वगेरै सिरदारां रा कांमेतीयां नू पकड़ लाया। बेडीयां घाल सलेमकोट में घाल दीया। नै आऊवा रौ कांमेती पंचोळी कांनकरण वडा साहब नू जाय अैवाळ कह्यौ।[5] तरै वडा साहब ऊकीलां नूं बुलाय तकरार कीवी। नै वडा साहब री तरफ सूं[४] जौधपुर में खबरनवेस मौलवी थौ तिण नू हुकम आयौ कै कांमेतीयां नूं तुरत छुडाय दीजै। सो खबर-

---

१. ग. जिण सूं नवी नदियां बाळा हालिया। मालाणी जसोल कने पांणी री रेल आई तिण सूं गांव बह गया आदमी वित्त वगेरे बिगाड़ घणो हुवो। (अधिक)
२. ग. धांन 2।।) रो मण बिकियो।
३. ख. खींवसर री तरफ से करमसोत थौ।
४. ग. हाजर वास (अधिक)

---

1. वर्षा की झड़ी खूब। 2. परवारिश। 3. सवेरे के समय जाकर घेर लिया।
4. निपटने गया था। 5. सारा हाल कहा।

नवेस जोधपुर में थो सू गढ ऊपर जाय सिरदारां रा कांमेत्यां री वेड़ीयां कटाय सीख दिराय दीवी ।[१]

संमत १८८१ जमांनो फोरो हुवौ ।

स्वरूप कुंवरबाई का विवाह बूंदी राव राजा के साथ होना—

छोटा बाईजी सरूपकंवर बाईजी रौ व्याव बूंदी रा राव राजाजी रांमसिंघजी सूं ठेहरीयौ । बूंदी उकील सिंघवी सिरदारमल नूं दोय महीना आगूंच मेलीयौ । अर फुरमायौ कै व्याव री त्यारी में रूपीया खरच बूंदी वाळां रा पडै जिण री पकी निगै कर विगत लिखजे । नै जांन रै साथै रहीजै[1] । बूंदी वाळां जांन री त्यारी वास्तै रुपिया २०००००) दोय लाख रौ खत कोटै कीयौ । जांन फागुण वद ७ सातम जोधपुर आई[२] ।

श्री हजूर जलूसी असवारी कर खातै विराज सेखावतजी रै तळाव सूं पैली तरफ पांवडा अेक सौ १०० आसरै सांमा पधारीया । मिलाप हुवौ । असवारी में लौक घणौ थौ । पछै राव राजाजी खासा सूं उतर घोडै असवार हुवा । सिलकां हुई[2] । राव राजाजी डेरां दाखल हूवा[3] ।

फागुण वद ८ आठम राव राजाजी हाथी असवार हुय गढ ऊपर परणीजण पधारीया । बूंदो वाळां कोटे री दुकांन रौ खत दोय लाख २०००००) रौ कीयौ थौ सो रूपिया चुकाय नै हजूर विजनस[3] मंगाय लीयौ[४] ।

१. ख. आसोपो सुरतरांम अजमेर में जोधपुर रौ वकील । जोधपुर में पिंडत विश्वनाथ अंग्रेजां रो वकील । विश्वनाथ आय छुडावण री तकरार की जद हजूर विश्वनाथ नै रूबरू बुलाय कह्यौ वकीलरा लिखणा में गल्ती रह गई सो हमें छुडाय लेजावो । पछै थोडा दिन आडा घाल सारा नै ठिकाणा लिख दिया सो आप आप रे ठिकाणे जाय वैठा हाल बधारा रा गांव भाईपो लिखीजियो नहीं । आ बात संवत 1880 चौमासे री है ।

२. ख. माह सुद 1 नुं बूंदी सूं रवाना हुई । सिंघवी सरदारमल री खबर आई के कोटा री दुकांनां सूं इणां 2 लाख रौ खत लिख जांन रै इन्तजाम सारू रिपिया उधार लिया । (अधिक)

३. ख. लोक 20 हजार थो । बूंदी वाळा सामा आया नहीं जद हजूर कह्यौ जंवाई हैं 200 पावडां आगे जावां तो कोइ बात नहीं । पछै दुतरफौ मिलाप हुवो । (अधिक)

४. ख. खूबचंद हस्ते जोरावरमल दानमल कोटे वाळां खने सूं खत मंगाय लियो ।

1. बरात के साथ रहना । 2. तोपें छोड़ी गई । 3. तुरंत ।

सो हथलेवा में[1] दीयौ। मोटा मोत्यां रौ कंठौ अेक रूपीया ५००००) पचास हजार री खरीद रौ दीयौ। भटियांणीजी सा ऊपर हजूर साहबां रौ बेराजीपो थौ तरै भटियांणीजी-सा रा कांमेती छांगांणी रूपरांम राधाकिसन नै कैद कर रुपिया ५००००) पचास हजार लीया था सो हमार ब्यांव में भटियांणीजी सूं राजीपौ हुवौ तरै रुपीया हजूर भटियांणीजी नै पाछा दीया। पचास हजार रूपीया बाईजी-सा रै हथळेवा में भटियांणीजी-सा घालिया। बूंदी वाळां रै साथे धायभाई मुसायब थौ सो पैला मालम हुई तरै फुरमायौ कै धायभाई री अेवज आंपणो ही धायभाई चाहीजै सो धायभाई देवकरण हळका दरजा में थो[2] तिण नू उणीज दिन पटौ सिरपाव कुरब वडा माहाराज श्री विजैसिंघजी साहबां री वखत में धायभाई जगजी रे हौ जिण मुजब इनायत कीयौ।[१]

बूंदी री जांन सारी नुं पेटीया हाडा मांगै जिण मुजब दिरीजता। पांच सात बार गीरदीकोट में मीठाईयां रा भात हुवा। गढ ऊपर दस्तूर मुजब पांतीयौ हुवौ। श्री हजूर नै राव राजाजी भेळा अरोगीया। सैहर में मनाई कर दीवी कै जांन वाळां कना सूं मिठाई वगेरै चीज रौ कोई मोल लीजौ मती। सो माहामिंदर रै वांणिये जांन वाळां कना सूं मोल लीवी[3]। सो लाडूनाथजी माहाराज उण वांणीयै कने सुं गुनैंगारी लीवी[4]। श्री हजूर राव राजाजी सुं घणा राजी रया। नै बूंदी वाळां रै धायभाई मुसायब हौ जिण दोय चार वार सीख री अरज कराई पिण सीख दीवी नहीं। गिणगोरां तांई राखण री मरजी थी। पछै धायभाई भाद्राजण ठाकुर वखतावरसिंघजी लारै[5] मालम कराई कं राव राजाजी री सगाई सूरजगढ विसाऊ सेखावतां रै कीयोड़ी है सो दूजी वार जांन कर नै आवां तौ फेर म्हांनै खरच लागै सो ऊही ब्याव करता जावां।[6] सु म्हांनै सीख दिराय देवौ। इंण वात सुं श्री हजूर पूरा कुंद हूवा[7]। नै सीख दे दीवी। दायजा में हाथी घोड़ा जवारात वगेरै गेणौ कपड़ौ वासण आछी तरै दीयौ[8] ने बाईजी नै गांव बोयल, अटबडौ, केकीद कलरू पटौ २०००० बीस हजार रो दीयो।

वीकानेर री तरफ सूं दायजा में हाथी, रथ, रोकड़ रुपीया ५०००) पांच हजार लेनै आचारज पुरसोतमदास वगेरै आया, सु दीया। किसनगढ सूं बखसी नै उमराव दायजा में हाथी १ अेक नै रुपिया २०००) दोय हजार लाया था, सो दीया।

---

१ ख. प्रति में शादी का वर्णन कुछ विस्तार से किया गया है।

---

1. पाणिग्रहण के समय दे दिया। 2. निम्नस्तर के कर्मचारियों में था। 3. वस्तु की कीमत लेली। 4. गुनहगारी वसूल की। 5. मारफत। 6. वहां भी शादी करते ही जावें। 7. मन में बड़े दुखी हुए। 8. खूब अच्छा दहेज दिया।

चैत वद ६ नम जांन नै सीख हुई । इण ब्याव में रुपीया १००००००) दस लाख खरच पड़ीया । सीख दीवी तरै श्री हजूर सूं जलूसी असवारी हाथी रै होदे विराज मेड़तीया दरवाजा बारै राव राजाजी रै डेरै पधारीया । नाजर इमरतरांम व्यास जेठमल नै सांवठा साथ सूं[1] बाईजी नै पोहचावण नूं[2] मेलीया नै फुरमायौ राव राजाजी नै मारग में ब्याव करण दीजौ मती[3] अठा सुं बूंदी गयां पछै चावै जठे परणीजै तिण री क्यूं ही और तरै नहीं[4] सो सिंघवी मेघराजजी बूंदी पोंहोंचाय आया । मारग में राव राजा नै परणीजण दीया नहीं ।

पछै संवत १८८६ रा जेठ में बाईजी-सा बूंदी रा धायभाई नै चूक कराय मरायौ[5] जिण ऊपर रावराजाजी बाईजी-सा रा नौरा ऊपर लोक मेलीयौ[6] सु बाईजी-सा रा कांमेती छांगाणी रूपरांम, सिंघवी सिरदारमल कांम आया । बूड़सू रा ठाकुर परतापसिंघजी कोटे था जिणां नै बाईजीसा केवायौ-समाचार दीया[7] तरै उणीज वकत आय बाईजी-सा रै नोरै डेरौ कीयौ । इण बंदगी सूं हजूर परतापसिंघजी री बंदगी जाणी ।

सिंघवी फतैराजजी पांच बरसं मुकत्यारी सूं कांम कीयौ । सिरदारां रा पटा खालसै लटिया । रेख तौ श्रीहजूर सूं माफ कीवी थी नै निजरांणा रा[8] रुपीया ३०००००) तीन लाख बरसा बरस जमीदारां कना सूं लिरीजता । फतैराजजी फौजराजजी नूं ही कूचांमण सूं बुलाया नहीं नै भंडारी गंगाराम जी रा बेटा भांनीरांमजी रै नांवै गांव वणाड़ संमत १८७७ में लिखीजियौ थौ सु फतैराजजी खायवौ कीया ।[9] भांनीरांमजी नटव जी रै मिंदर में बैठा रया ।

बागा जालोरी की फर्जी चिट्ठी और फतैराज को कैद करना-

जाळोर रौ माहाजन वागो बडो जालसाज हौ जिण नै भांनीरांम कयौ-फतेराजजी बिगड़ै जिसो कोई ऊपाव बताव ।[10] तरै वागै कयौ-आखर[11] तौ थे केवौ जिसा हूं लिख देऊं । तरै फोजराजजी रै नांवे हजूर रा दसकतां रौ खास

१. ख. ख्यात में लिखा है कि रावराजा की मां किशनगढ की राजकुमारी थी उससे बाईजी की बनी नहीं जिसके फलस्वरूप यह खटपट हुई । (पृ. 104 B)

1. काफी लोगें सहित । 2. पहुंचाने के लिये । 3. रास्ते में रावराजाजी को दूसरी शादी मत करने देना । 4. कुछ अन्यथा नहीं लेंगे । 5. धोखे से मरवाया । 6. फौज भेजी । 7. सूचना भेजी । 8. नजराने के तौर पर । 9. फतेराज उसकी आमदनी खाता रहा । 10. फतैराज को हानि पहुंचे ऐसा कोई उपाय बता । 11. अक्षर ।

रुकौ बणाय कूचांमण सूं रुपिया ५,०००) पांच हजार मंगाय खाय गयौ। पछै फतैराजजी रै आखरां जिसा फतैराजजी रा नांव री फितूर रै नांवे[1] अरजी लिखी कै खरची रा इतरा हजार रुपिया मेलीया है सु पोतसी।[2] इण ताछ री[3] अरजी बणाय भांनीरांम भंडारी मालम कराई। श्री हजूर नै पूरौ सक पड़ीयौ।[4] तरै संमत १८८१ रा चैत सुद ६ नम रै दिन फाग खेलण मुदै[5] रंग रा कड़ाव भराया। नै फतैराजजी रा सारा घर रां नूं याद फुरमाया। सो फतैराजजी, मेगराज जी, कूसलराज जी, उमेदराजजी नै इणां रा कांमेती वगैरै सारा हाजर हुवा। फाग रमीयां पछै सारां नू पकड़ सलेमकोट में घालीया। हवेलीयां चोकियां बैठी। नै फितुर रै नांवै किरतबी अरजी ही तिका फतैराज कनै मेली सो ऊपर सुं खोलनै थोड़ीसीक वचाई[6] नै पुछायौ—अै आखर किण रा[7] है ? तरै फतैराजजी कयौ—आखर तौ म्हारै जिसा हीज है,[8] पिण म्है लिखिया नहीं। इण रौ निरधार कराईजे।[9]

सुखराजजी रतनराजजी सोभत था सो सौड़सरूप पकड़ नै लायौ। दीवांणगी बगसी खालसे हूई नै भंडारी भांनीरांमजी ऊपर मरजी वधी फुरमायो–फौजराज नै बुलाव सुं तूं नै फौजराज कांम करौ[10] फौजराज रै नांवे खास रुकौ लिख दीयौ। फौजराज बरस तेरै चवदै में नै आगे इंदरराजजी गुलराजजो मारीया गया जिण सूं फौजराजजी री मां रौ मेलण सूं मन नहीं।[11] जिण सूं जेज[12] हुई। तरै भंडारी भांनोराम वागा जालोरी कना सूं हजुर जिसा दस्कतां रौ खास रुको किरतबी[13] फेर फौजराजजी रै नांवे लिखाय मेलीयौ। तरै फौजराजजी संमत 1881 रा जेठ में कूचांमण सूं जोधपुर आया। श्रीहजूर घणी खातर फुरमाई।[14] दीवांणगी बगसी तौ खालसे नै कांम फोजराजजी नै सूंपीयौ सो फौजराजजी कनै कांम भंडारी भांनीरांम जी करै नै फेर फौजराजजो कनै कांमेती सिंघवी मांणकचंदजी पिण कांम करै। फतेराजजो रा बाबस्तां रै रुपिया ठेहराणा सरु हुवा।

संमत १८८२ लागौ[1] फौजराजजी नू बगसी रौ सिरपाव रौ फुरमायौ तरै सिंघवी मांणकचंद गुलराजजी री चाकरी लगाय[15] भंडारी भांनीरांमजी

---

1. ग. मेह पांणी मोकळा हूवा।

---

1. धौकळसिंह के नाम। 2. पहुंच रहे हैं। 3. इस प्रकार की। 4. शक पड़ा। 5. फाग खेलने के लिये। 6. थोड़ासा अंश पढवाया। 7. ये अक्षर किसके हैं। 8. मेरे हों जैसे ही हैं। 9. इसका निवटारा करवाइये। 10. तुम और फौजदार दोनों कार्य करो। 11. फौजराज की माता का भेजने को मन नहीं हुआ। 12. विलंब। 13. जाली, बनावटी। 14. संमान देते हुए आश्वस्त किया। 15. गुलराज की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए।

हस्तै फौजराजजी नू खास रुका इनायत हुवा। नै रुपीया मगाया सो मेलीया जिण तगायत री मालम कीवी[1] तरै हजूर सूं फुरमायौ कै म्है तौ फौजराजजी नू अेक खास रुको तौ दीयो है नै म्है रुपीया देवां कै अफूटी सांमा मंगावां[2] तरै फौजराजजी रुका विजनस निजर गुदराया[3] तरै फुरमायौ के दसकत बणावण वालै सागै बणाया है।[4] भंडारी भांनीरांम नू बुलाय फुरमायौ कै तैं फौजराज नू अै खास रुका मेलीया सो किण बणाया है। सांच बोल। तरै भांनीरांम अरज करी कै रुका वागै जाळोरी लिखिया है, नै रूपिया म्है मंगाया है। तरै फुरमायौ फतैराज वाळी अरजी री कीकर है[5] तरै भांनीरांम अरज करी वाही अरजी वागै जाळोरी लिखी है। तरै भंडारी भांनीरांम नू नै वागै जाळोरी नु कैद किया। पछै वागा जाळोरी ने तौ गधे चढाय, सैहर रै बारै लेजाय जीवणो हात आखर बणाय लिखिया[6] तिको हाथ कटाय नांखीयौ। ने भांनीरांम कैद थौ सु कोईक दिना पछै[7] सलेमकोट में सूं नास नै जेंमिदर में गढ ऊपर है जठै जाय बैठौ। सो रूपीया १००००) दस हजार ठेहर [1] नै सीख हुई।[8]

संमत १८८४ रा काती में फतैराजजी रै रूपीया १००००००) दस लाख ठेहरीया। पांच लाख ५०००००) री तौ साहूकारी नै ५०००००) पांच लाख री हाज़री जांमनी। साहूकारी रा रूका इण मुजब सिरदारां लिखिया। विगत–

४००००) लाडणू रा चालीस हजार।

४००००) चालीस हजार नींबी रा मेड़तीया लिछमण सिंघ।

५०००) कंटालीया रा पांच हजार।

५०००) रांमपुरा रा भाटियां रा पांच हजार।

११०००) कोटड़ी रा भाटी इग्यारे हजार।

१०१०००)

---

१. ख. रुपिया 70,000) ठेहरिया।

---

1. रुपये मंगवाये उस तक की पूछताछ की। 2. हम इसे रुपये देवें या उल्टे इससे मंगवावें। 3. उसी समय हुजूर के सामने पेश किये। 4. अक्षर बनाने वाले ने खूब ही बनाये हैं। 5. फतैराज ने धौकलसिंह को अरजी भेजी थी उसके बाबत का मामल है। 6. बनावटी अक्षर लिखे। 7. कुछ दिनों के बाद। 8. दस हजार रुपये वसूल करने के निर्णयोपरान्त छोड़ दिया।

इण ताछ घणा जमींदारां कना सू रूका दिराया सु राज रा रूपीया भराय लीया । जमींदारां कना सूं ।[1] फौजराजजी बाळक नै कांमेती सिघवी मांणकचंद, सो कांम चालै नहीं तरै हजूर जोसी सिभूदतजी नै फुरमायौं कै फोज राज टावर है,[2] सो इणां नु कांम मै मदत दीजै । तरै सिभुदतजी मदत दीवी ।[1] तौ पिण[3] कांम चलै नहीं । तरै फौजराजजी री मां अरज कराई कै फौजराज टाबर है सु कांम चलै नहीं सु दूजां नै दिराईजै । तरै दीवांणगी सिघवी इंदरमलजी रै हुई सो वरस तीन रही ।

महामन्दिर के नाथों का काज्यकार्य में फिरसे दखल बढा

संमत १८८२ सुं माहांमिदर रा कांमेत्यां री पंचायती राज रा कांम में जादा पड़ी । लाडूनाथजी री अग्या सूं हरेक कांम कराय लेता । सो- संमत १८८४ लागतां माहांमिदर रा कांमेत्यां री सला सूं आऊवै फौज लगाई । फौज में मुसायब बोला सिघवी रौ छोटो बेटौ जीवराज माहांमिदर रा कांमेती ऊतमचंद रा जंवाई[4] नू मेलीयौ । सो उण सूं कांम रस आयौ नहीं ।[5] तरै मूंतो जसरूप माहांमिदर रौ कांमेती री तरफ सूं पंचोळी कालूरांमजी नै मेलीयौ सो हलो करायो पिण रस आयौ नही । फौज रौ लोक घणौ कांम आयौ । तरै आऊवा सूं फौज उठाय सिघवी फौजराजजी नै विदा किया ।

आऊवा रा ठाकुर वखतावरसिघजी आऊवा री मजबूती कर नै नींबाज रा ठाकुर सांवतसिघजी कनै गया । सो नींबाज ठाकुर सांवतसिघजी नै रास रा ठाकुर भीवसिघजी[2] वगेरै भेळा होय डीडवांणा री तरफ धोकळसिघजी नूं बुलाया । सु डीडवांणा मै अमल कर लीयौ । तरै आऊवा सूं फौज ऊठाय

---

१. ख. सो भांजघड़ सिम्भूदत्त री । सिम्भूदत्त उत्तमचंद जसरूप नू घणौ हळको बोलियौ । जद लाडूनाथजी गढ़ऊपर आय धरणो दियौ कै सिम्भू नूं कैद कर दिरावौ जद हजूर फुरमायो कै देवनाथजी मा'राज इण कना सूं सिवपुराण सुण पालकी रै कांधो देय पोंछायो जिण नूं कैद तो म्हे करां नहीं अर अेड़ोज मरजी आपरी है तो दोढी मना करसां । भाटी गजसिंह नै कैवाय पोह सुद में संवत 1882 में जोसी नै दोढी मना हुई ।

२. ख. असोप रा कूंपावत तथा कूंपावत हरीसिंघ वासणी वाळां मिल सला करी कै धोकलसिंह जभर रा इलाका परगना जाभगढ बैठो है तिण कनै आपण भला आदमी मेल बुलावो ।....जभर रै नवाब 500 आदमी साथे दिया तिणां नूं लेय धौकलसिंह बीकानेर री

(क्र. प. उ.)

---

1. सो राज्य की रकम जागीरदारों से वसूल करली । 2. अवयस्क है । 3. फिर भी । 4. दामाद । 5. कार्य सधा नहीं ।

सिंघवी फौजराजजी नैं बिदा कीया। फौज में आऊवे खरची री तंगाई, तिण सु माहामिंदर रा कांमदारां अरज कर मुलक में च्यार रुपिया घर बाब लीवी पछै नींबाज रा ठाकुर सांवतसिंघजी रास भींवसिंवजी नू श्रीहजूर फंटाय लीया तरै फितूर धौकळसिंघजी नू छोड अठे उरा आया। तरै गुलाबसागर रै पेली तरफ श्रीजी मातमपोसी डेरौ खडौ कराय कराई। पछै नीवाज रास रा ठाकुर हवेलीयां में आय डेरा कीया। आऊवै री फोज घेरौ ऊठाय लीयौ। आऊवा रा ठाकुर बखतावरसिंघजी आऊवे आय वैठा नै फितूर री फोज बिखर गई।

नागपुर के मीरखां को शरण देना

नागपुर री राजा[१] अंगरेजी सिरकार रा डर सूं भागौ सो दोय चार आदम्यां सु माहामिंदर छांनै[1] आयौ। श्री हजूर मालम हुई तरै[2] सरणै राख लीयो।[3] माहामिंदर रा मैहलां में डेरौ करायौ।[4] अगरेजी सिरकार मांगीयौ[5] पिण दीयौ नहीं। घणा वरसां पछै अठै माहामिंदर में चलियौ।[6] लोढौ किलांणमलजी चलियां पछै छोटो भाई तेजमलजी नै श्रीहजूर राव पदवी दीवी। कंवरजी रा रासा मै तेजमलजो मूता अखेचंदजी सु ढब लगाय[7] परबतसर मारोठ री हाकमीयां लीवी सो हजूर बारै पधारीया तरै नास नै किसनगढ परा गया सो जद सू[8] रिधमलजी बारै हीज हा सु तेजमलजी तौ मर गया नै रिधमलजी रया सो रिधमलजी रा वडा बेटा फौजमलजी सूं सिंघवी फौजराजजी री बेन री सगाई कीवी सो ब्यांव[9] करण मुदै[10] रिधमलजी नै मुलक में लावण री फौजराजजी अरज कीवी सो फौजराजजी रा मुलायजा सू[11] अरज मंजूर कीवी नै परबतसर रौ गांव भड़सीयौ पटै दीरायौ। संमत १८७९ ब्यांव कीयौ थौ।

कांकड़ आयो। डीडवांणा री रैत कना सूं रु 50 हजार डंडरा लिया। पछै बंट बाबत सिर दारा रै आपस में झौड़ हुयो- सो बिखर गया। नीबाज नै रास संवत 1884 रा असाढ सुद नै आउवा ठाकुर ने छोड़ जोधपुर आया) आउवे रो घेरो पण ऊठियो। 1885 लागतां फर महामिंदर सूं तो काम मोकूब हुवो ने जोसी सिम्भूदत्त तालकै हुवो। 22 परगनां री हाकमियां इण तालके हुई (अधिक)।

१. ग. धरसलियो (अधिक)।

---

1. चुपके से। 2. महाराजा को मालुम हुई तब। 3. अपनी शरण में रख लिया। 4. महामंदिर के महलों में रखा। 5. उसे मांगा। 6. यहीं उसका देहान्त हुवा। 7. अटकल लगाकर। 8. तबसे। 9.-10. विवाह के लिए। 11. लिहाज से।

फौजराजजी री मांई री बेटी बेंन[1] तौ फौजमलजी नू परणाई नै सगी बेन किसनगढ रा दिवांण मेहता करणसिंघजी रा बेटा विजैसिंघजी नू संमत १८८४ रा माहा सुद ५ परणाई[2] पछै विजैसिंघजी नै फोजराजजी अरज कर अठै हीज[3] राखीया नै जैतारण रौ गांव आसरलाई पटै दिराई ।

लाडूनाथ की गिरनार यात्रा और मृत्यु—

संमत १८८५ रा आसोज[4] में आयसजी श्री लाडूनाथजी गिरनारजी री जात्रा करण गया सो गिरनारजी नू चढती वखत[5] श्री हजूर में अरज करी-सिंघवी फतैराजजी नू दीवांणगी दिराई[१] लाडूनाथजी गिरनारजी चढिया तरै श्री हजूर सु सिरकारी लौग अग्या मुजब साथै मेलीया[6] । सिंघवी कुसलराजजी नू साथै मेलीया ।

गिरनारजी परस[7] पाछा आवता[8] सिंघवी कुसलराजजी वगेरै आयसजी सू अरज कर श्री द्वारकानाथजी गया सु मारग में पाछा आय सांमल हूवा[9] ।

पाछा आवतां गुजरात रै गांव बांमणवाड़ै लाडूनाथजी माहाराज नै ताव आय देवलोक हुवा[10] आयसजी कनै चारण मरजीदांन[11] घणा[12] था सौ किणी नै गिणता न्हीं ।[13] जिण सू सिरकार रा कांमदार वगेरै सारा दोरा था सो लाडूनाथजी देवलोक हुवण री झूंठी वदनांमी चारण ऊपर दीवी ।[14] सो इंण वात री सायद[15] आयसजी रा कांमदारां सिंघवी कुसलराजजी ऊपर थापी ।

कुसलराजजी नै श्रीहजूर पूछीयौ । तरै कुसलराजजी अरज कीवी कै आ वात झूठी है । गांव जुडिया रा चारण लालस नाथूरांम रै कयोडौ दूहो—

देवा रो दरियाव, फूटंतां फाटी जती ।
निज कव पातां नाव,[16] कुसलै हिक राखी ।

---

१. ख. श्री हजूर री मरजी सिवाय फतैराजजी नैं दीवाणगी लाडूनाथजी दिराई सो जमी नहीं । (अधिक)

---

1. मां की बहन । 2. शादी की । 3. यहीं पर । 4. आश्विन । 5. विदा होते समय । 6. आज्ञा के अनुसार लोगों को साथ भेजा । 7. गिरनार में देवता के चरण-स्पर्श कर । 8. लौटते समय । 9. वापिस आकर उनके साथ मिले । 10. बुखार आकर मृत्यु हो गई । 11. कृपा पात्र चारण । 12 बहुत से । 13. किसी को मानते तक नहीं । 14. बदनामी चारणों पर दी गई । 15. संभावना की वास्तविकता । 16. चारण लोगों की नाव ।

लाडूनाथजी साढा उगणीस वरस री आवस्ता पाई। वड़ा समजवार था[1]। वडा दातार[2]। चारणां नें अेक दिन २५ पचीस हाथी दिया[3]। लाडूनाथजी रै साथे लोक थौ तिण में ही धणो मांदगी हुई[4]। सो सारां नूं अंवेर नै कुसलराजजी लाया[5]।

लाडूनाथजी रा बेटा भैरूनाथजी वरस दोय-तीन रा था जिणां ने गादी बेठांणीया[6] सो मीना छयैक पछै चल गया[7]। तरै भींवनाथजी आप रा बेटा लिखमीनाथजी नूं लाडूनाथजी रै खोळै[8] दीया। भैरूनाथजी चल गया तरै सुरतनाथजी रा पोतरा[1] चंनणनाथजी नूं खोळै लीया था। जिणां नूं ऊथाप नै[9] भींवनाथजी धरणौ गढ ऊपर देय नै लिखमीनाथजी नू खोळे दीया। जठा पछै गुर पदवी रा मालक भींवनाथजी हुवा। राज रौ कांम भींवनाथजी री अग्या सूं हूवतौ। लिखमीनाथजी नूं खोळै री चादर गढ ऊपर हजूर ओढाई नै हाथी रै होदै लिखमीनाथजी नै बेसांणीया नै खवासी में चंवर ले छोटा भाई प्राणनाथजी बैठा। सिरे बजार होय माहामिंदर दाखल हूवा[10]।

संमत १८८१ में किसनगढ माहाराज किलांणसिंघजी गंगाजी सूं पाछा आवता दिली आया दिली रा वडा साहब कवल बुरक सूं दोस्ती हुई पाछा किसनगढ आया। माहाराज बादरसिंघजी रा पड़पोता माहाराज किलांणसिंघजी रा पोता[11] चांदसिंघजी जिणां रै फतेगढ हौ ने दूजा ही[12] जमींदारां रा ठिकांणा छुडाय लेवण रौ माहाराज किलांणसिंघजी रौ ईरादो हूवौ। सो पाछा दिली गया नै खजांनो ले गया। जिण सूं परदेसी लोग पांच-छव हजार लोग भरती कर पाछा किसनगढ आया। जमींदार सारा नै देसी चाकर सारा किसनगढ में भेळा हूवा। दूजै दिन किसनगढ सुं रूपनगर में वड़ गया जद किलांणसिंघजी रूपनगर फौज लगाई[13]। दोय तरफी तोपां सरू हुई।[14] माहाराज किलांणसिंघजी अममेर वडा साहिब कमंडीस कनै गया नै देसी चाकर कनै रया जिणां नै सारां नै अजमेर सूं सीख दीवी।

---

१. ग. बालानाथजी रा बेटा (अधिक)

---

1. बड़े समझदार थे। 2. बहुत दानी थे। 3. एक दिन में पच्चीस हाथी (राज्य की ओर से) दिये। 4. बहुत लोग बीमार हुए। 5. सब की देखरेख करके कुशलराज लाया। 6. गद्दी पर बैठाया। 7, छः महीने बाद ही मृत्यु हो गई। 8. गोद (दत्तक)। 9 गद्दी से हटाकर। 10. महामंदिर में प्रवेश किया। 11. पौत्र। 12. दूसरे भी। 13. फौज भेजदी। 14. दोनों तरफ तोपें चलने लगी।

मुलक में लूंटाखोसी[1] वडो फिसाद पैदा हूवौ। वडै साहब सिरदारां रा ऊकीलां नै वुलाय रूपनगर खाली कराय दीयौ नै फोज उठवाय दीवी।

माहाराज रै नै जमीदारां रै केई दिन रूह वकारीयां हूई सेवट[2] माहाराज किलांणसिंघजी साहब रौ कयौ मांनीयौ नहीं[3]। जब साहब सिरदारां नू कयौ[4] मुलक का बंदोबस्त तुम कर लेवौ। तरै सारा मुलक में जमोदारां बंदोवस्त कर लीयौ। किसनगढ सैर में नै सरवाड़ रा किला में माहाराज रौ अमल रयौ। तरै माहाराज थोडा सा असवारां सूं अजमेर सूं जोधपुर संमत १८८५ रा भाद्रवा में ऊरा आया। सौ ऊदेमिंदर रेहता[5]। नै रुपिया १००) अेक सौ माहाराज श्री मांनसिंघजी हमेसां[6] कर दीया। लारै किसनगढ में सिरदारां चाकरां कंवरजी मोहकमसिंघजी नै मुकत्यार कर दीया।[7] पछै संमत १८८८ मै वडा लाठसाहब अजमेर आया जद माहाराज किलांणसिंघजी जोधपुर सूं अजमेर गया। लाठसाहब बहादुर नै अरजी दीवी। तरै रुपीया १००) अेक सौ किसनगढ रा राज मांह सूं कराय दीया नै हुकम दीयौ–किसनगढ इलाके से वाहिर दूसरीं जगा रहौ[8]। तरै किलांणसिंघजी दिली जाय रह्या सो संमत १८९६ वा रा वैसाख में दिली देवलोक हूवा[9]।

आयसजी लिखमीनाथजी माहामिंदर री गादी बैठा तरै माहामिंदर रा कांमदार मुंतो ऊतमचंद जसरूप कवीलां सहैत[10] रायपुर जाय बैठा। मूतो किसतूरचंद नै माहामिंदर रौ कांम सूंपीयौ। पछै लिखमीनाथजी भींवनाथजी बाप बेटां रै आपस में बणत रही नहीं[11] तरै लिखमीनाथजी मूता उतमचंद जसरूप नै रायपुर सूं बुलाय कांम सूंपीयौ। हजूर में छूट कराई। राज रौ कांम माहामिंदर री अग्या सूं होणौ सरू हूवौ। तरै भीवनाथजी उदैमिंदर सूं छाडांणो कर[12] गांव कायथां गया। हजूर सुं व्यास कचरदासजी नू लारै मेलीया मनवारां मोकळी कीवी[13] पिण भीवनाथजी तौ पाछा आया नहीं।

जोशी शम्भुदत्त पर महाराजा की विशेष कृपा—

जोसी सिंभूदतजी जोसी वेदिया में घेरा में हाजर हा जिण सूं श्री हजूर। मेहरबांन। देवनाथजी नै पढावता,[14] पछै कंवरजी नै पढावण नै राखीया।

---

1. लूटपाट। 2. अंत में। 3. महाराजा ने साहब की कही हुई बात नहीं मानी। 4. सरदारों को कहा। 5. उदैमंदिर में रहते थे। 6. रोजाना के एक सौ रुपये खर्च के उन्हें दिये जाते थे। 7. राज्यकार्य का अधिकार कुंवर मोहकमसिंह को दे दिया। 8. किशनगढ की सीमा से बाहर दूसरी जगह रहो। 9. स्वर्गवासी हुए। 10. बालबच्चों सहित। 11. आपस में बनी नहीं। 12. उदैमंदिर छोड़कर। 13. मनाने का काफी प्रयास किया। 14. पढाते थे।

कंवरजी बारै पधारीया तरै विद्या-गुर पणा रौ सिरपाव कड़ा मोती कंठी बैठण नै रथ सिंभूदतजी नै दीया । कंवरजी नै बारै पधरावण री सटपट[1] सरू हुई तरै सिंभुदतजी कंवरजी नैं अरजी दीवी-हजूर रै अेक आप हीज कंवर हौ सो पाट भगती[2] राखी चाहीजै । ऊवा अरजी वाच नै कवरजी उणीज अरजी लारै खास दसकतां लिखीयौ थै नसीयत लिखी सो वाजबी है पिण बारै आवणो ठैहर गयौ नै पाट-भगती में कसर घालसां नहीं । पछै कंवरजी रूळीयार गिरी[3] री चाल सरू कीवी, तरै सिंभुदतजी घणा मनै कीया । तरै सिंभुदतजी नै भरणा में कैद कर दीया तरै सिंभुदतजी तीन दिन तांई अन जळ लीयौ नहीं तरै छोड दीया । कंवरजी चलियां पछै श्री हजूर बारै पधारीया तरै जोसीजी कंवरजी रा आखरां सुधी अरजी वचाई तरै हजूर खातर फुरमाई[4] । पछै जोसीजी सूं दिन दिन मरजी वधी ।

श्रीनाथजी रो धरम ईश्वर में मिलावण रा ग्रंथ जोसीजी वणाया सो जोसीजी नै कविंद्र पदवी हजूर दीवी[१] उदैमिंदर माहामिंदर रा कांमेती राज रो कांम बेवाजवी करता जिणां नै अहोड़ा जोसीजी देता[5] तिण रौ हजूर और तरै[6] जांणता नहीं । चार-पांच वार कुल मुकत्यारी मुसायबी करी कुसलचंदोत भंडारीयां नै ओधा खिजमतां जोसीजी दिराया, नै इणांरी खांप नै वणाई ।[7] संमत १८८५ में भंडारी किसतूरचंदजी नै अंगरैजां री ऊकीलायत दिराई नै भीवनाथजी सूं वणतो नहीं सु भीवनाथजी रै लेह आवतौ[8] जरै जोसीजी रौ कांम मोकूब कराय देता ।

सिंघवी फतैराजजी रै पैली किस्त रा रुपीया पांच लाख ५०००००) ठेहरीया तिण में ७५०००) पिचतर हजार तो सिंघवी ऊमेदराजजी[१] दीया नै मेगराजजी कुसलराजजी सुखराजजी ८६०००) छिआसी हजार दीया । नै बाकी रा रुपीया जांमनी रा रुका जमींदारां रा फतैराजजी लिखाय दीया था सु जमीदारां भरीया । पछै संमत १८८४ में लारली किस्त रा रुपीया ५०००००) पांच लाख बाकी था तिण मुदै माहामिंदर रा कांमेतीयां फतैराजजी नै फेर कैद कराई । पछै फतैराजजी माहामिंदर रा कांमेती ऊतमचंदजी री बेटी सूं आपरा बेटा पेमराजजी सूं सगपण कीयौ नै रुपीया ५००००) पचास हजार भर नै

---

१. ग. पैलाइज दीवी थी ।
२. ग. उमेदराम जी ।

---

1. साजिश । 2. गद्दी के प्रति आस्था, वफादारी । 3. बदचलन ।
4. महरबानी प्रकट कर आश्वस्त किया । 5. जोशीजी उन्हें टोकते थे ।
6. अन्यथा । 7. इनकी खांप (कुल का) का महत्व बढाया । 8. वश पहुंचता ।

छूटा । मेगराजजी कुसलराजजी सुखराजजी इणां हजूर सुं न्यारौ तार लगाय लीयौ[1] संमत १८८४ में जोधपुर री हाकमी सुखराजजी रै हुई । पछै संमत १८८६ रा मिगसर में भीवनाथजी फतैराजजी री दोढी मने कराई[2] । तरै मेगराजजी कुसलराजजी सुखराजजी री ही दोढी मने कराय दीवी । संमत १८८६ रा सीयाला में दीवांणगी रौ कांम खालसै नै सिंघवी फौजराजजी नुं भोळावण ।[3] सो दीवांणगी ने वगसी रो कांम दोनूं फौजराजजी करै ।

गुलराजजी लारै सेहर सारणी खांड रा सीरा री पोहकरण री हवेली में फौजराजजी कीवी । छतीस पूंण जिमाई[4] ।

फतैराज को फिर से दीवान का पद मिलना—

संमत १८८७ रा आसोज में माहामिंदर रा कांमदारां री मारफत दिवांणगी सिंघवी फतैराजजी नै हुई परवतसर मारोठ री हाकमीयां सिंघवी कुसलराजजी सुखराजजी रै हुई सो साढा चार वरस रही, हाकमीयां घणी आछी तरै कीवी[5] । वडू रा कांमदार आसकरण कनै रुपीया २००००) बीस हजार[१] लीया । आलणीयावास वाळां कना सूं रुपीया ७०००) सात हजार लीया । बोडावड वाळां कना सूं रुपीया ८०००) आठ हजार लीया । फतैराजजी री दिवांणगी संमत १८८८ में उतर गई ।

तरै भाठी गजसिंघजी री मारफत सिंघवी गंभीरमलजी रै दिवांणगी हुई संमत १८८८ में गांव वीठोजो सिंघवी मेगराजजी रै पटै हुवौ । राज में खरच रौ तौड़ौ[6] सु परवांणा ऊधार जमां रा दस रुपीयां सैकड़ै काटा रा नै दोय रै ब्याज रा हुंता ।

अंग्रेजों द्वारा जोधपुर से चढी हुई रकम और नागपुर के शासक को दी गई शरण का तकाजा-

संमत १८८७ में अंगरेजां री ऊकीलायत कुसलचंदोत भंडारी किसतूरचंदजी रै थी । सो अंगरेज मांमला रा रुपिया बाबत तथा गैर इलाकां रा मुकदमां बाबत तथा नागपुर राजा बाबत जबाब मांगै । सो उकील सूं जवाब

---

१. ग. तीस हजार ।

---

1. अलग से सम्पर्क स्थापित कर लिया । 2. महाराजा से मिलने का अवसर बंद करवा दिया । 3. काम की देखरेख फौजराज के सुपुर्द । 4 छत्तीस ही कौम के लोगों को भोजन कराया । 5. अच्छा शासन किया । 6. रकम की कमी ।

बराबर भुगतै नहीं ।[1] तिण बाबत वड़ो सायब नाराज । तरै उकील री मदत सारूं व्यास कचरदासजी नू सांवठो लोक-बाग दे मेलीयौ । सायब[१] दिली थौ सु सपादृ रा पाहाड़ां परौ गयौ थौ । तरै कचरदासजी हरद्वार री जात्रा कीवी । पछै सायब पाछा आया तरै मांमला रा रुपीयां री हुंडीयां दे जरा-बोत सफाई कर कजरदासजी जोधपुर आयौ[२] ।

पछै ऊकीलायत आसोपा सुरतरांम रै हुई ।

अजमेर में अंग्रेजों की ओर से शासकों का दरबार बुलाना—

पछै संमत १८८८ रा सीयाला में लाठ साहब बहादुर अजमेर आया । सारा रजावाड़ां नै बुलाया । उदैपुर, जैपुर, भरथपुर, टोंक, बूंदी, कोटौ, बगेरह सारा राजा अजमेर आया । नै अठे अजमेर जावण सारूं बारै डेरा खड़ा हुवा । सिरदारां नूं बुलाया । सारी वात री तयारी करायी । पिण पछै माहाराज श्री मांनसिंघजी अजमेर पधारीया नहीं[२] सो इण वात सूं अंगरेजी सिरकार नाराज हुवा पिण उण बखत जाहारायत में[3] विसेस नाराजी दिखाई नहीं । अजमैर मैं उदैपुर, जैपुर वगेरे राजा आया जिणां री लाठ साहब सूं न्यारी-न्यारी मुलाखात हुई । दरबार हुवौ नहीं । लाट सायब राजावां रै डेरां[4] पधारीया ।

संमत १८८९ में दिवांणगी रौ कांम खालसाई भंडारी लिखमीचंदजी नू सूंपीयौ मौर खालसा ही नै मुसायबी भींवनाथजी री अग्या सूं मूंतौ हरकचंद करै । वड़ो सायब लाट साहब बाहादुर जोधपुर हुय जैसलमेर गया । तिणां नै पौचावण सारुं व्यास कचरदासजी नै मुहता हरकचंदजी गया गांव तिवरी तांई[5] गया ।

कचरदास, भाटी गर्जासंघ आदि को कैद करना

व्यास कचरदासजी, जेठमल, सिवलाल, अखैरांम, उदैरांम, भाटी गर्जासिंघ नै कैद संमत १८८९ रा आसाढ में नै ऊणीज दिन श्री हजूर सायबां रौ ब्याव

---

१. ग. हवा खावण नै (अधिक) ।

२. ख. पिण श्री हजूर सूं किणी सिरदारां मुसदियां वगेरे मोहले अरज करी कै कदासं आंपे उठे जावां नै आंपांनूं अटकाय देवै कै नागपुर रा राजा नुं देय नै जावो तो सबलवादी सू पड़पावां नहीं । नागपुर वाळै नूं सूंप देवां तौ बात वेढब लागै सो जावण में सला है नहीं । तिण सूं हजूर पधारिया नहीं । (अधिक)

---

1. समय पर वकील उपयुक्त जवाब नहीं दे पाता । 2. थोड़ी बहुत स्थिति स्पष्ट करके । 3. प्रकट रूप में । 4. प्रवास स्थान । 5. तिवरी ग्राम तक ।

श्री ।¹ व्यास पदवी व्यास सिवदास नै हुई भाटी गजसिंघजी रै रुपिया २०००००) दोय लाख जोसी सिंभूदतजी हस्तै ठेहरीया । नै व्यास कचरदासजी रै रुपीया २०००००) दोय लाख जोसी सिंभूदतजो हसतै ठेहरीया नै व्यास पदवी पाछी हुई ।[1] नै व्यास सिवदासजी रै गांव आसीयां पटै हुई । कचरदासजी रा रुपीया भरीज गयां पछै व्यास पदवी पाछी सिवदासजी रै हुय गई । छांगांणी सिवलाल अखैरांम उदैरांम रै रुपीया १०००००) अेक लाख ठेहरीया । सो फजीती रै साथ[2] सितर असी हजार भरीजीया ।

ठिकाने बूड़सू व बगड़ी में उलटफेर का वृत्तांत

संमत १८७५ मै बूड़सू अखेसिंघोतां कनें छुडाई । सो कितराक वरस खालसै पटौ रयौ । पछै जसरी रा मेड़तीया सादुळसिंघ, रतनसिंघ पाड़सिंघोत नै संमत १८८५ में पटौ श्री हजूर सूं बूडसू रो लिख दीयौ । सु अखेसिंघोतां मुलक में पूरौ दोढा धावौ कीयौ[3] पिण संमत १८८७ लगायत संमत १८६१ रा सुधी हाकमी परबतसर मारोठ री कुसलराजजी तालकै रही, धोड़ा-धावो करता जद लारै वाहार पंचोळी कंवरचंद चढतौ सु ढूंढाड़ मैं लारो कर झगड़ौ वेहदो कर[4] धन पाछौ लावता ।[5]

पछै संमत १८८८ में वगड़ी रौ ठाकुर जैतावत सिवनाथसिंघ केसरी सिंघोत छांड गयौ । वगड़ी खालसै जोसी सिंभूदतजी तालकै हुई । तरै वगड़ी वाळो ही अखैसिंघोतां सांमल हुय गयौ²-[6] मुलक में दौडतौ,[7] सु संमत १८८६ में भावी लूटी, जैतारण लूटी, वगडी लूटी, सांवठौ माल लैगयौ ।[8] जद श्री हजूर सूं संमत १८८६ रा आसाढ वद ३ तीज नै सिंघवी कुसलराजजी नै विदा किया ।

---

१. ख. देवड़ां री डोळी आयौ । (अधिक)

२. ख. वणसूर भैरुदानजी रौ श्री हजूर में पूरो मुलायजो । श्री हजूर किणी बगत में उदासी में चित्त जाय लागै जदै भैरुदानजी नूं याद फरमावै । औ आय हाजर हुवै । बातां एड़ी खुसी री करै मसला प्रस्ताविक हुवै जद श्रीहजूर सारी फिकर भूल हंसी-खुसी बातां करण लाग जावै । और कोई मुकदमा सिरदारां वगेरां रो आय पड़ै नै वचन जमीदार नूं सिरकार रा दिरावणा हुवै तो भैरुदानजी रा दिरावै । मुसायवी रै दरजै बादरमलजी री अदालत तालकै । सो श्रीहजूर री मरजी उणां सूं संपूरण जीविया जितरै रही । अर चैनदानजी पिण भैरुदानजी रो वेटो हुवै जिसो, सासतर भणियोडो बड़ी दांनाई री चाल.... । (अधिक)

---

1. व्यास पदवी फिर से कचरदास को दी गई । 2. बड़े अपमान के साथ । 3. लूट-खसोट की । 4. लड़ाई टंटा करके । 5. गया हुआ माल वापिस लाते । 6. बगड़ी ठाकुर भी बूड़सू के अखैसिंघोतों के शामिल हो गया । 7. मुल्क को लूट-खसोट करता । 8. काफी माल लूट कर ले गया ।

राज मैं रुपियां रौ तोड़ौ सु खरची कठा सूं लावै ? तरै रांणीजी श्री बडा देवड़ी-जी-भा नै फुरमायौ मुलक रा बंदोबस्त मुदै कुसलराज नै मेलां हां सु रुपीया ८०००) आठ हजार रौ खत कराय देवै । तरै कराय दीयौ । सु कुसलराजजी सात घोड़ां सूं डेरौ बारै कीयौ । सेख अैवजअली रा पाळा[1] १५० साथै हा सु कूच करता गया ज्यूं लोक भेळो हूतो गयौ । असाढ वद १० डैरा गांव कैलवाद हुवा ।

परवतसर सूं सुखराजजी पंचोळी कंवरचंदजी नू घोडा ५०० पांच सौ देनै सिंघवीजी कनै मेलीया । सो आघौ आंतरौ जिण सुं करडी मजलां करनै पोथा[2] वगड़ी रा नै अखैसिंघोतां रा गांव खोडीया रा गढ में था सु इणांरा डेरा कैलवाद सुणिया तरै भाग नै मेवाड़ में गया । हलकारां री खबर सूं वद १० नै रात रा कुसलराजजी लारै चढिया सु मेवाड़ रौ गांव चीबड़ पोथा । जठै झगड़ो हुवौ । वगड़ी रा नै अखैसिंघोतां रा सांवठा आदमी मारीया गया । घोड़ा पड़ाऊ आया उणां रौ डेरौ सारौ लूट लीयौ । इण झगड़ा में रायपुर ठाकुर माधोसिंघजी सांमल हा सु फतेहकर नै पाछा असाढ वद ११ ग्यारस कैलवाद आया । फतै हुवां री अरज जोधपुर लिखी । तरै मैरवांन हुय[3] नै गांव कौसांणो कुसलराजजी नै पटै दीयौ ।

संमत १८९० में काल पड़ीयो[1] । संमत १८८९ रा असाढ में पका तोल रा गोहूं रुपिये अेक रा १) रा ऽ।।।)३ तेतीस सेर विकता सो नव सेर रा विकिया, घास हुवौ नहीं सो धराव[4] मुलकरा घणा मूवा ।

माहामिंदर रा कांमदार ऊतमचंद जसरूप री राज रा कांम में पंचायती पड़ी । लिखमीनाथजी री अग्या वरतीजै ।[5] जसरूपजी संमत १८९० रा आसोज में दिवांणगी पंचोळी कालूरांमजी नू दिराई । सो चैत में जबत हुई । मौर दोढी धरीजी ।

सेठ रुघनाथसा नै कैदकर सलेमकोट में घाल रुपीया साठ हजार ६००००) जसरूपजी लीया । ऊतमचंद जी माहामिंदर सूं फंट[6] भीवनाथजी

---

१. ख. 36 कारखाना वरवाद हुय गया । जमा आवै सो तो परवारी-मुसायब खायपां पांतियां मार लेवै अर परदेसी वगेरे सागड़द पैले री खरची पूगै नहीं ।—बड़े साब रो खिरणी बाबत तकाजो । (अधिक)

---

1. पैदल सिपाही । 2. अधिक दूरी के कारण लबे-लंबे पड़ाव करके पहुंचा । 3. मेहरवान होकर । 4. पशु । 5. राज्य-कार्य में आज्ञा चलती है । 6. अलग होकर ।

सांमल हुवौ । भींवनाथजी मतै ही लिखमीनाथजी नै माहामिंदर बारै काढ दीया सु भटकता फिरिया । जसरूप नै भीवनाथजी मोकुफ कराय दीया ।

लिखमीनाथजी नु काढ दीया सौ वात हजूर रै मन भाई नहीं पिण भाव रा मुदा सूं[1] भीवनाथजी नै क्यूं ही कह सकै नहीं । ऊतमचंदजी कहै ज्यूं भीवनाथजी करै । ऊतमचंदजी फतैराजजी सूं सगपण हुवां पछै पूरा राजी। सूं पंचोळी कालूरामजी सूं दिवांणगी उतराय नै फतैराजजी नू दिराई ।

अंगरेजां री उकीलायत हजूर सुं मरजी सूं[2] ग्रासोपा ग्रनोपरांम न दीवी । अंगरेजी सिरकार में घोड़ा १५०० पनरैसौ चाकरी रा मंगाया सो लोढी रिधमल नै मोणोत रांमदास घोड़ा ले ग्रजमेर गया ।

संमत १८९० रा वेसाख जैठ में दोय तीन वार काळी-पीळी ग्रांधीयां ग्राई । ग्रसाढ लागतां व्रखा[3] हूई । संमत-१८९१ जमांनौ चोखो हूवौ[4] पको तोल रा गोऊ ऽ।)४, मोठ ऽ।।)१, मूंग ऽ।)४, बाजरी ऽ।।) विकीया ।

ग्रंग्रजों की ग्रोर से खलीतों के जबाब के लिए तकाजा

ग्रासोपो ग्रनोपरांमजी ऊकील जोधपुर लिखावट करी जिण रौ जवाब भीवनाथजी भुगतावै नहीं ।[5] हरेक मुकदमां बाबत खलीता ग्रावै । जिण रो जबाब लिखीजै नहीं । खलीता ४५ रौ जबाब भुगतीयौ नहीं । हरेक मुकदमां बावत ग्रनोपरांमजी तो चल गया नै ऊणां रो बेटो सवाईरांम अेवजी में गयौ ।[6] जिण ऊपर वड़ा साहब री पूरी तकरार हुई । सो ग्रा विगत मालम हुई ।

तरै सिंघवी फौजराजजी बगसी भंडारी लिखमीचंद्र खालसै दिवांणगी रौ कांम करै । जोसी सिंभूदतजी, सिंघवी कुसलराजजी, धांधल केसरीसिंघजी इणां नै संमत १८९१ रा भाद्रवा-सुद १४ चौदस में विदा ग्रजमेर नै किया । नै कुचां-मण रा ठाकुर रणजीतसिंघजी नै खास रुको इंनायत हूवौ सु ग्रजमेर सांमल हुवा । मुसायबां नू जातां नू हजूर फुरमायौ के-हर वेंत कर[7] अंगरेजां नै राजी राखजो । पिण लिखावट रा वंद में[8] ग्रावजो मती ।¹ कुचांमण ठाकुर रणजीत-

---

१. एव. थांरै तुळै ज्यूं करजो पण फितूर दिरावण रौ कदास केवै तो हांकारो भरजो मती ।....(ग) शाहजी री सीख फलसा तांई है ।

0 दो मोटा उमराव भाद्राजण ग्रर कुचामण साथे । (ग्रधिक)

---

1. भक्तिभाव के कारण । 2. महाराजा की इच्छा के ग्रनुसार । 3. वर्षा । 4. फसलें ग्रच्छी हुई । 5. प्रत्युत्तर नहीं देते । 6. उनके स्थान पर वकील बनकर गया । 7. हर प्रकार के प्रयास से । 8. लिखित रूप में किसी बंधन में मत ग्राना ।

सिंघजी नै पांचू मुसायब बडा साहब अलवीर साहब बहादुर सूं छोटा साहब तिर विलियम साहब[1] बहादुर री मारफत मुलाकात कीवी । वडा साहब नाराज हा जिण सूं पैरवाई री इतला कराई नहीं लाठ सायब सूं मुलाकात करण हजूर पधारीया नहीं जिण रो पिण वडे साहब जतावौ दियौ ।[1] नै लारला खलीतां रै जबाब री पिण पूरी ताकीद कीवी । तरै ठाकुरां नै मुसायबां अरज करी कै हजूर रा सरीर में दोय तीन वरस सूं बीमारी है जिण सबब सूं अजमेर पधारणौ नहीं हुवौ । नै इण ही सबब सूं खलीतां रो जबाव नही लिखीजियौ । तरै वडे साहब कह्यौ–माहाराज कूं कुछ बीमारी नहीं है, नाथां की दबवारी की[2] बीमारी है जरूर । हमारी सिरकार दांनी है[3] और माहाराज सायब कूं दांनी समझते हैं जिस सबब से धकता है । लेकिन नागपुर का राजा सिरकार कंपनी का गुनेहगार है जिस कूं रखकर माहाराज साहब नै क्या कीया ? तरै अरज करी कै माहामिंदर म्हां रै सरणै री जगा है[4] आप भी नागपुर के राजा कूं पकड़ कर के कैद करनै । जेसा हम भी वहां कैद में रखेंगे । सायब कयौ–अच्छा मांमले का वहुत रूपया चढै है[२] अर फौज खरच देवौ नै आगा सूं सुधी वरतण राखण[5] री पकाइ करौ । तरै मांमला रा नै फौज खरच रा रूपियां रो मुकरड़ौ बांध नै[6] रूपीया ५०००००) पांच लाख कबूल कीया । जिणां रूपीयां में सांभर नांवा री जमा लगाई । दोनूं दरीबा[7] अंगरेजी सिरकार में रूपियां पेटे सुपरद करणा ठैहराया । नै सुधी वरतण राखण रौ खलीतो लिखाय दीयौ ।

वडा साहब नै रजाबंध कर नै[8] जोधपुर आसोज सुदि में आया । सारी विगत मालूम करी । तरै फुरमायौ–रूपीया तौ पांच लाख रा दस लाख ठेहराय नै चारूं दरीबा दै आवता तौ और तरै नहीं थी पिण सुधी वरतण राखण रौ

---

१. ख. सरसताई मुलाकात पैले दिन हुई दूजै दिन आसोज सुद दूज नूं फेर मुलाकात हुई (अधिक)

२. ख. खिरणी रा रुपिया चढ गया बाबत सिरकार कहै सो इकसाखिया मुलक अर संवत 90 हळाहळ काळ पड़ गयौ तिण सूं खिरणी दिरीजी नहीं नै गैर इलाका मुकदमा बाबत फुरमायो सो मारवाड़ रा मुकदमा बाकी रा मारवाड़ ऊपर है सो दुतरफो फैसलो करावौ । खिरणी रा रुपिया 2-3 लाख आसरै बाकी तिणरो मुकरड़ो लेखो कर 2 महीनां रो कौल कियौ । अर जैसलमेर सिरोही रा दूतरफा फैसला कराय लेणा इण तरै बात कर तसली करलीवी । (अधिक)

---

1. अपनी नाराजगी प्रकट की । 2. नाथों के दबाव की । 3. मौतबर, गंभीर । 4. वह शरण की जगह है । 5. हिसाब किताब स्पष्ट रखने की । 6. पूरे हिसाब की निश्चित रकम तय करके । 7. नमक की खानें आदि । 8. खुश करके ।

बंधांण नहीं करणौ हौ ।[1] सो आ वात हजूर रै मरजी में आई नहीं । भीवनाथजी इण पांचू मुसायबां री नालस करवो करता । सौ सिंभुदतजी लिखमीचंदजी केसरोजी ऊपर तौ हजूर री मरजी विसेस जिण सुं वार आयी नहीं[2] नै फौजराजजी कुसलराजजी नै सिंघवी सुमेरमलजी नै कैद करण रौ भीवनाथजी हजूर नै हांकारौ भरायौ ।[3]

फागुण सुद ८ आठम तीनां ही नै कैद कराय दीया नै दीवांणगी रौ कांम भंडारी लिखमीचंदजी करै । कंवरजी रो रासौ हुवां पछै ठाकुर कुचामण, भाद्राजण, रायपुर, नै जूसरी रा ठाकुर सादूळसिंघजी, यां सूं मरजी वधी ।[4] नै इणां नै पंचायती में राखीया । सो कुचांमण भाद्राजण वाळां रै फौजराजजी सूं पूरौ ममत हौ[5] सो फौजराजजी नू कैद हुई तरै भादाजण रा ठाकुर बखतावरसिंघजी नूं ही बैम आयौ । सो तळेटी रा मैलां आयसजी लिखमीबावजी रहता जिणां रै सरणै जाय बैठा । तरै फतैराजजी रा कैणा सूं भादाजण रौ जटौ जवत हुय फतैराजजी तालकै हुवौ । नै भादराजण ऊपर फौजवंधी[6] फतैराजजी तालकै हुई । फतैराजजी री तरफ सूं फौज मुसायब पंचोळी छोगमलजी ने मेलीया । लिखमीबावजी री खातरी सूं ठाकुर बखतावरसिंघजी चढ नै भाद्राजण गया नै भादराजण घेरौ लागौ । लड़ाई सरू हुई ।

भादराजण वाळो फतैपुरीयां री कतार मभोई[7] सुं आवती थी जिण में माल रुपियां दोढ लाख रौ खोस लीयौ । फतैपुरीयां री दुकान अजमेर में थी सो साहव वहादर नै अरजी दीवी । भादराजण रा कांमेतीयां साहब वाहादर नै ईतला करी कै हमकूं[१] भीवनाथजी विनां गुनै मुलक बारै काढै है अर फौज लगाई है जव हमने माल खोसीया है । तरै उकीलां सूं साहब बहादर तकरार कीवी कै कैतौ माहाजनां के माल का रुपीया माहाराज के खजांने से देवो कै भादराजण से फोज उठाय लेवौ । सु भादराजण वाळा माल देदेसी । तरै भादराजण सूं फौज उठाय लीवी । पटो जिलौ जबत हौ सु पाछौ लिखदीयौ । तरै भादराजण वाळां फतैपुरीयां रौ माल सारौ देदीयौ ।[8]

---

१. ग. विना खून (अधिक)

---

1. परन्तु आगे से उनकी इच्छा के अनुसार चलने का बंधन स्वीकार करके नहीं आना था । 2. नुक्सान पहुंचाने का अवसर आया नहीं । 3. स्वीकृति दी । 4 इन पर मेहरवानी वढी । 5. पूरा ममत्व था । 6. फौज की चढाई हुई । 7. वम्बई । 8. पूरा माल वापस लौटा दिया ।

मालानी इलाके के जमीदारों का उपद्रव

संमत १८६१ रा मा तथा फागुण में मालांणी इलाका रा जमींदार भोमोया चोरी धाडौ सिंध गुजरात वगेरै इलाकां में करै जिण री वडे साहब बाहादुर हजूर नै कैवायौ कै इनका बंदोवस्त ररौ। या ये लोग बिगाड़ करै जिसका अैवज वसूल करौ।[1] नहि तो हमारी सिरकार इनकु सजा देवै जिस में आपकी फौज हमारे सांमल रखो। तरै लाडणू रा जोधा परतापसिंघजी नै जाळोर रा हाकम नै फौज दे मेलीया। सिंध गुजरात गैर इलाका रा साहब बाहादुर सांमल हुय वाडमेर डेरा कीया। वाडमेर रा सिरदारां नै मुलाकात वास्तै बुलाया सु दगौ कर सारां नूं पकड़ लीया।[2] बेड़ीयां घाल कछभुज पोंचता कीया।[3] बाहाडमैर में सायब बंगलो वणायौ नैं लोक उठै राखीयौ। जौधपुर री सिरकार री फौज-बळ[4] जसोल, गुड़ै, नगर, वाड़मेर वगेरै में रुपीया १२०००) बारै हजार कदीम सूं लागता[5] सौ अंगरेजां कयौ कै हमारी सिरकार की मारफत अै रुपीया जोधपुर खजांनै वरसा-वरस[6] पोहोंथ जासी नै मांलांणी मै दिवांणी फौजदारी तेहसील वगेरै रौ कबजौ अंगरेजी सिरकार कीयौ।

संमत १८६२ रा पोस महीने में जोसी सिंभूदतजी, भंडारी लिखमीचंदजी नै भीवनाथजी कैद कराई[1] सलेमकोट में

वड़े साहब का जोधपुर आना और चाकरी के घोड़ों का मामला—

संमत १८६२ रा वडा सायब वाहादर रो सिक तिर विलियेम सायब वाडमेर सूं अजमेर जातां जोधपुर आया सु सूरसागर डेरौ दिरायौ। फतेपोळ कनै धायभाई री हवेली में सायब वाहादुर री मुलाखात करणनै श्री हजूर साहबां री असवारी पधारी।[2]

---

१. ख. आगे फौजराज कुसलराज कैद में वैठा ईज था। काम इखतियारी हरखचंद उदैमिंदर रै कांमदार री नै सिंघवी फतेराजजी सूं मारवाड़ रौ कांम हुवै। फौज-खरच रा रुपिया मुसायब बड़े साब नूं देणा कर दिया था सो हरकचंद वसूल किया नहीं। सो संमर नांवां दरीवा जब्त.... । (अधिक)

२. ख. भटियाणी चौक (अधिक)

---

1. ये लोग जो नुक्सान करते हैं उसका हरजाना भरो। 2. धोखे से सब को पकड़ लिया। 3. पहुंचा दिया। 4. फौज-खर्च के लिये लगाया जाने वाला कर। 5. पहिले से ही लगते थे। 6. प्रति वर्ष।

संमत १८८६ मैं अंगरैजी सिरकार री चाकरी मैं घोडा १५०० पनरैसौ राखणा ठेहरीया था ।[1] घोड़ा मेलीया सु बरस १ अेक तौ राखीया नै पछै अंगरेजां रै घोड़ा पसन आया नहीं ।[2] तरै घोड़ां नै सीख दोवी । सो घोड़ां री चाकरी रा रुपीया मांमला भेळा[3] ठेहराय देण रौ तिर विलियेम साहब बाहादुर कांमैतीयां सूं सवाल कीयौ । सौ भीवनाथजी आपरो कांम सावत वणीयौ राखण मुदै[4] घोड़ां री चाकरी रा रुपीया ११५०००) अेक लाख पनरै हजार बरसा-ब्रस[5] देणा ठेहरीया जद सुं अै रुपीया सरू हुवा । पैला दिखणीयां नै[6] १०८०००) अेक लाख आठ हजार मांमला रा देता, जिकै ही अंगरैज लेता हा ।[7]

अेरनपुरा की छावनी स्थापित होना—

सीरोही नै गोढवाड़ जाळोर री चोरीयां रा मुकदमां बाबत नीमच री छावणी रा साहब करणेल ईसपीयर सायब बाहादुर सरहद ऊपर आया । सीरोही रौ दीवांण मयाचंद नै सिंघवी खूबचंद आया । नै अठी सूं गोढवाड़ रौ हाकम जोसी सांवतरांम नै जाळौर रौ हाकम भंडारी लालचंद गया । आपस में चोरीयां रौ फेसलो हूवौ ।[१] पछै साहब बाहादुर कयौ-कै जोधपुर सीरोही की फौज दोनूं सरहदां ऊपर रखो सो चोरी का बंदोबस्त रहै । चार छव महीनां में तुम फौज नहीं रखोगे तौ हमारी सिरकार की छावणी यहां पड़ेगी ।[8] ऊदेमिंदर वाळा खरच लागण रा सबब सूं सरहद ऊपर फौज राखी नहीं । तिण सूं अेरणपुर री छावणी अंगरेजी सिरकार सूं संमत १८९२ रा बरस में घाली ।

मूहता उत्तमचंद को कैद करके मरवाना—

जोसी सिंभूदतजी भंडारी लिखमीचंदजी ने कैद हुवां पछै दिवांणगी मुसायबी वगेरै राज रौ कांम मूता ऊतमचंद हरखचंद करता । संमत १८९१ रा बरस सुं भींवनाथजी गढ ऊपर फतैमैल में रहता । सो संमत १८९२ रा वैसाख मै ऊतमचंद खावखा रा पावड़ीयां ऊपर बैठौ थौ[9] सो फतैमेहल मांह सूं भींव-

---

१. ग. रुपकारी मेणा भीलां सूं साब रै रुबरु गोढवाड़ सिरोही रै कांकड़ बडगांव कला परै ऊंदरी बिचै डेरो, फैसलो हुवै ।

---

1. रखने निश्चित हुए थे । 2. पसन्द नहीं आए । 3. कर सम्बन्धी रुपयों के साथ । 4. राज्य का अधिकार अपने हाथ में रखने के सबब से । 5. प्रति वर्ष । 6. दक्षिण के मरहठों को । 7. वही रकम अंग्रेज लेते थे । 8. हमारी सरकार यहां छावनी स्थापित करेगी । 9. ख्वाबगाह की सीढियों पर बैठा था ।

नाथजी चाकरां नै मैलीया सो ऊतमचंद नै पकड़ ऊदैमिंदर लेजाय कैद कीयौ। रुपीया दोय तीन लाख मांगीया सु पईसो अेक दीयौ नहीं तरै तसतियां दै मार नांखीयौ नै भंगीयां कनै घीसाय बारै नखाय दीयौ।[1] सु चार दिनां पछै सेहर रा माहाजनां भींवनाथजी सूं वीनती कर दाग दीयौ।[2] भींवनाथजी री अग्या सुं रुपिया ठेरै बुडसू रौ पटौ लिखीजियौ।

संमत १८६२ रा असाढ में सिंघवी फौजराजजी रै रुपीया दोढ लाख ठेहर सीख हुई। पैली किस्त रा रुपीया ७५०००) पिचतर हजार भरीया। वगसीगीरी हुई। दूजी किस्त सजी नहीं तरै गढ ऊपर वाभा लालसिंघजी रै डेरै जाय बैठा। हरकचंदजी सूं ढव हौ[3] सो सरणै बैठा। कांम बगसी रौ करबौ कीया। सिंघवी कुसलराजजी रै रुपीया ६५०००) पचांणू हजार खरा ठेहरोया। पैली किस्त रा रुपीया ४७५००) सैताळीस हजार पांच सौ वाळी वीटी वेच नै भरीया।[4] लारली किस्त सभी नहीं[5] तरै जांमनी आहोर खेरवौ अर लाडणू रो दिराई। सु लारली किस्त सभी नही तरै मेगराजजी, कुसलराजजी, सुखराजजी, आहोर री हवेली जाय बैठा। सो बरस दोय ऊठे रया। हजूर री मरजी ऊपरांत भींवनाथजी कैद कराई ही जिण सूं पछे विसेस खंच आहोर री हवेली बेठां सूं हुई नहीं। मरजी रौ इसारो रहबो कीयौ।[6]

भींवनाथ की मृत्यु और लिखमीनाथ का दखल

संमत १८६४ रा असाढ वद ७ नै भीवनाथजी ऊदैमिंदर मैं चलिया। भीवनाथजी रो कांमेती मुहतो हरखचंद आहोर री हवेली सरणै जाय बैठो नै आयसजी लिखमीनाथजी वीकानैर रो गांव पांचुहा सुं माहामिंदर आय बैठा। भींवनाथजी री अेवज लिखमीनाथजी री अग्या राज रै कांम में वरतीजी।

पछै भाद्रवा सुद ६ नम गढ ऊपर लिखमीनाथजी आया तरै मेगराजजी कुसलराजजी नै सुखराजजी नै ही हजूर गढ ऊपर बुलाय लिया। भाद्रवा सुद १३ तेरस परबतसर मारोठ री हाकमीयां इनायत कीवी नै आसोज में दूजी किस्त बाकी थी जिका कबूलायत[7] ढोलीया रा कोठार सूं मंगाय नै श्रीहजूर सूं कुसलराजजी नै इनायत कीवी।

---

१. ख. कांमकाज में धांधल केसरीसिंघरी पिण पंचायती। (अधिक)

---

1. घसीटवा कर बाहर डलवा दिया। 2. दाह संस्कार किया गया। 3. अच्छे सम्बन्ध थे। 4. छोटे बड़े सब गहने बेचकर भरे गये। 5. बाद की किश्त भर नहीं सका। 6. महाराजा की कृपा का संकेत उन्हें मिलता रहा। 7. रुपये का खत।

महामारी का प्रकोप और जन-हानि—

संमत १८९२ रा ऊनाळा में मरी पड़ी ।[1] घणा महीना रही । आदमी हजारां मर गया । पीठ विखर गई ।[2] संमत १८९३ रा भादरवा सुद ५ पांचम सूं लगाय फागुण सुदि १५ पूनम तांई खास जौधपुर में मरी पड़ी ।[1]आदमी लुगायां टाबर कर बाईस हजार आसरै मूवा । ताव[3] चढतौ नै साथळ[4] रै तथा गळा रै हरेक जागा डील मै अेक गांठ ऊपड़ती । पासळी मै पीड़ ऊठती[5] खंखार में लोही आवतौ दोय तीन दिन में मर जातौ । जिणरै घर में मरो आवतो तरै पेली ऊंदरा मरता ।[6] जमांनो आछौ हुवौ । गोहूँ रुपीये अेक १) रा ।।।) (३० सेर) बाजरी १) (मन) विकती । घ्रत ३ (सेर) विकतो ।

जोशी शम्भुदत्त की मृत्यु और लिखमीचंद को दीवानगी का पद मिलना—

संमत १८९३ रा जेठ सुद १० जोसी सिंभूदतजी सलेमकोट में चलिया सु चांवडा माताजी रौ भुरजकांनी ऊतारीया ।[2] संमत १८९४ रा असाढ में भंडारी लिखमीचंदजी कैद में था सु धांधल केसरीसिंघजी री अरज सूं सीख हुई । दीवांणगी रौ कांम सूंपीजीयौ ।[3]

नाथां रा कांमैतीयां आगे कांम चालीयौ नहीं जिणसूं बाभा वभूतसिंघजी री हवेली सरणै जाय बैठा ।

अंग्रेजों द्वारा सांभर व नांवा के दरीबे जब्त करना—

मांमला रा रुपीया पोता नही[7] तिण सुं दरीबो सांभर अंगरैजां जवत कर अंगरेजी सिरकार सूं आदमी मेल दीया । केई दिनां पछै अंगरैजां दरीबो नांवो फेर जवत कर लीयौ ।

---

१. ख. गुजराती रोग बरतियौ....पैला बीमारी पाली में आई । भादवा में जोधपुर में आई छ महीना तक रही ।

२. ग. लार वेटा परभूलाल वगेरे सुधारौ आछो कियो । (अधिक)

३. ख. म्हने धणी दीवाणगी देवै तो 2 लाख रै जमा इनामत है सो उगाय हाजर करसूं । इण ताछ बूतो दे बारे आय थोड़ा दिन दीवाणगी की, पण काम बणियो नहीं ।

---

1. महामारी आई । 2. जनता तितर-वितर होगई । 3. बुखार । 4. जांघ । 5. पसली में दर्द उटता था । 6. पहले चूहे मरते थे । 7. कर सम्बन्धी रुपये नहीं भरे गये ।

संमत १८६४ रा वैसाख सुद ७ सातम ग्रोसीयां रा पांचमा भटियांणीजी रै कंवरजी श्री सिधांनसिंघजी जनमीया। मुलक में घणी कुसी हुई।[1]

महामंदिर के नाथों का राज्य-कार्य संभालना—

संमत १८६५ रा भादरवा सु कांम में मालकी माहामंदिर री हुई। लिखमीनाथजी रौ कांमेती जसरूपजी मुसायब भीवनाथजी रा कांम में खवास पासवांन मुतसदी मनीजता जिणां नै माहामिंदर वाळां कैद कराई। तिणां री विगत—

१ खीची जूंझारसिंघ।

१ धांधल पीरदांन, ग्रमरजी, लालजी वगैरै।

१ ग्रासोपो ऊतमरांमजी भांनीरांमजी।

१ ग्रासोपा सवाईरांमजी।

१ व्यास गुमांनीरांमजी तौ हाथ ग्राया नहीं नै बेटा दोय नै कैद हुई।

१ धांधल केसरोजी गांव हौ सो चढ नै चारणां रै गांव[2] ऊजळां जाय बैठौ।

ग्रोधा खिजमतां[1] माहामिंदर री मारफत हुवां, तिण री विगत—

१ किलेदारी धायभाई देवकरण नै सांमल[2] जसरूप रा बेटा बछराज नै राखीयौ।

१ अंगरेजां री उकीलायत कुंबट किलांणदास रै हुई।

जसरूपजी रा सासरां रै भाईपौ थौ सु फौजबंधी रौ दुपटौ पंचोळी काळूरांमजी रै। सांढीयां री दरोगाई धायभाई देवकरण रै। कपड़ां रै कोठार री दरोगाई खीची ऊमेदजी रै।

संमत १८६५ रा मिगसर मै फतैपोळ री स्याही री खरची सांवठी चढै।[3] सु सारा परदेसी मिळ दौढी ऊपर सिणगार चौकी नै गढ री पोळां धरणै

---

१. ग. मारवाड़ रा घर घर में हुई।
२. ग. चौपासणी पछै। (ग्रधिक)।

---

1. पद तथा कार्य ग्रादि। 2. साथ में। 3. फतैपोल पर रहने वाली फौज की काफी तनख्वाह चढ गई।

बैठा। तरै श्रीहजूर सूं हुकम हुवौ के ज्युं ऊतरै ज्युं नीचा ऊतार दौ। तरै किला रा खवास पासवांन मुतसदीयां रा आदमी भेळा कर परदेसी दोय सेक सिरणगार चोकी बैठा हा जिणां नै गोता दे[1] गढ सूं नीचा ऊतार दीया। ने बंगाई हा जिणां रा नांवा काट दीया।[2] नै बाकी रां री खरची नीसरी सु चुकाय दीवी।

विद्रोही चांपावत चिमनसिंह के विरुद्ध कार्यवाही—

हरसोळाव री भायप में गांव खोखरी रौ चांपावत चिमनजी मुलक में धोड़णौ सरु कीयौ।[3] पांच सौ सात सौ घोड़ा चोरां लूंटेरां रा भेळा हुय गया। कोट सौलंखीयां रै ढांणा[4] में रहै। गैर इलाकां री कतारां खोसै।[5] तिण री वडा साहब कनै फिरियादां जावै। सायब उकीलां सूं ताकीद करै। उकील जोधपुर लिखै, पिण क्यूं ही बंदोबस्त हुवै नहीं। अर अंगरेजां रा मांमला रा रुपिया चढै जिकै ही दिरीजै नहीं। दिवांणगी सिंघवी गंभीरमल, बगसी सिंघवी फौजराजजी करै। सिरदारां में कुचांमण रणजीतसिंघजी नै भादराजण बखतावरसिंघजी पंचायती में। नै मुख सारा कांमरा।[6] मालक माहामिंदर रा कांमेती जसरूपजी।

भाटी शक्तिदान का असंतुष्ट सरदारों को लेकर अजमेर जाना—

साथीण रा ठाकुर भाटी सगतीदांनजी वहोत हुसीयार हा सो ऊणां सारां सिरदारां सूं खैवट करी।[7] नै कह्यौ–कठाक तांई बैठा भूखां मरसां[8] सारा भेला होय नै ऊदम करौ तरै सारा आऊवै भेळा हुवा। पोहकरण, आऊवो, रास, नींबाज, चंडावळा, हरसोळाव, वगैरै सारा सिरदारां रा कांमेतीयां नै लेनै सगतीदांनजी अजमेर गया। नीवाज ठाकुरां री तरफ सूं काका सिवनाथसिंघजी नै वासणी रो कूंपावत करणसिंघ वगैरै अजमेर गया। रजवाड़ां रा ऊकीलां में बीकानेर रौ ऊकील हिंदूमलजी वडा साहब कनै सरफराज हो। सौ सिरदारां रा ऊकील हिंदूमलजी सूं मिळिया। हिंदूमलजी पूरी मदत बंधाई।[9]

---

1. उल्टा सीधा समझा बुझाकर। 2. नौकरी से अलग कर दिया। 3. लूटपाट करनी प्रारम्भ की। 4. पहाड़ में सुरक्षित स्थान। 5. दूसरे इलाकों से सामान की जो कतारें आती हैं उन्हें लूट लेता है। 6. सारे कार्य के मुखिया। 7. बातचीत की। 8. कब तक यों बैठे-बैठे भूखें मरेंगे। 9. सरदारों की पूरी मदद की।

बड़ा साहब सदर लेन साहब नै छोटा लडलू साहब बाहादुर हा । सगतीदांन जी वगैरे साहब बाहादुर सूं मिळीया नै राज री चौड़े नालमां कीवी[1] कै नाथ मुलक खावै है । कांम विगाड़ै है । सारां जमींदारां नै काढ दीया है । कदीमी सुतसदी खास पासवांन हा जिणां नै केद कीया है । चोर धाड़वी मुलक लूटे है । रईयत माहा दुखी हे । आप मुलक रा बादस्या हौ सो आय पधार नै समजास कर[2] राज रौ सालीको लगाईजै । नाही तो म्हांरौ दाईयौ लागै है[3] सो म्हे मारवाड़ में विगाड़ करसां ।[4] नै मुलक सूनो करसां ।

कुंबट किलांणदास उकील गयौ तिण सूं सगतीदांनजी कयौ कै औ माहामिंदर रा कांमेती जसरूप रो साळौ[5] है । जद साहब बाहादुर नाराज हूय नै ऊकील किलांणदास नै काढ दियौ । सिरदारां रा कांमैतीयां नै कह्यौ–हम जोधपुर चलेंगे । तम सब सिरदारां कूं लिख दो सो जोधपुर आवै ।

आऊवा वगैरे कितराक सिरदारां डेरा गांव चोपड़ै कीया ।

चांपावत चिमनसिंह का अंग्रेजों से मुकाबला व मारा जाना

चिमनजी चांपावत नै भांगेसर रौ भाटी नाराणदास वगैरे बारोटीया कोट रै । ढांणां में रहता नै मुलक लूंटता । जिणां ऊपर नवेनगर[6] नीमच, नसीराबाद. अैरणपुर री छावणी सूं लोक आयौ[7] सौ च्यारु तरफ सूं भाखर ऊपर लारलो रात रा चढ गया । सो कितराक बारोटीया तौ नास गया । चिमनजो वगैरै घणा आदमी कांम आया । ढांणौ भिळ गयौ ।[8] गांव कोट जबत हूवौ ।

कर्नल सदरलैन्ड का ससैन्य जोधपुर आना—

संमत १८९५ रा चैत में वडा साहब बाहादुर करनेल सदरलेन साहब नै छोटा सायब कपतांन लडलू साहब वाहादर घोडा २०० दोय सौ, पाळा ५०० पांच सौ सूं जोधपुर नै रवांनै हुवा । २२ बाईस रजावाडां रा उकील साथै था[9] कितराक सिरदार मारग में साहब बहादुर रै सांमल हुवा ।

साहब बाहादुर री पेसवाई में दीवांण सिंघवी गंभीरमलजी वगसी सिंघवी फौजराजजी, कुचांमण भादराजण रा सिरदार वगैरै गांव डीगाड़ी तांई गया ।[10]

---

1. शिकायतें को । 2. अच्छी तरह समझा–बुझा कर । 3 हमारा हक लगता है । 4. नुकसान करेंगे । 5. साला । 6. ब्यावर । 7. फौजें आई । 8. फौजों ने अपने अधिकार में कर लिया । 9. रियासतों के वकील उनके साथ थे । 10. डीगाड़ी ग्राम (करीब 6 मील पूर्व में) तक अगवानी के लिये गये ।

साहब बाहादुर रा डेरा राईकेबाग सोभतीया दरवाजा बिचै हुवा। साहब बाहादर रां डेरां रै नजीक सारा सिरदारां रा डेरा हुवा[१]। पोहोकरण सूं बभुतसिंघजी पिण आया। साहब बाहादुर हाथी असवार हुय गोळ री घाटी हुय चेत सुद ६ छठ गढ ऊपर गया। श्री हजूर साहब खासै विराज लखणा पोळ जैपोळ बीचले चौक तांई सांमा पधारीया।[२] तोपां री सिलकां हुई।[1]

दूजे दिन श्री हजूर चैत सुद ७ सातम वडा साहब बाहादुर पोहोकरण री हवेली कनै गोरांधाय[2] री बावड़ी है। जठा तांई सांमा आया। वडासाहब बहादुर री उकीलायत कुचांमण रा ठाकुर रणजीतसिंघजी नै सिंघवी फौजराजजी री मारफत लोढा राव रिधमलजी नै हुई। सिरदारां सुं जवाब करण वास्तै साहब बाहादुर कनै सिंघवी गंभीरमलजी दीवांण नै फौजराजजी बगसी नै उकील रिधमलजी, सिंघवी कुसलराजजी जावै। नै फेर जनांना कांमदार मूतौ गाढमल, छांगांणी नथू, मूंतो मनोहरदास, बछराज वगेरै जावै। साहब बहादर जमीदारां रै, फैसला रो नै चोरी धाड़ा रै बंदोबस्त रौ गैर इलाकां रा मुकदमां रा फैसला, मांमला रा रुपिया वसूल करण रौ, नाथां रौ जुलम बंध करण रौ, राज रौ कांम रौ सालीकौ[3] वगेरै नै माहामिंदर रा कांमेती जसरूप नूं काढ देण रौ[4] कयौ। तरै सिरदारां बारलां सायब बहादुर सूं अरज कीवी कै फौज–राज कुसलराज नूं ही नीकालीयां राज रौ परबंद बंधसी।[5] तरै इणां ने ही निकाळण रौ साहब बहादर कह्यौ। तरै फौजराजजी कुसलराजजी आप–आप री हवैलीयां में जाय बसै रया।[6]

वैसाख सुद ७ सातम नै माहाराज कवार सिधदांनसिंघजी देवलोक हुय गया। तिण री उदासी मुदै पांच सात दिन कांम बंध्र रह्यौ।

पछै बारला सिरदार भाटी सगतीदानजी, नीबाज रा सिवनाथसिंघजी, चंडावळ रा उकील दौलजी, खींवसर रौ भांनजी, इणां नू श्रीहजुर सायब नू केवाय नै गढ ऊपर बुलाया। तरै सिरदारां गांव लिखावण री फरदां दीवी।[7]

---

१. ख. मारवाड़ में जलंधर रोग लगा है सो आप जेड़ा डाकटर होसी तो मिटसी। (सरदारों ने कहा) आदि।

२. ख. तीन चार हजार आदमियां री भीड़ा-भाड़ हो गई।

---

1. साहब के सम्मान में तोपें छोड़ी गई। 2. महाराजा अजीतसिंह की धाय गोरां की बनाई हुई बावली। 3. राज्यकार्य की समुचित व्यवस्था। 4. निकाल देने का। 5. राज्य का प्रबंध जमेगा। 6. बैठ गया। 7. जागीर में गांव लिख देने के लिये सूचियां दी।

जिण मुजब पटा लिखाय खास दसकत कर दीया ।[१] सिरदारां आ बात मंजूर करी नै साहब बाहादुर मूं इतला करी । सो साहब बाहादुर नाथां रा प्रबंध रौ नै मांमला रा रुपीयां रौ कयौ । नाथां रा परबंध री बात मरजी में आई नही ।[1] तरै सायब बहादुर खफा हुय नै चढ गयौ ।[2] न कयौ फौज लेकर आवेंगे ।

सायब बहादूर रा डेरा गांव झालामंड हुवा । नै प्रथम जेठ वद में श्रीहजुर सायब मनावण नूं[3] पधारण री विचारी सो मूंता जसरूपजी वगैरां री अरज सूं बात मोकुब रही ।[4] जनांना कांमैती मूंतो गाढमल, छांगांणी नथू वगैरां नू झालामंड मेलीया सु साहब बाहादर मूंढै लगाया नहीं ।[5] खफा हूवौ ।

बारला सिरदार सारा सायब लारै चढ गया । झालामंड सूं गांव पाल्यासणी डेरा हुवा । पछै कापरड़ै हुय बीलाडै डेरा हुवा । भाटी सगतीदांनजी सिवनाथजी साहब बाहादुर सूं अरज कीवी कै हम भूखां मरते हैं, क्या करैं ? तरै सायब कयौ तुमारा जौ कदीम सूं दस्तुर हुवै सो करौ ।[6] अर हम फौज लेके आवैंगे[२] जब फैसला हुय जायगा । साहब बाहादर नै नींबाज गोठ दीवी । साहब अजमेर गया । राज री स्याही रा परदेसी ५०० पांच सौ सात सो तो पांले ने सिरदारां सांमल खरची चढती थी तिण सुं हूवा सिरदारां गांव बीलाडा रा माहाजनां कनै रुपीया २००००) बीस हजार लीया[३] नै फेर गांव भावी, खारीयो, मालकोसणी, चांवडीयौ वगैरै सारा गांवां कनै सूं रुपीया लीधा । आपरा दाईया रा गांव[7] हा सु दाव लीया । उकील राव रिधमलजी अेक मजल सायब रै लारै वेहेवौ किया । अजमेर पोता, डेरौ सेर बारै राखीयौ । साहब उकीलां सूं मुलाकात करै नहीं ।[४]

१. ख. ख्यात में लिखा है कि बाहर के सरदार शक्तिदान वगेरे की दलीलें ठीक रहीं तब हजूर ने कहा कि खिरणी का हिसाब लगाओ और इन जागीरदारों के पट्टे कर दूंगा । नाथों से कांम हटाने के मामले का स्पष्ट जवाब महाराजा ने नहीं दिया ।

२. ग. 4 महीने के बाद जोधपुर आवेंगे और नाथों वगेरे बदमाशों को सजा देंगे ।

३. ख. ख्यात में लिखा हैं कि यह रुपया सदर लेन्ड की स्वीकृति से उगाया गया (पृ.101 A)

४. राव रिधमल ने पोकरण ठाकुर वगेरे से अरज की कि आपके रहते मारवाड़ की बात बिगड रही है सो साहब को समझा कर वापिस लाओ । फिर नीबाज वगेरे से बात हुई । भाटी शक्तिदान ने आखिर में जबाब दिया कि रिधमल तुम्हारे हाथ में कुछ है नहीं, मारवाड़ मेंतो जसूत करेगा वह होगा । फिर रिधमल लोट गया । (पृ 101 B)

1. नाथों का राज्य कार्य में हस्तक्षेप कम करने की बात महाराजा को उचित नहीं लगी ।
2. नाराज होकर विदा हो गया । 3. साहब को मनाने के लिये । 4. स्थगित रही ।
5. साहब ने उनसे बात तक नहीं की । 6. परम्परा से तुम्हारे यहां जो रीति है वही करो । 7. जिन गांवों पर उनका दावा लगता था ।

मूतौ जसरूप कांम री मुकत्यारी करता ज्यूं कीयां जावै । पिण गढ ऊपर कम आवै । आप थकौ[1] खीची उमेदजी नै हजुर में राख दीयौ । सु उणां हस्ते कांम कढावणौ हुवै सो कढाय लेवै ।[2] आसोप रा ठाकुर वखतावरसिंघजी चल गया । तिणां रै खोळै[3] सिवनाथसिंघजी बैठा । तरै वासणी रौ कूंपावत करणसिंघ असौप खोळै बैसण मुदै आपरा भाई बखतावरसिंघजी सांवतसिंघजो साथै आदमी छव सौ–सात सौ नै तोपां दोय खेजड़ला री दे नै आसोप में अमल करण नै मेलीया । भांटी सगतीदांनजी ऊदावत सिवनाथसिंघजी री सला सूं सो आसोप मांहला ही संभ गया ।[4] दुतरफी तोपां बंदूकां छूटणी सरू हूई । पोहोकरण वभूतसिंघजी, आऊवा रा कुसालसिंघजी, रास भीवसिंघजी बडा साहब बाहादर नूं वाकब कर[5] सायब बाहादुर रा घोड़ा नै तीनु सिरदारां रा घोड़ा आसोप घेरौ ऊठावण मुदै मेलीया । श्रीहजूर सुं पिण घोड़ा आदमी मेलीया सो घेरो उठाय दीयौ । ने ठाकुरांणीयां राजी हुय नै गांव हींगोली रा कूंपावत मोहवतसिंघजी रा वेटा सिवनाथसिंघजी नै खौळै लीया था जिण नै श्रीहजूर सू आसोप लिख दीवी ।[5]

महाराजा द्वारा अंग्रेजों की बकाया रकम भरने के लिये गहने आदि भेजना—

श्रीहजूर सूं पिडां रौ[6] जवाहर तथा सारा जनांनां रौ जवाहर गैणौ[7] मांमला रा रुपीयां पेटे देण सारू[8] दीवांण गंभीरमल नै आहोर रै ठाकुर सगतीदांनजी, खजांनची व्यास सुरतरांम नं अजमेर मेलीया, खलीतो देय नै । सो अजमेर मदार दरवाजे ऊकील रिधमलजी रै सांमल डेरा कीया । वारला सिरदारां रा डेरा बडा साहब रा बंगला सूं नजीक था । वड़ा सायब दीवांण गंभीरमल उकील रिधमल रै डेरै मुनसी आगाज्यांन नै मेल नै कैवायौ कै हमारे इलाका मांय सूं चले जावौ । तरै दीवांण नै उकील नै ठाकुर आहौर अै सारा श्री पुसकरजी तथा थांवळे उरा आया ।

कुचांमण नै भादराजण रा ठाकुर पिण वडा साहब जोथपुर सूं रीसाय नै[9] चढीया था जद सूं श्रीहजूर रा फुरमावण सूं अै ही अेक–अेक

१. ख. ख्यात में लिखा है कि मांजी खंगारोतजी ने पोकरण ठाकुर वभूतसिंह को लिखा कि हमारा किया हुआ खीळा (गोद) लोग उठाते हैं तब वभूतसिंह खुसालसिंह वगेरे ने भाटी सगतीदांन को उल्हाना दिया। (पृ. 102 B)

1. अपनी ओर से। 2. अपना काम निकलवा लेता है। 3. गोद। 4. मुकाबला करने को तैयार हो गये। 5. परिस्थिति से अवगत करवा कर। 5. महाराजा ने उसे आसोप का पट्टा लिख दिया। 6. अपना निजी। 7. रानियों आदि के जवाहरात व गहने। 8. चुकाने के लिये। 9. नाराज होकर।

मजल री छेती सूं लारै वेहता था[1] सो सायव अजमेर गया जद अै दोनूं सिरदार थांवळै रया। जिणां सांमल दीवांण नै उकील थांवळै गया। पछै दिवांण नै ठाकुर आहोर, नै खजांनची जवाहर पाछौ ले जोधपुर आया।[१]

संमत १८९६ रा सांवण वद २ दूज बडे साहव बाहादर आंम दरबार कीयौ। नै बारलां सिरदारां नै[2] कयौ कै हमारी फौज जोधपुर जायगी अर नाथां कुं पकड़ेगी। माहाराज से जंग कर किला खाली करावेगी। अर माहाराज से जंग कर राज–गादी[3] तै दूर करेगे। सौ जंग की वखत तुम किस की तरफ रहोगे।[4] तरै सारा सिरदारां री तरफ सूं भाटी सगतीदांनजी कयौ के माहाराज साहव आप से जंग करे नहीं अर नाथ भाग जासी रकदास[5] माहाराज सायबां रै सरीर ऊपर हीज तकलीफ पड़ी[6] तौ उण वखत जिण में राजपूती होसी जिकौ तो माहाराज साहव रा मूंडा आगै माथौ देसी।[7] तरै इण वात सुं सायव खुसी हुवा। अै समाचार मालम हुवा तरै श्री हजूर सगतीदांनजी री तारीफ फुरमाई। पछै सांवण वद १० दसम नै भाटी सगतीदांन जी तौ अजमेर में चल गया।[२]

संमत १८९६ रा सांवण सुद १५ पूनम नै अजमेर रा डेरां बड़े साहव बाहादुर ईस्तीयार सारा रजवाड़ां में जारी कीयौ, तिण री नकल—

'लारड गवरनर' जनरल साहव बाहादर मालक मुलक हिंदसथांन हिंद की तरफ सै मारफत करनेल ज्यांन सदर लेन साहव बाहादुर की तरफ से रजवाड़ा कै वंदोबसत वास्तै ज्यां नसीन है।[8] वास्तै खबर देणे सारै रईसां अर रईयत मारवाड़ के लिखा हूवा तारीख १७ अगस्त संन, १८३९ ईसवी मुकांम नसीरावाद, माहाराजा श्री मांनसिंघजी नै करीब पांच बरस के अरसे से अेहद अर करार अपणौ जो सिरकार अंगरैजी साथ रखते थै सो अपणी बुध की राहा से[9] अपना अेकराहा मुकरर करके तोड दीया और इस जोधपुर के सवाल जवाब से तदा रुक अर वंदला जो के सिरकार नै वखत पर मांगणै में गाफली[10] नहीं कीया अर सिरकार का कह्या नही हुवा अवल अैहदनांवा की लिखावट मुजब सिरकार

१. ख. ख्यात में एक लाख की हुंडी भेजने का भी उल्लेख है। (पृ. 102A)
२. ख. दाग पुस्कर में हुअों। बड़ा साहव केयौ कै सगतीदांन बड़ा हुसियार आदमी था। अब हमको मारवाड़ का इन्तजाम करणे में बड़ी तकलीफ होगी (पृ. 104 A)

1. पीछे-पीछे चलते थे। 2. मारवाड़ के असंतुष्ट सरदारों को। 3. राज्य-गद्दी। 4. युद्ध के समय तुम लोग किस के पक्ष में रहोगे। 5. कदाचित। 6. महाराजा की जान को जोखिम हुआ। 7. महाराजा के सामने उनकी रक्षा के लिये अपना मस्तक देंगे। 8. मुकर्रर हैं। 9. अपनी मरजी के अनुसार। 10. गफलत।

के हक के रुपईयै दोय लाख तेईस हजार २२३०००) बरसोंद का[1] मुकरर है जिसका कुल आज तक १०१६१२८६=)दस लाख ऊगणीस हजार अेक सौ छीयासी रुपीया दोय आंना हुवा। सो आज तक वसूल नहीं हुवा। दूसरा, औरां इलाकों का रेहणे वाळां का नुखसांण मारवाड के मुलक में बेबंदोबस्ती[2] के वखत हुवा अर गिणती ऊसकी लाखां कूं पौहोची। सो उस नुकसाण का अेवज[3] वसूल नहीं हुवा। तीसरी, मुकरर करणा अेसे बंदोबस्त का कै वो बंदोबस्त रईयत कूं पसंद होवै। और ऊसमें मुलक मारवाड में सुख अर चैन होवै। और औरां इलाकां कूं तथा बौपारी के माल कूं और मुसाफरां कूं जुलम और ज्यादती बंदोबस्त करणै वाळां की असमरथाई[4] से और मारवाड कै रहणै वाळों की हरांमजादगी से पोंहोचनी है सो ऊस में बचाव हुवे सो नहीं हुवा।[5] इस सूरत में लारड़ गवरनर जनरल साहब बाहादुर हिंद के ऊपर वे ही बाजब हूवा कै रईस मारवाड से अपणे हक अर दावां कूं जोर से लेणे वास्तै[6] हुकम दैवे। मुलक मारवाड में फोज भेजणे वास्तै। इस वासतै तीन कंपू[7] सिरकार अंगरैजी की फौज से तीन तरफ से मारवाड़ के मुलक में दाखल होकर जोधपुर जावेंगै। अर भगड़ा सिरकार अंगरैजी का माहाराजा श्रीमांनसिंघजी से अर उणां के कांमैत्यां से है। मारवाड की रईयत से नहीं है। इस वासते रईअत मुलक मारवाड़ की दिल जमई रखे[8] अर जब तक रईयत भचकूर[9] सिरकार की फौज से दुसमणी नहीं करेगी तब तक सिरकार उस रईअत के माल अर जीवां की प्रतपाल[10] अपणी रईयत जैसी रखैगी। और हरेक कंपू में बंदोबस्त सिरकार का अेसी खूबी के साथ होगा कै रईयत के लोग अपणै—अपणै घरां में अर अपणै-अपणै कांमां में अेसी खूबी के साथ रहेगा के जैसे फोज नहीं आणे के बखत में खुसी रहै।[11] फकत—।

और ३ कलमां री फरद जुदी लिखी री नकल पैली बार सदर लेन सायब जोधपुर आया था जदरी अठै हमें लिखी—

सिरकार अंगरैजी का दावा कै तगादा की कलमां जो माहाराज मांनसिंघजी ऊपर है तारीख ४ अपरेल सन १८३६ ईसवी हिंदवी में संमत १८६५ रा चैत सुद ५ पांचम नू जोधपुर के मुकांम सदर लेन साहब कलमां लिख सूंपी थी जिण रौ जबाव माहाराजा साहब श्रीमांनसिंघजी कुछ दीया नहीं। विगत

1. प्रति वर्ष का। 2. प्रशासन की ढिलाई। 3. हरजाना। 4. असमर्थता। 5. दुर्नीति से वचने का उपाय नहीं निकाला गया। 6. जबरदस्ती से लेने के लिये। 7. कम्पनियें, सेनायें। 8. आश्वस्त रहे। 9. जानबूझकर। 10. देखरेख, सुरक्षा। 11. जैसा कि साधारण समय में लोग रहते हैं।

कलमां री:- कलम पैली-जोधपुर का मुलक में अेसा बंदोवस्त होवे कै उससे बिलकुल अमन बेहतरी हुवै ।[1] अर आयंदे कूं निगैवांनी[2] गैर के मुलक बोपारी मुसाफरां की अर चोकसी अर उण कै माल सौदागरां की चाहीये । अर अमन-आमांन निगै कराकै मुलक कै रहैणे वाळा कूं जो मुलक मारवाड की सरहद सूं मीला है जैसौ कै सिंध, वा जंसलमेर, वा बीकानेर, जैपुर, किसनगढ, अजमेर, उदैपुर, सीरोही, पालणपुर वगैरे के चाहीये। किस वासतै अै सब रीयासतें हिफाजत हीमायत सीरकार कंपनी कै नीचै है ।[3] कलम दूजी-तदारुक यानै बदला दिलाणा[4] रहैणा वाळा ऊणां मुलकां कै जो पहेली कलम में लिखा है अर वो नुखसांण जो रईयत पनाह पाणौ वाळां मुलक मारवाड कै हात सै बखत आपत री वा बेबंदोबस्ती मुलक मारवाड़ केसे हुवा चाहीयै । कलम तीसरी-अदा करणा सिरकार अंगरैजी कै रुपयां का ! बमुजब अेहदनांमा कै[5] किसत आखर कै आखर होणं रुपीया किसत कं बखत तक चाहीयै । ओर अदा करणै किसत आंयदै का मालूम होता है कै मारफत उण बंदोबसत कै जो माहाराजा सायब अब मुकरर करेंगे अच्छी तरै होगा । लेकीन अगर भरोसा सिरकार अंगरेजी कूं वासतै अदा होणै किसतां आयंदै सिरकार कै मारफत बंदोबसत मजकूर कनै होगा तौ जांमनी[6] दूसरी सिरकार अपणी तजबीज कै मुनासब मांगैगी ।

वासते फैसला करणै इण तीन कलमां के करनैल सदर लैन साहब ज्यांनसीन गवरनर जनरैल साहब बाहादुर हिंद्रसथांन कै जोधपुर आये हैं सो अै दावा सिरकार अंगरेजी का वासते फैसला करवा नै कलमां कै बसबब बुलंदी सिरकार की सारी सिरकारां पर जोधपुर कै राज कै ऊपर है ।[7] ईस वासते कै जो माहाराजा साहब पूरी दिल जमें करनैल साहब की बाबत इस बातां के कर दंगे कै फैसला इस कलमां का माहाराजा साहब कूं दिल सूं मंजूर है अर महा० साहब को ताकत जोर इंण मतलबां के दुरसती कर देंगे । पर है तो जो राहा रसम अब दरम्यांन सिरकार अंगरेजी वा राज जोधपुर के जारी है बदस्तूर जारी रहेगी । नहीं तौ करनैल साहब फिल फेर जोधपुर कै मुलक से चले जावेंगे । सवाल जबाब सिरकार अंगरैजी का माहाराजा साहब से अर उस दरबार के अेहलकारां से बंध करेंगे ।[8] बाद उसके अकत्यार नबाब गवरनर जेनरल साहब बाहादुर का होगा के कौनसी तजबीज वासतै[9] जाहर करणै पूरी हकूमत अपणी कै और वासते जांमनी लेणै इस सिरकार के हक के वसूल करणै के वासते फरमाते हैं । फ़कत-।

1. और अच्छी शान्ति की व्यवस्था हो । 2. चौकसी । 3. हिफाजत की दृष्टि से ये सभी सरकारें अंग्रेजी कम्पनी के अधीन हैं । 4. हरजाना दिलाना । 5 सन्धि पत्र के अनुसार । 6. जमानत । 7. इन कलमों (शर्तों) को कार्यान्वित करवाने के लिये । 8. सवाल जवाब करना बंद कर देंगे । 9. यह फिर गवर्नर जनरल के हक की बात होगी कि वह क्या रास्ता अपनाये ।

साहब बहादुर सिरदारां नै कयो—के भारवरदारी के वासतै[1] ऊंठ गाडी हजार २००० दोय मंगवाय दो तरै ऊंठ हजार १००० अेक तौ बीकानेर रै ऊकील हिंदुमलजी मंगाय दीया। बाकी मारवाड़ रा सिरदारां मंगाय दीया।

फौजरो अजमेर सूं कूच हुय पुसकरजी डेरा हुवा। मेड़ते २ दोय मुकांम रया। सारी तरफ सु अंगरेजां री फौज भेळी[१] हुई। कुचांमण ठाकुर रणजीतसिंघजी, भादराजण ठाकर वखतावरसिंघजी, अै वडा साहब बहादुर रै लारै लारै जोधपुर सूं गया था जिणां रा थांवळे डेरा हा सो अैही पाछा फौज रै लारै-लारै बहीर हुवा।[2] दोनू सिरदार नै दीवांण गंभीरमलजी नै रिखमलजी उकील फौज सूं कोस दोय कोस अळगा डेरा करै। नजीक डेरौ साहब करण दैवै नहीं नै सरवरा थांमै सो लेवै नहीं।[3]

संमत १८९६ रा भादवा सुद नू सिपाही जणा १० धंगाई राज में खरची चढ़ती ही जिण सूं दोढीदार पुसकरणा ब्रांमण विरधीचंद पिरोहत जिण तालकै विसून थी सो दिवांण विसून मांह सूं परदेसीयां नू खरची देण रौ विरधीचंद नू कह्यौ सो रुपीया देण री जेज करी।[4] जिण सूं विरधीचंद रौ बेटो परणीयोड़ो बरस बारै तेरै रौ हो जिण नू पकड़ खासखा पीर री दरगा सांमो महादेव रौ मिंदर है जठै सिपाई चढ गया। नै मांहलो आडो देदीयो।[5] नै ऊपर सूं हेलौ पाडीयौ अर कयौ[6] रुपीया ६०००) छव हजार खरची रा मांगां हां सु देवौ नै म्हांनु मारवाड़ बारै पोचाय देण रा पका वचन दिराय देवौ नहीं तो इस लड़का कूं हम मार नांखसां।[7] तरै रुपीया दोय हजार तांई थांमीया पिण सिपायां मांनी नहीं। नै लड़का नै मार नांखीयौ। पछै जोधा परताप-सिंघजी मिंदर रै नीसरणीयां लगाय नै पुरबीया तथा सिपाई जणा दुय लड़का नू मारण में हा जिणां नै मार नांखीया।[२] आ बात वडा सायब बहादर रै नै लसकर[8] में मालम हूई।[३]

---

१. ख. जूंझणु, फतैपुर, अेरनपुरा री तरफ सूं फौज रा डेरा मेड़ता हुआ। तोपां छोटी मोटी 40 आसरे। पाळा 10 हजार; घोड़ा 1 हजार उकीलां साथे चढिया पाळा 3 हजार। कुल आदमी 20 हजार।

२. ख. परतापसिंघ 25 आदमियां मयो सो 11 पूरबियां ने मार बाजार में नांखिया।

३. ग. तरै साब खफा हुयौ के जोधपुर में धोळै दिन मिनख मरता है। (अधिक)

---

1. फौज का भार ढोने के लिये। 2. वे लोग भी फौज के पीछे-पीछे रवाना हुए। 3. रुपये पैसे देने का प्रयत्न करते हैं सो लेते नहीं। 4. रुपये देने में विलंब किया। 5. अन्दर से दरवाजा बंद कर दिया। 6 ऊपर से आवाज देकर कहा। 7. वरना इस लड़के को हम मार डालेंगे। 8. अंग्रेजी फौज।

फौज रा डेरा पीपाड़ हुवा। श्री हजूर रा मेड़तीये दरवाजे बारै मालदहां में डेरा खड़ा कराया। आसोज वद ३ तीज डेरां दाखल हुवा। फौजराजजी सिंघवी सीख कर भादराजण गया। सिंघवी कुसलराजजी कंटाळये गया। आयसजी लिखमीनाथजी भागा सु वीकानेर रौ गांव पांचुवो[1] पटै थौ जठै परा गया नै प्रागनाथजी जालोर रै गांव कायथां गया। सदरलैन साहव बहादर रै साथे फौज दस हजार थी १०००० तिण में ५०० पांच सौ तौ गोरा था नै बाकी रा काळा था।[1] अंगरेजी फौज रा डेरा गांव दांतीवाड़े हुवा। उठै अेक मुकांम रह्यौ।

श्रीहजुर जोधपुर सूं कोस चार ४ गांव वणाड़ डेरा कीया। आसोज वद ४ चौथ रात रा विरखा घंणी हुई सो डेरा में पांणी आय गयौ तरै श्रीहजुर रथ में विराज नै श्रीनाथजी रौ मिंदर गांव में थौ जठै पधारीया। उठा सुं खलीतो लिख नै सोडा मेगजी नै वडा साहव बहादुर कनै म्हेलीयौ। तिण में लिखियो कै उकील तौ हूते झगड़े[2] ही रुके नही है सो उकील सूं मुलाखात हुई चाहीजै। तरै सायब कयौ उकील कूं भेजौ।[3] तरै उकील नै दीवांण अेक मुकांम आगे वणाड़ आय गया था सो उकीलां नै दांतीवाड़ पाछा मुलाखात वास्तै मेलीया। साहव री मुलाखात हुई। पछै साहव रौ कूच हुवौ। तरै खबर दीवी साहब बहादुर नैड़ा आया। तरै श्रीहजूर खासै विराज गांव वणाड सू कोस अेक तांई सांमा पधारीया। वडा साहव नै छोटा साहब बाहादुर घोड़चढीयां आया। टोपी ऊतार दस्ता-पोसी कीवी[4] नै फोज रा ठावा ठावा अपसरां नै सायब ओळखाय[5] नै श्री हजूर सूं दस्ता-पोसी कराई। श्री हजूर रै साथै साथै बडो साहब नै छोटो साहब बाहादुर हजूर रै डेरै आया। अेकंत हुवा।[6] श्री हजूर फुरमायौ कै फौज तौ सांमनो करै जिण रै माथै आवण री रीत है, म्हे तौ किलो छोड़ नै थांरै सांमा आया हां।[7] किलौ नै राज सारौ हाजर है। थांरै तुले ज्यूं करौ।[8] इण तरै पुरी दोस्ती रो वातां कीवी। साहब बाहादुर पिण राजी हुवा। नै पाछी पूरी सिसटाचारी कीवी।[9] पछै वणाड, नांदडा बिचै अंगरैजी फौज रा डेरा हा जठै साहव दाखल हुवा। साहब बाहादुर वहीर हुवा तरै उकील रिधमलजी नै श्री हजूर फुरमायौ के तूं सायब नै डेरां

१. ग. पांचू।

1. बाकी के हिन्दुस्तानी लोग थे। 2. लड़ाई चलते समय भी। 3. तब साहब ने कहा कि वकील को भेजो। 4. हाथ मिलाया। 5. अपनी फौज के खास अफसरों से परिचय करवाया। 6. एकांत में जाकर बैठे। 7. किले को छोड़ कर तुम्हारे सामने आये हैं। 8. तुमको ठीक लगे जैसे करो। 9. पूरे शिष्टाचार के साथ पेश आया।

दाखल कराय नै आवजै ।[1] सो उकील साहब बाहादर नै डेरां तांई पुगावण ने गयौ । उण दिन सूं उकीलां री मारफत जवाब भुगतणो सरू हूवौ ।[2] साहब वहादुर रा डेरा तौ राईका बाग कनै हुवा नै श्रीहजूर बणाड़ सूं कूच कर मालदड़ां में डेरा हा जठै दाखल हुवा ।

आसोज वद ५ पांचम दूजै दिन साहब वहादुर मुलाखात करण नू आया । गढ में अंगरेजी थांणौ राखण री कही ।[3] तरै श्रीहजुर फुरमायौ मंजुर है । थांरी मरजी हुवै जद म्हांनू गढ पांछौ सूंपजौ । इण बात सूं साहब घणा राजी हुवा ।[4] साहब डेरां जाय नै संमत १८९१ रै वरस फौज-खरच तथा मांमला रा रुपीया पांच लाख में सांभर नांवो अंगरेजां रै सुपरद हा सु रुपीया बसूल हूय गया था सो सांभर नांवो श्री दरबार नै पाछौ सूंपण री अंगरेजी चिठी साहब उकीलां साथे लिख नै मेली । दोनू दरीबां री हाकमीयां राव रिधमलजी रै हुई ।

महाराजा का गढ खाली कर अंग्रेजों को सौंपना

आसोज वद ६ नुं गढ ऊपर सूं जनांनो सारो[5] गोळ री घाटी होय मांहलावाग में दाखल हुवा । सो मांहलाबाग में संकडायत ।[6] तिण सूं पछै मुंहता लिखमीचंदजी री हवेली पेहली वाभा लालसिंघजी रै ही तिण में जनांनी असवारी दाखल हुई । खजांना वगेरै कारखांनां में असबाव हौ सो कोठारां में नखाय लाखोटा कराय दीया ।[7] मरदांना मेहलां री दोढी ऊपर दोढीदार पुसकरण पिरोहित फतैरांम कुना नै राखीया । जनांनी दोढी कौटेचा जैता नै राखीयौ । बाकी सारा कारखांनां अेक-अेक ओवेदार नै दोय-दोय च्यार-च्यार आदमी राखीया । सारा आदमी १०० अेक सौ रै आसरै किला में मिंदरां रा पुजारी वगैरे कर नै साहव वाहादर री इतला सूं राखीया । उकील रिधमल रौ भतीज अभैकरण नै गढ ऊपर राखीयौ नै गढ रा लोक नै नीचे बुलाय लीयौ ।[8]

श्री हजुर डेरां दाखल हुवा तरै रायपुर रा ठाकुर माधोसिंघजी नू गढ में राखीया था सो ठाकुर माधोसिंघजी केवायौ कै हूं तौ श्रीहजुर गढ में

---

1. साहब को डेरे में प्रविष्ट करा कर आना । 2. उस दिन से वकील के मारफत सवाल जवाब प्रारम्भ हुआ । 3. किले में अंग्रेजों का थाना रखने का प्रस्ताव रखा । 4. प्रसन्न हुआ । 5. रानियां, पासवानियां तथा पड़दायतनियां आदि । 6. निवास के लिये स्थान की कमी । 7. कोठारों में डलवा कर ताले लगवा दिये । 8. गढ के अन्य सभी लोगों को नीचे बुला लिया ।

पधारीयां बिनां नीचौ उतरु' नहीं ।[1] तरै श्री हजूर आसोज वद ६ छठ[१] गढ ऊपर पधार नै समजायस कर[2] रायपुर रा ठाकुर माधोसिंघजी वगेरां नू नै जनांना सिरदारां नू' माहाडोळ पालखीयां, पीनसां, में बैसाण नीचे ऊतारीया । श्रीहजूर डेरां दाखल हुवा नै वडा सायब ने केवायौ कै किलो खाली कर दीयौ है सो थे चालो, म्है साथै पधार गढ में थांणो बैठाय देवां । तरै सदर लेन साहब बहादुर नै लडलू साहब फौज रा अफसर जरनेल साहब बहादुर आदमी ५०० पांच सौ सात सौ ले बाजा वजावतां श्री हजुर सायबां रै साथै गोळ री घाटी होय गढ उपर गया । श्री हजूर पोळां में पधारतां गया ज्यूं अंगरेजी फौज रा सिपाईयां नु बेठावता गया । गढ ऊपर पधार जनांनी मरदांनी दोढी ऊपर तथा कारखांनां ऊपर ओयेदार राखीया था तिणांनै साहब लोकां नै ओळखाया ।[3]

श्री हजूर साहब नै सदरलेन साहब बाहादुर तौ गोळ री घाटी होय पाछा डेरां दाखल हुवा नै लडलू साहब बहादुर फौज रा लोक नै जागा-जागा डेरा करावण मुदै गढ ऊपर ठेहर गया ।[4] करमसोत राठौड़ भोमसिंघजी गांव भटनोखा रौ किला में आसांमीदारां में नौकर हौ ।[5] जिण वीचारीयो कै आज गढ पळटै है[6] सो मरणोलवाजम है[7] सो सूरजपोळ रा मूंढा आगै लडलू साहब बाहादुर ऊपर भोमसिंघजी तरवार बाही[8] सो लडलू साहब बाहादुर रै फोरी सीक लीलाड़ रै लागी ।[9] सो टांका तीन आया । लडलू साहब बाहादुर रा हाथ री तथा अंगरेजी सीपायां रा हाथ री चार पांच तरवारां भोमसिंघ रै लागी । पछै लडलू साहब सिपायां नै मने कर दीया । भोमजी नै जखमी हवोड़ा नै किला सूं नीचे उतार दीयौ । सो पांच चार दिनां पछै मर गयौ । लड़लू साहब बहादुर नू तरवार वायां री श्री हजुर में मालम हुई । तरै उकील[२] साथे सदर-लैन साहब बहादर नै केवायौ कै खपखांनी बडो जुलम कीयौ[10] इंण वात रो म्हांनू पूरो रंज है । नै धोखो है । इण ताछ पूरी सिसटाचारी कराई । सो साहब वहादुर पूरा लाचार हूवा नै श्री हजुर में पाछी अरज उकील साथै कराई कै

---

१. ग. सातम ।

२. ग. रिधमल (अधिक)

---

1. महाराजा स्वयं गढ में आये बिना मैं नीचे नहीं उतरूंगा । 2. समझा बुझाकर । 3. पहिचान करवाई । 4. यथा स्थान फौज के डेरे दिलवाने के लिये पीछे रह गये । 5. किले के सिपाहियों में से था । 6. आज गढ हमारे हाथ से जा रहा है । 7. सो मरना उचित है । 8. तलवार चलाई । 9. ललाट पर मामूली सी चोट आई । 10. क्रोधीले सिपाही ने बड़ा जुल्म किया ।

इस में आप का कुछ कसूर नहीं है । आप इस बात का कुछ अंदेसा नहि लावें ।[1] आपकी दोस्ती सचाई का हमकूं पुरा भरोसा है ।

अंगरेजी फौज रा आदमी ३०० तीन सौ साढा तीन सौ ३५० अंदाजे तो गढ ऊपर राखीया । जरनेल साहब बाहादुर गढ ऊपर रया । मिंदरां रा पुजारी गढ माथै जाय पूजा कीयावता ।[2] अंगरेजी फौज रौ डेरो बालसमंद मंडोर बीच में हुवौ । छावणी ज्युं माटी रा घर नै दोय २ चार बंगला कचा[3] वणाय लीया ।[१]

पछै दुतरफी सला सुं आपस में कलमां ठंहर लिखावट हुई तिणरी नकल—

सिरकार दौलत मंदार कंपनी अंगरैज बाहादर वा जोधपुर की सिरकार के कदीम सूं आपस में हेत हिथारत कौ दरम्यांन है अर फेर संमत १८७५ रा मुताबिक सन १८१८ ईसवी के साल कौल नांमा कै होवा सूं दोस्ती कीनी विसेस मजबूती पाई सो सदामंद[4], सूं दुतरफी दोसती[5] आज तांई पकावट में ही रही ।[6] अर फेर रयां ही कर सी । अबार सिरकार अजमत मदार कंपनी अंगरेज बाहादुर अर जोधपुर का मालिक माहाराजाजी श्री मांनसिंघजी बाहादर के मारफत करनेल ज्यांन सदर लेने साहाब बाहादुर व मुजब अकत्यार दीयै हूवै जारज लारड़ आकलंट[7] साहाब मालक मुलक हिंदुसथांन के से ये कलमां नीचे मुजब ठंहरी-

१ कलम पैहली:—हमार मूलक री इंतजांमी मुदै आपस की सलाह सूं कांम री तजवीज ठेहरी सो अेक वखत माहाराजा साहब वा करनैल साहब वा राज का सिरदार अैहलकार खास पासवांन सब मिल कर अेक आईन ठेहरावणी। अर उस मुजब राज का कारबारी कांम सरु करणा । वा ज्यारी रखणा अर ये सब हरेक सिरदार तथा अेहलकार तथा सारै आसरीभूत[8] राजकां का हक माफक दस्तूर कदीम के हदबंद कर मुकरर करेंगे ।

---

१. ख. अेरनपुरा वगेरा री तरफ सूं अंगरेजी पलटणां अेरनपुर री छांवणी सूं आई तिणां रा डेरा देरावरजी रा तळाव कनै बाकी री फौज अंगरेजां री नसीराबाद जुंझणु फतैपुर सूं आई तिणां नू सीख दीवी ।

---

1. किसी प्रकार का मन में विचार न करें । 2. पूजा करके लौट आते । 3. कच्चे बंगले बना लिये । 4. सदा के लिये । 5. दोनों पक्षों की ओर से । 6. आज दिन तक पक्की रही । 7. जार्ज आकलेंड । 8. आश्रिभूत ।

२ कलम दूसरी—सिरकार अंगरैजी को पुलटीकल अजंट[1] अहेलकार राज जोधपुर कां से सलाय मिलायकर अर माहाराज साहब से सलाह पूछ कर राज का कांम इण कलमां मुजब करेंगे।

३ कलम तीसरी—पंचायत मजकूर सारा कारबारी राज का कदीम का दसतूर मुजब चलावेंगे।

४ कलम चौथी—करनेल साहब कह्यौ सिरकार अंगरेजी को थांणौ जोधपुर का किला में रहेगा। जब माहाराजा मांनसिंघजी मंजूर अर कबूल कीयौ। और राजसथांनां में[2] अजेंट रेवे है सौ सेहर बारै रेवै है अर अठे तो किला ऊपर सिरफ रेवास की जगा है फेर ऊपर जायगा बोहोत कोतै है।[3] जिणां वासतै इण बात की अड़चल है।[4] परंत सिरफ सिरकार की खुसी कै वास्तै सिरकार को थांणौ मंजूर कीयौ है सो मूनासब जायगा देख रखणे में आवसी।[5] कोई तरै को अंदेसो दरबार नै सिरकार को है नहीं।

५ कलम पांचमी— श्री······जी रा मिंदर संरूप जोगेश्वर तालकदारां समेत दरबार के ऊमराव, कीका, मुतसदी, खवास, पासवांन, देसी परदेसी वगेरै की मरजाद[6] इजत आजीवगा वरतण में[7] कसूर नहीं पड़सी। सब अपना अपना कांम करसी।

६ कलम छटी— सब कारबारी आइंन बंधसी[8] जिण मुजब कांम करसी। अर ऊणां रै कांम करणै में फरक मालम होसी तौ उणां री अेवज दूजौ कांम करणै लायक श्री माहाराजा साहब की सलाह मुजब मुकरर होसी।

७ कलम सातमी— जिण किणी रौ हक बंध होगयौ[9] है जिण नै राहा वाजबी कै ताबै दिरीजसी अर ऊबे दरबार को हुकम बंदगी आछी तरै बजावसी।

८ कलम आठमी— मारवाड़ की राजधांनी में माहाराजा साहब की जात का कांनग नामु समै सिरकार अंगरैजी की तरफ सूं तथा दूजी कांनी सूं तकरार तफावत होवण देसी नहीं इण बात री सिरकार अंगरैजी की जांमनी है।

---

1. पॉलीटिकल एजेन्ट। 2. रजवाड़ों में। 3. कम स्थान है। 4. रहने की तकलीफ है। 5. उचित स्थान देख कर स्थायी थानां रखा जायगा। 6. मर्यादा। 7. व्यवहार में लाने में। 8. व्यवस्था बांधी जाएगी। 9 जागीर आजीविका जब्त हो गई है।

९ कलम नवमी— सिरकार के मांमलै का तथा असवारां बाबत का रुपीया जो इस वखत में जोधपुर के राज ऊपर लैणा है[1] वा आगै कुं मांमला तथा सवारां बाबत का लेहणा होगा सु साहब बहादुर पुलटीकल अजंट सिरकार अंगरेजी का तथा अेहलकार राज मारवाड़ का आपस में सलाह कर दरबार की सलाह मुजब जो आईन मुकरर होगा उसके माफक नेक तजबीज कर[2] अदा कर देवेंगे। और जो रुपईया नुकसांण बाबत का है सो साबत हुवां[3] जिण पर पोहोचेगा उण पास दिराया जावेगा। और मारवाड़ के नुकसांण का जो रूपईया दूसरां पर साबत होगा सो भी दिलाया जावेगा।

१० कलम दसमी— सिरदार लोकां नै पटा देकर दरबार बंदगी में लगाया है सौ आज पेहली रो कसूर है सो सारौ माफ कीयौ है। अर इणी तरै सूं सिरकार अंगरेजी की हर किणी उपर तकरार है। सरूपां, जोगेश्वरां, उमरावां सूं, अेहलकारां सूं तकरार होय सो माफ है।

११ कलम ईग्यारमी— अजंट साहब कौ अठै रहणौ होसी।[4] सौ किणी ऊपर जुलम ज्यादती नह होसी। खटदरसण[5] री मरजाद में कसर नहीं पड़सी। जिण जीवां री मारवाड़ रा मुलक में मारण री मनाई है सो उण जीवां री हिंसा जोधपुर रा राज में नह होसी।

१२ कलम बारमी— सारा कांमां री इंतजांमी छव महीना तथा बरस दिन तथा डेढ वरस तांई हो जायगी। जब साहब पुलटीकल अजंट तथा थांणा सिरकार का जोधपुर के किला मांह सूं उठाय लीया जायगा और जितना जलद ये कांम दुरसत होगा अेन क्रुसी सिरकार कंपनी की है, किस वासतै कै इसमें सिरकार कंपनी की नेकनांमी की बात है।[6]

१३ कलम तेरमी— ये ईकरारनांमा २४ सितंबर बरस सन १८३९ ईसवी कूं जोधपुर के मुकांम पर उपर लिखे मुजब बण कर मारफत करनेल ज्यांन सदरलेन साहब के पका दुरस्त होणे वासते[7] लारड गवरनर जनरल साहब बाहादुर की खिदमत में भेजा जावेगा। लारड गवरनर जनरल साहब बाहादुर का खरीता माहाराजा साहब बाहादुर जोधपुर के नांवै इण कलमां के मजमून मुजब मंगवाय दीया जायगा। फकत·······।

---

1. बकाया निकलता है। 2. उचित तरीके से। 3. सबूत मिलने पर। 4. पॉलीटिकल एजेन्ट यहां रहेगा। 5. षट्दर्शन ब्राह्मण, जोगी, चारण. आदि। 6. इससे अंग्रेजी सरकार की नेकनामी प्रकट होती है। 7. विधिवत स्वीकृति के लिये।

पछै संमत १८९६ रा आसोज सुद १ अेकम नूं करनेल सदरलेन साहब लडलू साहब बाहादुर श्री हजूर में बगी में बैस आया। अर कह्यौ-सब ऊमरावां मुतसदीयां खास पासवानां वगेरां कूं बुलाय कर हुकम फरमावै कै जो कदीम सूं[1] जोधपुर के राज की राज कै कांमां की जो रीत दसतूर है अर हाल वो कांम जाहरी है जिसकी अेक आईन लिख कर हम कूं देवौ[2] तौ हम जांणै कै यहां राज का कांम इस तौर पर होगा[3] तौ हमकुं वाकफी रहै। अर हम सदर में रपोट करें। १३ कलमां तेरह तो आपस की सफाई हुई जिसकी लिखी गई है अर राज के कांम की १ अेक याददासती हमकूं वणाय कर अंगरेजी में तरजुमा करावण वासतै आईन का कागज हमकूं सूंपौ। सो सारा ही सिरदारां मांहला बारला अर दीवांण बगसी वगेरां सलाह मिळाय कलमां बांधी। तिणरी नकल विगत।

राज्य व्यवस्था सम्बन्धी मजमून अंग्रेजों को प्रेषित किया गया

१ कलम पैहली— परधांन दिवांण बगसी, खांनसांमा वगेरै सरब ओहदा खिजमतां श्रीहजूर रै ईकत्यार किणी री अरज सूं नहि मरजी सूं बगसै।[4] ओहधा लायक केवट लेवै जिसां ने।[5]

२ कलम दूसरी— हरेक कांम में श्री खांवदां रौ[6] पाछौ फुरमावणौ खुलासे होय गयो चाहीजे।[7]

३ कलम तीसरी— किणी रा कैणा सूं तथा अरज सूं हरेक चाकर नै बिनां खून विगाड़णौ नहीं।[8] नै चूक री मालम हुवै तौ निसाफ[9] फुरमाय निरधार कराय देणौ।[10]

४ कलम चोथी— दौड नै बंदगी करै ज्यां नै वरदास्त फुरमावणी नै तखसीर में आवै ज्यां नै तखसीर मुजब सजा देणी।[11]

५ कलम पांचमी— पटौ गांव श्री वडा माहाराजा श्री विजैसिंघजी री सिलांमती सूं लगाय नै आज तांई मुनासब जांण श्री खांवंद मरजी सूं बगसे सो कबूल है।

---

1. परम्परा से। 2. उसकी एक संक्षिप्त टिप्पणी बनाकर हमको दें। 3. इस विधि से होगा। 4. महाराजा किसी के निवेदन पर नहीं अपनी इच्छा से देते हैं। 5. जो उस पद के लिये उपयुक्त होते हैं। 6. महाराजा का। 7. स्पष्ट उत्तर मिलना चाहिए। 8. बिना बड़ी गल्ती के किसी नौकर को हानि नहीं पहुंचनी चाहिए। 9. इन्साफ। 10. पूरी तहकीकात करवा लेनी। 11. जैसी गल्ती हो वैसी सजा दी जाय।

६ कलम छटी— वेतलवी श्री वडा महाराजाजी री सिलांमती में थी जिण मुजब राखणी । नै किताक ठिकांणा बंदगी सूं नवा बंदीया है जिण री आगला ठिकांणों री सरस्तौ देख[1] मुनासब माफक राखणी ।

७ कलम सातमी— चाकरी रेख मुजब सदामंद मुजब भोळावसी[2] जठै करसी ।

८ कलम आठमीं— चोरी धाड़ौ हुवै जिण रा खोज सातारा ले नै[3] जिण गांव री सींव में आवै सो जागीरदार भोमीयो बाहार वाळां री लारै हुय नै सींव वारै खोज काढ देसी । नै खोज किणी गांव में अटक सी[4] तौ जिण गांव रौ खोजी कलै जलरी धीज कराय देणी । नै लारला गांव वाळौ छाया करसी सो धीज में सांचौ उतरसी तौ लारला गांव वाळौ झूठौ हुसी तौ ऊ देसी । जागीरदार अर भोमीयौ चोरी रौ माल लागसी सो सदामंद मुजब सरसतै देसी ।

९ कलम नवमीं— सरणै आय नै बैसे सो जीवां तौ ऊबरै[5] नै किणी रो धन बंध लावै सो पाछौ दिराय देणौ ।[6] नै और सरणे री मरजाद सदामंद माफक राखणी । किणी री बिगाड़ कर कोई किणीं रा गांव में आय बैसै जिण री तौ श्रीहजूर में मालम कराय देणी कै फलांणौ आदमी म्हारा गांव में आयौ है । औ म्हारै अठे बैठ कोई बिगाड़ करै तौ म्हारी जांमनी है । नै कदास जांमनी नहीं लिखै तौ राखणौ नही ।[7] आयां री खबर कराव देणी तथा परगना रा हाकम नै कैदेणौ[8] नै वाकब नहीं करे तौ गुनेगार ।

१० कलम दसमीं— सायरा में हासल राहदारी दांण श्रीवडा माहाराजाजी री सिलांमती में भरीज तौ जिण माफक भरावणौ । नै जिकण जिकण ठिकांणा में थांणायत आदमी रहता जिण मुजब राखणौ । अर हासल राहादारी दांण सदामंद मुजब वोपारीयां कना सूं भरावणौ ।

११ कलम ईग्यारमी— घर बाब जरूरायत कांम रौ मुदो हुवै तरे तौ लेणी, हर बरस नहीं लेणी ।[9]

1. पहले की रीति को ध्यान में रखते हुए । 2. आज्ञा देंगे । 3. खोज (चिह्न) देखकर अच्छी तरह पीछा करना । ४. यदि पैरों के चिह्न उस गांव से आगे नहीं निकलेंगे । 5. उसके प्राण उबर जायेंगे । 6. किसी का धन माल लायेगा सो वापिस दिलवाया जाएगा । 7. यदि जमानत लिख कर नहीं दे तो ऐसे आदमी को वह शरण नहीं दे । 8. हाकिम को सूचना दे देनी चाहिए । 9. विशेष प्रयोजन से ली जा सकती है, हर वर्ष नहीं ली जाय ।

१२ कलम बारमी— भोम बाब श्री बडा माहाराजाजी री सिलांमती मुजब लिरीजसी नै भोम री जमी श्री बडा माहाराजाजी री सिलांमती सूं तथा सनदां सूं तथा कदीम सूं है जिण मुजब राखणी । सवाय दबी हुवै सो निरधार कर मोकूब राखणी ।

१३ कलम तेहरमी— लागती रकम चौथर बाब वगेरे कचेड़ीयां री हुवै सौ सदामंद माफक श्री बडा माहाराजाजी री सिलांमती मुजब भरावणी ।

१४ कलम चवदमी— सैहर में तथा गांवां में कचैड़ी चांतरां खून तखसीर वाळां नै सिरकारी रकम बाकी हुवै तिण बाबत बुलावै जिण री कोई हिमायत करसी नही नै परबारो कचेड़ी चांतरै आदमी मेल कैहणो करसी नही ।

१५ कलम पनरमी—सायरां कचैड़ी चांतरा हवाला टंकसाळां[1] वगेरां रौ रुपीयो पईसो बाकी नीसरे सु लेखा री रूह सूं[2] भरावै तिण री कोई हिमायत करसी नही ।

१६ कलम सोळहमी— सारा चाकर ईमानदारी सूं[3] बंदगी करसी । श्री दरबार रै फायदे मुजब नै मरजी मुजब करसी ।

१७ कलम सतरमी— चाकर तखसीर में आसी नहीं नै जे कोई खायकी में आय जासी[4] तो ईग्यारै गुणौ भराय लेणो ।[5]

१८ कलम अठारमी— गैरवाजबी अरज नहीं करणी ।[6]

१९ कलम उगणीसमी— हर कौर गैरवाजबी किणी री राखणी नही ।[7]

२० कलम बीसमी— आप आप रै ओहदै सवाय अरज नहीं करणी नै ओहदै सवाय अडबी नहि करणी ।[8]

२१ कलम ईकीसमी— परगनां में हाकम ओहोदेदार पिंडां रहै ।[9] थांणां वगेरै में बंदोबसत राखणो ।

1. सिक्के बनाने की टकसाल । 2. हिसाब के अनुसार । 3. वफादारी से । 4. रिश्वत ले लेगा । 5. जितनी रिश्वत ली है उसका ग्यारह गुना जुर्माना ले लेना । 6. अनुचित कार्यों के लिये कोई बात निवेदन नहीं की जाय । 7. किसी का गैर वाजिब पक्ष नहीं लिया जाय । 8. किसी बात के लिये जिद्द नहीं करना जो उसके कार्य क्षेत्र के बाहर हो । 9. हाकिम स्वयं वहां मौजूद रहें ।

२२ कलम बाईसमी—जुमादारी अेक अेक री है सो किणी री जुमेदारी राखणी नहीं ।[1] सारा श्रीहजूर रै कदमां रै आसरै रहसी ।

२३ कलम तेईसमी— कचेड़ी चांतरा सायर हवाला टंकसाळां कार-खांना वगेरे ईकरोजा मुजब चालसी । सवाय दांम अेक १ खरचसी तौ ओहदेदार आपरा घर सूं भरसी ।

२४ कलम चोईसमी— सारा चाकर किणी सूं घालमेल सट-पट करे नही[2] अ.र जथा बंधी[3] राखै नहीं ।

२५ कलम पचीसमी— तलब तगादो बेवाजबी करणौ नहीं । नै ऊवाजबी हुवै सो पाछौ फेरणौ नहीं । तलब में पाळा रा दोय २ टका नै घोड़ा रो ।) पावलो नै ऊधडो ‾) अेक आंने कोस इंण सवाय नहीं करणौ । मांनै नहीं तौ पछै सवाय करणौ ।[4]

२६ कलम छाईसमी— न्याव निसाफ री रूह सूं अदालत में करावणी हर कौर किणी री नहि राखणा ।[5] अदालत वाळां नु खोटी किणी री सुपारस करावै नहीं । आपरा तालकदारां बिनां तरफदारी करै नही ।

२७ कलम सताईसमी— प्यादा वगसी चौकीनवेस कदीम सूं श्रीवडा माहाराजाजी री सिलामती मुजब राखणा ।

२८ कलम अठाईसमी— वसी बसायतां रौ रकांनो श्रीवडा माहा-राजाजी री सिलांमती मुजब राखणा ।

२६ कलम गुणतीसमी— खेड़ा दीठ रुपीयो ने छदांमी लागै सु इणां बरसां में घणा वध गया है सौ छव सात तो राखणा बाकी मोकूब राखणा । सो मोकूब राखणा तिणांरी जमां लगाय देणी सो दूजां रै खरच रो सालीको बंधसी ज्युं इणां रो ही हुसी ।[6]

३० कलम तीसमी— दोढी तालके सागड़द पेसा रौ लोक[7] कदीम सूं थो जिण माफक राखणौ । नै दसतूर री जमां सदामंद री है जिण माफक दिरावणी ।

---

1. अपनी अपनी जिम्मेदारी अलग अलग रखें । 2. साजिश आदि । 3. फिरके बाजी । 4. यदि न माने तो उससे सवाया तक बढाया जा सकता है । 5. किसी की तरफदारी नहीं रहनी चाहिए । 6 दूसरों की जैसी व्यवस्था होगी वैसी इनकी भी होगी । 7. राज-घराने का कार्य करने वाले लोग ।

३१ कलम ईगतीसमी— हर अेक आप-आप रा कांम करसी । ज्यूं ही श्रीसरूप जोगेश्वर गुरपणां आप री रीत मरजाद है जिण माफक राखसी । राज रा कांम में दखल नहीं करसी । अपणा-अपणा मकांनां में दिल जमाई[1] सूं विराजसी ।

३२ कलम बतीसमी— गवईया पिंडत फेर सागडद पैसा वगेरै खरच ज्यादा है सो ईजाफै वधियौ है सो मरजी मुजब राखणौ ।

३३ कलम तेतीसमी— सारा ही राजधांनी रौ कटकणौ[2] श्रीवडा माहाराजाजी री सिलांमती माफक राखणौ ।

३४ कलम चौतीसमी—जिलो सदामंद मुजब श्री वडा माहाराजाजी री सिलांमती मुजब राखणौ ।

३५ कलम पैंतीसमी— श्री दरबार रौ खरच अठै तथा परगनां में कचैडीयां तथा चांतरा सायरां वगेरै तमांम ठिकांणां में वध गयौ है सो श्रीवडा माहाराजाजी री सिलांमती रौ राहा नै हमार रौ राहा देख वाजबी राखीयां बिनां सजै नहीं ।[3] सु जिण माफक राखणौ ।

३६ कलम छतीसमी— सिरायत[4] सूं लगाय अेक गांव रौ धणी पटायत भोमीयो तथा घर रौ धणी रजपूत बेटी मारण पावै नहीं ।[5] व्याव में चारणां नै इंण माफक देसी[6]—

१ पटायत अेक हजार री रेख लार रुपीया २५) पचीस ।

१ भोमीयो रुपीया १०) दस देसी ।

१ घर रौ धंणी विनां जमी वाळो रुपीया पांच ५) देसी ।

चारण वगैरे इंण सवाय ऊजर करण पावै नही ।

३७ कलम सैंतीसमी— कोई आदमी तखसीर में आवसी तौ श्री वडा माहाराजाजी री तखसीर मुजब सजा दिरीजसी पिण चोरंगो नह होसी ।[7]

---

1. निश्चित होकर । 2. आय व्यय । 3. उचित ढंग से खर्च बांधे बिना कार्य नहीं चलेगा । 4. विशेष सम्मान व कुरब प्राप्त बड़ा जागीरदार । 5. अपनी लड़की की हत्या नहीं करे । 6. विवाह में चारणों को नेग स्वरूप इस प्रकार देगा । 7. उसके हाथ पैर नहीं काटे जा सकेंगे ।

३८ कलम अड़तीसमी— गांव में तखसीर आवसी तौ श्री वडा माहाराजाजी री सिलांमती में लिरीजती ज्यूं लारली वहीयां देख लिरीजसी । नै पछ ठिकांणा बंधीया है सु ठिकांणा मुजब रैहसी ।

३९ कलम गुणचालीसमी— सारा चाकर अरज कर किणी नै दिरावणो लिरावणौ करसी नहीं ।

४० कलम चालीसमी— ओहधा खिजमतां रौ रोजगार श्री वडा माहाराजजी री सिलांमती मुजब राखणौ ।

४१ कलम ईगताळीसमी— सांढीयां रा टोळा[1] चरावण जावै तरै गांवां री जरायत[2] रौ बिगाड़ करावणौ नहीं ।

४२ कलम बियाळसमी श्री दरबार रा पुरण सांढीयां ऊंठ घोडा बलहद गायां वगैरे श्रीवडा माहाराजाजी री सिलांमती में छटे री छटे महीनै हाजरी लिरीजती नै दाग दिरीजतो ज्युं दिरीज जासी ।

४३ कलम तंयाळीसमी— रुळीयो धराव आवसी[3] सु छत्र महीना तांई तौ धणी री बाट जोवणी पछै दाग दिराय देणौ ।[4]

४४ कलम चमाळीसमी— सांढीयां ऊंट जिण गांव में मरजाय जिण गांव रा लोकां री साख रौ रुको लिखाय लावणौ । नै दाग कारखांनै सूंप देणौ ।[5]

४५ कलम पैंताळीसमी— वरसोदां मीना सवाय वध गया है[6] सु गैर वाजबी हुवै सो मोकूब करणा ।

४६ कलम छियाळीसमी— ढोली रांणा नै व्याव में रेख हजार लारै रुपीया ५) पांच परा देसी । सवाय ऊजर करसी नहीं ।

४७ कलम सैंताळीसमी— अेक लाख आठ हजार रुपीया १०८०००) खिरणी रा लागै सु दरीबै सांभर री पंदास मांह सूं कचेड़ी रो खरच ढळियां पछै[7] रहेसी सो देदेणा । सवाय घटसी वधसी तौ दूजो जमां मांह सूं दिरीजसी ।

---

1. ऊटनियों के टोले (समूह) । 2. फसलें, पेड़ आदि । 3. फिरता हुआ कोई पशु आजाय । 4. छ महीने बाद उस पर अपना निशान अंकित करवाया जा सकता है । 5. राज्य चिह्न अंकित किया हुआ चमड़े का टुकड़ा विभाग में जमा करवा देना । 6. प्रतिमास व वर्ष दी जाने वाली रकम बहुत बढ़ गई है । 7. कचहरी का खर्च काटकर ।

४८ कलम अड़तालीसमी—घोड़ां री चाकरी रा रुपीया ११५०००) अेक लाख पनरै हजार बरस अेक १ रा लागै सु पटायतां री रेख मांह सूं दिरीजसी ।[1]

फकत............ ।

वडा साहब सदर लेन साहब बाहादुर नै अजंट लडलू साहब बहादुर हमेस[2] हजूर मैं[१] आवै नै कहै—हम माहाराजा साहब का अेहलकार हैं सौ जमींदार और हरअेक नौकर लोक नहीं समजैगा जिस कूं हम समजाय देंगे ।[3] और सिरदारां सारां नै कैह दीयो के तुम नै आप आप की वारसी का गांव[२] ऊतार दीया लेकिन अेक-अेक गांव ऊपर तीन-तीन च्यार-च्यार जमीदारां की वारसी है सौ अगाड़ी भी माहाराजा साहबां कै वडे रां का दीया हुवा गांव भुगतीया है ।[4] अब भी माहाराजा साहब मुनासब जांण देवेंगे सो लेवोगे, इण तरै कह्यौ ।

सभी जागीरदारों को महाराजा की स्वीकृति से पट्टे दिये जाना

साहब बहादुर हजुर में आवता जिण वखत दिवांण सिंघवी गंभीरमलजी ऊकील राव रिधमलजी[३] नै दफतरी दरोगाई सिंघवी सुमेरमलजी रै ही सो सुमेरमलजी तो चल गया नै ऊणां रौ बेटौ नथमल टाबर हौ[5] सौ ऊणां री तरफ सूं पंचोळी नंदलाल हाजर रहतौ सो सिरदारां री वारसी रा गांवा रा चोपनीया वंचता[6] सो रिधमलजी अरज करता कै औ गांव देणौ मुनासब है तरे श्री हजूर फुरमाय देता कै ठीक है । जद दीवांण दूजै दिन ऊवै गांव लिख देता । इण तरै दोढ दोय महीनां में सारा जमीदारां रा पटा जिला लिखीज गया । श्री हजूर री मरजी मुजब गांव लिखावणा इण वात में पोहकरण ठाकर वभूतसिंघजी हमगीर हा । आयसजी लिखमीनाथजी तौ साहब लोकां रा डर सूं गांव पांचु परा गया था ने आयसजी रौ कांमेती मूतो जसरूप लाडणू री हवेली में बैठो

१. ग. बारला डेरा (अधिक) ।

२. ग. कांमां की फरदां ।

३. ग. पोकरण ठाकुर वभूतसिंहजी पंचायत में सामल नै नीबाज रा सिवनाथसिंहजी पिण भांण धड़ में सांमल सो गांव आगे यौ पाटवो लिखाय लियौ नै कूंपावत करणसिंह वासणी रा कुचेरो लिखाय लियौ (अधिक) ।

1. जागीरदारों की रेख की रकम में से दी जायगी । 2. हर रोज । 3. जो ठीक रास्ते पर नहीं आएगा उसे रास्ते पर ले आयेंगे । 4. भोगे हैं । 5. नाबालिग था । 6. पढ़े जाना ।

रयौ । उणां री तरफ सूं पंचोळी काळूरांम मेड़तीया दरवाजा रा डेरां हाजर रहतौ । नै माहामिंदर वाळां री आग्या रौ गोसै फैल मोकळो रह्यौ ।[1] पिण श्री हजूर री खातर सूं[2] साहब बाहादुर क्यूं ही कैहता नहीं ।

महीनो अेक पछै किला में थांणौ हो जिण सवाय फौज बारै ही तिण नै अजमेर मेल दीवी । नै दोनू सायब अठै रया ।

सारा सिरदारां रै डेरै पधार नै श्रीहजूर दसतूर मुजब मातंम पोसीयां कराई ।[3]·१ राज रौ सारो कांम मेड़तीया दरवाजा बारै डेरां में हुवै ।

बडे साहब बाहादुर श्री हजूर नै कयौ—वारवाड़ का गांव नग बंद कितना है अर कितनी रेख है अर खालसै कितना है अर ऊमरावां कै पटै कितना है पैला कितना था अर हाल अब वारलां कूं कितना दीया[4] अर सांसण डोहोळी[5] कितना है । जिसकी हमकूं विगत तफसीलवार ऊतराय दिरावै तौ खुलासा हमकूं भी मालुम होजावै ।२ सो हम अंगरेजी में तरजुमा करेंगे । जद श्रीहजूर दफतर रा दरोगा नू फुरमायौ कै साहब कहै जिण मुजब अेक चोपनीयो वणाय ताकीद सूं लांवौ ।[6] तरै दफतर रै दरोगे जोसी जमनादास दफतर में हजूरी नवीं संदो घणा वरसां सूं है जिण नूं कयो, मुदो सारौ नै लिखावट[7] थोड़ी रौ नखसो सारी माड़वाड़ रा गांवां रौ तफसीलवार ताकीद सूं वणाय लावसो श्रीहजुर वडा साहब नू वंचावसी । तरै जोसी जमनादास इण मुजब नखसौ वणायौ३—

---

१. ग. दस्तूर मुजब एकूका डेरा में 5-5 4·4 (अधिक) ।

२. ख. सरदार फरदां लिख-लिख गांव लिख आया सो कदेई किणी सबब सूं एक दोय साख भाटी हुवै 3-4 पीढी पेली तौ उवे ही लिख आया । जद श्रीहजूर रा मुसायब बड़े सात्र ने केयौ इण तरै पट्टा मांगे है सो इण तरै गांव इणां नू दिरीजै जद तौ सारी मारवाड़ रा गांव किताक इणांरे कदे कदे लिखीजिया है सो सारां ए लेवै जद राजी हुवै । सो इण तरै लिखीजण री रीत नहीं । पछै वड़े सात्र बारलै सिरदारां नै धमकी घुड़की दी—इतना गांव नहीं मिलेगा ।

३. ग. वणाय हाजर कियौ सु साब खुस हुवौ, तरजुमो करनै सदर में भेजियौ ।

---

1. राज्य में काफी अनुचित हस्तक्षेप रहा । 2. महाराजा की मन्शा को ध्यान में रखने के कारण । 3. जो सरदार मर गये थे उनके लिये मातमपोशी करने की रीति का निर्वाह पूरा किया । 4. असंतुष्ट सरदारों को अभी क्या दिया । 5. दान के गांव । 6. एक सूची बनाकर तुरंत लाओ । 7. संक्षिप्त में सारा वृत्तांत ।

रेख	गांव	आसांमी
१५४४५४५)	१४४८	गढ जोधपुर
५६६९१५)	४६०	सिरकार जाळोर
१२२९७५०)	५५७	सिरकार नागोर
४९१४५०)	३९४	प्रगनो गोढवाड़
४४६१७५)	२६६	परगनै सोझत
६२४०५५)	१४८॥	परगनै जैतारण
११२३१६३)	४१९	परगनै मेड़तो
४१९५००)	२१०	परगनै परवतसर
३६२७०)	११०	परगनै मारोठ
१३८००)	२५	दरीवा नांवा रा
१४५००)	२१	दरीबो डीडवांणो
१६२०३)	१०	दरीबो सांभर
		२० रै याद रा १०
१७२०५४)	८४	परगनै फळोधी
)	....	दरीबो पचपदरो
)	१४०	परगनो सिवांणो
)	५७	परगनो दौलतपुरो
)		परगनो सिव
)		परगनो

अतो खरच री विगत—

रेख	गांव	आसांमी
६९८९१)	३४।।।=)।।	श्रीजी रा मिंदरां सारू पां. तालके
१५३२५)	१५	श्री ठाकुर दुवारां
१८६७५)	२७॥	श्री देवसथांन
१५६९७५)	१२॥	श्री गुसांईजी रा मिंदरां सारू पां. तालके ।
२५२६५६)	५१६॥	खटदरसण तथा सांसण
२७७७९०)	८३=॥	श्री जनांनी दोढी तालके
२०००)	१	बीकानेर रा राजवींयां रै
३०७००)	५	बाभां रै पटै
७९६००)	८९।	रसालो सागरद पेसो कारखानां वगेरे
७२४५४९)	३६२।=	हवालो खालसो
१३१३८०)	६७॥	कसबो चांतरा परगना कचेड़ीयां तालकै सो पेदास तो अठै आवै नहीं नै कितराक सूना ।
८११७५)	४६=॥	मुतसदीयां रै पटै
१२३९२५)	४०॥	परदेसी कपतांन पिडतां वगेरै
८७७०५)	७६॥	खास पासवांनां रै
२९७०)	२९	अंगरेजी सिरकार तालके मगरा रा गांव २२ मेरवाड़ा रा गांव ७

सिरदार पटायत खांप वार-चांपावत-

रेख	गांव	आसांमी	वाहाल	फेरदीया
७६६०८)	८५	पोहोकरण वभूतसिंघ सालमसिंघोत	५६४४३)७२	२०१६५)१३
५३७७५)	२३॥	पोहोकरण रो भाईपो जिलौ	१४४५०)६॥	३९३२५)१७
४०४००)	२३	आऊवो कुसालसिंघ बखतावरसिंघोत	३०४००)२२	१००००)१
६३२०२॥)	२७।	आऊवा रौ भाईपौ जिलौ	१४७२५)७	४८४७७॥)२०।
१६५२५)	११	रोयट रौ पटो	३०००)१	१३२२५)१०
८२३३।‾)।	५।-।	रोयट रौ जिलौ	—	८२३३।‾)५।-।
१५०००)	५	हरसोळाव	—	१५०००)५
३०००)	३	हरसोळाव रौ जिलौ	—	३०००)३
१६०२५)	११	खीवाड़ो	७०००)५	९०२५)६
....		खीवाडा रौ जिलौ....	....।....	....।....
९०००)	५	खाटू रौ पटो	९०००)५	—
२४७५०)	९॥	आहौर रो पटो	२४७५०)९॥	—
८६२५)	५॥	आहोर रौ जिलौ	८६२५)५॥‾	—
३०५००)	१३	दासपां रौ पटो	३०५००)१३	—
४५००)	२	दासपां रौ जिलो	४५००)२	—
१८२५०)	८	बाकरा रौ पटो	१८२५०)८	—
५०००)	२॥	बाकरा रौ जिलो	५०००)२॥	—
४४००)	१	धांमळी रौ पटो	४४००)१	—

१६६२५)	६	भेंसवाड़ा रौ पटो	१६६२५)६	—
१०००)	१	भैसवाड़ा रौ जिलो	१०००)१	—

कूंपावतां में—

३०५००)	८	आसोप ठाकुर सिवनाथसिंघ वखतावरसिंघोत	३०५००)८	—
…….		आसोप रौ जिलो	…….	…
२२०००)	११	चंडावळ रौ पटो	१२०००)५	१००२५)६
२३७३८।‾)।७।।		चंडावळ रौ जिलो	२३७३८।‾)७।।	
७५००)	१	गजसींगपुरौ पटो	७५००)१	
४५००)	।।	गजसींगपुरा रो जिलौ	४५००)।।	
१४३००)	१२	कंटाळीया रौ पटो	१४३००)१२	
१५००)	१	कंटाळीया रौ जिलो	१५००)१	—
१२०००)	३	बूसी रौ पटो	१२०००)३	—
)	५	सीवास	)५	—

जोधा—

२७७५०)	९	खेरवौ सांवतसिंघ	१००००)१	१७०५०)८
३७९५०)	२८	भादराजण वखतावरसिंघ	३७९५०)२८	—
५२८५०)	४८=।।	भादराजण रौ जिलौ	५२८५०)४८=।।	—
२००००)७		लाडणू रौ पटो	२००००)७	—

१५२५००)	७३।।	लाडणू रौ जिलो	१५२५००)७३।।	—
१४०००)	५	दुगोली रौ पटो	११०००)४	३०००)१
६०००)	४	दुगोली रौ जिलो	६०००)४	—
६०००)	२	लोटोती रौ पटो	६०००)२	—
८५००)	१।।	लोटोती रौ जिलो	८५००)१।।	—
५०००)	३	भंवरी रौ पटो	२५००)१	२५००)२
६०००)	३	होडावास	६०००)३	
१०२००)	११	नींवी रौ पटो	१०२००)११	
२०००)	१	नैवाई	२०००)१	
२०००)	३	पाटोदी रौ पटो	२०००)३	
५०००)	१	कैंसवाणा रौ पटो	५०००)१	
१२०००)	२	रोहीसो	१२०००)२	
५०००)	३	बावरौ	५०००)३	

जैतावत—

१५०००)	७	बगड़ी सिवनाथसिंघ	१५०००)७	—
३७२५)	२	बगडी रौ जिलौ	—	३७२५)२

करणोत—

१२०००)	३	कांणोणो रौ पटो	१२०००)३	—
१०१००)	४	समदड़ी रौ पटो	१०१००)४	—

५४००)	४	समदड़ी रौ जिलौ	५४००)४	—
६६२५)	१३	वागावास रौ पटो	६८००)६	४१२५)४

करम सोत—

१४५५०)	१८	खींवसर वखता वरसिंध रौ पटो	५०००)५	६५५०)१३
५४००)	३	खींवसर रौ जिलौ	—	५४००)३
४१२५)	३	पांचोड़ी रौ पटो	३०००)१	११२५)२

ऊदावत—

३५१००)	१०	नींबाज रौ पटो सवाईसिंघ सांवतसिंघोत	३५१००)१०	—
७१३८०)	२७॥	नींवाज रौ जिलौ	२०००)१	५६३८०)२६॥
३८२५०)	१५	रास भीवसिंघ रै पटो	२००००)१३	१७२५०)२
३५००)	२	रास रौ जिलौ	—	३५००)१
५५२६५)	३६	रायपुर माधोसिंघ रूप सिंघोत रै पटो	५५२६५)३६	—
४३६००)	२०	रायपुर रौ जिलौ	४३६००)२०	
३०६७५)	६	लांबीया रौ पटो	३०६७५)६	
१७१५०)	७	लांबीया रौ जिलौ	१२३५०)४	४६००)३
१३०००)	२	देवळी रौ पटो	१३०००)२	
१५५००)	२	कुसालपुर पटो	१५५००)२	—

१००००)१	बंवाळ रै पटो	१००००)१	—
१००००)२	काल्याटड़ो पटो	१००००)२	—

मेड़तिया—

३६१०३)८	रीयां सिवनाथसिंघ रै पटो	३६१०३)८	—
२०७५०)६॥	रीयां रौ जिलौ	२०७५०)६॥	—
१७३५०)४	आलणीयावास रौ पटो	१७३५०)४	—
१०७००)३	वीजाथळ रै पटो	१०७००)३	—
१०७५०)२	वीखणीया रौ पटो	१०७५०)२	—
६८५०)६	चांदारूण रो पटो	६८५०)६	—
८२५०)२	वाजोली रौ पटो	८२५०)२	—
८७७५)१	ईडवा रौ पटो	८७७५)१	—
१२०००)३	वाजूवास रौ पटो	१२०००)३	—
३८०००)८॥	जावळा रौ पटा	३८०००)८॥	—
२५५००)६	भखरी रौ पटो	२५०००)६	—
१०५००)३	रोहीड़ी रौ पटो	१०५००)३	—
३१७५०)१२	बडू रै पटो	३१७५०)१२	—
१८२५०)६	सबलपुर रौ पटो	१८२५०)६	—

३५५५०)२२	बूडसू रौ पटो	३५५५०)२२	—
१७००)६	बूडसू रो जिलौ	१७००)६	—
१३०००)४	बोरावड़ रौ पटो	१२०००)४	—
१६७००)८	मनांणा रौ पटो	१६७००)८	—
६०००)१	वडांगणा रो पटो	६०००)१	—
९०००)१	विदीयाद रौ पटो	९०००)२	—
११०००)६	रोड़ू रौ पटो	११०००)६	—
३४६४२)१७९	मारोठ रौ देवीसिंघ महेसदासोंत रै पटो	३४६४२)१७९	—
३०००)३	देवीसिंघ रौ जिलो	३०००)३	—
५९४१)३।।।	रिधसिंघ देवीसिंघोत रै पटो	५९४१)३।।।	—
४८७२)२।।	अभैसिंघ सोभासिंघोत रै पटो	४८७२)२।।	—
२२३७५)१०।	राजसिंघ रतनसिंघोत रै पटो	२२३७५)१०।	—
६२५०)२।।☰	सिरदारसिंघ फतेसिंघोत रै पटो	६२५०)२।।☰	—
६२५९)३।	मंगलसिंघ मिलाप सिंघोत रै पटो	६२५९)३।	—
४७५०)४।=	देवीसिंघ बखतावरसिंघोत रै पटो	४७५०)४।=	—
१८०६२।।)३।=	नवो वगैरे	१८०६२)३।=	—
१२८७५)६।।।	चांदसिंघ दुरजणसिंघोत रै पटो	१२८७५)६।।।	—

६४११४)२६।।।-।।	लूणवा रा पटा रा	६४११४)२६।।।-।।	—
३६६२०)१५।	पांचोता रौ पटो	३६६२०)१५।	—
२६०००)१८	पांचवा रौ पटो	२६०००)१८	—
७६३००)१७९	कुचांमण रौ पटो	७६३००)१७९	—
	ठाकुर रणजीतसिंघ जी		
१३९५५०)४९।।	कुचांमण रौ जिलो	१३९५५०)४९।।	—
४३९००)१४।--	मीठड़ी रौ पटो	४३९००)१४।-	—
९५००)४	मीठड़ी रौ जिलो	९५००)४	—
३२७५०)९।।	गूलर रौ पटो	३२७५०)९।।	—
२८६६।।=)।।१=।।	गूलर रौ जिलो	२८६६।।=)।।१=।।	
८२५०)३	बांबरला रौ पटो	८२५०)३	—
४७०००)१०	हरसोर रौ पटो	४७०००)१०	—
११०००)७	हरसोर रौ जिलो	११०००)७	—
६१५०)१।।	बोरुंदा रौ पटो	६२५०)१।।	—
१०५००)५	खोड़ रौ पटो	१०५००)५	—
२०२५०)६	बळूंदा रौ पटो	२०१५०)६	—
२१२००)१४	बळूंदा रौं जिलो	२१२५०)१४	—
१०८७५)४	सैवरीया रौ पटो	१०८७५)४	—
३०००)२	नोखा रौ पटो	३०००)२	—

६०००)१	नीबड़ी रौ पटो	६०००)१	—
१४५००)५	कुडकी रौ पटो	१४५००)५	—
७०००)३	कुड़की रौ जिलो	७०००)३	—
१४०००)१	रांहण रौ पटो	१४०००)१	—
६५००)३॥	रांहण रौ जिलो	६५००)३॥	—
१४०००)११	धुमेल रौ पटो	१४०००)११	—
४२०००)४२	घांणोराव रौ पटो	४२०००)४२	—
३७३००)१७	नारलाई रौ पटो	३७३००)१७	—
४३८००)२६	चांणोद रौ पटौ	४३८००)२६	—
५०००)१	नीबडी रौ पटो	५०००)१	—
५०००)१	पालड़ी रौ पटो	५०००)१	—
६०००)३	हौडावास रौ पटो	६०००)३	—

भाटी —

२४८००)८	खेजड़ला रौ पटो ठा हिमतसिंघ	२०००)१	२२८००)७
३४५५०)१७	खेजड़ला रौ जिलो	३८००)३	३०७५०)१४
१९५००)४	साथीसीण रौ पटो लिछमणसिंघ	४०००)१	१५५००)३
५१००)७	लवेरा रौ पटो	२१००)५	३०००)२
२७५०)२॥।	लवेरा रौ जिलो	२७५०)२॥।	—

४०००)१२	रांमपुरा रौ पटो	२०००)६	२०००)६
५६५०)६	वालरवा रौ पटो	५६५०)६	—
११२५०)४॥	कोटड़ी रौ पटो	११२५०)४॥	—
३२५६)३॥	कोटड़ी रौ जिलो	३२५०)३॥	—

बहुवांण —

२१०००)१७	राखी रौ पटो	२१००)१७	—
३६५५०)२५॥	राखी रौ जिलो	३५५५०)२५॥	—
१६५५०)६०	सांचोरी रा गांव रौ पटो चीतलवांणो	१६५५०)६०	—
१६७५०)८	किलांणपुर रौ पटो	६५००)६	७२५०)२
४४००)३	किलाणपुर रौ जिलो	—	४४००)३
८०००)२	संखवास रौ पटो	६०००)१	२०००)१
२०००)१	संखवास रौ जिलो	—	२०००)१

सोलंखी —

२६४५०)२०	रूपनगर रौ पटो आंनौ करणवौ वगैर	२६४५०)२०	—
४०००)८	कोट वगैरे रौ पटो	४०००)७	—

महेचा मालांणी —

२००४२)१३२	जसोल रावळ बैरीसाल, सिवदांनसिंघ वगेरै भोमीचारे रा	२००४२)१३२	—
७६२५)४२	जैतमालोतां रै गुड़ो साड़दड़ो रा रांणा रै पटो	७६२५)४२	—

सींधल —

१६४००)१९	कवळां, भूती पांचोटो वगेरै रौ पटौ	१६४००)१९	—

पातावत —

१०५००)४	आहू हरीसिंघ सरूप सिंघोत	१०५००)४	—

बाला —

९२५०)११	मोकलसर पटो	२९५०)११	—
६७५०)३	भंवरांणी रौ पटो	६७५०)३	—
८६६७)४॥=।॥	नीबलांणो,	८६६७)४॥=।॥	
५५००)२	बाला रौ पटो	३५००)१	२०००)१
१८६२५)१९॥	बालोतां रौ पटो [illegible] वगैरै	१८६२५)१९॥	—

१६२५०)११	बोडांणा रौ पटो सैंणा वगैरे	१६२५०)११	—
१५४५०)३७	देवड़ां रै वडगांव वगैरे	१५४५०)३७	—
१४०००)२७	कावां रै थूहर वगैर	१४०००)२७	—
४४०७५)१५८	थळी रा गांव[1] सेतरावो, देछू, केतू, बेळवो, बापीणी, ईसरू वगैरे	४४०७५)१५८	—
५००)१	बीकावतां रे	५००)१	—
६२५०)१६	कोढणा रौ पटो	६२५०)१६	—
३२५०)३	कोढणा रौ जिलो	३२५०)३	—
७०००)५	नीबावास पाड़पुरौ	७०००)५	—
३७५००)१३॥	भोपतां रा गांव	३७५००)१३॥	—
७०००)२	बुढतरो नै गोधण	७०००)२	—
१८१२६)१२॥-॥	फुटकर आसांमियां रा	१८१२६)१२॥-॥	—
१६२६४६५॥≡)	फुटकर फैर पटायत	१६२६४६५॥≡)८४८॥=	

८४८॥= समसतां के पैदास

मारवाड रा गांवां री गिणती नै रेख अर खालसौ तथा पटायतां नू तथा सांसण वगेरै सारी विगत ऊतार चोपनीयो वडा साहब लडलू साहब बहादुर नै सूंपीयौ। तरै अंगरेजी में तरजुमो कर सदर में रपोट कीवी।

संमत १८९६ रा माहा बद २ दूज नू श्री माहाराजा साहब नै सदर लेन साहब कयौ—गांवां की विगत तो हम देखी, परंत गांवां सवाय जमां सायरां,

---

१. शेरगढ इलाके के।

दरीबा, हवाला, परगना कचैड़ी चांतरा की जमां किस मुजब हैं सो हमकूं वाकबी तावैं[1] लिख कै दैवो ।

तरै श्री हजूर दीवांण तथा दफतर रा दरोगां नूं हुकम दीयौ कै साहब फेवै है जिण मुजब जमां रौ मेळ ऊतराय सूंप दौ तरै हूकम मुजब जमां रौ मेळ कर सूंपीयौ ।[2]

विगत जमां री —

२०५०००)	कचेडीयां रा
१२०००)	जोधपुर रा
१५०००)	नागोर रा
७०००)	सोजत रा
२०००)	पाली रा
१२०००)	परवतसर रा
४००००)	बीलाड़े रा
६०००)	सीवांणे रा
२२०००)	जाळोर रा
१२०००)	मेड़ता रा
४०००)	जैतारण रा
१००००)	देसूरी रा
६०००)	मारोठ रा
६०००)	फलोधी रा

1. वाकिफ करने के लिये । 2. आमदनी की रकम समुचित ढंग से लिख कर सौंपी ।

३०००)	कौलीयां रा
३०००)	दोलतपुरा रा
५०००)	सिव रा
६०००)	भीनमाल रा
१००००)	सांचोर रा
६०००)	थांवळै रा
२०५०००)	

४२५५००) दरीवां रा

१०००००)	सांभर	१५००००)	नांवा रा
१०००००)	पचपदरो	७०५००)	डीडवांणो
५०००)	फलोधी		
४२५५००)			

२८६६००) सायरां रा —

४६४००)

३५०००)	जोधपुर	२५०००)	जाळोर रा
४५०००)	नागौर	१०८०००)	पाली रा
११०००)	देसूरी रा	१७६००)	मेड़ता रा
६०००)	सोजत रा	४०००)	जेतारण रा
११०००)	परवतसर रा	६०००)	मारोठ रा
३०००)	दोलतपुरो	१००००)	डीडवांणे रा
१६००)	भीनमाल	३४००)	फळोधी रा

२८६६००)
४६४००) परबंध बंदीयां फेर सवाय में वधसी ।[1]

३३६०००)

१. प्रबन्ध होने पर आमदनी और बढेगी ।

५०००००) चांतरां रा —

१४०००) जोधपुर ७०००) जाळोर

१००००) नागोर ६०००) मैड़तो

१३०००) सोझत रा

५००००)

९८००) टंकसाळां रा —

२०००) जोधपुर रा

३००) मेड़ता रा

५००) नागोर रा

६०००) पाली रा

१०००) सोझत रा

९८००)

६४५७००) फुटकर पैदास रा —

२२५०००) हवाला रा गांवां रा

७५००) गोढवाड री दोय रुपीया घर बाव रा

१२०००) दोढी रै दसतूर रा

२२००)	वागायतां रा
४०००)	निजर रा
६००००)	हुकम नांवां[1] रा
१२५०००)	रेख गांवां री रा पटायतां कना सूं
५००००)	पेसकसी निजरांणा रा
१०००००)	फरोई खून तखसीर रा
२५०००)	बै तलबी रा
२००००)	तलबांना रा
१५०००)	अदालतां रा
६४५७००)	
१७०००००)	

दोय त्हाडी लागौडी होवै सो मोहर को आंक ।

पछै साहब कयौ इसका खरच की तफसील किस तरह है । तरै खरच रो मेळ ऊतारीयौ ।

विगत —

५८)	
३०१०२०)	सेवा मिंदर सरूप जोगेश्वर
१०५८=)	श्रीवलभ कुळ रा सरूप

1. पिता की मृत्यु पर नया जागीरदार गद्दी पर बैठता है उसे गद्दी का अधिकार देते समय लिया जाने वाला कर।

२५०००) धरम रै

४६६)।। देवळ, थड़ा[1]

४६६ -)।। देवळ थड़ा

१६१२६१) अन्न रै कोठार

१००५८।।।) हसम खुराक[2]

७३))

१५००) जवाहर खांना तालकै

१८५।।। ≡)।। खासै रसौवड़ै तालकै

१२४) तंबोलखांना तालकै

४००६०) फुरमायस तालकै

१६०००) श्री देवसथांन तालकै

२१०।।। =) श्री आत्मारांमजी

५००) ब्राह्मण पिंडत आचारी

४०००) हजूर री वरस गांठ तालकै

४२०००) वागर तालकै

४००००) किला तालकै

२०००) जरजरखांना तानकै

११७। -) अवदार खांनै तालकै

३२९८३४) महीनादारां तालकै

१०००००) रौजीनदारां तालकै

1. स्वर्गवासी महाराजा पर बनाये गये स्मृति-भवन।
2. फौज की खुराक के लिये।

७०००)	कपडा रै कोठार तालकै
८३३४॥)	दफतर खरच तालकै
४०००)	खेमां रै कारखांनै तालकै
५०००)	खरची रा
४६८)	इनांम खरच
५०००)	बाभां तालकै
४४)	सलेखांना तालकै
२२)	तातैडखांना तालकै
४८०।।।‾)।।।	तोपखांना तालकै
५२५६)	सुतरखांना तालकै
१५२२।।।)	कीलीखानौ
६४३‾)।।	वागा रै कोठार तालकै
६०००)	तिवांर खरच[1]
३०००)	ईनायत खरच
१४००)	गांव बेरां री साख रा
४))	
११६७४॥)।।	जनांनी डोढी रा खरच ४)) मोरां
१००)	ढौलिया रा कौठार तालकै
२२६०००)	अंगरेजां तालकै
	१०८०००) ११५०००) ३०००)

1. त्यौहारों पर खर्च।

५८६)	फीलखांना तालकै
१७०=)।।	बारूदखांनै तालकै
१४।--)	कबूतरखांनो तालकै
५)	घडियालखांनो तालकै
५०)	झांराखांना तालकै
१०००)	सोराखांना तालकै
५५००)	कार्सीद खरच तालकै
११२२।।)	किरायौ भाड़ो तालकै
४४१५)	सिरपाव खरच
१२६०)	खरीद खरच तालकै
११६)	तबेला खरच तालकै
८०००)	कमठा रा तालकै
१६२≡)	गऊखांना तालकै
१००)।।।	नगारखांना तालकै
१६६७४=)	परबारी खुराक तालकै
१२७३)	वळ मिजमांनी
१०००)	विदा रा दिरीजै
३२३२।।।)।	नित्रांणां तालकै
६१)	अनामत खरच
६१)	फरासखांना खरच
३०२०।≡)	बगायत रा खरच

२०१८☰)	रखत खरच
१८००००)	फतैपोळ तालके
४६५)	नाम री चूंगी रा
११७९७।=)	थांणां तालकै
६८७)	मैंहलां तालके
४०७।=)।।	टकसाळ तालके
६६३०।¯)।।	वटा रा
७५)	पाटा बंधाई
२०)	रसाळ री दुकांन
१९००।।।¯)।।।	विछायत तालकै
३९८००)	महा पुरुसां तालके
१५३००)	समद खरच
१७७८)	खेड़ खरच तालके
९३६।।)	सलूगी तालके
२००००)	व्याज रा खरच
५११५।।।¯)	हूंडावण रा
१९४)	खैती तालके
२।।)	सीसा रौ दरीबो
१०१५)	चोरी रै माल रा
८९५।¯)	मोताद रा
६)	पुखतनी रा
१००)	मारखाई रा

५८०॥)	तैल रुसनाई रा
२०००)	वाजै खरच
१३५)	१७०००००)
२१६३॥।)	मोरां १३५)) रा व्रत १६।) लेखैं मुकरड़े रुपीया २१६३॥।)
	१७०२१६३॥।)

संवत १८६६ रा माहा वद नु बडे साहब कह्यौ मुलक का जमा-खरच ही देखा, परंत परदेसी लोक जो फतेहपोळ नौकर हैं नै हमसां तगादा दोढी ऊपर करता है सो इसका हिसाब किम तरै सै है सो अर इसका राज में बाकी क्या नीसरता है सो हम कूं वतावौ।[1] ज्यूं हम सफाई करा देवैं, सो थोड़ी त्रिगत घाल हमकू सच-सच हुवै सु वाकब करौ।[2] तरै इण मुजब हैंसाब करायौ, तिण री विगत —

६०००००)	लारले हिसाब रा संमत १८८८ रा असाड सुद १५ सुधा बाकी नीसरीया छव लाख।
२३०००००)	संमत १८८६ रा आसोज वद १ सू लगायत संवत १८६४ रा असाड सुद १५ सुधा मास ७० दिन २६ आसरे मुकरड़े रुपीया तेईस लाख।
७५००००)	संमत १८६५ रा सांवण वद १ लगायत संमत १८६६ रा असाड सुद १५ सुधो हिसाब तौ जुदो जुड़ीयौ नही नै दरमावा[3] सू आसरो देख धरीया, साढी सात लाख।
७५००००)	इंमतीयाज रो हिसाब तौ जुड़ीयो नहीं सु आसरो देख धरीया साढी सात लाख।
५०००००)	संमत १८६४ रा असाड सुद १५ सुधा।
२५००००)·	संमत १८६५ रा सांवण वद १ लगायत संमत १८६६ रा असाड सुद १५ सुधा, साढा सात लाख।
४४०००००)	चमालीस लाख देणा रया संमत १८६६ रा असाड सुद १५ सुधा।

1. राज्य में ये क्या बकाया मांगते हैं सो मुझे बताओ। 2. संक्षिप्त में सच्ची स्थिति से अवगत कराओ। 3. माहवारी दर के हिसाब से।

वसूल इण भांत हुवा —

२४६११०५) संमत १८८९ रा सांवण वद १ लगायत संमत १८९४ रा असाड सुद १५ पाया आसरै।

१९६११०५) खजांना सु पाया

५००००००) सांभर नांवो डीडवांणो पाली हवालो सायरां सुधा आसरै पांच लाख पाया ।

२४६११०५)

३५००००) समत १८९५ रा सांवण वद १ लगायत असाड सुद १५ सुधा खजांना सूं वीणदांमी वगेरै पाया।

२८१११०५) बाकी १५८८८९५) तिण मधै रुपीया ४२५०००) अखरे चार लाख पचीस हजार मुकरड़ै ठेहरीया। तिण री दुतरफी सफाई हुय राजी-वाजी हुय किसतां बांधी।

विगत किसतां री —

१५००००) हाल रोकड़ा दीना नै आधै लोक नै तौ सीख दीवी नै आधो लोक बाकी रयौ।[1] तिण रा चैराई १८९७ सांमण वद-१ सूं ।

२७५०००) दोय लाख पिचंतर हजार बाकी रया सौ मास १२ में देणा।

४२५०००) इण विध फैसलो हुवो।

1. आधे सैनिकों को तो विदा किया और आधे यहां रहे।

परदेसी लोक बेड़ा रा कपतांन मेजर राजसथांनां रा ऊकील वगेरै अठै रहै, तिणां री विगत —

—

६. कपतांन बेड़ां रा—

१ नवाब अबदुल रहीम, बेगखां, मेमद हसन, बेगखांजी रा बेटा बेगखांजी रा पोता मुलक ईरांन में सहैर मसहद जात मुगल । अठै आया संमत १८६३ रा बरस में, घोड़ा १०० सूं नौकर ।

१ पठाण सिकन्दरखां कलंदरखां रो बेटो, जारतखां रौ पोतौ ऊतन[1] रांमपुर । चाकर संमत १८६४ सूं ।

१ पठांण छोटेखां हिंदालखां रौ बेटौ । वास विलायत । हिदालखां चाकर संवत १८४७ रा बरस में नौकर रयौ सु कैई बरस रहै पाछौ परौ गयौं ।[2] पछै संमत १८६१ रा बरस में फेर चाकर रयौ । पछै फेर सीख हुई । सु समत १८८३ रा बरस में फेर नौकर हुवौ ।

१ पूरबीयो रसालदार गिरवरसिंघ ऊमेदसिंघ रौ बेटो । ऊतन मह्ु । परगने कनोज । चाकर संमत १८५६ रा बरस सूं रयौ ।

१ कायामखांनी बादरखां अलफूखां रौ बेटो । वास फतैपुर । चाकर १८.... बरस सूं ।

१ सेख गुलाममेदी गोस मेमदखां रौ बेटो खोळै[3] सादलखां रा बेटा । ऊतन सावाद सं० १८६३ सूं नौकर ।

—

६

१ सिंधी साहब जादौ ।

२ राजसथांनां रा ऊकील दोय ।

१ ऊदैपुर रौ ऊकील पंचोळी विरधीचंद छोगालाल रौ ।

१ किसनगढ़ रौ ऊकील पंचोळी आनंदीबगस भानीबगस रौ ।

१ पिंडत बाजैराव आगै दिखणीयां री तरफ सूं रहतौ सो हाल तक है ।

—

१०

1. वतन । 2. कई वर्षों तक रह कर फिर लौट गया । 3. गोद ।

पछै सायर कयौ मारवाड़ का कांम पंचायत से हुंसी[1] सो सिरदारां में पंच कोंण-कोंण ठाकुर अर अेहलकारां में पंचायत सांमल कोंण-कोंण मुतसदी मुकर होसी सो विगत वार मांड कै कागज हमकूं सूंपौ। सौ हम सदर मै रपोट करेंगे।[2] जद इण मुजब ऊतार नै सूंपी[3] —

विगत —

८ सरदारां में —

१ पोहोकरण ठाकुर बभूतसिंघजी चांपावत।

१ आऊवै ठाकुर कुसालसिंघजी चांपावत।

१ नीबाज ठाकुर सवाईसिंघजी ऊदावत।

१ रीयां ठाकुर सिवनाथसिंघजी मेड़तीया।

१ भाद्राजण ठाकुर बखतावरसिंघजी जोधा।

१ कुचामण ठाकुर रणजीतसिंघजी मेड़तीया।

१ आसोप ठाकुर सिवदानसिंघजी[१] अेवज ठाकुर सिभूसिंघजी कंटाळियो खांप कूंपावत, आसोप ठाकुर टाबर तिण सूं।[4]

१ रास ठाकुर भींवसिंघजी ऊदावत।

—
८

५ अेहलकार में —

१ धायभाई देवकरण, कांम किलेदारी रौ पिण करै।

१ दिवांण सिंघवी गंभीरमलजी दिवांणगी करै।

---

१. ग. कूंपावत (अधिक)

---

1. पंचों के परामर्श से होगा। 2. हम इसकी सूचना प्रधान-कार्यालय में भेजेंगे। 3. लिख कर दी। 4. आसोप ठाकुर नाबालिग था इस लिये उसके स्थान पर शंभूसिंह को रखा।

१ बगसी सिंघवी फौजराजजी ।
१ ऊकील रावसा रिधमलजी ।
१ जोसी परभूलालजी ।
—
५

जमीदारां रा गांव लिखिजीया तिण री विगत रपोट में छै[1] ।

कर्नल सदरलैंड का अजमेर को रवाना होना —

जमीदारां रा गांव लिखिजीयां पछै पो सुद १४ चौदस वडा साहब सदरलेन साहब बहादुर श्री हजूर सूं सीख कर अजमेर नू रवांनै हुवा । नै हजूर नैं कयौ— आप सिरकार कंपनी का हुकम उठाया किला सूंप दीया सो हम बहोत खुस हुवा । अब मैं डाक में लाट साहब बहादुर के पास कलकत्ते जाऊंगा आपकी सुपारस करके आप कू गढ़ सूंपने का हुकम लेकर पीछा जलदी आपके पास आऊंगा ।

अठै छोटा साहब लडलू साहब बहादुर नै अजंट राख गया सो सूरसागर डेरौ करायौ । ऊकील रिधमलजी री जबांन ऊपर राज रौ कांम हुवै ।

सदरलैन्ड का कलकत्ते से वापिस आकर किला सौंपना—

सदरलैण साहब बहादुर जोधपुर रौ किलौ पाछो सूंपण रो नै जैपुर वाळां में खिरणी रा रुपीया ज्यादा चढ़ता था सो अधखर छूट करण री नें आगा सूं खिरणी कमती करण री लाठ साहब बहादुर सुं दुवायती ले[1] पाछा डाक में जैपुर आया । सो जैपुर वाळां नं खिरणी छूट मेल कर नै फागुण सुद-१२ बारस जोधपुर छड़ - वडा साथ सूं आया । नैं फागुण सुद १५ पूनम गढ़ ऊपर सुं अंगरेजी थाणौ ऊठाय लीयौ । दोनूं सायब बहादुर साथै जाय गोळ री घाटी हुय नै श्रीहजूर नै गढ दाखल किया[2] । सिलक हुई[2] । श्रीहजूर

१. ख- मारवाड़ की कुल पैदास कितनी है, सायरां टकसालां हवाला चौतरा अदालतां कचेड़ियां वगेरा की जमा कितनी है अर खरच किस किस जगह लगता है कुल हेसाब उतराय दो तरै सांब रा केणा मुजब सारी इबारत उतरायदी (अधिक)

२. ख- ख्यात में लिखा है कि महाराजा कई दिनों तक किले में नहीं गये क्योंकि लिखमीनाथ और पिरागनाथ बाहर बैठे थे । तब लडलू साहब ने समझाया कि नाथों को हम राज-कार्य में दखल नहीं करने देंगे यदि आप गढ़ में नहीं जाते तो हम हमारी चौकी फिर से बैठा देंगे तब महाराज किले में गये । (पृ. 116 B) ।

1. स्वीकृति लेकर । 2. तोपें छोड़ी गई

रंग पधरायौ। जनांनौ दरबार हुवौ। बडी खुसी हुई। ऊकील राव साहब रिधमलजी नै कड़ा, मोती, कंठी, सिरपेच, सोने री सांटां, पालखी नै रावराजा[1] बाहादुर रौ खिताब इनायत कीयो। पछै बड़ा साहब बहादुर तौ तुरत ही पाछा डाक मै अजमेर गया।

सिंघवी कुसलराजजी नै बुलावण री सायब कनै दुवायती ले लीवी सु कितराक दिनां पछै बुलाया नै बगसीगिरी रा कांम मुदे फौजराजजी री बुलावण री दुवायती रिधमलजी पैला हीज ले आया हा।

राज रो कांम सारौ सूरसागर हूवै[2]। मुसायब कारंदा सारा सूरसागर आवै। राज रा दफतर सारा सूरसागर रेवै। परदेसीयां रौ हिसाब सिंघवी फौजराजजी नै जोसी परभूलालजी नू भौळायो[3]। अदालत रो कांम सिंघवी मेगराजजी नै भंडारी गोयनदासजी करै। सारा कांम री फड़द अजंट साहब आथण रा वचाय लेवै।

कप्तान लडलू का नाथों के प्रति कड़ा रुख—

पछै अजंट साहब कह्यौ—जमीदारां गांवां रौ तो फैसलो हुवौ। अब नाथां के नीचे जागीरी बोहोत है सो साढ़ा च्यार लाख रुपीयां री जागीरी तो राखौ वाकी री छुडाय लेवौ। नै कुचांमण, भादराजण, रायपुर रै जागीरी ज्यादा है सो वधारा[1] रा गांव है सु छुडाय लौ। तरै इंणां रा केईक गांव वधारा रा छुडाया।

लिखमीनाथजी री कांमेती जसरूपजी री तरफ सूं मुंहता हिंदूमल रहतौ। जिण नै फुरमावणौ हुवौ सो हिंदूमल जबाब दीयो कै साढा चार लाख तौ अेक महामिंदर रौ ही खरच सजे नहीं[2] सो जोगेस्वर तौ घंणा है।[3]

---

१ ख. रावराजा शाहजी कामे रौ कुरब (अधिक) २ ख. सं. १८९६ रा बैसाख सुद सूरसागर दफतर दरोगे सिंघवी गिरधारीमल दफतर री बहियां जरूरत कांम रै मुद्दे री लेय सूरसागर डेरो कर दियो अर उकील रावराजा बादर शाह रिधमल रो डेरो पिण सूरसागर हो सो रात दिन उठे हीज रहे, लडलू साब रा कैंणा सूं। ३ ख. परभूलाल को साब ने कहा कि जितना बकाया हिसाब जिनानों, मुसदियों नाथों के मारफत है सो सही करो (पृ. 119 A)

---

1. बाद में बढ़ाये हुए। 2. पूरा नहीं पड़ता। 3. नाथ तो बहुत हैं।

संमत १८६६ रा जेठ सुद १३ लिखमीनाथजी रौ कांमेती मुहता जसरूप लाडण री हवेली में सरणै बैठो हौ जठा सूं माहामिंदर गयौ। सो अजंट साहब बहादर सुणियौ तरै पूरा खिजिया[1] नै श्री हजुर में पूगी तकरार रौ खलीतो हिन्दी में लिखियौ— कै इसी वखत जसरूप कूं तीस कोस बारै निकाळ दो नहीं तो दूसरी तजवीज हम करेंगे। तरै माहामिंदर सूं जसरूप चढ़ गयौ।

ऊकील रिधमलजी रै नै दिवांण गंभीरमलजी रै बणियौ नहीं।[2] तरै साहब बहादुर श्री हजूर नै कह्यौ के इस दिवांण से कुछ कांम चलता नहीं। जद साहब बाहादुर श्री हजूर नै कयौ—दूसरा दिवांण करौ। तरै सिंघवी इंदरमलजो नै दिवांण कीया।

नाथां रो पूरौ फैल। फुटकरीया[3] जोगेश्वर रोजीना धरणा देवै। श्री-हजूर जमां मांह सूं[4] छांनै-छांनै रुपीया मंगाय नाथां नै देवै। जाळोर रा परगना मे पिरागनाथजी ईगेरै रो रैयत ऊपर जुलम कीयां री अजंट साहब सूं इतला हुई। तरै तकरार रौ खलीतो असाढ सुद ६ रो आयौ।

संमत १८६७ रा सांवण वद १२ जालोर रा परगना री रैयत ऊपर नाथां जुलम कीयौ तिणां रा राजीनांवा ऊकीलां अजंट साहब कनै पेस कीद्या।

संमत १८६७ रा आसोज मै सिवांणा रा परगना में भीखा रा भाखर में बारोटीया[5] भेळा हुवा नै धोकळसिंघ रै बेटा रौ फितूर ऊठायौ[1] तरै बगसी-सिंघवी फौजराजजी फौज लेनै गया सो बारोटीया नास गया।

संवत १८६७ रा पोस सुद १२ रो मिती रो खलीतो अजंट साहब रौ आयौ जिण में लिखीयौ कै बड़ा साहब बहादुर री चिठी आई जिसमें लिखा है कै लिखमीनाथ का कांमेती जसरूप कुं ३० तीस कोस उरली तरफ नही आणै देणा. जिसकी पंचां के नांव की केफियत हमारे पास आजावे तो अछा।

---

१. ग आसोतरा रो ठाकुर सगतसिंघजी करणोत रा बेटा रतनसिंघजी नूं धोकलसिंह रो बेटो बणाय फितूर खड़ो कियो थो और नाथां रौ फितूर नै राज रा काम में पूरो दखल जिण बाबत अजट रा खलीत दूजै तीजै हजूर में जावै तरै पाछौ गोळ मोळ जबाब भुगतै पण नाथां रो दखल घटावै नहीं। तिण सूं साब पूरो खफा वकील रिधमल ऊपर रोज तकरार करै (अधिक)।

---

1. नाराज हुए। 2. आपस में मतभेद हो गया। 3. छोटे बड़े नाथ लोग। 4. जमा रकम में से। 5. उपद्रवी डाकू।

संमत १८५७ रा पोस सुद ११ श्री हजुर साहबां री असवारी माहा-मिंदर पधारी अर अजंट साहब रै नांवे खलीतो दीयौ कै थे अेक १ वार आवौ घणा दिन हुवा है मुलाकात कीयां नै सो नहि आवौ तौ म्हांरो पधारणो थां कनै उठे हुवी[1] पाछौ जवाब लिखजौ। पाछौ खलीतो अजंट साहब रौ आया कै आप हमकुं मुलाकात वासतै माहामिंदर बुलाया सौ हम माहामिंदर नहीं आवेंगे। पोस सुद १२ बारस। जिणरै जवाब में श्री हजूर री तरफ सुं खलीतौ अजंट साहब रै नांवै गयौ नै ऊकील साथै मुख जबांनी केवायो कै जरूर-जरूर थे आवौ तो ठीक है। म्हांरो गढ दाखल माहामिंदर सूं होण री पिण ताकीद है सो किताक कांम अटकीयोड़ा है[2] सो आवौ तो वतळाय लेणा में आवै।[3] सो मुलाकात री अर कांमां रौ मखसद हासल री खुसी हासल होवै। संमत १८६७ रा पोस सुद १५।

जवाब में पाछौ अजंट सायब रो इंण हीज मिती रौ आयौ कै नाथां का दखल अब तक नहीं मिटा सु मुलाकात कियां में कुछ मखसद हासल नहीं होता। और आप गढ पर तसरीफ ले जावेंगे अर कारंदा का पूरा अखत्यार रहेगा तौ आपकी मुलाकात की हमकूं अेन खुसी है। अर नाथां का आदमी आपके पास नहीं रहेगा।

जिण रै जवाब में श्रीं हजूर सायबां री तरफ सुं अजंट साहब रै नांवै खलीतो दीयौ कै मुजराई लोक हाजर घणा क्यूं हुवै ? सु तो सदा मंद मुजब हैई[1] फेर पेख जोगेश्वर दोय चार रेवै है और दूसरौ मखसद औ लिखियो कै कारंदां री दिल जमाई से कांम आगे चलेगा सो कारंदां री दिल जमाई तौ कार-बार भोळायो जिण दिन सूं इणा री दिलजमी ई है। दिल जमाई नहीं होती तौ कार बार कैण में सूंपण में आवै।[4] और थे आगे ऊकोल वा सेठ साथै केवायौ थौ के आयसजी श्री लिखमीनाथजी माहाराज तौ भलांई पधारौ पिण जसरूप नहीं आवै सो लिखमीनाथजी माहाराज तौ पधारीया है अर जसरूप अठै नही आयौ है। सो इसा सोबा खड़ा हो जावै जरै सफाई जरूर कराय लेणी।[5] अठै तौ आज तांई थांरी सला माफक वरतण[6] राखी है अठां सूं तो दोस्ती में रती भर फरक नहीं आवै जिसा मखसद दिल में रेवै है।

---

१. ख. ख्यात में लिखा है कि लोग कान फड़वा कर नित नये नाथ बनते थे और श्री-हजूर उनकी खातरी पर खुब पैसा खरच करते। लड़लो साहिब को यह बहुत बुरी बात लगी। (पृ. 120 A)

---

1. मैं स्वयं वहां आऊंगा। 2. कई काम रुके हुए हैं। 3. विचार विमर्श हो जाय। 4. उन्हें कार्य क्यों सौंपा जाता। 5. इस प्रकार की शंका हो जाय जब उसका निवा-रण अवश्य करवा लेना चाहिए। 6. व्यहार, कार्य-पद्धति।

जिण रै जबाब में साहब बहादुर लिखियौ कै आपकुं और गुरु मुकरर करणा पड़ेगा। इंण वगेरै तकरारी रौ समत १८६७ रा माहा वद २ दूज रो।

पाछौ खलीतो माह वद ६ री मीती रौ संमत हाल[1] कै—थे अठा रा अजंट हौ सो इंण तरै कहौ कै फलांणा[2] कांम नही होगा तौ हम चढ जावेंगे[3] सो आ वात तौ सरबथा थांनू नहीं करी जोईजे। थोड़ौ थंमियो जोईजै।[4]

पछै श्री हजूर री असवारी हुई सो डेरा गांव वणाड़ हुवा। सो अजंट लडलू साहब बहादुर सुणियौ जद ऊकील नू कह्यौ कै हम भी सफर करेंगे। यहां से चढ जायेंगे। वगेरे तकरारी खरीतो लिखियो कै आप वणाड़ से अगाड़ी षधारोगे तो आपकूं गुरु और[5] मुकरर करणा पडेगा इंण वगेरे सखत लिखावट रौ। माहा वद ६ छट समत हाल[1] रो खलीतो दीयो।

जिण रै जबाब मै पाछौ रुकौ लिखियौ गयौ, गांव वणाड़ रा डेरा सूं। के हकीकत रौ सारो अेहवाळ लिखियौ सो अठी कांनी सूं तो दोसती मैं फरक नहि पड़ेला और समाचार मुतसदी आयां लिखण में आवसी। संमत १८६७ रा माहा वद १०।

जिण रै जबाव में माहा वदि ११ रौ लिखयौ आयौ तकरारी कै आप वणाड़ से पीछा जोधपुर नहि पधारोगे तो लिखमीनाथ का हक मै वुरा होगा। सो खलीतो लिख ऊकील नू सूंपीयौ। अर घोड़ा ५ पांच सिरकारी साथै वणाड़ तांई दीया। कारण कै किणी सूबो घालीयो कै ऊकील नूं पकड़ लेसी।[6]

जिण सूं पछै श्री हजूर गांव वणाड़ सूं पाछा पधारीया अर कांम री मुकत्यारी ऊकील रावराजा बाहादुर सायब रिधमल री हुई। इंण वात री सटपट में सेठ जोरावरमल पटवो पिण हाजर थौ।

नाथां रो फैल दिन दिन जादा वधियो, कांम रौ किहुंई सालीको बेठै नहि।[7] अजंट सायब ऊकील सूं ताकीद कीवी तरै ऊकील कयौ मैं क्या करूं,

---

१. ग. संवत १८६७ रा।

---

1. उसी संवत का। 2. अमुक। 3. यहां से विदा हो जाऐंगे। 4. थोड़ा रुकना चाहिए। 5. दूसरा। 6. किसी ने यह संशय पैदा कर दिया कि वकील को गिरफ्तार कर लेंगे। 7. काम की कुछ भी व्यवस्था जमी नहीं।

दिवांण ईंदरमलजी गंभीरमल का भाई गंभीरमल से ही सुस्त वहोत है। तरै सायब दीवांण बदलण री ताकीद कीवी। तरै भंडारी लिखमीचंदजी नै दिवांणगी संमत १८९८ रा .... दीवांण कीयौ। पिण नाथां रा परबंध री अरज करै[1] हरांमखोरो कुण ओढै।[1] जिको ही दिवांण हुवै जिकौ श्री हजूर री मरजी ढावै[2] नै नाथां रौ मन राखै। सो लिखमीचदजी सूं ही सालीको बंधीयौ नही। नै भंडारी लिखमीचंद सालीका री अरज कीवी सु श्री-हजूर मंजूर कीवी नहीं। तरै फेर साहब दीवांण बदलण री ताकीद कीवी। तरै संमत १८९८ रा चैत मै मुंहता बुधमलजो[2] रै दीवांणगी हुई[3]।

संमत १८९८ रा भादरवा में वडा साहब सदरलेन सायब आबूजी मूंपालो हुय जोधपुर आया तरै श्री हजूर गांव गुड़ै तांईं सांमा[3] पधारीया[4]। नै आसोज में कूच कर वडा साहब बहादर अजमेर गया।

जैसलमेर व फलोधी की सीमा के गांव बाप के विवाद को सुलझाने का प्रयास—

संमत १८९८ रा आसोज सुद में अजंट साहब बहादुर ऊकील रिधमलजी अर जैसलमेर रौ ऊकील पुरोहित सिरदारमल परगने फलोधी रै नै जैसलमेर रौ गांव बाप रै कांकड़ रौ झगड़ो झौड़[4] घणा वरसां सूं हौ सो निरधार करण[5] गया। सो निवड़ीयौ नही[5]। तरे पाछा आया। नै पोकरजी रौ मेळो देखण साहब बाहादुर पोकरजी[6] गया सु नवे नगर पाली हुय पाछा आया।

---

१. ग नाथां री कलम पैला अटकै (अधिक)। २. ग. सुरजमलोत (अधिक)।
३. ग. रिधमल री मारफत पण बुधमल कांम में समझै नहीं। फुरमावणो हुवै जिणरी समझ आवै नहीं। साब कनै जावै तो बिनां समझ री वातां करै। साब खफा (अ.)
४. ख. साब रा डेरा सोजतिये दरवाजे बारे दिया। मुलाकात हुई सो मीठी मीठी बाता सूं साब नै राजी कियौ। जाफती दीवी। चढती वखत हजूर नूं एकंत में कयौ कै माराजा साब इन दिनों में नाथों का दखल राज के काम में पाछा सुरू हो गया है सो उनका दखल हरगिज नहीं रहेगा। और आपके व नाथों के हक में बहुत बुरा होगा।
५. ख. लडलू ने उस झगड़े को निबटाने का प्रयास बाद में भी किया था, पर रिधमल की जिद के कारण निबटा नहीं। (पृ. 120 B)(पृ.121 B)

---

1. यह बदनांमी कौन ले। 2. उनकी इच्छाओं को तुष्ट करे। 3. सामने।
4. विवाद। 5. निवटारा करने के लिये। 6 पुष्कर।

नाथों को केवल तीन लाख की जागीर देने का ऐजेण्ट का दबाव —

संमत १८९८ रा पोस में माहामिंदर अर ऊदैमिंदर वगैरे जोगेश्वरां रौ पटा जबत होय सेठ पूनमचंद ताजकै हुवा। सो जारायत[1] में तौ पूनमचंद रौ तालको दोनुं नै गांव आप आपरा जिणां रै नांवें हा जिणां नू पौछीयां जावै।[2]

और आयसजी श्री लिखमीनाथजी पिरागनाथजी, रुगनाथजी, वगेरै नैं जोसी परभूलालजी, पटा नवेस पंचोली धनरूपजी, पटवो प्रतापमलजी, माहामिंदर रौ कांमेती व्यास गंगाराम, मंगली पावजी रौ कांमेती दोढीदार प्रोहित त्रिरदोचंद, बखतावरमल, सिंघवी कुसलराजजी वगैरै घणा जिणांने साहब बहादूर रा कैणा सूं सीख दीवी। फेर भंडारी लिखमीचंदजी, खीची ऊमेदजी, भाटी अनजी, जीवराजजी, पंचौळी कालूरांमजी वगेरां नू सीख दीवी।[1]

संवत १८९७ मै ठाकुर पोहोकरण वभूतसिंघजी नू परधांनगी हुई। नें नीबाज रा ठाकुरां रै काका सिवनाथसिंघजी रै गांव आगेवौ अर पाटवो लिखिजियौ नै कुंपावत करणसिंघ रै गांव कुचेरौ लिखिजीयौ।कुरब इनायत हुवौ।

अजंट साहब श्री हजूर नै कयौ कै इतरा दिन तौ जोगेश्वरां नै साढा चार लाख रुपीयां री जागीरी देण रौ हुकम हौ नै हमें तीन लाख री जागीरी जोगेश्वरां नू दिरावौ। थेट सदर सुं नवी सत कराया मंगाय देऊ। नही तौ पोछै कुछ नही मिलेगा। सब जोगी निकाला जायगा। सो तीन लाख री जागीरो ही जोगेश्वरां मंजूर कीवी नहीं।[2]

सिंघवी सुखराजजी कंटाळीये सूं गोसे आया। हवेली में रया नै खेवट कीवी सुं श्रीहजुर रा फुरमांवणा मुजब कितराक सिरदारां नै फांट नै मरजी वुजब रहण री अरजीयां लिखाय लीवी। नै सिरदार जोधपुर सूं सीखकर नै आप आप रै घरै परा गया।

१. ग. घणा घणां नू साब रा केणा सूं सीख दीवी सो जोधपुर सूं ४०-५० कोस आघा काढ़ दिया। पछै ठाकुर पोकरण वभूतसिंह नीवाज शिवनाथसिंह कूंपावत करणसिंह इणां लिखमीनाथजी सूं ढब लगाये। (अधिक) २. ख. संवत १८९८ में महाराजा ने नाथजी के दर्शनों के लिये जालोर जाने की इच्छा प्रकट की परन्तु लडलू साहिब ने कहा कि फलोधी वाला झगड़ा अभी निवटा नहीं है सो आप नहीं जावें। तब नहीं गए। (पृ. 121A)

1. प्रकट में। 2. आमदनी फिर भी नाथों के पास पहुंच जाती थी।

विगत —

१. आऊवो ठाकुर कुसालसिंघजी

१ रास ठाकुर भीवसिंघजी

१ खेजड़लो ठाकुर हिमतसिंघजी

१ साथीण ठाकुर............................... अै सीख करनै घरे गया।

पोहोकरण ठाकुर बभूतसिंघजी, नीवाज ठाकुर सवाईसिंघजी नै ठाकर रा काका सिवनाथसिंघजी, कूंपावत करणसिंघजी अै जोधपुर रया। सो अै तौ बारला सिरदारां में[1] नै मरजी रा सिरदारां में—

१ कुचांमण ठाकुर रणजीतसिंघजी

१ भादराजण ठाकुर बखतावरसिंघजी

१ रायपुर ठाकुर माधोसिंघजी

१ लाडणू ठाकुर मंगळसिंघजी

१ जूसरी ठाकुर सादूळसिंघजी

अै हाजर हा।

सेठ जोरावरमल रौ गुमासतो सेठ मांणकचंद गोलेचो जैपुर री दुकान ऊपर हौ। जिण ऊपर लडलू साहब बहादुर मेहरवांन हौ सौ मांणकचंद साहब बाहादुर सूं मिळण मुदै आयौ। घणा दिन अठे रयौ। सो सिंघवी सुखराजजी मांणकचंद हस्तै खेवट कीवी।[2] सु मांणकचंद साहब बाहादूर नै कयौ— सिंघवी सुखराजजी अच्छा कारूंदा है सो इण नूं दिवांणगी दिरावौ तौ सब कांम का सालीका लगाय देवै। तरै साहब बाहादुर हांकारो भरीयौ।[3] सुखराजजी श्रीहजूर में मालम कराई तरै श्रीहजूर गोसे साहब नै पूछायौ, साहब बाहादूर दुवायती दीवी। तरै हवेली सुं सुखराजजी नै आदमी मेल बुलायनै मांहला बाग में साहब बाहादुर रै रूबरू सुखराजजी नै दीवांणगी री दुपटो दीधौ। संमत १८९९ रा भादवा वद १२। सो मिगसर तांई तो सिंघवी सुखराजजी दिवांणगिरी रौ कांम आछी तरै सूं कीयौ पिण नाथां वगेरै नै देण रौ खरच घणौ। सौ सेवट कांम कठा तांई

1· महाराजा के कृपा पात्र नहीं। 2· प्रयत्न किया। 3. स्वीकृति दी।

चालै । ने लोकां साहब बहादुर कनै नालस कीवी [1] कै आप तौ नाथां रो परवंध बांधौ हौ नै श्री हजूर सुखराज कनै हजारां रुपीया मंगाय नै नाथां नू देवं है सो साहब सुखराजजी री दीवांणगी मोकूब करण रौ केवायौ ।[१] सो मिगसर बद ८ अजंट साहब बहादुर श्री हजूर कनै बाग आया तरै सुखराजजी दीवांणगिरी री मोहर श्री हजूर मै मेल दीवी । सो दीवांणगी खालसै हुई । मोहोर दोढी रही ।

श्री हजूर मांहला बाग सुं राईकै बाग डेरौ कीयौ । भंडारी लिखमीचंदजी हसतै रुपीया ठेहर ने ओहधा हूवा । दफतर री दरोगाई जोसी सांवतरांम रै रुपिया ५०००) पांच हजार ऊधार जमां रो परवांणो करायनै लीवी । इण ताछ कितराक ओहधा खिजमतां हुवा ।

पोलीटीकल ऐजेण्ट का सिरोही जाना और पीछे कार्य में अव्यवस्था —

अजंट साहब बाहादुर सीरोही री तरफ[१] मुकदमां निवेड़ण नै गया था । मेडतीया दरवाजा बारै डेरौ दळ-बादळ खड़ौ हुवौ थौ ।

रोजीनां कांन फडाय फडाय नवा नाथ हुवै । नै सीरा पुडी खोर वगेरै मनमांनीया जीमण नाथां रै वासतै हुवै । नाथां रौ पूरौ फैल । रोजीना रुपीया मांगै नै गडण नै त्यारी हुवै ।[2] सो हजूर मूढा रै मांगीया रुपीया देदे नै राखै । जौगीयां री पंचायती आगै राज रा कांम नै वारी आवै नहीं ।[२] खरच री तंगाई सूं रेख बाब रा रुपीया तीन चार लाख री भरोतीयां कर खजांने जमां खरच कराय जमां पूरी करी । जांगियां नै तथा बारै काढीया जिणां चाकरां वगेरै रुपीया वेंछीज गया ।[3] कौठार वागर ना गांवां हुवै ।

फागुण में अजंट साहब बाहादुर सीरोही सूं पाछा आया नै पूरी ताकीद कीवी कै हम दोय महीनों से पीछा आया जितनै चार लाख री जमां थी[4] सु

१. ग. रिधमल ऊकील ने सिरदारां वगेरां अजंट साब ने केयौ के सुखराज सो महामिंदर रा कांमदार जसरूप रौ सगो है तरै दीवाणगी जबत कराई । २. ख. गांव भीखनवास गया । संवत १८९९ रा पोस मे, चढती वखत माराजा साब नै केयौ के हम दो महीने के वास्ते जाते हैं हम पीछे आवें जब तक नाथों के निमत खरच नहीं मगावसी । आप फुरमायौ ठीक है । ३. ख. इणी दिनां पंजाब में जोगेसरां की जमात आई जिस पर खूब खर्च किया ।

1. शिकायत की । 2. रुपये न देने पर जमीन में गडने को तैयार होते हैं । 3. रुपये बांट दिये गये । 4. ४. लाख रुपये जमा थे ।

माहाराजा साहब सब नाथां कूं खिलाय दीवी । सु महाराज अपने हाथ से नाथां की जड़ उखेड़ते है । रुपीया ऊभारा ले नै ओहधा दीया सु सारा जब्त करौ । तरे ओहधा जबत कीया ।[१]

दो नाथों को कैद कर अजमेर भेजना —

संमत १८६६ रा चैत सुद १ अेकम मुहता निखमीचंदजी[२] रै दीवांणगी हुई ।[३] लिखमीनाथजी प्रागनाथजी वगेरे मोटोड़ा नाथ तौ बारै हा नै छोटोड़ा नाथां रौ पूरौ जुलम । जिण सूं माहब बाहादुर पूरौ नाराज । सो अजमेर लिख नै सौ दोढ सौ घोड़ा मंगाया । मिती वैसाख वद........ सोझतीया दरवाजा बारै नव नाथ चौरासी सिधां रौ मिंदर गोरखपुर रा पीर मेहरनाथजी नै पकड़ लीया । नै चांदपोळ दरवाजा बारै सीलनाथजी हुसीयारनाथजी रा चेला इणां दोनां नै रात आधी रा पकड़ नै अजमेर पौचता कीया ।[1] तिण री श्री हजूर मैं मालम हुई तरै ऊकीलां नूं बुलाय घणी ताकीद फुरमाई । तरै ऊकील साहब कनै गयौ सो साहब बाहादुर पूरौ खफा हो, सु कयौ कै अब तक क्या हुवा है हम सब नाथों कूं पकड़ लेगें । नै ऊकील नूं पाछौ हजूर कनै आवण दीयौ नहीं । वरज दीना, तरै ऊकील पाछौ नहीं आयौ ।

तरै राईकाबाग रा डेरां सूं श्रीहजूर असवारी कर नै सूरसागर पधारीया । सो मावडीयां री घाटी ऊकील रिधमलजी सांमौ आया नै अरज कीवी कै साहब बाहादुर पूरौ खफा है मो आप पधार सो तौ ही नाथां नूं तौ छौडै नहीं. नै हळकी सवाय में लागसी । तरै मावड़ीयां री घाटी खासो बोल दीयौ ।[2] सु ऊठै घड़ी चार तांई विराजीया रया[3] । भाव-भगती रा परताप सूं श्री हजुर रा मन में घणी ऊदासी नै नाराजगी । सो लाडणू रा जोधा परतापसिंघ नै फुरमायौ कै म्हे थांनै सदा सांम धरमी जांणां हां नै थे हमेसां अरज करावौ हौ कै कांम पड़ीयां बंदगी कर देखावसां । सौ औ चाकरी रौ वखत है मर मार नै ही सरूपां नै[4] छोडाय लावौ । तरै रिधमलजी अरज कीवो कै, किण

---

१. ग. मुथराजी रा नवा सेठां री दुकांन तापड़िया गणेसदास खेवट कर कराई (अधिक)
२. ख. नीवाज री सला सूं (अधिक) । ३. ग. श्री हजूर रै मरजी उपरांत (अधिक) ।

---

1. अजमेर भेज दिये । 2. मना कर दिया । 3. सवारी वहीं ठहरा दी । 4. बैठे रहे । 5. नाथों को

नै छोडाय लावसी नाथ तौ अजमेर रै आधेटै पूगा हुसी। नै सायब बाहादुर स्वाय में खफा हौसी।[1] तौ फेर बाकी रा जोगेश्वरां नूं तकलीफ होसी। तरै मावड़ीयां री घाटी सूं पाछा जोसीयां री बगैची पधारीया। सारी रात उठै हीज वदीत[2] हुई। परभात हुतां गोळ री घाटी हुय गुलाबसागर, री पाळ ऊपर अेक चांतरो हौ जठै खासा सूं ऊतर विराज गया। चांतरा रै सहारै चाकरां चानणी तांण दीवी[3] दोय दिन ऊठे विराजीया रह्या। अरोगीया नहीं[4]।

महाराजा का राज्यकार्य से विरक्त होकर विक्षिप्त होना—

संमत १८९९ रा वैसाख वद ९ नम पोहर दिन चढ़ियां छांगांणी हरू पुसकरणो ब्रांमण छूट में हौ जिण नै फुरमायौ कै वभूत रौ गोळो लाव।[5] नै सा हरू प्याला मैं घाल वभूत लायौ। श्री हजूर साहबां आपरा हाथ सूं वभूत लगाय लीवी।[6] नै खाखी दुपटो पधरायां पगां उबरांणां[7] बहीर हुवा। कितराक चाकरां वाभां ही पागां ऊतार फेंटा[1] बांध साथे हुवा। नागोरी दरवाजै हुय मेड़तीया दरवाजा बारै रांयणा रा चाकर कैसू री बेटी पडदायत ही जिण रै करायोड़ी वावड़ी है, जिण ऊपर साळ[8] में जाय विराजीया।

सेहर सारा में वड़ी ऊदासी हुई। पछै पाछला दिन रा[9] ऊकील रिधमलजी सूरसागर सूं श्री हजूर साहब विराजीया था जठै आयो। नै आवतां ही तकरार कीवी के श्री खांवद तौ धणी परमेश्वर है सो भाव-भगती रै मुदै इतरो खेद फुरमाई[10] पिण चाकर हा जिणां नूं औ फितूर करणों कांई कांम।[11] साहब बाहादुर पूछसी तौ कांई जवाब थे देसौ। जद डरतां सारा जणां पागां बांद लीवी।[2] पछै अेक रात तौ श्रीहजुर साहब ऊणीज बावड़ी ऊपर रया नै

---

१ ग. दुपटा।

२. ख. सरदारों ने अेजण्ट से कहा कि नाथों को ऐसी स्थिति में छोडदो तो ये खाना खालें परन्तु लडलो ने मना कर दिया [पृ. 126B]

---

1. और नाराज होंगे। 2. व्यतीत। 3. चारों ओर कपड़े की ओट करदी। 4. खाना नहीं खाया। 5. भस्मी का गोला बनाकर ला। 6. अपने हाथ से पूरे शरीर के भस्मी लगा ली। 7. नगे पैरों। 8 खुला लंबा कमरा। 9. दिन ढलते समय। 10. इतना कष्ट कर रहे हैं। 11. नौकरों को इनके देखा देख व्यवहार करने की क्या आवश्यकता थी।

दूजै दिन सेखावतजी रै तळाव ऊपर पधारीया। श्री हजुर साहब रै आडा चांनणी तंणाई। नै मरजी रा सिरदारां चाकरां ऊठै डेरा कीया।

ऊकील न् नै बारला सिरदारां नु अजंट साहब बाहादुर पूछीयौ— अब क्या कीया चाहीयै। तरै इणां कयौ—मरजी हुवै तौ में आपका नांव सूं अरज करां, सो मांन लेवै जद तौ ठीक नै नहीं मांनै तौ श्री हजूर सायवां नै पींजस[1] में पधराय गढ़ ऊपर ले आवां। बंदोवस्त कर सब कांम ढाळे लगाय देवां[2-१] तरै अजंट साहब बाहादुर कह्यौ—अछा। जद साहब रौ चपरासी साथै ले पोहकरण रा नींबाज रा कांमेती, ठाकुर रा काका सिवनाथसिंघजी, कूंपावत करणसिंघजी खींवसर रौ कामेती करमसोत भांनसिंघजी बहीर हुवा।[3]

सो आ हकीगत श्रीहजुर साहब नु मालम हुई सो श्री हजुर तो क्यु ही विचार आंणीयौ नहीं नै मरजी रा सिरदार कूचांमण, भादराजण, रायपुर वगेरे सारा सिरदार कमरां बांद गोसे त्यार हुवा। नै वीचारीयो के पींजस मैं विराजमांन कर श्री हजुर साहबां नू जबरदस्ती सूं गढ ऊपर दाखल करै तौ नहीं करण देणा। आ वात बारला सिरदारां सुणी तरै विचारीयौ—सांवठा[4] आदमी ले न जावां जद तौ बेदो हुय[5] जावे। तरै सिरदार तौ नाजर दौलतरांम री बावड़ी ऊपर बैठा रया नै ऊकील रिधमलजी साहब बाहादुर रा चपरासी नू साथै ले श्री हजुर कनै आया नै अरज करी कै साहब बाहादर कैवायौ है—इस तरैह नहीं करणा चाहियै। सु आप पोसाख पधरावौ[6] गढ दाखल हुवौ। कांम रौ सलीको बांधौ[7] जोगश्वरां नू सबर में लावौ। अर बद सलाह देण वाळां नू सीख देवौ। तरै श्रीहजुर साहबां तौ पाछो क्युं ही जबाब दीयो नहीं नै आऊवा रा ऊकील सिरीमाळी व्रिांमण तेजकरण रावराजा रिधमलजी नू कयौ कै हमें श्री हजुर साहबां में दोस काढणो बाकी रयौ है,[8] आंपां सारा चाकरां री सिरदारां रा दुख सुं तौ आ नौबत हुई है। हमें श्री हजुर नै खेद क्यूं देवौ हौ[9]। थांरै तोल में आवै जा हूँ करोई हौ।[10]

---

१ ग. बिले लगायदो

---

1. एक प्रकार की बन्द पालकी। 2 सब कार्य की व्यवस्था बैठा देंगे। 3. रवाना हुए। 4. बड़ी संख्या में। 5. झगड़ा, फिसाद। 6. राजसी कपड़े पहनो 7. राज्य-कार्य की व्यवस्था देखो। 8. अब महाराजा को दोष देना व्यर्थ है। ९. और कष्ट क्यों देते हो। 10. तुम्हारे मन में आती है वैसा तो कर ही रहे हो।

पछै संमत १८९९ रा वैसाख सुद १३ नै गांव पाल पधारीया । श्री जलंधर-नाथजी रा दरसरण करण वास्तै ज़ाळोर पधार नै उठा सूं गिरनार जात्रण रौ मनसोबो थौ[1] सो पाल रा तळाव में बावळिया[2] रै चांनणी तणाय विराजीया । ग्रर बाकी रा सिरदार मुतसदी वगैरै डेरा खड़ा कराय रथा ।

श्री हजूर जोग धारण कियौ जिण मीती सूं[3] ग्रन[4] रौ त्याग कर दीयौ थौ सौ पईसा टका भर दई[5] नै अेक पेड़ो ग्ररोगता । जोग धारण कियां पछै किणो ने ही ताजीम कुरब दिरावता नहीं ।[6] पाल रा डेरां हैजा री बीमारी फैली । तिण सूं घणा ग्रादमी मुवा ।[7] भादराजण रा ठाकुर वखतावरसिंघजी तप[8] री मांदगी सूं पाल रा डेरां काळ कियौ ।

पोलीटीकल ऐजेण्ट का पाल जाकर महाराज से मिलना—

पछै ग्रजंट साहब बाहादुर पाल रा डेरां श्री हजूर साहब कनै गया नै कयौ— ग्राप यहां विराजै रहौगा जद तौ ग्राप बिचारो वो ही ग्रापके सरगवास करणै के बाद गादी-नसीन होगा । ग्रौर ग्राप राज छोड़ कर पधार जावौगे तो राज सुना रहैगा नहीं । धौकलसिंघ ग्रावैगा ।[9] तरै ग्रजंट साहब बाहादुर री समझास सूं पाल सूं ग्राघा नहीं पधारीया[1] ।

महाराजा का ग्रपने उत्तराधिकारी के लिऐ ऐजेण्ट को ग्रपनी इच्छा प्रकट करना—

संमत १८९९ रा ग्रसाढ सुद ४ नूं पाल सूं पाछा राईके बाग पधारीया । श्री हजुर साहबां रा सरीर री चेसटा देख ग्रजंट साहब पूरौ फिकर कीयौ ।[2] नै ग्ररज कीवी कै ग्रापके स्वरगवास होणे के बाद राज का मालक किस कूं करणे की ग्रापकी मरजी है । तरै हजूर फुरमायौ— थै दोस्ती सू पूछौ

---

१. ख. २ महीना पाल विराजिया । २. ख. ख्यात में विस्तार के साथ लिखा है कि राजा की यह हालत देख कर सारे शहर में बड़ा डरावना दृश्य हो गया सभी लोग दुखी थे । ऐजेण्ट ने कहा कि ग्राप राज्य-कार्य को यों न छोड़ें तब मांनसिंह ने कहा कि पूरे बाप जाते हैं तब छोडते हैं यों ही कौन छोडता है । (पृ. 126. A.B)

---

1. विचार था । 2. बंबूल का पेड़ । 3. सन्यासाश्रम धारण किया उस दिन से । 4. ग्रन्न । 5. दही । 6. राजसी ग्रौपचारिकता से पेश नहीं ग्राते थे । 7. बहुत ग्रादमी मरे । 8. बुखार ; 9. गद्दी का ग्रधिकारी धौंकलसिंह बनेगा ।

हौ सो म्है फुरमावोगे ज्यूं करण री हांमळ भरौ[1] तौ म्है फुरमावां। तरै साहब बहादुर कही—आप फुरमावोगे ज्यूं ही होगा। तरै हजूर फुरमायौ कै म्हांरा वद-खाहा होगा[2] सो तो फितूर[3] कूं लाया चावेगा सो ये तो वात हरगिज नहीं होई चाहीये। और अहमद नगर के राजा करणसिंघजी के दोय बेटा पिरथीसिंघ अर तखतसिंघ है सो पिरथीसिंघ तौ गुजर गया है नै छोटा बेटा तखतसिंघ है। जिस ऊपर हमारी मरजी है वो हमारा फंदर है, ऊनकुं गादी-नसीन करणा।[4] तरै अजंट साहब बहादुर अरज करी—आप जमे खातर रखणा।[5] इसी तरं आपके हुकम मुजब होगा। इतरी वात इकंत[6] में हुई।

माहाराज कंवार छतरसिंघजी देवलोक हुवा तरै अठा रा चाकरां री तजवीज सूं ईडर रा माहाराज छतरसिंघजी रै खोळै आवण नूं त्यार हुवा था। इण सवब सूं ईडर वाळां सूं बेमरजी थी। नं मोडा से माहाराज जालोर रा घेरा में जालमसिंघजी मदत दीवी थी।[7] जिण सवब सूं माहाराज तखतसिंघजी ने खोळै लावण रौ फुरमायौ।

महाराजा का मंडोर प्रस्थान और वहीं मृत्यु होना—

संमत १९०० रा सांवण सुद ३ श्री हजूर साहब पीनम में विराज नै राईकेवाग सूं सेहर रै बारै-बारै हुय, मसुरिये कने हुय, सूरसागर कने हुय मंडोर दाखल हुवा।

ठाकुर वभूतसिंघजी सीख कर पोहकरण गया।

संमत १९०० रा भादवा वद ७ नू श्री हजूर साहबां ने तप आयौ सो इकांतरै तप सरु[8] हुवौ।[१]

---

१. ख. जनाने मेल में विराजिया जोगेसरनाथ देसी परदेसी निसरमा भेळा होय घणा धापा करै। इणां रै समाधांन हुयां पछै अरोगे।

---

1. स्वीकार करो। 2. मेरे विरुद्ध होंगे। 3. धौंकलसिंह। 4. उसे गद्दी पर बैठाना। 5. आप पूरा विश्वास रखना। 6. एकांत। 7. भींवसिंहजी की फौज के द्वारा लगाये गये जालोर के किले के घेरे में मानसिंहजी की सहायता की थी। 8. एक दिन छोड़कर दूसरे दिन बुखार आता।

संमत १९०० रा भादवा सुद ११ सोमवार पाछली रात पोहर अेक र्‍यां रा मंडोवर रा वाग मैं धांम पधारीय। ।[1]

अजंट साहब बहादुर नै खवर लागी तरै घोड़ै चढ असवार होय घड़ी दिन चढियां मंडोवर आया । सारां नू खातर दिलासा कर पाछा सूरसागर गया ।

श्री हजूर साहब दैवलोक हूवां[2], देवलोक पधारीयां री खबर गढ ऊपर आई तरै रांणीजी श्री देवड़ीजी सती होण नै तयार हुवा । श्री हजूर जोग धारण कीयां पछै जितरौ पेड़ो श्री हजूर साहब अरोगता जितरौ हो श्री देवड़ी जी साहिबा अरोगता । जिण सूं सरीर निराट तज गयौ ।[3] गढ ऊपर सूं केवायौ के हजूर नै दाग दैवण री ताकीद मत कीजौ,[4] सतियां आवै है ।

पछै देवड़ीजीसा तौ माहाडोळ में विराजीया नै पड़दायततियां, चाकर, पालखीयां में बैठा । देवड़ीजी साहिबां री सहेली राधा घोड़ै असवार होय फतैपोळ सूं सिरै बजार होय[5] मंडोवर पधारीया ।

सतीयां हुई तिण री विगत—

१ रांणीजी श्री देवड़ीजी नांव अैजन कंवर अखैसिंघजी री बेटी ।

४ पड़दायतीयां—१ फूलवेलजी, १ चनणरायजी, १ सुखवेलजी १ रिधरायजी ।

१ रांणीजी श्री देवड़ीजी री वडारण राधा ।

६

1. स्वर्गवास हुआ । 2. मृत्यु होने के पश्चात् । 3. शरीर बहुत कमजोर हो गया । 4. दाहसंस्कार करने की शीघ्रता मत करना । 5. मुख्य बाजार के बीच से होकर ।

६ छव सतीयां हुई । भादवा सुद १२ मंगळवार मंडोवर में श्री हजूर रौ दाग हूवौ[1] । इति: ।।

माहाराज श्री हजूर मांनसिंघजी देवलोक हूवा पछै गढ री पोळां मंगळ रही[2] साथरवाड़ो[3] गिड़दीकोट में कीयौ । और खोळे आवण री किणी री तेहकीक नहीं । कितराक फितूर पंथी था जिणां में बड़ा आदमी था जिणां में तौ धौकलसिंघजी कनै आप रा आदमी वहीर किया । अर छोटै दरजै रा हा सो पिंडां वहीर हुवा ।[4]

भादरवा सुद १३ बुधवार रौ तीयौ[5] हुवो । पाछला दिन रां अजंट साहब बाहादुर मातम-पुरसी[6] करावण सारूं गिरदीकोट में आया । ऊमराव मुतसदी, खवास, पासवांनां नू खातर कीवी ।[7] नै कयौ—रयासत का बंदोबसत अछी तरै से रखौ । पछै साहब कयौ—हमनै सुणा है कै धौकळसिंघ कूं लेणे वासते मारवाड़ का ठाकुर लोग मुतसदी गये है । इसकी तम तहकीकात करकै सभावार[8] करौ । धौकळसिंघ का हक जोधपुर के राज पर बिलकुल नहीं है । जो कोई धौकलसिंघ का नांव लेगा जिसकूं हम कैद कर कै चंडाळगढ में भेजेंगे । तरै दीवांण मुंहता लिखमीचंदजी अजंट साहब सूं इतला करी कै तुंवर सांवतसिंघ कै पटे गांव खेतासर है जठै फितूरपंथी[9] भाटी परतापसिंघ गांव में आय अमल कर लीयौ है । तरै साहब कह्यौ—घोड़ा भेज कर परतापसिंघ कूं गिरफतार करौ । तरै दीवांण कहचौ—राज रा ही घोड़ा मेलां हां अर आपरा ही मेलौ । तरै साहब बाहादुर अंगरेजी रसाला रा घोड़ा १०-१५ दस पनरै मेलीया । बाकी राज रा घोड़ा गया । तरै परतापसिंघ गांव छोड भाग गयौ ।

और जोधपुर मांह सुं पंचोली जीतकरण वगैरे धोकलसिंघ रै सांमा गया तिणां रो घर जबत कीयौ ।

---

1. दाह-संस्कार हुआ । 2. गढ के सभी दरवाजे बंद रहे । 3. शोक व्यक्त करने की एक रश्म । 4. वे खुद रवाना हुए । 5. मृत्यु के तीसरे दिन किया जाने वाला संस्कार । 6. शोक व्यक्त करने की रश्म । 7. तसल्ली दी । 8. उन्हें दंड दो । ९. धौंकलसिह के गिरोह का ।

पोलीटिकल ऐजेण्ट का गढ़ पर जाकर रानियों से गद्दी की हकदारी सम्बन्धी स्वीकृति लेना —

पछै अजंटसाहब बहादुर गढ़ ऊपर जनांनी डौढी गया । नाजर साथै माजी साहबां नू खातर कैवाई । नै पूछायौ— गोद बैठांणेका हक किसका है तरै माजी साय्बां कैवायो कै श्री ....जी साहबां रो फुरमायोड़ो है कं मांहरै पछाड़ी खोळै वैसण रौ हक अजीतसिंघोत ां[1] में अेहमद नगर वाळां रो है । सो जांणां हां इण वात सु थेई वाकब हूसो[2] इण बात री निगे राखजौ[3] । तरै साहब पाछी कैवाई[4] कै बहोत अछा । श्री हजूर देवलोक हुवां पछै जोगेश्वरां नू अजमेर में कैद किया था तिणां नू छोड दिया । नै जोसी प्रभूलालजी, पंचोळी पटानवेस-धनरूपजी, खीची ऊमेदजी वगेरां नू अठा सू अजट सायब सीख दिराय दीवी थी । जिणां नु पाछा आवण री साहब बहादुर दुवायती दीवी[5] । ऊमराव आप आपरै गांवां में हा जिके पिण सारा जोधपुर आया ।

हजूर साहबां रौ कारज[6] बारमें दिन पांच पकवान लाडुवां रौ गिरदी कोट में हुवौ । खांड[7] मण ६००) छवसौ मण खांड गळी ।

श्री मांजी साहबां रै नै कितराक मुतसदीयां रै खवास पासवांनां वगेरां रै माहाराज कंवार जसवंतसिंघजी नू खोळे लावण री सलाह ठेहरी थी पछै कितराक पोहोकरण वगेरै ऊमरावां रै नै दिवांण मुंहता लिखमीचंदजी वगेरै मुतसदीयां रै महाराजा श्री तखतसिंघजी नू खोळै लावण री सलाह तुली[8] सो इणां श्री माजी साहबां सु खांच नै[9] अरज कराई कै महाराज कंवार जसवंत-सिंघजी तौ बाळक है नै माहाराज श्री तखतसिंघजी वरस २४ चोईस में है सो माहाराज नु खोळे लैसां । सो आवतां ही राज अंवेरै ।[10] तरै श्री माजी साहबां रै नै ऊमराव मुतसदीयां खवास पासवांनां र माहाराज तखतसिंघजी नै महाराज कंवार जसवंतसिंघजी सुधा[11] खोळै लेण री सलाह ठेहरी ।

पछै आसोज वद ७ सनीसर वार नै साहब बाहादुर ऊमरावां[?] मुतसदीयां खास पासवानां जनांना कांमदारां सारां ने सूरसागर बुलाय नै कयौ - महाराजा

---

१ म. वाभा (अधिक) ।

---

1. महाराजा अजीतसिंह के वंशज । 2. आप भी इस बात से शायद परिचित होंगे । 3. इसका पूरा खयाल रखना । 4. प्रत्युत्तर भेजा । 5. मंजूरी दी । 6. मृत्यु-भोज । 7. शक्कर । 8. तखतसिंह को गोद लाने की राय निश्चित हुई । 9. पूरा जोर देकर । 10. राज्य कार्य संभाल लेंगे । 11. सहित ।

साहब के खोळे किसकूं लेणा । तरै सारा जणां अरज करी कै मांजीसा फुरमावे जिणां नूं लेणा । तरै साहब बाहादुर नै ऊमराव वगेरे सारा किले ऊपर आया नाजर साथै मांजीयां[1] नू पूछावौ[1]— कै खोळै किण नै वैसांणणा । तरै माजीयां कैवायौ कै अेहमदनगर रा राजा तखतसिंघजी नै माहाराज कंवर जसवंतसिंघजी सुधा खोळे लेणा । तरै आ वात पकी ठेहरी ।

अहमद नगर से तखतसिंह को गद्दी-नशीन करने के लिये बुलाया —

तरै माहाराज नू लावण सारू दिवांण मुहता लिखमीचंदजी रा बेटा मुकनचंदजी नै सारा सिरदारां रा कांमेती ने ठावा-ठावा[2] मुतसदीयां रा भाई बेटा भतीजा कांमेती खवास पासवांन वगेरै आसोज सुद १ अेकम नू रवांनै हुवा । खटलौ आदमी २००० हजार दोय आसरै ।[२]

जनांना मांह सूं खास रुका लिखीजीया जिण री नकल —

लालजी छोरु श्री तखतसिंघजी मोती जसवंतसिंघ सूं म्हांरा वारणा वांचजो । तथा श्री ·············· जी साहबां रौ फुरमावणौ थांनै खोळे लेण रौ हुवौ थौ ने हमार म्हांरौ ही फुरमावणौ हुवौ । नै सिरदारां ऊमरावां मुतसदीयां वगैरां रै पिण थांनै खोळे लेण री ठेहरी है सो थे सताव आवसो ।[3] इण रुका रै नीचै छवां ही माजी साहबां रा लंबर वार दसकत हुवा ।

अरजी —

स्वारूप श्री अनेक सकल सुभ ओपमा विराजमांनां श्री राज राजेस्वर माहाराजाधिराज माहाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तखतसिंघजी, माहाराजकवार

---

१. ग. मासा नूं किलै ऊपर अरज करी । २. ग. चढियौ ।

---

1. पुछवाया । 2. मुख्य-मुख्य । 3. शीघ्रता से आना ।

श्री जसवंतसिंघजी री हजूर में समसत[1] सिरदारां मुतसदियां खवास पासवांनां री अरज मालूम हुवै । तथा खास रुका श्री माजी साहबां री लिखावट मुजब सारा जणां खोळै आप नू लेणा ठेहराया है सो वेगा पधारसी । इण अरजी नीचै सारा सिरदारां मुतसदीयां खवास पासवांनां रा लंबर वार दसकत हुवा । नै श्री मार्जीयां रौ खास रुको नै इण अरजी साथै अजंट साहब बहादुर रौ खलीतो हिन्दी (में) काती वद ७ नै दिवांण रा लिफाफा मैं डाक में अेहमद नगर नू बीड़ीया ।[2]

खलीता री नकल —

स्वारूप[1] श्री सरव ओपमा विराजमांन सकल गुण निध्यांन राज राजेश्वर माहाराजाधिराज माहाराजाजी श्री तखतसिंघजी बाहादुर जोग्य कपतांन ज्यांन लडलू साहब बाहादुर लिखावतं मिलांम वंचावसी । अठा का समाचार भला है, आपका सदा भला चाहीजै । अपरंच आपकूं माहाराजा मांनसिंघजी की गोद लेणै के वासतै सब सिरदार, ऊमराव, मुतसदी, खास पासवांन, जनांना कांमदार मिल कर कह्यौ—माहाराजा तखतसिंघजी कूं गोद लेवेंगे । सो हमकूं भी मंजूर है । सौ आप खुसी से जोधपुर पधारीयै । सो तखतसिंघजी तौ राज कै पाट बैठेंगे ।[3] अर कंवर जसवंतसिंघजी कूं भी लारे लेता आवणा । दोनूं साहबां कूं यहां पधरावणा । सो हम भी नबाब गवरनेर जेनरल साहब कूं लिखेंगे सो जरूर मंजूर करेंगे और आपकै मिजाज की खुसी कै समाचार लिखावसी । तारीख १४ अकतूवर सन् १८४३ ईसवी मुताबिक काती वद ६ संमत १९०० ।

श्री हजूर देवलोक हुवां पछै राज रो कांम दीवांण ऊमराव उकील तळेटी रा मेहलां में करता । साहब बाहादुर पिण कदे-कदे[4] तळैटी रा मेहलां आवता ।

---

१. ग. स्वस्ति ।

---

1. समस्त । 2. लिफाफे में बंद किया । 3. राज गद्दी पर बैठेंगे । 4. कभी कभी ।

ईडर वालों की ओर से गद्दी का दावा प्रस्तुत करने के लिये उनके प्रतिनिधियों का पोलीटिकल एजेण्ट के पास आना —

काती वद ९ मंगलवार ईडर रै राजाजी रा भला आदमी गांव मुडेटो री ठाकुर चवांण सूरजमलजी नै गुसांई लखापुरी आया । सूरसागर डेरौ कीयौ । ईडर रा माहाराजा रौ खलीतो साहब बाहादुर रै नांवै नै सादड़ी री छावणी रा साहब री सुपारसी चीठी लाया । साहब बाहादुर सूं मुलाकात हुई तरै सूरजमलजी अरज करी के ईडर पाट जायगा है सो जोधपुर खोळे आवण रौ हक ईडर रौ छै, अेहमदनगर सूं माहाराज तखतसिंघजी नु म्है आवण देसां नहीं । कोई पिसाद खड़ो हुसी । तरै साहब बहादुर[१] कह्यो — इस वात का जबाब जोधपुर का सिरदार मुतसदी देसी । पछै दीवांण बखसी सिरदारां रा उकीलां नू बुलाय साहब बाहादुर रूबरू मुकाबलौ करायो ।[1] तरै ऊकील रिधमलजी जबाव दीयौ कै खोळा रा मुकदमा में पाटवी पणा रौ कींही वंटै नहीं ।[2] पीढीयां में ईडर अेहमद नगर बराबर लागै है । नै माहाराजा श्री मांनसिंघजी फुरमायौ नै श्री मांजी साहबां नै सारा ऊमरावां मुतसदीयां खास पासवांनां राजी होय नै माहाराज श्री तखतसिंघजी नू खोळे लीया है सो रहसी । तरै ईडर वाळा फीटा पड़[3] पाछा ईडर गया ।

मुंहता मुकनचंदजी नै सिरदारां रा उकील वगैरा अहमदनगर पोना काती वद सोमवार नै माहाराज श्री तखतसिंघ जी सफेद पाग पधराय[4] घोड़ै असवार होय मातमपुरसी करावण डेरै पधारीया । पछै तीजै पोहर रा मुकनचंदजी वगैरे हजूर रै मुजरै गया ।

---

१. ग. लडलू साब (अधिक) ।

---

1. बहस करवाई । 2. गोद के मामले में पाटवी हो या न हो इसका कोई अर्थ नहीं होता । 3. उदास होकर, लज्जित होकर । 4. सफेद पगडी बांध कर ।

तखतसिंह का अहमदनगर से जोधपुर आकर गद्दी पर बैठना—

काती वद १३ अेहमद नगर सूं कूच हूवौ सो काती सुद ६ गांव सालावास दाखल हुआ। परधान ठाकुर वभूतसिंघजी पोहोकरण नें दूजा ऊमराव दिवांण बगसी वगेरै सारा सालावास सांमा गया।[1] निजर निछरावळां हुई।[१] कातो सुद ७ अदीतवार सालावास सूं जांभरकै कूच हुवौ। सो ब्यां रै तलाव बावड़ी कनै डेरा खड़ा हुवा, जठै दाखल हुवा। अजंट लडलू साहब बाहादुर पेसवाई में आयौ। अद घड़ीक तांई सोखीया[2] वाता[२] डेरा में हुई।

पछै साहब बाहादुर तौ उठा सूं सूरसागर गया नै श्री हजूर हाथी री अंबाड़ी में विराजीया। सफेद खिड़कीया पाग बागो पधरायो।[३] खवासी में परधांन ठाकुर वभूतसिंघजी पोहकरण छंवर करण बैठा। दिन पौर दोढ चढीयां राईकै वाग डेरां दाखल हुवा।

तीजै पोहर रा राईकैवाग सूं हाथी रै हवदे विराजीया। खवासी में परधांन ठाकुर वभूतसिंघजी पोहकरण छंवर करण बैठा। मेड़तीये दरवाजै होय सिरै बजार होय फतैपोळ निमां सांम रा पधारीया।[3] फतैपोल तोरन वांन।[4] हाथी सूं ऊतर खुलै खासै विराज गढ दाखल हुवा। फतैमैल में वीराजीया। निजर निछरावल हुई। पछै सारां नूं सीख हुई।

काती सुद ८ सोमवार दोफार[5] रा जनांना में श्रीमांजी साहबां सारां सूं मुजरौ करण पधारीया।[४] पाछलै दिन रा खासै विराज सूरसागर अजंट साहब बाहादुर कनै पधारीया।

---

१. ग. सारां री ओळखाण दीवांण बगसी दोढी रै दरोगे कराई (अधिक)। २. ग मामूली वातां दस्तूर मुजब। ३. ग. चौंकोरो बांधियौ (अधिक)। ४. ग. दस्तूर मुजब कायदे मुजब दुतरफी वातां हुई, सारै कांम री भळावण दीवी।

---

1. सामने गये। 2. अनौपचारिक। 3. ठीक शाम के समय। 4. तोरन पर अदा की जाने वाली रस्म पूरी की। 5. दोपहर को।

हजूर माहाराजा श्री तखतसिंघजी राज–तिलक संमत १९०० रा मिगसर सुद १० सुकरवार दिन घड़ी १४ चांढयां, विराजीया ।

महाराजा अजीतसिंह की शाखा का वृत्तांत—

माहाराज श्री अजीतसिंघजी रा कंवर रायसिंघजी अणंदसिंघजी नै माहाराज श्री अभेसिंघजी आप रा मनसब मांह सूं ईडर रौ परगनो दीयौ थौ सो उठे जाय रया । अणंदसिंघजी तौ रेवरां सूं झगड़ौ हुवौ जठै काम आया । नै रायसिंघजी रै औलाद हूई नहीं ।

१ माहाराज अणदसिंघजी ।

२ सिवसिंघजी, इणां रै पांच बेटा हुवा

विगत—

१ भांनसिंघजी, २ संगरांमसिंघजी, ३ जालमसिंघजी

४ अमरसिंघजी ५ ईंद्रसिंघजी ।
अे पांच बेटा सिवसिंघजी रा ।

सगरांमसिंघजी नै माहाराज सिवसिंघजी संमत १८२८ में अहमदनगर दीयौ सो उठे जाय रया । माहाराज सिवसिंघजी देवलोक हुवां पछै पनरमें दिन भांनसिंघजी ही देवलोक हुय गया ।[1] नै भांनसिंघजी रै कंवर गंभीरसिंघजी बाळक हा सो गंभीरसिंघजी नै खोळा में लेय नै[2] जालमसिंघजी गादी बैठणै लागा सो ईडर रा सिरदारां चाकरां जालमसिंघजी नै बैठण दीया नहीं । नै गंभीरसिंघजी नै गादी बैठांण दीया । तरै जालमसिंघजी अमरसिंघजी अहमद नगर संगरांमसिंघजी कनै परा गया । सो जालमसिंघजी तौ ईडर रा इलाका मांय सू मोड़ासो दबाय लीयौ अमरसिंघजी वायड़ दबाय लीवी । ईंद्रसिंघजो जनम रा आंधा था जिणांनू ईडर रै राज माह सुं गांव 'सूर' दियौ ।

---

1. स्वर्गवास हो गया । 2. गोद में लेकर ।

ईडर गंभीरसिंघजी रै जवांनसिंघजी पाट बैठा नै जवांनसिंघजी री गादी ईडर हमार केसरीसिंघजी है ।

३. सगरांमसिंघजी अैहमदनगर राजा हुवा । तिणां रै कंवर दोय—

१ करणसिंघजी ।

१ परतापसिंघजी ।

—

२

सो करणसिंघजी तौ अैहमद नगर गादी बैठा नै मोडासे जालमसिंघजी रै बाई[1] अेक हा सू तौ बांसवाडै रावळ भगवांनसिंघजी नू परणाया नै जालमसिंघजी रै कंवर हा नहीं[2] सो अैहमदनगर सूं परतापसिंघजी नूं मोडासै खोळै दीवा ।

४. माहाराजा करणसिंघजी अैहमदनगर राजा हुवा तिणां रै कंवर दोय-

१ पिरथीसिंघजी ।

१ तखतसिंघजी ।

—

२

मोडासै महाराजा परतापसिंघजी रै संतान नहीं हूवौ । तरै पिरथीसिंघजी नै परतापसिंघजी रै खोळै थापीया । पछै माहाराज करणसिंघजी देवलोक हुय गया तरै माहाराज पिरथीसिंघजी अैहमदनगर गादी बैठा । मोडासो अैहमदनगर सांमल कर लीयो । संमत १८९६ रा मिगसर में पिरथीसिंघजी देवलोक हुवा । नै रांणी रै आसा ही सो जेठ रै महीनै कंवर बलवंतसिंघजी जनमीया । जिके महीना पनरै रा हुय चल गया । तरै माहाराज

---

1. लड़की । 2. कुंवर नहीं था ।

करणसिंघजी री गादी माहाराज तखतसिंघजी बैठा। पछै संमत १९०० रा काती में अैहमदनगर सूं माहाराज तखतसिंघजी माहाराज श्री मांनसिंघजी रै खोळै पधारीया।[1]

---

१. ग. ग्रा सिवनाथसिंघजी रा ५ बेटां री विगत ग्रौर हमे महाराजा मानसिंहजी रै राणियां कंवरा बायाँ पड़दायतियां वाभा गायणियां वगेरे री विगत —

१३ राणियां —

१ वडा भटियांणीजी खारिया रा भाटी सुरजमल भगवांनदासोत री बेटी, जिणां रै कंवर नै वायां हुवा सो कंवर तो बालक थकां चल गया नै बायां दोय —

१ वडा बाईजी सिरेकंवरजी, जैपर रा महाराजा जगतसिंहजी नुं परणाया १८७० रा भादवा में रूपनगर रा डेरां।

१ छोटा बाईजी सरूप कंवर बूंदी रा राव राजा माहाराज रांमसिंघजी नुं परणाया १८८१ में जांन फागण में।

—
२

२. गांव मांणसां रा छावड़ीजी तिणरै कंवर छत्रसिंघजी रो जनम १८५९ रा फागुण सुद ९ रो जनम, १८७३ रा वैसाख सुद ३ जुगराज पदवी ग्राई नै १८७४ रा चैत वद ४ रामसरण हुवा।

३. तुंवरजी गांव लखासर इलाके बीकानेर बगतावरसिंघजी री बेटी रै कंवर- पिरथीसिंघजी १८६५ से हुवा नै २ कंवर ..र हुया सो छोटा थका चल गया।

४. देवड़ीजी नींबज रा रै बाई एक हुई थी सो छोटा थका चल गया।

५. कछवाईजी जैपर रा महाराजा श्री परतापसिंघजी री बेटी रूपनगर संमत १८७० में रूपनगर जाय परणाया जैपर रो गांव मरवा रा डेरां परणिया।

६. छोटा देवड़ीजी मडार रा पेला चल गया।

(निरंतर....पृष्ठ 239 तक)

५ माहाराजा श्री तखतसिंघजी—

धौंकलसिंह का दावा पेश करना और दावा निरस्त होना—

माहाराज श्री मांनसिंघजी देवलोक हुवा तरै धौंकलसिंघजी जोधपुर रा दावा रो खत वड़ा साहब बहादुर नू दीयौ तिण राज बाब री नकल —

तारीख २८ सितंबर सन १८४३ ईसवी तथा अेक खत धोंकलसिंघ की तरफ से आया लिखा हुआ तारीख १४ सितंबर सन १८४३ ईसवी मयै महोर खिताब के। कै वो खिताब हक उसका नह था और कागजां समेत करनेल ज्यांन सुदरलेन साहब अजंट गवरनर जेनरल राजस्थांन पास पोंहोचा। धौकलसिंघ नें इस ख्याल से कै मैं बेटा माहाराजा भींवसिंघ का हूं दावा गादी बैठणे जोधपुर

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी....)

७. लाडी भटियांणीजी गाजूं रा पेली चल गया ।

८. तीजा भटियांणीजी जाखण रा गोयंददासजी री बेटी लारे रया।

९. लखासर रा लाडी तुंवरजी पेला चल गया ।

१०. पांचमा भटियांणीजी जिणरै कुंवर सिधांनसिंहजी हुवा जिणा रो जनम-१८९४ रा वेसाख सुद ७ रा नै १८९५ रा वैसाख सुद ७ चलिया। १ बरस री ऊमर पाई ।

११. सिहीर रा चौथा भटियांणीजी लारै रया ।

१२. तीजा देवड़ीजी मडार रा पेला चल गया ।

१३. चौथा देवड़ीजी अेजनकंवर गांव सेलवा रा देवड़ा जवांनसिंघजी अखैसिंघोत री बेटी पतबरता रो महाराज साथे १९०० रा भादवा सुद १२ में मडोवर सत कर वळिया ।

विगत —

५ भटियांणियां, ४ देवड़ियां, २ तुंवरजी, १ चावड़ीजी १ कछवाईजी ।

(निरंतर....)

जो पुर का कीया था। माहाराजा मांनसिंघ बहादुर नै ४० चालीस बरस तक उस दावे कूं फेर दीया[1] अर धोकलसिंघ अपनी मुराद पर नही पोच्या। जिस वखत से के अमलदारी सिरकार कंपनी बाहादुर की हिंदुस्थांन में हुई और अेहदनांमा सिरकार कंपनी से माहाराजा मांनसिंघजी के हुवा सिरकार कंपनी नै सिवाय माहाराजा मांनसिंघ कै दूसरे के तांई रईस मारवाड़ का नहीं देखा। अर नां दूसरे के तांई दावीदार मसनंद - नसीनी रियासत मारवाड़ का जांणा। माफक लिखणै धोंकलसिंघ कै सुण नै अंतकाळ माहाराजा मांनसिंघ बाहादुर का पांचमो तारीख इस महीने की कूं अै वात वडे अपसोच[2] की है।

धोकलसिंघ माहाराजा मांनसिंघ इंतकाल होणे की खबर सुणकर अपणे बैठणे की जगा ईलाके जजर से मये फौज रवांनै होय विना इजाजत सिरकार कंपनी के जैपुर के मुलक में आया सो अै वात नादांनी अर गैर वाजबी है।

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी ...)

१२ पड़दायतियां वड़ा अखाड़ा में —

१. चनणरायजी

२. गायण रंगरूपरायजी रै वाभा सरूपसिंघजी

३. चरूजी सिणगारदे बाई सो, वरस ३ हुय मुवा।

४. गायण सुखवेलजी

५. गायण वड़ा रूपजोतजी

६. वडी चंपरायजी रै वाई रतनकंवर बरस ७ हुय चली।

७. रिधरायजी रै वाभा हुया सो चलग्या।

८. हसतुरायजी रै वाभा सिवनाथसिंघजी

९. तुलछरायजी रै वाभा लालसिंघजी दूजा रतनसिंघजी

(निरंतर....)

---

1. उस दावे को दवा दिया। 2. अफसोस।

माहाराजा मांनसिंघ नै पेले च्यार वरस कै बैकुंठवास करणै से[1] वो वातं के लायक राजावां राजसथांन कै सिरदारां अर कांम करता राज मारवाड़ अर अेहलकारां सिरकार अंगरेजी से फरमाई कै पीछै से हकदार रियासत का वो लोग है इस वखत में माहारांणी साहब अर और रांणीयां अर सिरदार ठाकुर लोग अर कांमदार राज जोधपुर के वीच सलाह अर तजबीज वजा लाणै वसीयत माहाराजा मांनसिंघजी के मसरूफ है। और जिण के वास्तै माहाराजा मांनसिंघ नै अपणै पीछे गादी बेठणै के वास्तै पता बताया उण में धोकलसिंघ का नाम नहीं है। दूसरी ये वात है कै धोकलसिंघ नै सिरकार कंपनी और माहाराजा मांनसिंघजी के अेहदनांमा होणे से पेहला दावा राज का कीया था लेकिन दावा पोच्या नहीं।[2] और इस चालीस बरसां में दावा किया सो बिलकुल

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी)

१०. गायण इमतरायजी

११. छोटा चंपरायजी

१२. छोटा रूपजोतजी रै वाभा वभूतसिंघजी

१२ छोटा अखाड़ा में —

१. रामरायजी रै वाभा मोवणसिंहजी बरस दोय रा हुय चलिया।

२. वडा कुलरायजी

३. उदैरायजी रै वाभा वडा सोनसिंहजी छोटा सिरदारसिंघजी वरस ३ रा हुय चलिया।

४. वडा सुंदररायजी

५. कुलवेलजी

६ परमसुखजी

७. मेतावरायजी

(निरंतर....)

1. स्वर्गवास होने के ४ वर्ष पहले। 2. दावा पार नहीं पड़ा।

मुलतबी रह्या । इस सूरत में अजंट गवरनर जनरल बाहादुर राजसथांन का दावा धौकलसिंघ का नहीं गिणते ।

माफक दरखास्त धौकलसिंघ के नकल खत धौकलसिंघ की अर नकल खत जवाब की नजदीक नबाब गवरनर जेनरल साहब बाहादुर कै भेजी जावेगी । अेक नकल दोनूं की साहब बहादुर अजंट जोधपुर पास भेजी जावेगी ।

इस वखत में सिरकार कंपनी अंगरेज बाहादुर कै अेहलकार रांणीयां अर सिरदारां अर कांमदारां राज मारवाड़ सें मुकरर करणं मसनंद - नसीनी रियासत मारवाड के सलाह करेंगे वे पूछे रईसां राजवाडां के कै जिणां का नांम धौकळसिंघ नै लिखा है, इस वासते लिखा जाता है कै आणा गैरवाजब । धोकळसिंघ के सैंबीच मुलक जैपुर अर ओरां रजवाड़ां कै फिसाद होगा । हुकम वास्तै खांनगी फौज के हुवा है कै फौज वहां जाय कर फिसाद करणे वाळां कूं सभझा ओर नसियत करैगी ।

खत धौकळसिंघ का अंगरैजी जबांन मैं आया । जबाब उसका अंगरेजी जबांन में हुवा । वासतै समझणै धौकळसिंघ के तरजुमा उसका फारसी अर हिंदी में हुवा । "फकत"

—संपूरण संमत १९२९ मिगसर वद १४ । इती महाराजा मांनसिंह री ख्यात—

(पृष्ठ 235 की पाठान्तर टिप्पणी)

८. चुत्ररेखाजी

९. छोटा चनणरायजी

१०. बिचला सुंदररायजी

११. किसनरायजी

१२. पनरायजी रै वाभा जवांनसिंघजी वरस ६ रा हुय नै चलिया ।

विगत तपसीलवार —

१३ रांणियां, १२ पड़दायतियां, १२ गायणियां ।

दूहा

कड़ि गरदन भई कूबड़ी, सही सीत तप बाय ।
इसा कसट सूं ख्याति कूं, मैं सोधी दुख पाय ॥१॥

बार्ता च्यारूं पुसतकां ॥ ख्यात को ग्रंथ हजार २१॥

२१००० ईकीस नै सोध्यो खिड़िये आईदांन, जोधपुर में समापत कर्‌यो संमत १९३१ मिती चैत सुदी १२ सनीसरवार।

ख्यात की पोथ्यां चार लिखी जोसी साहिबरामजी माहाराज नै सांमल राखि अर सोधी छै।



नामानुक्रमणिकाएँ

[पुरुष एवं स्त्री]

को

खा

खि

खी

खे

ग

गा

गि

गु

पा

पि

पु

प्रो

फ

फौ

ब

भा

भी

भै

भो

म

वि

वी

वे

स

सा

सि

सी

सु

सू

से

सो

ह

हि

ही

हू

नामानुक्रमणिकाएँ

[शहर - कस्बा - गांव]

मे

मो

रा

री

रू

रो

ल

ला

लू

लो

व

वा

नामानुक्रमणिकाएं

[विविध]

मंदिर देवी-देवता–

तीर्थस्थल –

जलाशय-

बाग बावड़ी –

किला, कोट, हवेली –

पोळ अथवा दरवाजे –

अन्य नाम –



परिशिष्ट

कुछ समसामयिक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पत्र

उदखां का पत्र सालमसिंह के नाम

[यह पत्र जोधपुर से दाउद खां ने पोकरन ठाकुर सालमसिंह को सवाईसिंह के मारे जाने के पश्चात् लिखा है। इस पत्र में उक्त ठाकुर को महाराजा मानसिंह की सेवा में उपस्थित होने के लिये आग्रह किया गया है]

"अपरंच राज री तरफ रा समाचार महे आछी तरे म्हेरम हुवा, आप तो वडा सिरदार हो आपरी समज इसी है जीसी मारवाड़ में कीणी री नहीं। ने जांणता हुसी मांनु कागद न देवो सु आप कुं हमनै कुछ सरदार न जाणा इस वासतै कागद न लिखीया। सिरदारगी तो आपरी में जीस दिन ही न जांणी थी जिस दिन ठाकुर सवाईसिंघजी का सिर इयां आया था। आप री सिरदारगी तो मेह जद जांणता ठाकुरां रो माथौ आयो जीण नुखतै[1] खांवदा रे कदमां आय हाजर हुवा हुता तो मेह जांणता अै ठाकुर सवाईसिंवजी रा बेटा है। आप अठै आय नै श्री हजूर में अरज कराई हुती-मारा बाप से तो माथो आयो नै, हुं ई हाजर छुं। खांवदां[2] री मरजी हुय तो मारो ई माथौ हाजर है, तो इण बात रो घणो फायदो पछाड़ी[3] नीजर आवतो। इतरी बात कीवी हुती तो मै ही राज नुं जाणता कीणी वात लायक हो, अबै घर में बैठां बैठां लोकां ई कहे सींतग[4] दिल में उपजै है सु इण सींतग रो जतन विचार जो न्ही तो पछै हो पिसताववोला[5]। मै तो आगै[6] ठाकुरां सवाईसिंघजी नुं ही इण तरै सला लिखी थी। पीण होणहार आय दाबीया[7] जोण सु कांई मांनी नहीं नै अबै राज नु ही तावै दोसती[8] री लिखी है। राज रा मन मैं आ हुवैला, मीरखांजी हम कुं वचन दे पछे दगा कीया जीस तरे सारा हुवैला सो मीरखांजी तो भाई हमारा है हम उसके भाई हैं।

---

1. अवसर पर 2. मालिक (महाराजा मानसिंह) 3. बाद में 4. असंतुलित उग्र विचार 5. पश्चात्ताप करोगे 6. पहले, पूर्व में 7. भवितव्यता ने आ दबाया 8. मित्रतावश

पीण महाराजा मांनसिंघजी तो हमारा भाई नहीं महाराजा तो तुमारा भाई है । ठाकुर सवाईसिंघजी रो तो नांम तुमारे उपर चले है । सालमसिंह हिम्मतसिंह दोय बेटे हैं पीण तुमारा नांव किस पर चलेगा नै दोय च्यार हजार वरस की आरबल[1] आपकी होय तो उवा हमकूं लिखीयो उस उमेद पर हम नचीते[2] हैं । नीयायत आपका घर का मालक तो महाराज श्री बिजैसिंघजी रा फरजंद[3] होसी, श्रो ठीकांणो जमी राज रे साथे चालण की न्हीं आप दिल से इडवो विचारो ।

साठ हजार फौज दोय पसेवो खांवदां राखे है ने मुलक डंड नै खुवावे है । सु ठीकाणा छुडावण री मन में हुई तो कीताक दिन ठैरसो[4] गढ़ कीला नै बेटी किसी का घर मैं अखी[5] न रही जीण रा भाग में जीतरा दिन लिख्या होय जितरा ही दिन रहे है, आ निसचै जांणजो नै दिल में सितंग उठावो आ सला राज रै कदै ई फायदारी न है । इण थोड़ा लिखण में घणो समजणो आ राज री अकलमंदी है । राज नुं लिख्यो है सु जुठा लिख्यो है का फायदा री लिखी है सुं सारी समज लंजो । आप मन में जाणता इसो श्री दरबार में कोई काम पड़ै तो उण बखत चाकरी मैं जाय हाजर हुवां सु चाकरी इती वडी हुई सुं सारी मारवाड़ हरामखोरी[6] एक ठीकांणा उपर आई ने फेर हराम-खोरी री ढ़ाल हुवा बैठा हो सु अबै इण बात नुं छोड़ आपरा दसतुर उपर मालक वणो[7] । मांरी तरफ सुं तो आ ही राज नु सला[8] है सु लिखी है । फायदो जांणो तो करजो नै नहीं करसो तो इण जींदगी सु फेर कदे मीलसां जीस दिन आ बात याद करसो इसा बखत फेर राज नुं न आवेला"..........[9] ।

1. शक्ति, उम्र 2. निश्चित 3. औलाद, वंशज 4. ठहरोगे 5. स्थायी, निरंतर 6. बेईमानी 7. स्वधर्म से च्युत होना 8. परामर्श 9. पत्र का कुछ अंतिम अंश त्रुटित है ।

ठाकुर वभूतसिंह का पत्र शिवसिंह के नाम

[यह पत्र पोकरन ठाकुर वभूतसिंह ने सिरोही के राव शिवसिंह को लिखा है जिसमें जोधपुर महाराजा मानसिंह के कुशासन आदि का उल्लेख किया है ।]

।। श्रीरामजी ।।

ठाकुर वभुतसिंघजी ई ये मुजब कागद रावला सीवसिंघजी रे नांव लीखे जे रो मसोदो ।

"अप्रंच राज आछी तरे सुं जांणां छां महाराज श्री मांनसिंघजी गादी विराजिया पछै मारवाड़ रो कुही बंदोवसत कीयो नहीं सरब मुलक नाथां ने गुलामां नै कलावंतां[1] वगेरे वांट दीयो अोर जां कदीम सुं[2] जो सीरदारां रा ठीकाणा छा सुं जबत कर लीया अर वात तो जगत में परसिध छै 'रिड़मलाँ थापिया तीकै राजा' सो राव श्री जोधोजी सुं लगाय महाराजा भींवसिंघजी तांई तो मांहरे हाथ सुं राज जोधपुर रो बंदोवसत हो तो आवै है जीण ने सारा रजवाड़ा वा राज आछी तरे सुं जांणो हो जीण कंवर रो हक व लायक गादी रे देखीयो तीण ने ही गादी बैसाणियो[3] सुं गादी रा मालक तो गादी वीराजै सो ही होता आवे है, परन्तु मुलक रो वंदोवसत वा सला ही अत वगेरे कंमी रा मालक पांच राठोड़ सीरदार है । सुं पुसतों सुं[4] कदीम करता आवे है । सु प्रथम तो अे महाराज श्री मानसिंघजी गादी बीराजिया सु वरखलिफ हकीयत[5] रै ववै तजबीज सारों सिरदारां री वीराजीया जिण नै राज आछी तरे जांणे हो अोर आज तांई जो काम कीयो सो वरखीलीफ राज री तरै कीओ सु आज तांई कुही बंदोवसत हुवो नहीं अोर मुलक मे के जाळी वा फीसाद हुवे है अौर सीरकार अंगरेजी रा मामले सवा फौज

---

1. कलाकार (संगीतज्ञ) 2. परम्परा से 3. गद्दी पर बैठाया 4. पीढियों से 5. हकूक, अधिकार

खरच रा रूपीया सो वढ़ा चढ़ रहा है। सो सीरकार अंग्रेजो वाजबी रे तावै रूपीया वा वाजै कलम तरे वासते नकीदी करै है, पण श्री महाराज साहब सु कीसी वात रो सीलीको[1] बंधण रो मेळ नहीं। आखर सीरकार अंगरेजो रे मोमलत व फोज खरच वगेरे कलमात न हुवै जरां जोधपुर री रीयासत में वा मुलक में आपके तार बंधोवसत करै तो इण वात ने म्हां पांचा सिरदारां री सरासर वादी कीस वासते। पेहली तां श्रीदरब* मांहने वीगड़ीया[2] ने पछै सीरकार अंग्रेजी म्हांने वीगाड़े तां आ वात म्हांरे हक में दुरतरफो वेतोरी नहीं हुवे। और कदीम सु म्हारा पटा छा सुतो श्री महाराज साहब जबत किया तीमें ही फेर रेख मांगे सु रेख देण रो म्हारे दसतुर नहीं। पण म्हे आ वात जाणी कीणी तरे सुं रीयासत रो वा मुलक रो बंदोबसत वधे[3] तो घणी आछी वात है जीण सुं आगे रेख वी दोवी छै तो पीण महाराज साहब नाथां रे वा अेस-आराम रे खरच में नाहक लगाय दीयो। मुलक रो कुही बंदोवसत वधा नहीं अर हमार फेर रेख मांगे है सु कीण तरे देण में आवे मुलक रो वधोवस बंधै तो मुजीका नहीं सु तो सूंप ने मेडे दे ही नहीं फेर अबके वरस में कीतीक वात वेदसतूर[4] री कीवी सु कदे हो पुसतां में हुई नहीं सु ईसी वात हुवो सु मेह कुण छो ईण में आछो तरे समझ लेसी ने उपर कलमों लीखी है जींण सु नाहत[5] तंग वा लाचार जरूरी होय कर अठे म्हे पांच सीरदार भेला हुवा नै मिला कीवो है। जोधपुर री रीयासत रो वा मुलक रो हर सूरत बंदोवसत कीयो चाहीजै। जमे राज ही वणो रहे सुं सारा सीरदार भेला होय ने चोपासणी जाय पहली तो श्री हजुर में सारी कलमां रो बंदोवसत करण वासते अरज करसां सुं बी दरबार मतलब मुजब बंदोवसत करसी तो घणी आछी वात है। नहीं तो म्है पांच सिरदार विचार नै जोधपुर री वसत रो वा मुलक रो बंधोवसत करसां। ईण वासते राज ने लीखण में आवै छै सु राज ही म्हारां मदद में रहै, कदास राज आ कहे जोधपुर सुं सिरकार अंगरेजी रै अहनवो[6] है सुं किण तरे म्हे मदत में रहां जिण री आ सुरत है आगे वाज कलमों वासता सिरकार अंगरेजी जोधपुर सुं

1. व्यवस्था 2. बरबाद किया 3. व्यवस्था ठीक हो 4. बिना कायदे की
5. निहायत 6. समझौता * श्रीदरबार

अहदनांवो जांण वांधियो छो जद अहदनांवो कठै रहे फेर राज जोधपुर कलमां मंजूर करी ने पांच लाख रूपीया फौज खरच रा देणा कबुल करया तिण बखत सिरकार अंगरेजी नीजर मेरबांनी सुलाभ मोकुब[1] कीयो तो पण आज दीन तोई राज जोधपुर कु ही बन्दोवसत कीयो नहीं वा मांमलै वा फौज खरच रा रूपोया अदा कीया नहीं अर सिरकार अंगरेजी मेहरवांनी व नेक नीवसत कर लोभ मोकुफ कीयो तीण ने महाराज श्री मानसिंघजो कु ही समझीया नहीं । ईण सुरत में राज जोधपुर री तरफ सुं साफ अहदनावो तुटो[2] मालम हुवे सु सिरकार अंगरेजी तो फकत मांमले व फोज खरच रा रूपीया सु वा मुलक में बंदोवसत रेहण सुं काम है तिण रो तो सालीका[3] मेहे लगाय देसां । न मुलक रा वा रीयासत रो अछी तरे सु बंदोवसत कर लेसां इण वासते राज ही म्होरी मदत में रहो तो आछी वात है । सो ईण वासते राज श्री वड़ै साहब बाहद्र ने लीख ने परवांनगी मंगाय लेसी । इण वासतै अठे सुं पण अजमेर ने परबारो मेहल राव हींदुमलजी ने लीखावट कीवी छै सु जांणो छो वा पण बड़े साहब बाहद्र ने अेहवाल[4] जाहर कीयो हुसी वा हमे कर देसी वा राज सव अेहवाल लिखो मुजब बड़े साहब बाहदर सुं जाहर कराय देसी अौर सिरकार अंगरेजी मेहरवांनी वा नेक नीयत रै सबब[5] सुं देरी वा मीरतो रे उप्र वात करे है जीण ने महराज साहब मेहरबांनी तो समझे न है अर अौर तरे हो समझे है । जीण सुं घणी कठे तांई लीखो ई तो में सारी समझ लेसां । वा कागद रो जुबाब जो साहब मोसुफ कहे सो जल्दी लीखावसो अौर अठे सारूं काम काज हुवे सुं लीखावसी राज रो घर छे ।"

---

1. स्थगित 2. समझौता टूट गया 3. व्यवस्था, उपाय 4. सारांश, हालात
5. कारण

छोगालाल का पत्र बभूतसिंह के नाम

[यह पत्र छोगालाल ने अजमेर से जोधपुर बभूतसिंह (पोकरण ठाकुर) को लिखा है। इसमें विद्रोही दोस मोहमद खां का अंग्रेजी सरकार के आगे झुकने तथा अंग्रेजों एवं चीनियों के बीच युद्ध होने आदि समाचारों का उल्लेख हुआ है।

........"अप्रंच प्रवानो आपको कासीद[1] लार आयो समाचार बांच्या, कागज व्यासजी के नांव छो सो व्यासजी ने दीनो और आज बड़ा साहेब छावणी नसीराबाद की दाखल हुवा, ईसी खबर आई और केकड़ी का डेरा जोधपुर का अखबार नवीस की बदली जेसलमेर हुई अर जैसलमेर वाला की जोधपुर हुई खबर कावल कीदो। मोहमद खां तारीख २३ नोंबर की ने रात का बड़ा मेघ लाटण साहेब के डेरे अेक महमुद खांन सरदार ने वीसटाळा[2] के वासते भेजो सो जार ईतला कराई जद साहेब बारे आया जद वे सीरदार कही-दोस मोहोमद खां आपके पास आया चाता है। जद साहेब कही कहां है? जद वे कही-लैन के बाहर खड़ा है, आप संतरी को हुकम दीजै रोके नहीं। जद साहब कही-कोई नहीं रोकेगा आणे दो। आपका डेरा सु मैदान में पांच सात आदमी दूजा खड़ा रहा, जी बखत साहब ने लोगां अरज करी गनीम आता है और आप अकेले खड़े हैं। जब साहब कही कुछ अंदेस्या[3] नहीं, हमकु मारके क्या करेगा सीरकार कपनी के हम सरीके बोहोत हैं। पछै दोस मोहमद खां आदमी दस पनरा सुं साहैब कनै पगां में तरवार रख दी, अर कही मैंने सीरकार सुं मुकाबला कीया सो ये सीपाई का धरम नहीं है, सो ओ दै हातु[4] अपणा घर पराये कुं सांप दै सीरकार मालक है। चावो सो करो।

---

1. पत्र वाहक-सुतर सवार 2. समझोता वार्ता 3. वहम, खतरा
4. आप अपने हाथों से

जद साहब कही—खां तुमारी तरवार तुमे मुबारक रहो ग्रर तुमने लड़ाई बोहोत ग्रछी करी ईसमें सीरकार कंपनी तुमारे उप्र बोहत राजी है। ग्रौर बोहोत खातर करी ग्रर डेरा खड़ा करा दीनी[1]। ग्रब दोस मोमदखां नं हींदुसथान में १ पलटण तो गोरां की ग्रर १ पलटन तीलंगां की साथ छै तोफा बल के नजीक जलालाबाद छै उठै तो ग्राये पोहोच्या छै। ग्रब चंद रोज मैं हिंदुसथान में ग्रा-जावसी ग्रर हिंदुसथांन में जागीर दोस मोमदखां ने दी जावसी।

ग्रौर चीरण वालां कै ग्रर ग्रग्रजां के लड़ाई हुई सो ग्रग्रेजां ज्यांह जाय सु तोपां मारी सो तीन कीला[2] चीरण वाला का ले लीना ग्रब चीरण वाला सुले करे छै जो खरच उसको हमे देवेगै ग्रर बोपारिग्रों का नुकसान हुवा है वो हम देवेंगे ग्रर ग्रगाड़ी सु दोसती बाद लोकां उप्र उठा का मेघजी उमै सु बोहत सामान गयो सो ग्राज अंगरेजी तोपां लागी होसी।

मीती पोस सुद १ सुकर १८८७।"

---

1. ठहरने की ग्रलग से व्यवस्था कर दी 2. किले

जुझारसिंह का पत्र वभूतसिंह के नाम

[यह पत्र जयपुर से जुझारसिंह ने वभूतसिंह चांपावत (पोकरण) को लिखा है जिसमें अंग्रेज सरकार को घोड़े भेजने आदि समाचारों का उल्लेख हुआ है ।]

"अप्रंच आगे क़ासीद मैल्यो छै तीण लार कागद दीयो छै तीण सु समाचार मालम हुसी । अठे दरबार रा घोड़ा रा रसालां री हाज फीरंगी रे उठे वाग होय छै तोमै छोटी रास[1] रो घोड़ो ने दीनां में वडो[2] छै नोबळो छै[3] तीणां नै छांट दीया । तीण उपर रसालदारां साहब सुं अरज करी-ये घोड़ा तो दरबार का छै, कीसा जागीरदार का छै सु ओर मोल ले लेसी । जीण उपर बोल्या-क्या दरबार का ने क्या जागीरदार का, जो आछा घोड़ा होयगा सु रहेगा । ईण ढ़ब कही ने अब आसाढ़ सुद में जागीरदारां रे घोड़ां री हाजरी होसी तीण में या ठेरी छै, घोड़ा घटसी तीण सु तो ठेठ रो मीती सु घोड़ो १ दोठ पनरा रूपया रा महीना रे हीसाब सुं तफावत रा रूपया जोड़ ने ले लेणा ने नीबळो घोड़ो ने छोटी रास रा होय ने दीनां में वडो होय तीणां ने छांट देणा । ने जागीर रा घोड़ा पूरा नहीं दीखावे तीण रे घोड़ा घटे जीतरा घोड़ां रो जागीर खालसे कर लेणी । तीण सु अब ज्यांरे घोड़ा घटे सु आप आपरा घोड़ा हाजरी हुवां पेली चैहरे कराय[4] ने साबक[5] घोड़ां री हाजरी रो ढब[6] करं छै । ने हाजरी हुवां पेली तो चेरा होय जायला । पछै चेरायो पन ही घोड़ा घटसी तीकां घटतां घोड़ा माफक जागीर खालसे करसी या बोली साहब बोल दीवी छै ।[7] सु अब आंपणे बी अठे घोड़ा घटे छै ने कीताक छोटी रास छै दीनां बडा छै सु घोड़ा २० वड़ी

---

1. कद में छोटा 2. अधिक उम्र का 3. थका हुआ है 4. घोड़े का हुलिया आदि दर्ज कराना 5. ठीक तरह से 6. व्यवस्था 7. ऐसे मौखिक आदेश प्रकट किये हैं।

रास ने नवा ने चोखा देख ने मीलावसी सु असाढ़ सुद में अठे आया रहे ज्युं करावसी । सु घोड़ा रा चेरा हाजरी हुवा पेली कराय लेण में आवै । हाजरी हुवां पछे चेरा करसी नहीं तीण सुं घोड़ा जरूर सुं मेलावसी और कासीद लार समाचार लीखया छे त्यां रो जाब[1] लीखावाय कासीद ने सीख दीवी जसी, नहीं तो उण ने तुरंत सीख दीरावसी ।

सं. १८९६ रा आसाढ़ वद ८ ।"

1. जवाब

राठोड़ भैरूंसिंह का पत्र वभूतसिंह के नाम

[यह पत्र राठोड़ भैरूंसिंह ने जोधपुर से अजमेर (प्रवास) वभूतसिंह को लिखा है जिसमें कुचामन एवं भाद्राजून के ठाकुरों की राजनैतिक गतिविधियों का उल्लेख हुआ है।]

"उपरंच कागद आपरो कासीद साथे सांवण सुद ६ रो लीखीयो सं. सुद ११ सींजीया रा आयो, समाचार वाचोया। कागदाँ सारां री पोंच[1] लीखाई सो दुरस[2] और कुचामण रणजीतसिंवजी भादराजण वगतावरसिंघजी रा मेड़ते डेरा था जरै अंगरेज बाहदर रा चीपरासी आया ने कयो–हमार डोढ़ लाख रूपीया देणा कीदा सो लावौ ने पचोस रूपीया रोजीना हमारी तलब रा लावो। सो एक दीन री तलब रा रूपीया पचीस देने सीजीया रा चडीया सो उठारा चडीया[3] डोगाड़ी आय डेरो कीदो। ने दुजे दीन सेर ने हवेली आया लारले दोय गड़ी दोन रयो जरे[4] रात रा तो हवेली रया नै दुजै दीन तीजै पोर रा गढ उपर गया, सींजीया रो मुजरो हुवो ने सदामद[5] कुरब दीरीजै जको तो दीरांणो ने बांहपसाव री मालम कराई जरै श्री हुजूर फुरमायो-बांहपसाव रो कुरब तो ६ महीना पचै आवै जरै दीरीजे ने थांने तो दीन थोड़ा ई ज हुवा है जरे नीजर नीचरावल करण लागा। जरै श्री हुजूर सु' फुरमायो थे कीसा गरै गया था चाकरी मैं ईज था सो नीजर नोचरावल कीवी नहीं, नै मुजरो कीदां पचै घड़ी चार अेकांत रया[6] नै कयो मांने तो नेड़ाई आवण दीना नहीं नै अंगरेज री फौज आवण री ताकीदी है, फुरमायो-फौज आवण री कयो हो सो तो मालम है पीण अंगरेज बाहदर रा रूपीया देण री तजबोज करौ, जरे पाची अरज कीवी रूपीया ई खांवदां सु होसी सो खाँवद वीच ने

1, पहुंच 2. दुरुस्त 3. चढ़े 4. घड़ी भर दिन रहा तब 5 सदा की भांति
6. अेकांत में बातचीत की।

करसी जीऊं होय जासो । ईण माफक सुणो नै सीरदारां दोनां रे लारै चीपड़ासी रूपीयां रै तलबीया है ईसी केवे है ग्रौर सीरदार ग्राया तो फीकाईज है[1] । नै पेले चे उदास हे, सैर ग्रफवा मैं ईण माफग वातां करे है सीरदार ग्रठा सुं चढ़ीया जरे ई उ कयो थो अंगरेज बाहदर सुं वात करने पाचा सैर में ग्रावसां नै वात कही हुई तो सैर ग्रावां नहीं सो छांने[2] हवेलियां में ग्राय बैठा । राज तो सारो ईण खराब कीदो ने हमे फेर रयोखयो[3] ने सरई खराब करसी । सरसरा[4] में तो ईण माफग वातां करे है ।

सं. १८६६ रा सांवण सुद १२ ।"

1. निराश स्थिति में 2. चुपके से 3. शेष रहा हुग्रा 4. सामान्यतः

राठौड़ भैरूँसिंह का पत्र बभूतसिंह के नाम

[यह पत्र राठौड़ भैरूँसिंह ने जोधपुर से अजमेर (प्रवास) बभूतसिंह को लिखा है। इसमें नाथों के जोधपुर-परित्यागने आदि घटनाओं का विवरण दिया गया है।]

"उपरंच आयसजी अजमेर आवरण ने तारी[1] हुवा था सो सांवण सुद १४ गढ़ उपर गया ने श्री हुजुर में मालम कीवी-मनै सीख[2] दीराई जै, हुं अजमेर सीरदारां खनै जावसूं। जरे श्री हुजूर फुरमायो-ईतरी ताकीदी कीउ करो, अंगरेज री फौज नैड़ी आवण दौ। फौज नेड़ी आवे जरे गढ़ उपरा उरा आवजो। सो मांने अवखाई[3] होसी तो थांने ई होसी। ईउ फुरमायो जरै पाछा महामींदर जाय ने[4]कबीला काडण री तारी कीवी[4]। सो आज रात रा कबीला तो जालोर परा जावसी और जसरूपजी पैला आवण री सला कीवी थी जीण रा समाचार ओळियां में लिखियो सो ओरो जनांनी जायगा में बतायो हैं, फेर समाचार भुगतीयां[5] लीखण में आवसी।

सं. १८९६ रा सांवण सुद १४ सींजीयारां।"

---

1. तैयार 2. विदाई की स्वीकृति 3. कष्ट 4-4. कुटुम्ब को वहां से निकालने की तैयारी की 5. ज्ञात होने पर

राठौड़ सांवर्तसिंह का पत्र वभूर्तसिंह के नाम

[यह पत्र राठौड़ सांवर्तसिंह एवं छोगालाल ने अजमेर से जोधपुर वभूर्तसिह चांपावत (पोकरण ठाकुर) को लिखा है जिसमें नांथों के राज्य कार्य में हस्तक्षेप करने आदि समाचारों का उल्लेख हुआ है ।]

"अप्रंच आज सोमवार की सलाम ने बड़ा साहेब के गया हा, सो बड़ै साहैव आप नै बोहोत सलम दी है अर मीजाज की खुशी पूछी है और बरतमान का समाचार ईण भांत है । साहेब कही हम सुणते है, नाथ राज के काम में दखल करते हैं सो जो ये बात सच होगी तो अेरणपुर[1] सुं फोज जाकर नाथों कुं नीकाल देवेंगे । जद राजमलजी कही-साहब बाहदुर फौज का जाणा तो बोहोत है पण आपके फुरमाणे से नीकल जावेंगे । और उदैपुर का वुकील अरज करी महाराणा साहेब ने लीखी है सीवदानसिंघजी राणाजी साहेब का बड़ा भाई की बेटी रतलाम का राजाजी ने परणी है सो उठा सुं पांच सात बार आंणे[2] गये पिण मेली नहीं सो १ चीटी[3] आपकी उठा का अजंट रै नांव लीखी जावै सो उदयपुर सुं आणो जावे जद बाई नै मेल देवै । जद साहेब हसीआ[4] ने सारा वुकील बैठा छा सो सारा ही हसीआ नै साहेब कही–इसमें तो राजे साहैब की कुसी की बात है चीटी का कुछ काम नहीं ।

और अबारं लाठ साहैब[5] है जीण की बदली हुई नै दुसरो लाठ वीलायत सुं आवै है सो हीदुंसतान रा मुलक रो

---

1. अेरनपुरा 2. लिवालाने को 3. पत्र 4. हँसे 5. गवर्नर जनरल

काम वीलायत में बादसाजी कनै भुगताय हाजीर कोई लाठ हुम्रा ग्रर उमर बरस रा ४५ तथा ४६ में है ने कलकते दीन १५ तथा २० में दाखल होसी ।

ग्रौर समाचार साबक दसतुर छै । ईणा दीना में कागद समाचार ग्राया नहीं सो दीरावसी । ग्रठे साहेब पूछै जोधपुर की कया खबर सो बीना वाकब[1] कीण तरे केवा में ग्रावे ।

१८९८ रा मीती मीगसर सुद १४ ।"

1. बिना ज्ञात हुए।

शद्धि-पत्र

पृष्ठ सं.	पंक्ति सं.	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	रुघनाथ सघोता	रुघनाथसिंघोत
१८	१०	साथबचंद	सायबचंद
२०	२	वालाख	सवालाख
३१	६	जपुर	जैपुर
३२	१४	आथा	आया
३७	७	छांगांवी	छांगांणी
३७	२३	घांघस	घाँधल
३९	६	भुंणुभं	भुंभणु
३९	८	डीडवांय	डीडवाणा
४१	३	वूच	कूच
४१	१०	हुा	हुवा
५३	१३	फागुण सुद बेवचे	फागुण सुद········
८५	४	४००००)	४००००१)
८८	२२	वीरगत	वोरगत
११०	१२	अखराजजी	अखैराजजी
१३३	१६	सालसै	खालसै
१३७	१	लाडण	लाडणूं ?
१३९	४	सिंघवी फतैराजजी भाटी, गजसिंघजी छांगांणी, कचरदासजी	सिंघवी फतेराजजी, भाटी गर्जसिंघ, छांगांणी कचरदासजी
१९६	१६	साथीसीण	साथीण
२३७	१	जो पुर	—X—

